राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला

प्रवन्ध सम्पादक- डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
[उपनिदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ११८

मीरां कृत

नरसीजी रो माहेरो

सम्पादक

श्री जेठालाल नारायण त्रिवेदी

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

1972

प्रथमावृत्ति १००० * मूल्य ७.२५

विषय-सूची

प्रस्तावना

"नरसीजी रो माहेरो" साहित्य-जगत् में वहु चर्चित रहा है। इसका एक प्रमुख कारण यही है कि रचना के कर्तृत्व के साथ सुप्रसिद्ध भक्त कवयित्री मीरांबाई का नाम येनकेन प्रकारेण जुड़ा हुआ है। सर्वप्रथम जोधपुर के मुंशी देवीप्रसाद जी ने "महिला-मृदुवाणी" में इस रचना को मीरांवाई कृत वताते हुए इसकी ओर ध्यान आकर्षित किया।[1] कालान्तर में आलोचकों के दो दल हुए जिनमें रचना-कर्तृव्य के संवंध में मतवैपरीत्य वना हुआ है। अद्यावधि रचना के अप्रकाशित रहने के कारण इस विषय में समुचित निर्णय नहीं हो सका है। अब राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की ओर से इसका प्रकाशन "राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला" के अंतर्गत ग्रंथांक के रूप में किया जा रहा है और सुधी अध्येताओं के लिये अवसर है कि इसका सम्यक् रूप में परीक्षण कर अपना मत व्यक्त करें।

"नरसीजी रो माहेरो" रचना की परम्परा राजस्थानी और गुजराती में मिलती है जिसके अन्तर्गत प्रथम रचना विष्णुदास की 'कुंवरबाई नुं मोसालु' वि० सं० १६२४-२८ लगभग की मानी गई है। तदुपरान्त विश्वनाथ जानी का "मौसालु" (सं० १७०८ लगभग), प्रेमानन्द का 'कुंवरबाई नुं मामेरुं' (वि० सं० १७३६), कृष्णदास कृत 'मामेरु' (वि० सं० १६७३-१७०१), गोविंद कृत 'मौसालु' (वि० सं० १६८० लगभग) दयाराम कृत 'मोसालु' रतना खाती कृत 'माहेरो' और प्रस्तुत मीरां सम्बन्धी 'नरसीजी रो माहेरो' आदि उल्लेखनीय रचनाएं हैं।

नरसिंह मेहता गुजराती साहित्याकाश के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। ये कुशल कवि होने के साथ परम त्यागी और परोपकारी महात्मा हो गये हैं। अतएव इनके संवंध में अनेक लौकिक-अलौकिक जन-श्रुतियां प्रचलित हो गई। 'माहेरो' भी कवि-जीवन सम्बन्धी एक जन-श्रुति भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा नरसी मेहता की ओर से इनकी दौहित्री के विवाह में 'माहेरो' भरने पर आधारित है।

---

1. प्रकाशक—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सन् १६०५, पृ० ६१-६२।

माहेरों, नरसिंह, गिरिधर, मीरां और भोज के संबंध में श्रीश्यामराय भटनागर, जयपुर ने एक नई बात बताई। इन्होंने कहा कि इन सबका संबंध जयपुर के खण्डेला राजवंश से है और मीरां बाई खण्डेला के भोज से व्याही थीं। श्री भटनागर ने यह भी बताया कि खण्डेला के राजा गिरिधर ने ही इनके भाई और अकबर द्वारा गुजरात में नियुक्त नरसिंह की ओर से 'माहेरो' भरा जिसका वर्णन मीरां बाई ने किया। मैंने तुरन्त ही प्रयत्न कर "खण्डेले का इतिहास[१] (लेखक पं० श्री सूर्यनारायण शर्मा) प्राप्त किया और उक्त विषय में जानकारी की। इस इतिहास से ज्ञात होता है कि खण्डेले के प्रसिद्ध राजा रायसल (राज्यकाल सं० १६०२ से १६३६)[२] के तीसरे पुत्र भोजराज और बारहवें पुत्र गिरिधर (राज्यकाल सं. १६३७ से १६५७[३] निधन सं. १६८०) थे।[४] इनमें से गिरिधर की जागीर में खण्डेला और रवासा तथा भोज की जागीर में उदयपुर (शेखावाटी) मिले।[५]

अब मीरां के जीवन-काल पर विचार करने से ज्ञात होता है कि मीरां का जन्म श्रावण शुक्ला १ शुक्रवार सं. १५६१ माना गया है[६] और निधन-तिथि वि० सं० १६१० और १६१३ के बीच होना बताया गया है।[७] ऐसी अवस्था में खण्डेला के राजा गिरिधर द्वारा जिनका राज्य काल वि० सं० १६३७ से १६५७ का रहा है, 'माहेरो' भरना और मीरां बाई जैसी भक्त कवयित्री द्वारा किसी लौकिक व्यक्ति का गुणगान करना युक्ति-संगत प्रतीत नहीं होता। श्री भटनागर के मत को स्वीकार करने में दूसरी बाधा यह है कि खण्डेले का इतिहास के अनुसार तत्कालीन राजा गिरधर का कोई भाई नरसिंह ज्ञात नहीं होता और न खंडेला के भोज की किसी रानी मीरांबाई का हीं विवरण मिलता

---

१. प्रकाशक, पं० रेवतीरमण शर्मा, बड़ का कुआ, पुरानी बस्ती, जयपुर।

२. वही पृ० २७

३. वही पृ० ५६

४. वही पृ० ३७, ४१–४२

५. वही पृ० ५५

६. मीरांबाई, डॉ. प्रभात, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, प्रा० लि० हीराबाग, बम्बई, प्रथम संस्करण, १९६५ पृ० ११९

७. वही, पृ० २३०

है। न मीरांबाई का ही विवरण मिलता है। यदि मीरांवाई का संवंध खण्डेला से होता तो किसी न किसी रूप में मीरांवाई जैसी प्रसिद्ध भक्त,कवयित्री महिला का उल्लेख संवंधित इतिहास ग्रंथ में होता। इसके विपरीत मीरांवाई का उल्लेख उदयपुर-मेवाड़ संवंधी लगभग समस्त प्रसिद्ध इतिहास-ग्रंथों में मिलता है। वास्तव में यह भ्रान्ति शेखावाटी के उदयपुर में समकालीन 'भोज' के कारण हुई है।

"नरसीजी रो माहेरो" का सम्पादन गुजरात के साहित्यान्वेपक कवि और उपन्यासकार प्रो० जेठालाल त्रिवेदी ने किया है। गुजरात सरकार ने इनकी अनेक पुस्तकें पुरस्कृत भी की हैं। आपकी विशेष रुचि मध्यकालीन साहित्य के सम्पादन में है और नरसी मेहता, मीरां तथा भालण-युग का आपने विशेष अध्ययन किया है। फलस्वरूप 'माहेरो' की सम्पादकीय भूमिका में आपने संवंधित विषयों पर विस्तार से लिखा है। साथ ही परिशिष्ट में अध्ययन हेतु उपयोगी सामग्री का संकलन किया है। तदर्थ श्री त्रिवेदी का प्रयत्न सराहनीय है।

"नरसीजी रो माहेरो" की प्रेसकापी प्रतिष्ठान के भूतपूर्व निदेशकजी द्वारा १९६९ में हो प्रकाशन के लिये स्वीकार करली गई और इसका मुद्रण भी उन्होंने चालू करवा दिया। किन्तु, तब इसका मुद्रण-कार्य संपूर्ण नहीं हो सका। अव इसका प्रकाशन किया जा रहा है जिसके लिये प्रकाशन-विभाग के सहायक श्री गिरधरवल्लभ दाधीच का परिश्रम उल्लेखनीय है।

आशा है कि संवंधित पाठकों और अनुसन्धित्सुओं के लिये इसका प्रकाशन उपयोगी सिद्ध होगा।

डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।
१ जनवरी १९७३ ई.

भूमिका

भक्त कवयित्री मीराँबाई ने भक्तवर नरसी मेहताजी का माहेरा लिखा, इससे मानों सोने में सुगंध मिली है। गुजरात और राजस्थान की गंगा और यमुना स्वरूप भक्ति-सरिता में वृन्दावन-भक्ति की छद्म सरस्वती का प्रवाह मिलने से यहाँ पर पवित्र त्रिवेणीसंगम हुआ है। मीराँबाई का यह माहेरा मध्यकाल में गुजरात और राजस्थान के बीच जो सांस्कृतिक और साहित्यिक विनिमय हुआ करता था, इसका भी द्योतक है।

'नरसीजी रो माहेरो' मीराँकृत है या नहीं इस विषय में कुछ विद्वान शंकालु हैं। माहेरो मीराँकृत ही है यह हम आगे चलकर अनेक प्रमाणों से सिद्ध करेंगे। परन्तु इसके पूर्व मीराँ के जीवन विषयक कुछ महत्त्वपूर्ण बातों की चर्चा यहाँ करने की आवश्यकता है। इन बातों के निर्णय से माहेरो के कर्तृत्व के विषय में भी परोक्ष रूप से कुछ प्रकाश पड़ेगा।

मीराँ के जीवनवृत्त के आधार

मीराँबाई मेड़ताणी थी अर्थात् मेड़ता की राजकन्या थी और उनका विवाह चित्तौड़ के सिसोदिया राजवंश में हुआ था, इतना तो प्रायः सर्वमान्य है। इसके अतिरिक्त मीराँ के माता-पिता, पति, देवर, जेठ, ननद इत्यादि के विषय में काफी मतभेद प्रचलित हैं। मीराँ की जन्मतिथि और मृत्यु का वर्ष भी प्रामाणिक रूप से तय नहीं हो पाया है। इस विषय में विद्वानों द्वारा की गई शोधों और मान्यताओं का संक्षिप्त उल्लेख यहाँ पर आवश्यक है।

मीराँ का जीवनवृत्त अनेक अनुश्रुतियों, लोकगीतों, मीराँ के स्वरचित पदों और अन्य भक्तों द्वारा लिखित चरित्रों से मिलता है। इतिहास-ग्रन्थों से मीराँ का कोई असंदिग्ध जीवनवृत्त अभी तक नहीं मिला। अनेक भक्तों ने मीराँबाई का उल्लेख किया है और उनका पद्यामक जीवनवृत्तांत देने का भी प्रयास किया है।

हमारे विचार से मीराँ का जीवनवृत्त देनेवाला सबसे प्राचीन ग्रंथ नाभादास-कृत 'भक्तमाल' है। भक्तमाल की रचना संवत १६४२ के बाद की मानी जाती है। संवत १७६१ में प्रियादासजी ने भक्तमाल की टीका लिखी है जिसमें उन्होंने

भक्तों के जीवनवृत्त पर कुछ अधिक प्रकाश डालने का प्रयास किया है। इस तरह प्रियादासजी द्वारा लिखा हुआ मीराँबाई का चरित्र भी मीराँ के जीवनवृत्त का एक प्राचीन आधार है।

संवत १८१५ के पूर्व सन्त चन्ददास ने भी 'भगत विहार' ग्रंथ की रचना की, जिसमें 'श्री मीराँबाई को अनुराग' शीर्षक से मीराँ का जीवनवृत्त पद्य में दिया गया है।[1] गुजरात के भक्त कवि दयाराम (संवत १८३३-१९०८) ने भी मीराँ-चरित्र गुजराती में लिखा है।[2] 'मीराँबाई की परची' शीर्षक से भी हिन्दी में मीराँचरित प्रस्तुत हुआ है। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य सन्तों और भक्तों ने भी मीराँ का उल्लेख किया है। एक अल्प परिचित राजस्थानी कवि बख्तावर ने भी वार-वार अपने पदों में मीराँ का उल्लेख सम्मानपूर्वक किया है।

जन्मसमय की चर्चा

आधुनिक युग में मीराँ जीवन विषयक खोज करनेवालों में कर्नल टॉड महाशय का नाम अग्रिम है। उन्होंने अनुश्रुतियों, जनश्रुतियों द्वारा खोज कर जाहिर किया कि मीराँबाई का लग्न चित्तौड़ के महाराणा कुँभकर्णसिंह से हुआ था। टॉड महाशय ने इस तरह मीराँ का जन्म समय ईसवी १५वीं शताब्दी में निर्धारित किया। कर्नल टॉड के इस कथन से प्रेरणा पा कर गुजरात के स्वर्गस्थ साक्षर श्री गो. मा. त्रिपाठी और श्री कृष्णलाल मो. झवेरी ने मीराँ का जन्म ई० सन् १४०३ के आसपास मान लिया।

इसी तरह हिन्दी साहित्य के सर्वप्रथम इतिहासकार स्व० ठाकुर शिवसिंह ने भी अपने 'सरोज' में मीराँबाई का जीवनवृत्त चित्तौड़ के प्राचीन प्रबन्धों को देखकर लिखा और कहा कि मीराँबाई का विवाह संवत १४७० (सन् १४१३) के समीप, चित्तौड़ के राणा मोकलदेव के पुत्र राणा कुंभकर्णसी के साथ हुआ।

परन्तु टॉड महाशय द्वारा प्रचलित मीराँ का जन्म समय और विवाह की घटना गलत थी। मेवाड़, मारवाड़ और मेड़ता के इतिहास के आधार पर स्व० मुन्शी देवीप्रसाद ने निर्णय किया कि मीराँबाई जोधपुर के मेड़ता राठौड़

---

१. संत चन्ददास कृत 'भक्त विहार' में मीराँबाई का उल्लेख (डॉ० शिवगोपाल मिश्र : व्रज भारती [त्रैमासिक] फाल्गुन सं० २०१४).

२. प्राचीन काव्य मंजरी पृ० ३६१-३६४। (सं : जेठालाल त्रिवेदी).

रतनसिंहजी की बेटी और मेड़ता के राव दूदाजी की पोती थी। इनका जन्म कुड़की नामक गाँव में संवत १५५५ और १५६० विक्रम के दर्मियान हुआ और उदयपुर के महाराणा सांगाजी के कुंवर भोजराज के साथ संवत १५७३ में ब्याही गई।

श्री परशुराम चतुर्वेदी भी मुन्शी देवीप्रसादजी द्वारा निर्धारित मीराँ का जन्मसमय और भोजराज के साथ उनका ब्याह मान्य करते हैं।[1] इस तरह अब मीराँ के राणा कुंभकर्ण के साथ के विवाह की (टॉड प्रचलित) बात कालक्रम से विपरीत और गलत मानी जाती है।

मद्रास की जि. ए. नेटसन कम्पनी द्वारा प्रकाशित वल्लभाचार्य नामक पुस्तिका में भी मीराँबाई का जन्म सन् १५०४ में, विवाह का समय सन् १५१६ और मृत्यु का वर्ष सन् १५५० बताया गया है। मुन्शी देवीप्रसाद और परशुराम चतुर्वेदी 'नरसीजी का माहेरा' को मीराँ की कृति मानते हैं। चतुर्वेदीजी ने तो माहेरा की प्रारम्भिक पंक्ति (क्षत्रीबंस जनम जानो, नगर मेड़तेवासी इत्यादि) पंक्तियों का उल्लेख कर कहा है कि मीराँबाई मेड़ता नगरनिवासी किसी क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुई राजकन्या थी।[2]

'मीराँबाई' शोध प्रबन्ध के लेखक डॉ० प्रभात ने अनेक प्रमाणों से निर्णय किया है कि मीराँबाई की जन्मतिथि संवत १५६१ श्रावन सुदि १ शुक्रवार थी।[3] मीराँ का विवाह संवत १५७३ विक्रमी में हुआ था और यह प्रसिद्ध है कि विवाह के समय मीराँ की आयु १३ वर्ष की थी। भोजराज का जन्म सं० १५५४-५५ या उसके पश्चात् हुआ होगा। इस तरह मीराँ और भोजराज की उम्र में लग-भग पाँच वर्ष का अन्तर उचित लगता है।

डॉ० प्रभात का कहना है कि मीराँ के जन्म आदि के लिये मेवाड़ की अपेक्षा मेड़ता के राजवंश के स्थानीय इतिहास को अधिक विश्वसनीय मानना चाहिये। मेड़ता के इतिहास का असंदिग्ध मत है कि मीरां दूदा के पुत्र रत्नसिंह की पुत्री थी और रत्नसिंहजी राव दूदाजी के चौथे पुत्र थे।[4]

---

१. मीरां की पदावली—भूमिका।

२. वही—भूमिका।

३. मीराँबाई (शोध प्रबन्ध) पृ० ११६।

४. वही पृ० १२४ और "जयमल वंश प्रकाश" पृ० ७१।

"राणाजी रे, दूदाजी नी वाई मीराँ वोलियां रे।[1]"

इस प्रसिद्ध उक्ति में मीराँ का दूदाजी की कुलपुत्री होने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। अतः मीराँ राव दूदाजी की पौत्री और रत्नसिंह की पुत्री थी, इस वात में कोई संदेह का कारण नहीं है।

मीराँ का नाम

मीराँ अर्थात् मीराँबाई का नाँव 'मेड़ताणी', मीराँ का असल नाम है या उपनाम है इस विषय में भी संदेह उठाया गया है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ० पीताम्वरदत्त वडथ्वाल ने यह संदेह उठाया था। मीराँ उपनाम है और यह शब्द आगे भारत में प्रचलित नहीं था, ऐसा उनका मत है।

कवीर द्वारा मीराँ शव्द ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। संस्कृत और फारसी में इसका अर्थ सागर होता है। परन्तु इस अर्थ से 'मीराँ' उपनाम या नाम का प्रादुर्भाव संभव नहीं है। किन्तु अरवी भाषा में अमीर शब्द का संकुचित रूप में 'मीर' का प्रयोग मिलता है। सैयदों के नाम के पूर्व 'मीर' शव्द प्रयुक्त होता है। यथा: 'शाह मीरांजी शम्सुल उश्शाक।' मीर का फारसी वहुवचन का रूप मीरां हुआ होगा। कवीर का इस शव्द का प्रभुवाचक प्रयोग भी इस प्रकार की व्युत्पत्ति को पुष्टि देता है।

इस तरह मीराँ की प्रभुभक्ति के कारण उसको गुरु द्वारा 'मीराँ' नाम मिला होगा ऐसा डॉ० वडथ्वालजी का कहने का तात्पर्य है। इस विषय में गुजराती के प्राचीन साहित्य के संशोधक श्री के० का. शास्त्री ने भी कुछ विचार किया है।[2] शास्त्रीजी देशभाषा के शब्द 'मिहिर' (सं० : सूर्य) और 'मइहर' (देश्य : गाँव का मुखिया) इन दो शब्दों से मीराँ शब्द की व्युत्पत्ति वनाते हैं। मिहिर-मिहिरा-मिइरा-मीरा इस क्रम से सूर्यवाचक 'मिहिर' शव्द से मीराँ की संभावना वताते हैं। मइहर-मइअर-मीअर-मीर इस क्रम से मुखिया-वाचक मइहर शव्द से भी मीराँ की व्युत्पत्ति शास्त्रीजी ने वताई है। मीर में नारीजाति का वाचक 'आं' प्रत्यय लगता है और मीराँ शव्द सिद्ध होता है।

---

१. मीराँवाई (मा. नि. महेता)।

२. कविचरित—पृ० १७०-१७२।

इस तरह 'मीराँ' शब्द गौरवशाली नाम या उपनाम का द्योतक बन जाता है। यह राजकन्या का विशेष नाम—व्यक्तिवाचक नाम भी बन सकता है। फारसी, अरबी से मीराँ की व्युत्पत्ति खोजने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। अतः मीराँ का असली नाम ही मीराँबाई मानना उचित होगा।[1]

जीवन वृतांत

अनेक विद्वानों ने मीराँ के पिता का नाम राव रतनसिंह माना है, यद्यपि प्रचीन ग्रंथों में माता-पिता दोनों में से किसी के भी नाम का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। इतिहासकारों के मतानुसार मीराँ के पिता की मृत्यु मीराँ के ब्याह और वैधव्य के बाद ही विक्रम संवत १५८४ में कनवा के युद्ध में हुई थी। किन्तु कुछ लोगों का मत है कि तीन वर्ष की अवस्था में पिता का तथा दस वर्ष की अवस्था में माता का देहान्त हो गया था।[2] 'भक्तमाल की टीका' में प्रियादास ने माता-पिता दोनों को विवाह के बाद तक जीवित माना है।

मीराँ-स्मृति-ग्रंथ में विद्यानन्द शर्मा लिखते हैं—"मीराँबाई की माता का नाम कुसुमकुंवर था। वे टांकनी राजपूतिनी थी। मीराँबाई के नाना केलनसिंहजी थे। तीन वर्ष की अवस्था में पिता तथा दस वर्ष की अवस्था में माता का देहान्त हो गया। उनका शेष अविवाहित काल अपने दादा राव दूदाजी के पास मेड़ते में बीता।" स्व० पुरोहितजी के अनुसार मीराँ की माता वीर कुंवरी और नाना सुलतानसिंह थे, जिनकी जाति झाला राजपूत थी।

मीराँ को जयमल की बहिन भी कहा गया है। किन्तु इतिहास के आधार पर यही मान्य है कि मीराँ अपने माता की एकमात्र संतान थी।[3] जयमल मीराँ के चाचा वीरमजी का पुत्र था। जयमल और मीराँ का बचपन का कुछ समय

---

१. 'मीराँ बृहत्पदावली' प्रथम भाग की भूमिका में स्व० हरिनारायणजी पुरोहित ने लिखा है कि मीराँ नाम सम्भवतः मीरां साहिब अजमेर (अजमेर) की मिन्नत के कारण रखा गया था।

२. सन्त चन्ददास कृत 'भक्त विहार' में मीराँबाई का उल्लेख (व्रज भारती : फाल्गुन सं० २०१४) पृ० ५.

३. वहीं पृ० ५.

कुड़की में या मेड़ते में साथ-साथ वीता होगा। जयमल की गिनती भी उच्च कोटि के भक्तों में होती है।[1]

अव हम प्रियादास का मीराँ चरित्र तथा चन्ददास कृत 'भगत विहार' के आधार से प्राप्त मीराँ की जीवनवृत्त का कुछ अवलोकन कर लें। चन्ददास कृत 'भगत विहार' के अनुसार मीराँ मानसिंह की वहिन थी। पाँच वर्ष की आयु से मीराँ ने गिरधरलाल के प्रति प्रीति वढ़ाना आरम्भ किया। सात वर्ष की आयु में उनके पिता ने राणा के पुत्र से व्याह कर दिया। जब माँ पुत्री को बिदा करने लगी तब मीराँ ने आभूषणों के वजाय गिरधरलाल की मूर्ति माँगी। ससुराल में जाकर मीराँ ने शारदा देवी के समक्ष मस्तक झुकाना अस्वीकार किया, क्योंकि मीराँ गिरधरलाल को ही अखिल वरदानी मानती थी।

सासु कहती है—

मम कुल रीति प्रीति सो कीजै, नाय सीस सारद वर लीजै।
तब मीरा हँसी गिरा वखानी।
मेरे नाथ अखिल बरदानी॥
गिरधरलाल दयाल जस गाऊँ।
अपर देव नहिं सीस झुकाऊँ॥[2]

सासु ने राणा से इस अवज्ञा की चर्चा की। राणा ने पुत्र के दूसरे विवाह को धमकी दी और मीराँ को एक पृथक् महल में रक्खा, जहाँ भक्त और वैरागी आने लगे।

साधुओं का घर में आना देख मीराँ की ननद उसे समझाने आई। किन्तु मीराँ ने एक न सुनी। तव राणा ने विप का प्याला भेजा। परन्तु विष मीराँ के लिए अमृत वन गया। फिर सेवकों को बुलाकर महल में सुनाई पड़नेवाले हास को जानने का आदेश दिया। अट्टहास सुनकर राणा स्वयं महल में घुसा। किन्तु घुसते ही वह हास वन्द हो गया। राजा लज्जित हुआ और भविष्य में साधुओं को आने से न रोकने लगा। एक वार एक विषयी साधु ने मीराँ की

---

१. कविचरित (के. का. शास्त्री)

२. चन्ददास कृत भक्त विहार (व्रज भारती : फाल्गुन संवत २०१४ पृ० ९)

मर्यादा नष्ट करनी चाही, किन्तु भगवान ने मीराँ की रक्षा की। बाद में वह मीराँ का शिष्य हो गया।

जब अकबर बादशाह ने मीराँ का यश सुना तो तानसेन को साथ लेकर वह मीराँ के घर आया। भगवान ने वृन्दावन का दृश्य उपस्थित कर दिया, जिसे देखकर शाह भ्रमित हो गया। जब तानसेन ने राग सुनाया तो मीराँ ने उसका सत्कार किया। बाद में मीराँ के भाई ने यह सुना तो राणा के यहाँ ब्राह्मण भेजकर मीराँ को बुला लेने के लिये कहा। वे मीराँ को लेकर चले आए।[1]

'भगत विहार' का यह वर्णन भक्तमाल की टीका (प्रियादास) से बहुत साम्य रखता है। प्रियादास ने विशेषरूप से मेरतो जन्मभूमि' का उल्लेख किया है किन्तु उसके बाद की सब घटनाएँ एकसी हैं। अन्त में प्रियादास ने राणा से न पटने के कारण द्वारावती भेजकर मीराँ को रणछोड़जी पर अर्पित कर दिया है। चन्ददास में इस प्रसंग का उल्लेख नहीं है।

चन्ददास ने मीराँ के भाई का नाम मानसिंह बताया है यह नोंधपात्र है। मीराँ के भाई का राणा को मना करें मीराँ को वापस घर ले जाने का प्रसंग भी चन्ददास द्वारा वर्णित हुआ है। मीराँ की वृन्दावन यात्रा का उल्लेख भी चन्ददास में नहीं है।

मीराँ के पति—युवराज भोजराज का अपने पिता के जीवनकाल में ही देहान्त हो गया। वैधव्य से मीराँ का वैराग्य बढ़ा और साथ में सौतेले देवर विक्रमादित्य का रोष भी बढ़ा। विक्रमादित्य को मीराँ की कृष्णभक्ति, साधु-समागम आदि एकलिंगजी शिव के उपासक चित्तौड़ के राजघराने की मर्यादा के प्रतिकूल लगे। अतः रुष्ट होकरु राणा विक्रमाजीत ने मीराँ को अनेक कष्ट दिए। फलस्वरूप मीराँ अपने काका विरमदेव के पास मेड़ते चली गई। प्राप्त मान्यताओं के आधार पर विक्रम संवत १५९० के आसपास ही मीराँ का मेवाड़ त्याग संभावित हुआ होगा।[2]

किन्तु मीराँ के मेवाड़-त्याग के अन्य कारण भी बताए जाते हैं। राजकीय परिस्थिति भी मीराँ के मेवाड़-त्याग में और मेड़ता-त्याग में कारणभूत बनी

---

१. वही पृ० ७

२ व्रज भारती—फाल्गुन संवत २०१४ पृ० ६.

होगी। मीराँ के मेड़ता आगमन के बाद मेड़ता के रावों और जोधपुर के राजा मालदेव के बीच झगड़ा चला। वीरमदेव की इस झगड़े में पराजय हुई थी और उसे मेड़ता छोड़ना पड़ा था। चित्तौड़ पर भी गुजरात के सुलतान बहादुरशाह का आक्रमण हुआ था (सं० १५८८) और विक्रमादित्य को पराजित होकर चित्तौड़ छोड़ना पड़ा था। संवत १५९२ में वनवीर नामक राजसेवक ने विक्रमादित्य को मार डाला और चित्तौड़ का राज्य हस्तगत किया।[1]

इस तरह की कठिन परिस्थिति में मीराँ के लिये नैहर में और श्वसुरगृह में कोई आश्रय का स्थान न रहा। अतः आपको तीर्थाटन ही करना पड़ा।[2] मीराँ की इस स्थिति का चित्र निम्नलिखित पंक्तियों में मिलता है—

अब तो मेरे रामनाम दूसरा न कोई।
मात छोड़ी पिता छोड़े, छोड़े सगा भाई॥

मीराँ के पद के अनुसार तो मीराँ मेवाड़ से पश्चिम में अर्थात् द्वारिका गई होंगी। यथा:—

सांढवाला सांढ सणगारजे रे, जावुं सो सो रे कोश।
राणाजी ना देशमां रे मारे, जल रे पीवानो दोस॥
डावो मेल्यो मेवाड़ रे, मीराँ गई पश्चिम मांय।
सरव छोड़ी मीराँ नीसर्या, जेनुं माया मां मनडुं न कांय॥

श्री ओझाजी का कथन है कि मीराँ वृन्दावन गई ही नहीं। किन्तु मुन्शी देवीप्रसाद ने मीराँ की वृन्दावन यात्रा दो बार मानी है। व्रजभाषीय पदावली के आधार पर भी मीराँ का कुछ समय वृन्दावन में ठहरना युक्तियुक्त लगता है।

पुष्ट मान्यताओं के आधार पर मानना उचित होगा कि मीराँ का शेष जीवन द्वारिका में श्री रणछोड़जी के सानिध्य में हरिभजन में बीता था।[3] मीराँ का द्वारिका में देहान्त होना भी सर्वमान्य है।

---

१. कविचरित पृ० १८१-१८२।

२. मीराँ की पदावली—भूमिका।

३. कविचरित पृ० १८६।

एक प्रश्न

यहाँ शोध-रसिक विद्वानों के लिये हम एक प्रश्न रख देते हैं। भोजराज को अनेक विद्वानों ने मीराँ का पति मान लिया है। किन्तु कुछ लोगों का कहना है कि इतिहास की परम्परा अनुसार भोजराज मीराँ के फुफेरे भाई सिद्ध होते हैं। फिर मीराँ के साथ उसका विवाह किस तरह हुआ होगा।[१]

राठौड़ वंश का यह वंशवृक्ष देखिये —
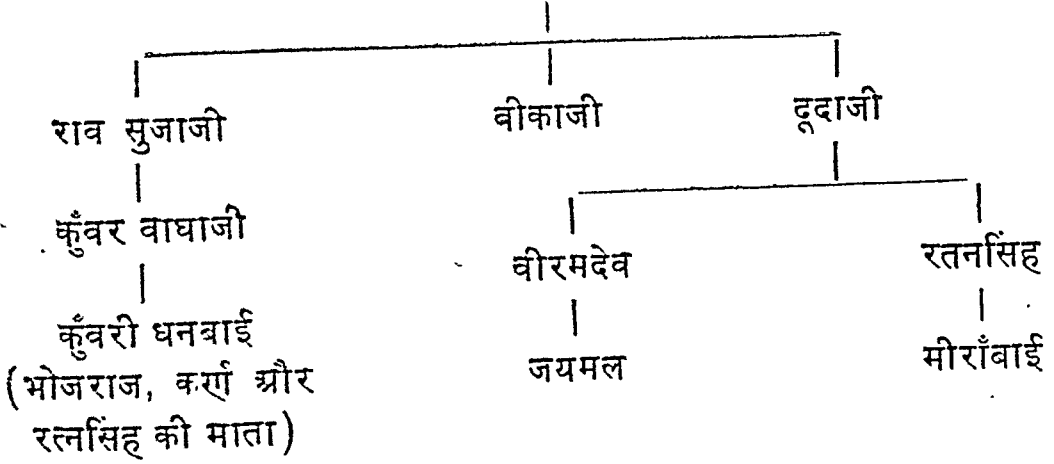
वाघाजी की पुत्री धनबाई इस वंशावली के आधार पर मीराँ की पित्राई बहिन लगती है। पित्राई बहिन के पुत्र भोजराज के साथ क्या मीराँ का विवाह सचमुच हुआ होगा ? प्रश्न चिन्तनीय है।

मीराँ की ननद का नाम ऊदाबाई बतलाते हैं। भाभी की साधु-सेवा छुड़ाने का निष्फल प्रयास ऊदाबाई ने किया था। प्रचलित पदों से इस बात का हमें परिचय होता है। किन्तु इतिहास के अनुसार भोजराज की चार बहिनें थीं। (१) कुँवरबाई, (२) पद्मा, (३) गंगा और (४) राजबाई। भोजराज की बहिनों में ऊदा का नाम नहीं मिलता है।[३]

इतिहास के आधार पर ऊदाबाई की खोज करने से भी कुछ न कुछ प्रकाश कदाचित् मिलेगा।

---

१. ब्रजभारती (त्रैमासिक फाल्गुन सं० २०१४) पृ० ५।

२ बृहत काव्य दोहन भा० ७ (प्रस्तावना) के आधार।

३. ब्रजभारती फाल्गुन सं० २०१४।

कुछ जनश्रुतियाँ

मीराँवाई के विषय में अनेक जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। इन सब जनश्रुतियों की चर्चा करने का हमारा इरादा नहीं है। मीराँ के जीवनकाल की चर्चा में संदिग्धता लानेवाली कुछ जनश्रुतियों की ही हम यहाँ आलोचना करेंगे।

(१) **अकबर और मीराँ :—** जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि प्रियादास और चन्ददास अपने चरित्रों में मीराँ के साथ अकबर वादशाह और तानसेन की चित्तौड़ में हुई भेट का वर्णन देते हैं। यह वर्णन जनश्रुति पर ही आधारित है। इतिहास से यह अप्रमाणित है।

अकवर का जन्म सन् १५४२ (संवत १५९८) में हुआ था और राज्यारोहण सन् १५५५ (संवत १६११) में हुआ था। मीराँ ने मेवाड़ संवत १५९० के आस-पास छोड़ दिया था और अकवर का तव जन्म भी नहीं हुआ था। संवत १५९३ के आस-पास तो मीराँ ने द्वारिका में निवास किया था। वहाँ अकवर-तानसेन की कोई जनश्रुति प्रचलित नहीं है अथवा इतिहास में भी कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

इस तरह विद्वानों ने इस जनश्रुति को कल्पित मान लिया है। इस कल्पित घटना के आधार पर मीराँ को समयच्युत करने का कोई कारण नहीं है।

(२) **तुलसीदास और मीराँ :—** श्वसुरगृह में मीराँ को कृष्णभक्ति के कारण अनेक कष्ट हो रहे थे। विषप्रयोग भी किये गए। इस परिस्थति में मीराँ ने मार्गदर्शन के लिये तुलसीदासजी को पत्र लिखा था ऐसी जनश्रुति प्रचलित है।

जनश्रुति के अनुसार यह पद्यमय पत्र निम्नलिखित रूप में था—

"स्वस्ति श्री तुलसी गुणभूषण दूषणहरण गुंसाइ।
वार हि वार प्रणाम करत हौं, हरहु शोक समुदाइ॥

घर के सजन हमारे जे ते, सवन उपाधि वढाइ।
साधुसंग अरु भजन करत मोहिं, देत कलेस महाइ॥

....

मेरे मात-पिता के सम हो, हरिभक्तन सुखदाई।
हमको कहा उचित करिवो हैं, सो लिखिये समुझाई॥[1]"

---

१. तुलसीदास (जेठालाल त्रिवेदी) पृ० ४४।

गोस्वामीजी ने मीराँ के पत्र के प्रत्युत्तर में इस तरह लिखा—

"जिनके प्रिय न राम वैदेहि।
तजिये ताहि कोटी वैरी सम, जद्यपि परम सनेही ॥
तात मात भ्राता सुत पति हित, इन समान कोउ नाहीं।
रघुपति विमुख जानि लघुतृण इव, तजन सुकृत डराहीं ॥
....
अंजन कहा आंखि जेहि फूटइ, वहु तक कहउ कहाँलौ।[१]"

कहते हैं कि इस मार्गदर्शन से मीराँ का मन दृढ बना और उसने मेवाड़ का त्याग कर दिया।

इस प्रकार एक रोचक कहानी बनाई गई है। किन्तु ऐतिहासिक कालक्रम से देखा जाय तो मीराँ और तुलसीदास के बीच पत्र-व्यवहार असंभवित था। क्यों कि गुंसाई तुलसीदास सन् १५३३ (संवत १५८९) में पैदा हुए और यदि मीराँबाई के देहान्त का समय सन् १५४६ (सवत १६०२) में माना जाय तो उस समय गुँसांईजी की आयु चौदह वर्ष की होती है।[२] यह आयु गुँसांईजी की भक्ति और प्रसिद्धि की किस प्रकार मानी जाय? तुलसीदासजी के जन्म के प्रारंभिक वर्षों में तो मीराँ ने मेवाड़ का त्याग भी कर दिया था। फिर तुलसीदासजी को पत्र क्यों और किस तरह लिखा जा सकता है?

उपरोक्त कारणों से मीराँ और तुलसीदास के बीच पत्र-व्यौहार संभवित नहीं था, ऐसा अनेक विद्वानों का मत उचित ही है। मीराँ के पत्रवाला पद कृत्रिम है। तुलसीदासजी के प्रत्युत्तर रूप में जो पद बताया जाता है उसमें कहीं पर भी मीराँ का नामोल्लेख नहीं है। उक्त पद सामान्य भाव से प्रभु भक्ति हेतु लिखा गया पद है।

(३) **नरसी मेहता और मीराँ:**— कुछ समय से एक नयी जनश्रुति का जन्म हुआ है। इस श्रुति के अनुसार नरसी मेहता और मीराँबाई के बीच पत्र-व्यौहार होने की घटना वर्णित हो रही है।

---

१. तुलसीदास (जेठालाल त्रिवेदी) पृ० ४५।

२. 'मीराँबाई की शब्दावली' (बेल वेडियर प्रेस : प्रयाग)।

सन् १९५५ में "समाज विकास माला" में "नरसी मेहता" नामक एक पुस्तक प्रकट हुई है। उसके लेखक को कहाँ से पता चला कि नरसी मेहता और मीराँबाई के बीच पत्र-व्यौहार हुआ था। इस किंवदन्ती के आधार रूप में नरसी मेहता के निम्नलिखित पद का उल्लेख किया गया है—

नारायणनुं नामज लैतां, वारे तेने तजिये रे।
मनसा वाचा कर्मणा करी ने, लक्ष्मीवर ने भजिये रे॥
कुलने तजिये कुटुम्वने तजिये, तजिये माने बाप रे।
भगिनी सुत दारा ने तजिये, जेम तजे कंचुकी साप रे॥
....
व्रजवनिता विठलने काजे, सरव तजी वन चाली रे।
भणे 'नरसैंयो' वृन्दावन मां, ते तो घणुं म्हाली रे॥[1]

इस पद में मीराँ का नामोल्लेख नहीं है। सामान्य रूप से भक्ति में वाधा डालनेवालों का त्याग करने का उपदेश मात्र है। भगिनि, सुत आदि का त्याग करने को भी कहा है, जो मीरां से कुछ सम्बन्ध नहीं रखता है।

यों तो गुजराती के कवि दयाराम ने भी लिखा है—

'हरिने भजतां रे वारे, तेने तरत तजो।
....
जननी भरत जनक प्रल्हादे, तज्यो विभीषण भ्रात॥[2]"

कवि हरिभजन में रुकावट करने वालों का त्याग करने को कहता है। इससे क्या हम ऐसा मान लेंगे कि यह पद मीराँ से सम्वन्धित या सम्वोधित है? नहीं, क्यों कि ऐसे पद अनेक भक्त कवि सामान्य भाव से लिखते रहते हैं। ऐसे पदों को मीराँ के किसी पत्र का प्रत्युत्तर मान लेना पूर्वग्रह का ही द्योतन है।

इस नयी प्रचार में आई हुई जनश्रुति का खण्डन करना आवश्यक है। ऐसा न किया जाय तो कुछ समय के वाद ऐसी श्रुतियाँ इतिहास के अध्ययन में अनेक भ्रम खड़े कर देंगी।

---

१. नरसी मेहताकृत काव्यसंग्रह पृ० ४९२।

२ 'दयारामनां भजनो' पृ० ३३।

मीराँबाई का तीर्थाटन— द्वारिका-निवास

ऊपर 'भगत विहार' के आधार पर बताया गया है कि मीराँ को उसके भाई ने ब्राह्मण भेज कर मेड़ता बुला लिया था। किन्तु वहाँ भी मीराँ की साधु-संगत और गिरधर के सन्मुख नृत्य करना आदि रीतमात किसी को रुचिकर न हुई। अतः साधु सन्तों के आगमन पर कुछ नियमन नैहरवालों ने भी रखा होगा। मीराँ के लिये यह असह्य था और उसने मातृभूमि अर्थात् मेड़ता का भी त्याग किया।[1]

मीराँ के मेड़ता त्याग के बाद मेड़ता पर बड़ी आपत्ति आई। मेड़ता के राव (मीराँ के चाचा) वीरमदेव का जोधपुरपति मालदेव के साथ संघर्ष हुआ। प्रथम संवत १५८८ में युद्ध हुआ और वीरमदेव की पराजय हुई। वीरमदेव भाग कर अजमेर गया। वहाँ से हुमायुं की सहायता लेकर मेडता पुनः हस्तगत किया। संवत १६०० में वीरमदेव के अवसन के बाद जयमल को मेड़ता का अधिकार मिला। जयमल को भी जोधपुर के राजा ने परास्त किया और मेड़ता निर्जन बनाया गया। अन्त में जयमल को चित्तौड़ जाकर आश्रय लेना पड़ा।[2]

मेवाड़ में भी वहादुरशाह का आक्रमण और बाद में विक्रमादित्य की हत्या आदि घटनाओं से अशांति फैल रही थी। इस तरह मीराँ के लिये कोई स्थिर आश्रयस्थल न रहा। तीर्थाटन ही मीराँ का आश्रयस्थल बन गया।[3]

वि० संवत १५८८ के बाद मीराँ मेवाड़ अथवा मारवाड़ (मेड़ते) में नहीं थी। इन दिनों में वृन्दावन में कृष्णभक्ति का अपूर्व उत्साह फैल गया था। गौरांग, वल्लभ आदि के सम्प्रदायों ने यहाँ अपने केन्द्र बना लिये थे। भारत भर के साधु, सन्त, भक्त आदि वृन्दावन की यात्रा करते थे। मीराँ भी वृन्दावन गई होगी और कुछ समय वहाँ पर ठहरी होगी।

मीराँ वृन्दावन में गौरांग (चैतन्य) के अनुयायी जीव गोस्वामी से मिली थी ऐसी कथा प्रचलित है। जीव गोस्वामी का देहावसान श्री के० का० शास्त्री

---

१. कविचरित पृ० १८१ और वृहत काव्यदोहन भा० ७ की प्रस्तावना पृ० २३।

२. कविचरित पृ० १८२।

३ मीराँ की पदावली—भूमिका।

संवत १५८६ में मानते हैं।[1] अतः संवत १५८६ के आस-पास मीराँ के वृन्दावन-गमन की कल्पना हम कर सकते हैं। इस तरह मीराँ और जीव गोस्वामी की मुलाकात एक ऐतिहासिक घटना हो सकती है।

वृन्दावन में मीराँ कब तक ठहरी यह जानने का कोई विश्वस्थ प्रमाण नहीं मिला। मुन्शी देवीप्रसाद के अनुसार मीराँ ने दो बार वृन्दावन की यात्रा की थी।

मीराँबाई का अन्तिम जीवन रणछोड़जी की छाया में द्वारिका में बीता था इस बात में प्रायः सर्व विद्वान सहमत हैं। मीराँबाई के द्वारिका धाम में जाने का चोक्कस वर्ष पाया जाता नहीं है। किन्तु डॉ० प्रभात का कथन है कि संवत १५९२ तक मीराँबाई व्रज में थी।[2] द्वारिका पहुँचने में एक आध वर्ष बीतना सरल ही था। अतः वे मीराँ का द्वारिका-गमन संवत १५९३ के आस पास मानते हैं। इस मान्यता का भी कोई ठोस आधार उन्होंने नहीं बताया है।

मीराँ ने संवत १५८८ से १५९० के बीच मेवाड़ त्याग किया था ऐसी मान्यता है। मेड़ते में संवत १५८८ से ही जोधपुर नरेश के साथ युद्ध की परिस्थिति बनी हुई थी। अतः संवत १५८८ के बाद मीराँ का मेड़ता निवास भी सम्भवित नहीं है। फिर संवत १५८८ से १५९२ तक का मीराँ का व्रजवास मान लेना सयुक्तिक नहीं है। श्री के० का० शास्त्री के कथन अनुसार मीराँ का संवत १५८८ के आस-पास में ही द्वारिका गमन मानना और बीच-बीच उसने वृन्दावन आदि की यात्रा की होगी ऐसा मानना युक्तियुक्त लगता है[3]

मीराँ के अनेक गुजराती पद राजस्थान और उत्तर प्रदेश तक प्रचलित हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि मीराँ का गुजरात (द्वारिका) निवास दीर्घकालीन होगा। कम से कम दस वर्ष तो यहाँ बीत ही गये होंगे।

"बंसीवाला आजो मोरा देश,
आजो मोरा देश, हो बसीवाला आजो मोरा देश।
तोरी सामली सुरत हद वेश, बंसीवाला आजो मोरा देश ।।टेक।।

---

१. कविचरित पृ० १८३।

२ मीराँबाई (शोध प्रबन्ध) पृ० २२९।

३. कविचरित पृ० १८६।

आवन आवन कह गये, कर गये कोल अनेक।
गणतां गणतां घस गई जी, माहारी आंगली ओनी रेख ।।बंसी०।।
एक वन ढूंढो सकल वन ढूंढी, ढूँढो सारो देश।
तोरे कारण जोगण होऊँगी, करुंगी भगवो वेश ।।बंसी०।।
....
मोर मुगट शीरछत्र विराजे, गुगरवाला केश।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, आवोनी एणे वेश ।बंसी०।।"

यह पद मारवाड़ी में भी पाया जाता है—

'वंसीवारो आयो म्हारे देस, थारो सांवरी सुरतवाली भेख।
आऊँ आऊँ कर गया सांवरा, कर गया कौल अनेक।।
गिनते गिनते घिस गई उंगली, घिस गइ उंगली की रेख।
मैं वैरागिनि आदि की, थोरे म्हारे कद को संदेश।।
....
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, घूँघरवाला केश।
मीराँ के प्रभु गिरधर मिल गये, दूना बढ़ा सनेह ।।[1]

मीराँ जैसी अति लोकप्रिय भक्त कवियित्री के पद कंठ परम्परा से बहुत रूपान्तरित हो गये होंगे तो भी कतिपय विशिष्ट शब्द समूह, भाव और भाषाकीय लढण नहीं बदल पाये। उपरोक्त पद के उभय स्वरुपों में मारवाड़ी लोकगीत का एक भाव समान रूप से दृष्टिगोचर होता है।[2] 'घूंघरवाला केश' प्रयोग भी

---

१. हिन्दी सा० वि० इतिहास पृ० १५३।

२. मारवाड़ में प्रचलित निहालदे सोढ़ा का लोकगीत वड़ा हीं मनोहर है। उसमें मीराँ कथित यह भाव निर्दिष्ट हुआ है—

"आवण आवण कह गयो रे ढोला, कर गयो कवल अनेक।
कर गयो कवल अनेक ।।
अव घर आय जा वरसा रुत भली होजी ।।१४।।
दिन डा तो गिण गिण ढोला, घिस गई मारी आंगलियाँ,
फाहां आँगलियाँ री रेख हो जी ढोला।
अब घर आय जा फूल गुलाब रा होजी ।।१५।।
—मारवाड़ के मनोहर लोकगीत (रामनरेश त्रिपाठी) पृ० ४४-४५।

ध्यानपात्र है। इस शब्द का प्रयोग गुजराती के मध्यकालीन कवि भालरण (वि० सं० १४६१-१५४५) में भी पाया जाता है।[1] मीराँ द्वारिकानिवास के समय नरसिंह मेहता के अतिरिक्त भालरण की रचनाओं के सम्पर्क में भी आई होंगी ऐसा डॉ० प्रभात का भी मन्तव्य है।[2]

मीराँ का देहोत्सर्ग

मीराँबाई के द्वारिकानिवास के बाद मेवाड़ में क्रमशः कुछ शांति का वातावरण फैला। सन् १५४० (संवत १५९६) में विक्रमादित्य के छोटे भाई उदयसिंह ने वनवीर को मार डाला और चित्तौड़ पुनः हस्तगत किया।[3] जयमल राठौड़ जो सम्भवतः चित्तौड़ रहा था उसने मीराँबाई को चित्तौड़ बुलाने की प्रेरणा उदयसिंह को दी होगी। अत. उदयसिंह ने भक्तिपरायण बड़ी भावज मीराँ को समझा कर चित्तौड़ लाने के लिये राजपुरोहितों के एक दल को द्वारिका भेजा।

चित्तौड़ लौटने के आमन्त्रण से मीराँ के मन में कुछ भी उत्साह नहीं प्रगटा। रणछोड़जी की छत्रछाया को छोड़ कर चित्तौड़ जाने की मीराँ की इच्छा न थी। विक्रमादित्य के राजत्वकाल में जो कष्टमये अनुभव मेवाड़ में हुए थे, इनके पुनरावर्तन की शंका भी मीराँ के मन में रही होगी। मीराँ ने द्वारिका छोड़ कर मेवाड़ लौट आने का इनकार कर दिया।

पुरोहितों ने कहा कि यदि मीराँबाई मेवाड़ नहीं चलेंगी तो वे लोग द्वारिका में ही अनशन करेंगे। ब्राह्मणों की अनशन की बात से मीराँ का हृदय हिल गया। मीराँ के लिये बड़ी कठिन समस्या खड़ी हुई। मार्गदर्शन के लिये वह अपने इष्ट रणछोडजी से प्रार्थना करने लगी। रणछोड़जी ने उसे मेवाड़ जाने की संमति नहीं दी। रणछोड़जी ने उन्हें अपने में समा लिया।

---

१. देखिये : जेठालाल त्रिवेदी सम्पादित 'भालणनां पद' पृ० ६७ ("शिर पर घूघरियाला घूमता घूमता केश फरके")।

२ मीरांबाई (शोध प्रवन्ध) पृ० ५१६।

३. मीरांबाई पदावली—भूमिका।

कहा जाता है कि मीराँ सवेरे उठकर स्नान कर के मन्दिर में कीर्तन करती थीं। अन्तिम दिन भी वे उठीं और उसके पश्चात् पता यह लगा कि मीराँ सशरीर परलोक सिधार गई। भक्तों ने कहा "रणछोड़जी ने उन्हें अपने में समा लिया।"

इस घटना की लौकिक और तर्कसंगत व्याख्या से यह सकेत मिलता है कि मीराँ मन्दिर में पूजा के लिये गई और वहाँ से कहीं अदृश्य हो गई। बाद में उनका कहीं पता नहीं लगा।

कदाचित् सागर की विशाल उदार जलराशि ने उन्हें सशरीर इहलोक के पार उतार कर रणछोड़ के अनन्त अलौकिक परलोक में प्रविष्ट करा दिया। सशरीर लुप्त हो जाने से यही ध्वनित होता है।[1]

मीराँ के देहोत्सर्ग के समय के विषय में कोई विश्वसनीय प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मेड़ता के चतुर्भुजजी के मन्दिर में मीराँबाई की जो मूर्ति डीडवाना के मगनीराम रामकुमार बाँगड़ द्वारा स्थापित कराई गई है, जिसमें उनका निर्वाण-काल संवत् १५०७ दिया गया है। इस वर्ष का आधार भाटों में प्रचलित अनुश्रुति ही है। अतः अन्य प्रमाणों से भी अनुमान लगाना आवश्यक है।

मीराँ को सम्भवतः उदयपुर बुलानेवाले राणा उदयसिंह का भी सं० १६२८ में देहान्त होता है। इससे मीराँ का देहान्त उदयसिंह के राज्यकाल में संवत् १६२४ के पूर्व में ही हो सकता है। संवत् १६२४ में चित्तौड़ के संग्राम में जयमल की मृत्यु हुई थी।[2] अतः इसके पूर्व ही मीराँ का मेवाड़ आमन्त्रण और देहोत्सर्ग की घटना घटी होगी।

इस प्रकार मीराँ की मृत्यु की परवर्ती सीमा संवत् १६२४ के पूर्व मानी जा सकती है। मीराँ की मृत्यु की दूसरी सीमा डॉ० प्रभात के अनुसार संवत् १५९३ है क्योंकि वे मीराँ का द्वारिका आगमन सं० १५९३ में मानते हैं।

गुजराती कवि विष्णुदास कृत 'कुंवरबाई नु मोसालु' में मीराँ के विष अमृत' होने की घटना का उल्लेख है। अतः मीराँ की मृत्यु-तिथि मोसालु के

१. मीराँबाई (शोध प्रबन्ध) पृ० २२४।

२. कविचरित पृ० १८२।

रचनाकाल के पूर्व मानना तर्कसंगत होगा। गोसालु का रचनाकाल श्री के० का० शास्त्री ने संवत् १६२४-२८ का माना है।[1] यह वास्तव में मीराँ की परवर्ती-सीमा संवत् १६२४ मानने के अनुमान को पुष्ट करती है।

अब प्रश्न होगा कि संवत् १५९३ और संवत् १६२४ के बीच मीराँ की मृत्यु कब हुई होगी।

श्री परशुराम चतुर्वेदी ने मीराँ की मृत्यु सन् १५५० (संवत् १६१६) में मानी है। मद्रास से प्रकाशित वल्लभाचार्य पुस्तिका में भी मृत्यु का वही[2] वर्ष दिया गया है।

डॉ० प्रभात ने मीराँ का निधनकाल संवत् १६१० से १६१३ के बीच माना है।[3]

एक अन्य मीराँबाई

मीराँबाई के आदर्श के अनुसार प्रभुभक्ति में मग्न बननेवाली विधवा या भक्ता को भी गुजरात में 'मीराँबाई' उपनाम देने की एक प्रणाली है। इस तरह परवर्तीकाल में कितनी ही मीराँबाई बनी होंगी। इनकी रची पदावलियाँ भी होंगी।

प्राचीन गुजराती-साहित्य के अभ्यासी स्व० छगनलाल वि० रावल ने एक अन्य मीराँबाई का पता लगाया है। वह आजन्म कुमारिका थी। बांसवाड़ा के पास के एक गाँव में उसका निवास था। उस मीराँबाई के पदों का गुटका बांसवाड़ा के प्रणामी-पंथ के एक मन्दिर में है।[4] डूंगरपुर की नागर कवयित्रि गवरीबाई के ऊपर भी मीराँ का प्रभाव पड़ा है। उसे भक्तजन मीराँ का अवतार मानते हैं। बांसवाड़ा, गुजरात और राजस्थान की सीमा पर होने से इस मीराँ की भाषा भी मारवाड़ी और गुजराती के मिश्रण स्वरूप है। इस दूसरी मीराँ के अनेक पद मेड़तणी मीराँ के पदों में शामिल हो गए होंगे। यह भी एक नयी खोज का विषय है।

---

१. कविचरित पृ० ३२८।

२. मीराँ की पदावली—भूमिका।

३. मीराँबाई (शोध प्रबन्ध) पृ० २३०।

४ कविचरित (पृ० १७२ की पाद टीका)।

भीलवाड़ा की मीराँ प्रकाशन समिति जैसी संस्थाओं के लिये यह खोज वहुत रसप्रद होगी।

मीराँ की साधना

'प्रेमपियासी' मीराँ के जीवनाधार गिरधारी श्रीकृष्ण थे। उनके प्रेम में अपनी जान न्यौछावर कर वह प्रेम की जोगन बनी थीं। प्रियतम कृष्ण का तनिक सा विरह भी उसे असह्य था। यथा—

"रमैया विन निंद न आवे।
नींद न आवे विरह सतावे, प्रेम की आंच ढुलावे ।।टेक।।
बिन पिया जोत मंदिर अँधियारो, दीपक दाय न आवे।
पिया विन री सेज अलूनी, जगत रैण बिहावे ।।
.... पिया कब रे घर आवे ।।
कहा करु कित जाऊँ मोरी सजनी, देदन कुण बतावे।
बिरह नागण मोरी काया डसी है, लहर-लहर जिव जावे ।।
.... जड़ी घस लावे।[1]

राधास्वरूप श्री चैतन्य महाप्रभु सखी भाव से श्रीकृष्ण की भक्ति करते थे। चैतन्य का काल संवत् १५४२-१५९० माना जाता है।[2] चैतन्य द्वारा प्रचलित सखी-भाव की भक्ति का प्रभाव मीराँ पर पड़ा होगा। जीव गोस्वामी से वृन्दावन में मीराँ की गोष्ठी भी इसी बात को पुष्ट करती है।

चैतन्यदेव का सखी-भाव सहजिया वैष्णव सम्प्रदाय से प्रभावित हुआ था ऐसी विद्वानों की मान्यता है। सहजिया सम्प्रदाय भी बौद्ध सहजयान मार्ग से प्रभावित हुआ था। सहजिया मत ईश्वर को माधुर्य और सौन्दर्य का निकेतन मानता है। वे लोग रागानुगा भक्ति के अनुयायी हैं।[3] बंगाल के विद्वान् श्री खगेन्द्रनाथ मित्र मीराँ के प्रेमधर्म का मूल सहजिया मत में बताते हैं। ऐसा न होता तो शिवोपासक-राजस्थान में मीराँ द्वारा श्री कृष्ण की मधुर भक्ति का

---

१. मीराँ की पदावली (श्री सदानन्द भारती)।

२. बंगाली साहित्य नो इतिहास।

३. भागवत सम्प्रदाय (लेखक : बलदेव उपाध्याय)।

प्रचलन एक आश्चर्यजनक घटना हो जाती। श्री मित्र का कहना है कि सहजिया पंथवाले मीराँ को अपने दल में मानते हैं। श्री मित्र ने मीराँ का एक गीत दिया है—

नित नाहने से हरि मिले तो जल-जन्तु होई।
फल मूल खा के हरि मिले तो वादुड़ बांदराई॥
तिरण भक्षण से हरि मिले तो वहुत मृगी अजा।
स्त्री छोड़ के हरि मिले तो वहुत रहे हम खोजा॥
दुध पी के हरि मिले तो, वहुत वत्स वाला।
मीराँ कहे बिना प्रेम से, नां मिले नन्दलाला॥[1]

इस पद के भाव सहजिया मत में प्रचलित एक प्राचीन दोहे में मिलते हैं। श्री मित्र ने दूसरी बात यह बताई है कि 'मीराँबाई यरे करचा' नामक जो पुस्तिका कलकत्ता (बटतला) में मिलती है वह सहजिया मतवालों ने प्रचलित की होगी। यह ग्रन्थ मीराँ के नाम से किसी आधुनिक लेखक द्वारा लिखा गया है। उस ग्रन्थ में भी मीराँ का उपर्युक्त पद दिया गया है।[2]

गुजराती के उपन्यासकार और आलोचक श्री दर्शक के मतानुसार नाथ-सम्प्रदाय के तांत्रिकों के साथ मीराँ का कुछ सम्बन्ध रहा होगा। जोगियों से सम्बोधित मीराँ के पदों में यह भाव प्रकट होता है ऐसा श्री दर्शक का अभिप्राय है।[3] हमारे नम्र मत से तो गिरधरलाल ही मीराँ के नाथ और जोगी हैं।

श्रीमती पद्मावती 'शबनम' भी मानती हैं कि तत्कालीन राजस्थान, नाथ-पंथ और सन्त-मत दोनों से ही प्रभावित था। अतएव मीराँ के पदों पर भी दोनों का प्रभाव पड़ना अत्यधिक स्वाभाविक था।[4] जिन पदों में जोगी वेशभूषा को अपनाने की वा 'जोगण' वनने की व्याकुलता की अभिव्यक्ति हुई है वे अधिकतर राजस्थानी भाषा में हैं, परन्तु कबीर या सन्त मत का प्रभाव इंगित करनेवाले पद अधिकांश व्रज भाषा में हैं।

---

१. वंगाली 'प्रवासी' मासिक : श्रावण १३४१ पृ० ६०६।

२. वही पृ० ६०४।

३. मीरांबाई नां पदों (सम्पादक : भूपेन्द्र बालकृष्ण त्रिवेदी)।

४. मीरां एक अध्ययन (शवनम) पृ० १११।

परन्तु आश्चर्यजनक तो यह कि 'जोगण' बनने को उत्सुक मीराँ हठयोग की 'जोगी' साधना पद्धति का विरोध भी करती है—

"जोगी होय जुगति नहीं जाणो।
उल्टी जनम फिर आसी॥"

तो क्या मीराँ के जीवन के भिन्न-भिन्न स्तबकों में भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ा होगा? अथवा तो श्रीमती शबनम के शब्दों में कहा जाय तो मीराँ की महानता और सर्वप्रियता के कारण विभिन्न सम्प्रदायवालों ने मीराँ के नाम पर अपने-अपने सम्प्रदाय के पद चला दिये हों।[1] कुछ भी हो, विद्वानों का मत है कि सूफी ढंग की प्रेम-साधना और चैतन्य की कीर्तनशैली को आत्मविभोर करनेवाली प्रेमाभक्ति का मीराँ पर कम प्रभाव न था।[2]

मीराँ के प्रामाणिक पदों के चुनाव के बाद ही इस तरह के अनेक प्रश्नों का निराकरण सरल होगा। प्रामाणिक पदसंग्रह का कार्य बहुत कठिन है। कठिन भले हो, अशक्य नहीं है।

श्री परशुराम चतुर्वेदी का कथन है कि मीराँ की स्वतन्त्र आत्मा को किसी प्रकार साम्प्रदायिक घेरे में बांधने का प्रयत्न सरल नहीं है। उनकी साधना भी उस कोटि तक पहुँची हुई प्रतीत होती है जहाँ किसी संकीर्ण घेरे की कोई उपयोगिता ही नहीं है।[3]

मीराँ की रचनाएँ

मीराँबाई के समकालीन और परवर्ती सन्तों ने मीराँ के नाम से पद रचना कर मीराँ की कविता दूषित कर दी है।[4] मीराँ के निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाश में आए हैं।

१. गीत गोविन्द की टीका। २. नरसीजी का माहेरा। ३. फुटकर पद। ४. राग सोरठ के पद। तदुपरांत 'रुकमणी मंगल' भी मीराँ की कृति कही जाती है।

---

१. मीराँ एक अध्ययन (शबनम) पृ० ११२।

२. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास (प्र० : हिन्दी भवन, इलाहाबाद) पृ० १९४।

३. मीराँबाई एक अध्ययन—भूमिका (ड)।

४. हिन्दी साहित्य का इतिहास (डा० रामकुमार वर्मा) पृ० २०५।

हमारा उद्देश्य यहाँ 'नरसीजी के माहेरो' का परिचय देने से है। गुजरात के भक्तराज नरसी मेहता की पुत्री के यहां भात भरने सांवलशाह (श्रीकृष्ण) पधारते हैं। इस प्रसंग को लेकर मीराँबाई ने भक्त और भगवान की महिमा गाई है।

मीराँ की तरह गुजराती में विष्णुदास, विश्वनाथ, प्रेमानन्द आदि कवियों ने माहेरा लिखा है। हिन्दी में भी वसंत, रतना खाती आदि ने माहेरा लिखा है। इन माहेरों का परिचय परिशिष्ट में दिया गया है।

'नरसीजी रो माहेरो' मीराँ कृत है या नहीं, इस विषय में कुछ मतभेद हैं। अत: अब हम इस प्रश्न की चर्चा करेंगे।

'नरसीजी रो माहेरो' का कर्तृत्त्व

डॉ० प्रभात ने अपने 'मीराँबाई' (शोध प्रबन्ध) में 'नरसीजी रो माहेरो' मीराँ कृत नहीं है ऐसा मत प्रदर्शित किया है। इसलिए डॉ० प्रभात के उक्त मत की विस्तृत आलोचना यहाँ आवश्यक है। उनकी दलीलों का क्रमश: सारांश देकर साथ ही साथ हमारा मत भी प्रदर्शित करेंगे।

(१) डा० प्रभात का कथन है कि नरसिंह के काल की मर्यादा श्री क. मा. मुन्शी संवत् १५६१ से पूर्व और संवत् १६६० से परवर्ती नहीं मानते हैं। माहेरो की कथा नरसी के वृद्धापन की कथा है जो उक्त मतानुसार किसी भी हालत में संवत् १६१६-२० के पहले की नहीं हो सकती और मीराँ उस समय इस धरती पर नहीं रही थीं।[1]

प्रत्युत्तर—

वस्तुत: श्री मुन्शीजी ने नरसी मेहता के जन्म-समय की मर्यादा सं० १५३० से पूर्व और सं० १५८० से परवर्ती नहीं, इस तरह बताई है।[2] इस कथन को दृष्टिगत रख कर हमने नरसिंह मेहता का जन्मकाल संवत् १५३० के आसपास और मृत्यु संवत् १५९५ के आसपास मानी है।[3] इस तरह नरसिंह मेहताजी मीराँ के पूर्वकालीन ही थे।

---

१. मीराँबाई (शोध प्रबन्ध) पृ० २६२।

२. नरसैयो भक्त हरिनो (क. मा. मुन्शी) पृ० ८२।

३. मालणनां पद (सम्पादक : जेठालाल त्रिवेदी) पृ० १५४।

मीराँ छाप के एक पद में नरसिंह मेहता का उल्लेख मिलता है। जिससे सिद्ध होता है कि वे मीराँ के पूर्ववर्ती थे।[1]

(२) 'नरसी मेहता को मामेरो' नाम से प्रसिद्ध एक और ग्रन्थ है। इसका प्रकाशित संस्करण देखकर श्री के० का० शास्त्री ने इसको मीराँ कृत मान लिया है। (डॉ० प्रभात)

प्रत्युत्तर—

यह अनुमान साधार और सयुक्तिक नहीं है। विशेष में श्री शास्त्री ने 'नरसिंह का माहेरा' मीराँकृत नहीं है ऐसा कभी कहा नहीं है।

(३) भक्तवत्सल बिरद राग कौतुहल नरसी मेहता को माहेरो जिस रूप में हमारे सामने है, उस रूप में रतना खाती कृत अंश बहुत कम ही है। इस ग्रन्थ को छपी हुई प्रति की प्रतिलिपि एक गुटके में किसी ने की और यह गुटका किसी तरह रामवास उदयपुर के पोथी संग्रह में पहुँच कर प्राचीन ग्रन्थों में स्थान पा गया। (डॉ० प्रभात)

प्रत्युत्तर—

यह वात 'नरसी रो माहेरो' के कर्तृत्व से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित नहीं है। तो भी प्रसंगवशात एक बात का उल्लेख यहाँ कर लेते हैं। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में हमने रतना खाती कृत माहेरा की दो हस्त प्रतियाँ देखी हैं जिसमें इस माहेरो के प्रति संस्कर्ता शिवकरण का कोई उल्लेख नहीं है।

(४) माहेरो की भाषा में कहीं-कहीं राजस्थानी तथा गुजराती की मिलावट है। (डॉ० प्रभात)[2]

प्रत्युत्तर—

मीराँवाई ने माहेरो गुजरात निवास के मध्य लिखा था। अत: भाषा में मारवाड़ी तथा गुजराती का मिश्रण होना स्वाभाविक है।

---

१. जूनागढना चोकमां नागरे हांसी कीधी। नरसैयानी हुंडी स्वीकारी, द्वारिका मां दीधीरे। (मीराँवाई नां भजनो पृ० २८)।

२. मीराँवाई (शोध प्रवन्ध) पृ० २६५।

"पछिम दिसा प्रसधि सुख श्री रणछोड़ निवास।
नरसी केरो माहेरो, गावंहि मीराँ दास ।।[1]"

इस कथन से मीराँ ने द्वारिका में माहिरा लिखा था यह सिद्ध होता है। इस प्रकार माहिरो मीराँ की उत्तरावस्था की कृति होगी। जूनागढ की यात्रा मीराँ ने की थी। निम्नलिखित राजस्थानी लोकगीत से इस बात का पता चलता है—

सूत्यो राणो जी निस भर नींद ओ।
कोई सूत्याँ ने सुपणो राणाजी ने आयो ।।
साथियो रे भाई करो ए विचार ओ।
साथिड़ा ओ कोई म्हाँरी मेड़तणी भगवाँ पहर लियां ।।
सुपणो राणाजी आल-जंजाल ओ।
राणाज़ी पड्यो रे, **जूनागढ रो मारग रे** ।[2]

मेड़ते से ही मीराँ द्वारिका गई थी ओझाजी के इस कथन को भी यह लोकगीत पुष्ट करता है! द्वारिका के मार्ग में ही जूनागढ पड़ता है जो नरसिंह मेहता की तपोभूमि है।

जूनागढ में मीराँ ने नरसिंह मेहता के भक्तिपरायण जीवनवृत्त की आकर्षक कथाएँ सुनने में बड़ा रस पाया होगा। फिर निकटवर्ती द्वारिका क्षेत्र में भी नरसिंहजी की अपूर्व भक्ति की अनेक बातें सुनी होंगी। फलस्वरुप मीराँ को 'नरसी रो माहेरो' लिखने की अभिलाषा हुई होगी।

(५) डॉ० प्रभात कहते हैं कि माहेरो की कथा सम्वादरूप में हुई है। अतः अनुमान लगाना उचित होगा कि यह रचना मीराँ के बाद उस समय की है जब उनके चरित्र में पौराणिक आलौकिकता का समावेश हो चुका था।

प्रत्युत्तर—

प्रबन्धात्मक रचना में सम्वादरूप आवश्यक होता है। गुजराती में इस तरह की नरसी मेहता की कृतियाँ भी मिलती है। कबीर की साखियों में भी कहीं-कहीं संवाद पाये जाते हैं। देखिये—

---

१. देखिये सम्पादित माहेरो का प्रारम्भ।

२. 'मीराँ एक अध्ययन' पृ० २४७।

कबीर कहैं कमाल को दो बातें सीख ले।
कर साहेब की बन्दगी, भूखों को कुछ दे ॥

ऊदाबाई और मीराँ के सम्वाद के पद कुछ लोग क्षेपक मानते हैं, किन्तु स्वयं मीराँ के अन्य फुटकर पदों में भी कुछ सम्वादात्मक अंश कभी-कभी आते ही हैं। "गोविन्दो प्राण हमारो रे, मने जग लागे खारो रे" इस पद और "प्रीत पूरवनी रे शुं करु ? ओ राणाजी मारी प्रींत पूरवनी रे शुं करुं।[1]" इन गुजराती पदों में राणा और मीराँ के बीच के सूक्ष्म सम्वाद के अंश पाये जाते हैं।

तात्पर्य यह है कि सम्वादरूप में होने से माहेरो को मीराँ कृत न मानने का अनुमान लगाना तर्कयुक्त नहीं होगा। हाँ, माहेरो में कतिपय अंशों का मिश्रण हो गया है जो मीराँ कृत नहीं हैं, परन्तु इस कारण से मूल रचना मीराँ कृत नहीं मानना युक्तिसंगत नहीं होगा।

(६) इसमें (माहेरो में) दिये गये मीराँ छाप के पद मीराँ कृत नहीं हैं। वे मध्यभारत और राजस्थान के लोकगीत हैं, जिनमें मीराँ की छाप लगा दी गई है। एक स्थान पर तो नरसीजी मीराँ के विष को अमृत करने की बात का भी उल्लेख करते हैं। मीराँ स्वयं इस प्रकार की बात उनसे कैसे कहलवा सकती थीं ? (डॉ० प्रभात)

प्रत्युत्तर—

मीराँ, नरसिंह आदि के लोकप्रिय अनेक पद आम जनता में प्रचलित होकर लोकगीत बन गये हैं। लोकगीतों का कोई अलग अस्पृश्य प्रदेश नहीं है। अतः मीराँ के पदों का लोकगीत के रूप में प्रचलन होना स्वाभाविक है। इस प्रकार के प्रचलन से इन पदों को मीराँ कृत न मान लेना युक्तियुक्त नहीं है। यों तो रतना खाती कृत माहेरो भी लोककाव्य (लोकगीत) कहा जाता है। पर इससे इस माहेरो में रतना का कर्तृत्व नष्ट नहीं हो जाता।[2]

मीराँ के विष को अमृत करने की बात का उल्लेखवाला पद अवश्य क्षेपक मानना चाहिये। ऐसे कुछ क्षेपक अंशों के आधार पर सारी कृति के कर्तृत्व को संदिग्ध मान लेना किसी भी तटस्थ व्यक्ति को उचित नहीं लगेगा।

---

१. मीरांबाई नां भजनो (सं० : श्री हरसिद्ध भाई दिवटिया) पृ० १८-१९।

२. 'नरसीजी रो माहेरो' (आर्यावर्त प्रकाशन गृह : कलकत्ता) का निवेदन देखिये।

(७) इसमें पीपा और रामानन्द की कथा नरसी के पूर्वजन्म को कथारूप में जोड़ दी गई है। पीपा और रामानन्द के महत्त्व की प्रतिष्ठा के इस सचेतन प्रयत्न से लगता है कि इसके रचयिता का सम्बन्ध पीपा के राजवंश या धर्मवंश से अवश्य होगा।

प्रत्युत्तर—

मीराँकृत माहेरो की अनेक हस्त-प्रतियों में नरसी के पूर्वजन्म की लम्बी-चौड़ी कथा अकारण दी गई है। इसके प्रथम दर्शन से ही मालूम हो जाता है कि इस कथा का विस्तार ऐसी नाजुक, कोमल कृति में असंगत है। यह कथा पीछे मे जोड़ दी गई है और क्षेपक ही है ऐसा उसकी भाषा और लेखन-शैली से ही ज्ञात हो जाता है।

इस आड़-कथा जोड़ने वालों का उद्देश्य डा० प्रभात ने माना है, इस तरह का हो सकता है। इस बात में हमारा कुछ विरोध नहीं है। परन्तु, इस क्षेपक कथा जोड़ने वालों को सारे माहेरो का कर्त्ता मानना तर्कसंगत नहीं है।

हमने 'नरसी रो माहेरो' की जिन सात हस्तप्रतियों का अवलोकन किया है उनमें सबसे पुरानी प्रति संवत् १८६५ में लिखी गई है। दूसरी एक प्रति सं० १८८८ की लिखावट की है। अन्य प्रतियाँ परवर्ती समय की हैं। प्राचीन प्रतियों में नरसीजी के पूर्वजन्म की कथा बहुत संक्षेप में दी गई हैं। वहां रामानन्द का भी कोई उल्लेख नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि नरसी के पूर्वजन्म की कथा का विस्तार पीछे हुआ है और यह प्रक्षिप्त है। मूल कर्त्ता की कृति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस कारण हमने उस लम्बी-चौड़ी आड़-कथा को हमारे सम्पादन में छोड़ दिया है। परन्तु इस परवर्ती क्षेपक कथा के कारण सारे माहेरो के कर्तृत्व को किसी अन्य व्यक्ति में आरोपित करना शोध-संगत नहीं है।

(८) कथा संगठन की दृष्टि से गुजराती कवि विष्णुदास कृत 'कुंवरबाई नुं मोसालु' (सं० १६२४ के आसपास की रचना), विश्वनाथ जानी कृत 'मोसालु' (रचनाकाल सं० १७०८) और प्रेमानन्द कृत 'कुंवरबाई नुं मामेरु' (रचनाकाल सं० १७४६)[1] की इस परम्परा में आते हैं।

---

१. प्रेमानन्द कृत माहेरो का रचना-वर्ष यथार्थ में संवत् १७३९ है।

हमारे आलोच्य माहेरो ने कथा का मूल ढांचा ही प्रेमानन्द से नहीं लिया, बल्कि उसकी पंक्तियाँ तक ज्यों की त्यों रख दी है। जबकि यहाँ डॉ० प्रभात महाशय ने प्रेमानन्द की कुछ पंक्तियों के उदाहरण देकर इनकी आलोच्य माहेरो की पंक्तियों के साथ तुलना की है।

आगे चलकर वे कहते हैं कि सन्देह के लिये कोई स्थान नहीं है कि प्रेमानन्द ने आलोच्य (मीरांकृत) माहेरो की पंक्तियाँ 'चुरा ली होगी। आलोच्य माहेरो में ही प्रेमानन्द की पंक्तियों के विकृत रूप मिलते हैं। (डॉ० प्रभात)

प्रत्युत्तर—

मीराँकृत माहेरो की कथा का मूल ढाँचा प्रेमानन्द से लिया गया है, यह यथार्थ नहीं है नरसी के पूर्वजन्म की कथा प्रेमानन्द में नहीं है तो प्रेमानन्द में मेहताजी की तपश्चर्या और गोलोक-गमन का जो व्याख्यान है वह मीराँकृत माहेरो में नहीं है। नरसिह मेहताजी के दूसरे विवाह की बात से भी प्रेमानन्द अपरिचित है।

आलोच्य माहेरो का कथन है कि—

"प्रथम त्रिया सुर-धाम सिधाया, नरसी कीनो द्वितीयक ब्यावा।
नरसी के पुनि सुत भये दोइ, सुखद सील जाण सब कोई॥"[1]

प्रेमानन्द का नरसी मेहता तो पत्नी के मरण से संसार का फंद टूट गया, ऐसा मानकर शोक नहीं करते है। यथा—

"स्त्री सुत मरतां रोयां लोक, मेहता ने तल मात्र न शोक।
भलु थयु भांगी जंजाल, सुखे भजशुं श्रीगोपाल॥"[2]

विशेष में माहेरो के प्रसंग की कल्पना भी मीराँकृत 'माहेरो' और प्रेमानन्द के गुजराती 'मामेरु' में भिन्न-भिन्न प्रकार की है। प्रेमानन्द में नरसी की पुत्री कुंवरबाई के सीमंतोत्सव[3] के प्रसंग पर नरसिंह मेहता का माहेरो भरने का वर्णन है। परन्तु मीराँ कृत माहेरो में ऐसा नहीं है। वहाँ नरसी-पुत्री कुंवरबाई (कंवरी) की कन्या के विवाह के प्रसंग पर भात भरने के लिये जाने

---

१. देखिये सम्पादित माहेरो का पाठ।

२. कुँवरबाई नुं मामेरु (प्रेमानन्द कृत) कडवुं ३।

३. गर्भाधान के पश्चात् ८वे मास में होनेवाला उत्सव जिसे 'आठवां पूजना' भी कहते हैं।

का वर्णन है। राजस्थान के एक परवर्ती कवि वसंत ने भी 'नरसीजी को माहेरो' लिखा है। उसने भी प्रेमानन्द के अनुसार कंवरी के सीमंतोत्सव पर ही भात भरने का वर्णन किया है।[१] परन्तु रत्ना खाती ने ऐसा नहीं किया। उसने नानीवाई (कुँवरवाई) की सुता के लग्न के प्रसंग पर भात भरने का वर्णन किया है।[२]

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि आलोच्य मीराँकृत माहेरो की कथा का ढाँचा प्रेमानन्द से नहीं लिया गया है, वल्कि यह स्वतंत्र कृति है। मीराँ के समय में प्रचलित श्रुतियाँ आदि ही उसके मूल रहे होंगे।

प्रेमानन्द की कुछ पंक्तियाँ आलोच्य माहेरो में मिलती है, इस बात का विचार अव हम करेंगे। ये पंक्तियाँ प्रेमानन्द और गुजराती कवि विश्वनाथ से ली गई हैं, इसमें संशय नहीं है।

परन्तु इस तरह की पंक्तियाँ केवल क्षेपक हैं। मीराँ कृत संक्षिप्त संकलन में ऐसे रसप्रद अपितु लम्बे वर्णनों को गुँजाइश भी नहीं है।

उपर्युक्त चर्चा से स्पष्ट होगा कि मीराँ कृत माहेरो को प्रेमानन्द कवि के परवर्ती काल की रचना मानने के लिये कोई विशेष कारण नहीं है।

(६) इस माहेरो पर रामचरित-मानस की दोहा चौपाई वाली पद्धति तथा उसकी शव्दावली का भी प्रभाव है। (डॉ० प्रभात)

प्रत्युत्तर—

प्रभाव हो सकता है। भारत भर के भक्तवृन्द पर तुलसीदास के रामचरित-मानस का प्रभाव रहा है। यह प्रभाव परवर्ती भक्त, गायक, लहिये (ग्रन्थ की प्रतिलिपि बनानेवाले) आदि की रुचि के कारण सम्भावित बना होगा, किन्तु इससे मीराँ का वास्तविक कर्तृत्व नष्ट नहीं हो सकता है।

डॉ० प्रभात ने दूसरी जगह कहा है कि मीराँ के पदों की कोई प्रति ऐसी उपलव्ध नहीं है जो मीराँ ने स्वयं लिखी हो या जिसे उसने शुद्ध किया हो। उसके काल की भी कोई प्रति प्राप्त नहीं है।[३] मीराँ की अनेक कृतियाँ लिखित

---

१. देखिये परिशिष्ट में दिया गया वसंत कृत माहेरो।

२. नरसीजी रो माहेरो (श्रा. प्र. गृह : कलकत्ता) पृ० ६।

३. मीरांवाई (शोध प्रवन्ध) पृ० २८०।

प्रतियों से मौखिक-परम्परा में आ गई और कुछ समय के पश्चात् फिर मौखिक-परम्परा से लिपिबद्ध होकर एक नई-सी लिखित प्रतिलिपि-परम्परा की बन गई।[1]

डॉ० प्रभात के इस कथन से स्पष्ट होता है कि मीराँ के पदों की तरह माहेरो पर भी अनेक परम्परागत संस्कारों का प्रभाव पड़ा होगा। अतः तुलसीदास के प्रभाव के कारण उसे मीराँ कृत न मानना समुचित नहीं होगा।

(१०) माहेरो को देखने से यह और पता लगता है कि इसका रचयिता रामानन्द या रामानुज सम्प्रदाय से अवश्य सम्बन्धित रहा है क्योंकि (१) माहेरो की लगभग सभी प्राप्त प्रतियाँ रामानन्दी या रामानुज सम्प्रदाय के मन्दिरों या गद्दियों से सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा ही लिपिबद्ध है। (२) ग्रन्थ में रामानन्द की विशेष और आग्रहपूर्वक प्रशस्ति की गई है। पीपाजी-सम्बन्धी घटनाएँ रामानन्द की ही महानता की द्योतक है।

रूणीजा के रामानन्द सम्प्रदाय के साधु-परिवार में एक भक्त कृपानिवास हुए थे। उन्हीं के शिष्य मीराँदास ने इस माहेरो की रचना की। माहेरो के अन्त में इस बात की सूचना भी है—

मम जिमि बुद्धि प्रमाण, हरिगुरु कृपा निवास।
नरसी केरो माहेरो, गावै मीरां दास॥

रूणीजा में इन साधुओं की प्राचीन परम्परा का विस्तृत विवरण प्राप्त नहीं है।

प्रत्युत्तर—

(१) रामानन्दी मन्दिरों आदि द्वारा मध्यकालीन साहित्य का रक्षण हुआ है, यह तो अच्छा है। प्रतिलिपि के समय उन्होंने कुछ-कुछ प्रतियों में क्षेपक अंश भी जोड़ दिये होंगे। परन्तु, इस कारण उनके मठों से प्राप्त मीराँ आदि की छापवाले साहित्य के कर्तृत्व को संदिग्ध ही नहीं, परन्तु असत्य मान लेना उचित नहीं है।

---

१ मीरांबाई (शोध प्रबन्ध) पृ० २८१।

(२) माहेरो में रामानन्द की प्रशस्ति वाला खण्ड स्पष्ट रूप से क्षेपक है, यह तो स्पष्ट किया गया ही है। क्षेपक अंश के कारण क्षेपक अंश जोड़ने वालों को सारी कृति का कर्तृत्व दे देना अनुचित है।

(३) मीराँ दासी और मीराँ दास का सम्बन्ध युक्तियुक्त होने पर भी काल्पनिक और काकतालीय लगता है। राम-सम्प्रदाय का साधु मीराँदास कृष्णभक्त-मेड़ताणी मीराँ की छाप आदि को स्वीकार किसलिए करेगा? मीराँदास में यदि कवित्वशक्ति थी तो मीराँ को आगे रख कर आप नैपथ्य में क्यों रहता?

मीराँदास की परम्परा का सच्चा विवरण भी नहीं पाया जाता। कदाचित् कोई मीराँदास ने माहेरो में क्षेपक अंश जोड़ दिये होंगे तो भी कृति के ढाँचे में स्वीकृत मीराँ के कर्तृत्व को नष्ट मानने का कोई कारण नहीं बनता। 'कृपानिवास' शब्द को व्यक्तिवाचक नाम मानने से अर्थ-निष्पत्ति में बाधा होती है यह भी विचारणीय है।[१]

वसंतकृत माहेरो और रतना खाती कृत माहेरो को हस्तप्रतियाँ भी रामद्वारा आदि से मिली हैं। तो भी इन कृतियों का कर्तृत्व संदिग्ध नहीं माना जाता है, तो फिर मीराँ कृत माहेरो के कर्तृत्व को संदिग्ध कैसे मान लिया जाय? वस्तुतः नरसी के पूर्वजन्म की कल्पित कथा तथा अन्त में आने वाली मीराँदास की छापवाली पंक्तियाँ ही क्षेपक हैं। मीराँ के कर्तृत्व में इनको बाधक नहीं मानना चाहिए।

(११) **रचनाकाल**—प्रेमानन्द की कृति का रचनाकाल देखते हुए, डॉ० प्रभात आलोच्य माहेरो को संवत् १७४९ के पश्चात् की रचना मानते हैं। आप संवत् १८९७ की प्राप्त प्राचीनतम प्रति को भी इसकी पुष्टि में गिनते हैं। आप कहते हैं कि मीराँ-मिथुला-सम्वाद में लिखा माहेरो संवत् १७४९ और १८७९ के बीच की रचना है।

---

१. 'हरि गुरु कृपा निवास' का सम्भावित अर्थ 'हरि और गुरु की कृपा से' इस प्रकार हो सकता है। 'कृपानिवास' से व्यक्तिवाचक नाम बना लेने से तो पदांश निरर्थक बन जाता है।

प्रत्युत्तर—

माहेरो को इतना आधुनिक मानने के लिये कोई सबल कारण नहीं है। प्रेमानन्द के साथ उसका कोई सम्वन्ध नहीं है। प्रेमानन्दीय क्षेपक पदों के कारण उसे प्रेमानन्द के परवर्तीकाल की कृति मानना अनुचित है। हमें मीराँ कृत माहेरो की प्राचीनतम प्रति संवत् १८६५ की मिली है। इससे भी प्राचीनतम प्रति भी मिल सकती है।

हम पुनः स्पष्ट करते हैं कि माहेरो में प्रेमानन्द का ढाँचा और शैली का अनुकरण किया गया होता तो उसका स्वरूप भिन्न प्रकार का ही बन जाता। पर ऐसा नहीं हुआ है। अतः माहेरो को मेड़ताणी मीराँ की कृति मानने में संशय का कोई कारण नहीं है।

भक्त बखतावर—राजस्थान के एक भक्त कवि बखतावर के पदों में मीराँ की वहुत प्रशंसा पाई जाती है। बखतावर का उल्लेख माहेरो की कतिपय हस्तप्रतियों के अन्त में मिलता है। इससे अनुमान होता है कि बखतावर मीराँ-कृत माहेरो का गायक एवं प्रशंसक था।[1]

श्री परशुराम चतुर्वेदी, डॉ० सिंहा, श्री के. का. शास्त्री, डॉ० रामकुमार वर्मा,[2] श्री तारा पोरवल[3] आदि अनेक विद्वान् माहेरो को मीराँ कृत ही मानते हैं। क्षेपक अंशों के कारण और प्रतिलिपि-परम्परा तथा कण्ठ-परम्परा से उसमें हुई छोटी-बड़ी विकृतियों के कारण उसे मीराँ कृत न कहना उचित नहीं है।

नरसिंह मेहता का समय

मीराँ कृत माहेरो की कथा के नायक भक्तवर नरसिंह मेहताजी के जीवन-काल के विषय में काफी मतभेद हैं। अतः यहाँ मेहताजी के जीवनकाल की कुछ चर्चा आवश्यक है।

गुजरात के अधिकांश विद्वान् नरसिंह मेहता का जीवनकाल सन् १४१४ से १४८० (वि० सं० १४७० से १५३६) मानते हैं। डॉ० प्रभात कुछ कटाक्षरूप में

---

१. बखतावर-के परिचय हेतु देखिये परिशिष्ट : ख।

२. हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० २०५।

३. Selection from Classical Gujarati Literature : Vol. I.

कहते हैं कि यदि यह मत सत्य हो तो नरसी ब्रजभाषा के भी कदाचित् प्रथम कवि सिद्ध होंगे।[1] किन्तु, नरसिंह मेहता के वर्धमान जीवनकाल के विषय में सन्देह उठाये गये हैं। अतः जिस तरह मीराँ के वर्धमान जीवनकाल को छोड़ देना पड़ा, वैसा ही नरसी मेहता के जीवनकाल के बारे में हुआ है।

सर्वप्रथम सन्देह श्री आनन्दशंकर ध्रुव ने खड़ा किया है।[2] इससे प्रेरित होकर श्री कन्हैयालाल मुन्शी ने स्वतन्त्र अनुशीलन किया और निष्कर्ष निकाला कि नरसी के जीवनकाल की मर्यादा सं० १५६०-६५ और सं० १६३५-४० के बीच ही मानना बुद्धिसंगत है। उन्होंने कहा है कि नरसी का जन्म सं० १५३० से पूर्व होना सम्भावित नहीं है।[3]

नरसिंह कृत प्रचलित 'हारमाला' के पदों में जूनागढ को 'रा' मांडलिक के उल्लेख के कारण तथा 'हारमाला' की हस्तप्रति में सं० १५१२ का उल्लेख देख कर मान लिया गया कि नरसिह मेहता 'रा'मांडलिक के समकालीन थे। इस तरह वृद्ध शोधकों ने, नरसिंह का समय सं० १४७०-१५३६ मान लिया।

परन्तु, 'हारमाला' नरसिंह कृत नहीं है। उसमें वर्णित प्रसंग केवल भक्तों द्वारा प्रचलित जनश्रुति है। 'हारमाला' इतिहास नहीं है और नरसी कृत भी नहीं है। अतः श्री मुन्शीजी हारमाला में दी गई तिथि को विश्वस्त नहीं मानते हैं।[4]

नरसिंह मेहता के पदों में गोपी-भावभक्ति का पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। नरसिंह में सखीभाव प्रकट हुआ है —

(१) "पुरुष पुरुषारथ लीन थयुं माहरु, सखी रूपे थयो गीत गावा।"[5]

(२) "सारमां सार अवतार अवला तणो, जे बले बलीभद्र वीर रीझे।
पुरुष पुरुषा तन शुं करुं हे सखी, जेथीं नहीं माहरुं काज सीजे॥"[6]

---

१. मीराँबाई (शोध प्रबन्ध)।
२. 'वसंत' (मासिक) वर्ष ४ अंक ७-८।
३. नरसैंयो भक्त हरिनो (क. मा. मुन्शी) पृ० ८२।
४. वही पृ० ७२।
५. वही पृ० ३५।
६. वही पृ० ७१।

सखी-भाव की इस भक्ति को 'जार भाव की भक्ति' भी नाम दिया जाता है। स्व० दुर्गाशंकर शास्त्री कहते हैं कि वोपदेव (सन् १२६०-७१) के समय में सखी-भाव की भक्ति का प्रचलन नहीं था। वोपदेव ने 'मुक्ताफल' में गोपिओं की भक्ति को अविहित मानी है।[1]

स्व० दुर्गाशंकर शास्त्री स्पष्ट कहते हैं कि ईस्वी सन् की १६वीं सदी से पूर्व के सखी-भाव का कोई उल्लेख मुझे नहीं मिला है।[2] सखी-भाव का प्रचलन चैतन्य से सम्बन्ध रखता है। अतः चैतन्य द्वारा प्रचलित वृन्दावनीय भक्ति, वल्लभ-सम्प्रदाय का प्रभाव नरसिंह में ज्ञात होता है। इसलिए नरसिंह को चैतन्य व वल्लभ से पूर्वकालीन नहीं माना जा सकता।

नरसिंह के पदों में श्री वल्लभाचार्य पुष्टिमार्ग आदि के उल्लेख मिलते हैं।[3] वर्धमान समय के पक्षधर उक्त पदों के अंशों को क्षेपक कह देते हैं।[4] परन्तु, यह तर्कसंगत नहीं है। कारण, दयाराम कवि ने भी नरसिंह को 'वल्लभ जन्म का वधैया' कहा है। पुष्टिमार्ग के गोस्वामी कल्याणरायजी (सं० १६२५) भी 'पुष्टिप्रवाह मर्यादा' की टीका में नरसिंह को प्रसिद्ध भक्त मान कर उसका उल्लेख करते हैं। अतः नरसिंह की पुष्टिमार्ग में पूर्व से ही ख्याति थी। पुष्टिमार्ग के सेवाप्रकार में सूरदास के साथ नरसिंह के भी कुछ पद संकलित हैं, इस बात का उल्लेख नरसिंह के वर्धमान समय के पक्षपाती श्री के० का० शास्त्री स्वयं कविचरित में करते हैं।[5] इससे भी ज्ञात होता है कि नरसिंह के पद में उल्लिखित वल्लभ, विठ्ठल पुष्टिमार्ग आदि शब्दों को क्षेपक मान लेने का कोई सबल कारण नहीं है।

नरसिंह पर सूरदास का भी कुछ प्रभाव है। अतः हम उसको सूरदास के गुरुवयस्क समकालीन मानना उचित समझते हैं।[6]

---

१. कौमुदी (मासिक) : अप्रेल १९३५ पृ० ३७४।

२. गुजरात (मासिक) दिसम्बर १९३५ : पृ० ३२५।

३. नरसिंह मेहता कृत काव्यसंग्रह पृ० ५३४।

४. कविचरित पृ० ४८।

५. वही पृ० ५३।

६. देखिये : भालण नां पद : उपोद्घात पृ० १०।

डॉ० प्रभात लिखते हैं—"आनन्दशंकर ध्रुव, के० एम० मुन्शी के तर्कों और तथ्यों के प्रकाश में नरसिंह मेहता को मीराँ का समकालीन मानना उचित है। सम्भव है कि सूरदास की तरह वे भी मीराँ से आयु में बड़े रहे हों, पर वे मीराँ की विषपान की घटना के बाद तक जीवित अवश्य थे।"[1]

हमने हमारे 'झालणानां पद' नामक सम्पादन में नरसिंह मेहता का जीवन-काल सं० १५३५ के आसपास और मृत्युकाल सं० १५९५ के आसपास माना है।[2] मीराँ का जन्मसमय विद्वानों ने सं० १५५५-६० के आसपास माना है, अतः उसे नरसिंह मेहता की लघुवयस्क समकालीन मानने से कालक्रम की दृष्टि से कोई आपत्ति नहीं है।

नरसिंह के एक पद में उल्लेख है—

"मीरांबाई नां विष अमृत कीधां, विदुरनी आरोग्या भाजी रे।"[3]

इस उल्लेख के कारण डॉ० प्रभात नरसिंह को मीराँ के विषपान की घटना के बाद जीवित मानते हैं। पर यह उल्लेख क्षेपक माना जाता है। कुछ भी हो, नरसिंह का जीवनकाल सं० १५३० के आसपास से सं० १५९० के आसपास तक मानने से अनेक प्रश्नों का निरसन हो जाता है।

हमारे गाँव रांधेजा (जिला : गांधीनगर-गुजरात) में ही सं० १८७९ में लिखी हुई प्रेमानन्द कृत 'कुंवरबाई नु मामेरु' की एक हस्तप्रति हमको मिली है, जिसके अन्त में लिखा है : "संवत् १५ अड़तसमा, मामेरु करु श्री भगवान। —मेत्ताजी नु मामेरु समापत।" यह उल्लेख भी नोंदपात्र है। इससे नरसिंह मेहता के उपर्युक्त जीवनकाल को पुष्टि मिलती है।

संक्षिप्त जीवनवृत्त

नरसिंह मेहता का जन्म गुजरात-सौराष्ट्र के तलाजा नामक गाँव में हुआ था। परन्तु, उनके जीवन का अधिकांश समय जूनागढ़ में ही बीता था। जूनागढ़ में नरसिंह मेहता का चोरा (स्थान) आज भी बताया जाता है। माता-पिता

---

१. मीरांबाई (शोध-प्रबन्ध) पृ० ५१९।

२. झालणा नां पद पृ० १५४।

३. नरसिंह मेहता कृत काव्य संग्रह पृ० ४७२।

बाल्यावस्था में मर जाने के कारण नरसिंह मेहता के लालन-पालन का भार बड़े भाई के ऊपर ही रहा था।

नरसिंह मेहता नागर ब्राह्मण थे। परन्तु, विद्याभ्यास में बहुत आगे नहीं बढ़ सके। भ्रमणशील स्वभाव और साधु-सन्तों के सहवास से वे मस्त बन गये थे। भजन-कीर्तन में उनको बहुत रस मिलता था। घर के कार्य को छोड़ कर रास-मंडली में बैठ जाते थे। परिणाम यह हुआ कि भावज ने उन्हें कठोर भाषा में फटकारना शुरु किया।

भावज (भाभी) के कठोर वचन से नरसी को क्रोध हुआ और उन्होंने घर का त्याग कर दिया। जंगल में जाकर, आहार आदि का त्याग कर के सात दिन तक शिवजी का ध्यान लगाया। शिवजी प्रसन्न हुए और आप नरसिंह को अपने साथ वैकुण्ठ में ले गये। वहाँ रासलीला देख कर नरसिंह श्रीकृष्ण के भक्त बन गये।[1] नरसी मेहता श्रीकृष्ण की सखी बनकर अपने को धन्य मानता है—

"पुरुष पुरुषातन लीन थयुं माहरुं,
सखी रूपे थयो गीत गावा।"

इस तरह कृष्णभक्ति की और रासलीला की स्वप्नशील खुमारी के साथ नरसिंह जूनागढ़ में चले आते हैं और अपनी सरल पत्नी माणेक मेहती के साथ अपना पृथक् निवास बनाकर गृह-संसार का प्रारम्भ करते हैं। परन्तु, मेहताजी के लिये हरिभजन और साधु-सन्तों से मिलने के अतिरिक्त दूसरा कोई व्यवसाय नहीं था। उनका योगक्षेम भगवान ही चलाते थे। जातिबन्धु नागर लोग सतत उनकी हँसी उड़ाते थे। गरीब घर में भक्तराज निवास करते थे और रात-दिन हरिभजन करते थे।

नरसिंह मेहता के एक पुत्र श्यामलदास हुआ और एक पुत्री कुँवरबाई हुई। श्यामलदास के विवाह में भगवान ने उनकी सम्पूर्ण सहायता की थी और पुत्री कुँवरबाई का माहेरा भी स्वयं भगवान ने जाकर भरा था, ऐसी जनश्रुतियाँ

---

१. श्री क. मा. मुन्शी के मत से नरसिंह की शिव-भक्ति से प्रसन्न होकर कोई जटाधारी साधु उसे अपने साथ द्वारिका में ले गया होगा और वहाँ रासलीला की मण्डलियों में सम्मिलित होकर नरसीजी ने वैकुण्ठ के सुख का अनुभव किया होगा।

प्रचलित हैं। 'श्यामलदास का विवाह' नामक कृति कुछ लोग स्वयं नरसिंह की मानते हैं। 'हारमाला' नामक कृति के भी कुछ पद नरसिंह रचित माने जाते हैं।

नरसिंह के अनेक पद गुजराती और हिन्दी-राजस्थानी में भी मिलते हैं। सुरत संग्राम, राससहस्र पदी, सुदामा चरित्र आदि भी नरसिंह की रचनाएँ हैं। नरसिंह के पदों में भक्ति के साथ शृंगार की प्रचुरता होती है। अनेक पद क्षेपक भी हैं। अतः मीरां की तरह नरसिंह के पदों का भी एक प्रामाणिक संग्रह वनाना आवश्यक है।

नरसिंह मेहता की भक्ति की परीक्षा करने के लिये जूनागढ़ के राजा 'रा' मांडलिक ने उनको कुछ कष्ट दिया था और यह शर्त्त रखी गई थी कि भगवान के गले में रखा हुआ पुष्प का हार यदि नरसिंह के गले में आ जाय तो राजा उसे सच्चा भक्त मान लेगा। यदि, ऐसा नहीं हुआ तो नरसिंह को छद्मवेषी मानकर कठोर दण्ड दिया जायगा। ऐसी जन श्रुति है कि, रातभर नरसिंह ने राजा के सम्मुख कीर्त्तन किया और प्रभात के पूर्व भगवान के गले की माला चमत्कार रीति से उड़ती हुई नरसी के कण्ठ में आ गई। इस प्रसंग के जो पद रचे हुए हैं, उन्हें 'हारमाला' कहते है। परन्तु, 'हारमाला' सम्पूर्णतया नरसिंह कृत नहीं है।

कहते हैं कि भगवान के भरोसे पर नरसिंह मेहता द्वारा लिखी गई हुंडी द्वारिका में श्रीकृष्ण ने सांवलशाह बनकर स्वीकारी थी। इस प्रसंग की भी अनेक रचनाएँ गुजराती में तथा हिन्दी में मिलती हैं।

नरसिंह मेहता नागर ब्राह्मण होते हुए भी ऊँच-नीच के भेद को नहीं मानते थे। उन्होंने अस्पृश्य जाति के हरिजनों के यहाँ जाकर प्रेम से भजन-उत्सव किया था। इस कारण से स्वजाति जनों द्वारा नरसिंह का बहिष्कार भी हुआ था। परन्तु, नरसिंह को जाति और समाज की परवाह नहीं थी। जाति के वहिष्कार की वात सुनकर नरसिंह ने इस प्रकार कहा है—

"अेवा रे अमे अेवा रे अेवा, तमे कहो छो वली तेवा रे।
भक्ति करतां जो भ्रष्ट करेशो तो करशुं दामोदर नी सेवा रे॥"[1]

---

१. नरसिंह मेहता कृत काव्यसंग्रह-पृ० ४७१।

और यह भी कहा कि—

हलखा कर्मनो हुँ नरसैयो, मुजने तो वैष्णव वहांला रे।
हरिजन थी जे अन्तर गणशे, तेना फोगट केरा ढाला रे॥[1]

इस प्रकार जातिजन, बन्धु-वर्ग, राजसत्ता आदि द्वारा नरसिंह की कड़ी परीक्षा हुई थी। परन्तु, वे भक्ति से तनिक भी विचलित नहीं हुए।

नरसिंह मेहता की पत्नी माणेकबाई की नरसीजी के जीवनकाल में ही मृत्यु हुई थी। तब मेहताजी ने कहा था—

"भलुं थयुं भांगी जंजाल, सुखे भजीशुं श्रीगोपाल।"

पुत्र श्यामलदास का भी नरसिंह के जीवनकाल में ही अवसान हुआ था। इस प्रकार नरसिंह के संसार में दुःखों का पार न था। परन्तु, भक्तराज भजन में ही मस्त रहते थे। सुख-दुःख उनके मन में नहीं आते थे।

नरसी के जीवन-चरित्र के प्रसंगों से सम्बन्धित अनेक पद्य रचनाएँ गुजराती में हुई हैं, जिसमें विष्णुदास कृत 'कुँवरबाई नुं मोसालु' प्राचीनतम माना जाता है। उसका रचनाकाल सं० १६२४-२८ के आसपास माना गया है। विश्वनाथ जानी ओर प्रेमानन्द आदि के काव्य इस के बाद में रचे गये हैं।[2]

नरसिंह मेहता का निम्नलिखित पद राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को बहुत प्रिय था और सायं की प्रार्थना-सभा में यह पद नियमित रूप से गाया जाता था।

वैष्णव जन

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराइ जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे ते, मन अभिमान न आणे रे॥ वैष्णव....

सकल लोकमां सहुने वन्दे, निंदा ते न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चय राखे, तो धन-धन जननी तेनी रे॥ वैष्णव....

सम दृष्टि अने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन झाले नव हाथ रे॥ वैष्णव....

---

१. नरसिंह मेहता कृत काव्यसंग्रह पृ० ४७१।

२. कविचरित भाग २ पृ० ३२८।

मोह माया व्यापे नहि तेने, हठ वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनाम शुं ताली रे लागी, सकल तिरथ तेना तनमां रे ॥ वैष्णव....
पण लोभी ने कपट रहित छे, काम-क्रोध ने निवार्या रे।
भणे 'नरसैयो' तेनुं दर्शन करतां, कुल इकोतरे तार्या रे ।।[१] वैष्णव....

माहेरो गुजराती और राजस्थानी में

गुजराती में विष्णुदास ने सर्वप्रथम 'कुंवरबाई नुं मोसालु' सं० १६२४-२८ के आसपास लिखा। विष्णुदास ने 'नरसिंह मेहता नी हुंडी' नामक काव्य भी लिखा है। इसके बाद विश्वनाथ जानी ने भी 'मोसालु' (सं० १७०८ के आसपास) लिखा था।[२] विश्वनाथ कृत यह मोसालुं देख कर प्रेमानन्द ने उसका अनुकरण किया होगा।[३] प्रेमानन्द ने 'कुँवरबाई नुं मामेरु' सं० १७३९ में लिखा जिसका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है।

कृष्णदास ने भी (सं० १६७३-१७०१) 'मामेरु' लिखा है और 'हुंडी' काव्य की भी रचना की है। उसमें विष्णुदास कथित कथावस्तु का अनुकरण किया गया है।[४] एक कवि गोविन्द ने भी सं० १६८० के आसपास मोसालुं लिखा है।[५] दयाराम कवि ने भी 'मोसालु' लिखा है।

गुजराती मोसालुं (माहेरो) काव्यों में विष्णुदास से लेकर दयाराम तक के कवियों ने कथावस्तु में स्वल्प ही रूपांतर किया है। परन्तु, काव्यरस का विकास सिद्ध करने के लिये तत्कालीन समाज-जीवन के और मनुष्य-स्वभाव के अपूर्व चित्रण अंकित किये हैं। प्रेमानन्द में यह चित्रण इसकी पराकाष्ठा बताता है।

राजस्थानी-हिन्दी में मीरां कृत माहेरो सबसे प्राचीन प्रतीत होता है। इसके बाद सम्भवतः रतना खाती कृत माहेरो का समय आता है। वसंत और गहुंडी कृत माहेरो भी प्रचलित थे और इनकी हस्तप्रतियाँ मिली हैं।

---

१. नरसिंह मेहता कृत काव्यसंग्रह पृ० ५४-५५।

२. कविचरित भाग २ पृ० ५९६।

३. नरसिंह मेहता कृत काव्य संग्रह भूमिका पृ० २०।

४. कविचरित भाग २।

५. वही पृ० ४५७।

रतना खाती कृत माहेरो में कण्ठ-परपम्रा के कारण वहुत परिवर्तन हुआ है। कथावस्तु में तथा कथारस के निरुपण में काफी परिवर्तन हुआ है, जिसकी चर्चा हम परिशिष्ट में करेंगे।

राजस्थानी माहेरो पर गुजराती 'मोसालु' काव्य का प्रभाव परवर्तीकाल में पड़ा है। गुजरात में प्रेमानन्द आदि के 'मोसालु' काव्य सीमंत, लग्न आदि प्रसंगों पर नारीवृन्द द्वारा बड़े चाव के साथ गाया जाता था। अतः कण्ठ-परम्परागत रूप में उसका राजस्थान में पहुँच जाना स्वाभाविक था।

परन्तु, गुजरात और राजस्थान के माहेरों की कथावस्तु में कुछ अन्तर था, जिसका वर्णन हम परिशिष्ट में करेंगे। वसंत कृत माहेरो के कुछ अंश भी तुलनात्मक अध्ययन के लिये परिशिष्ट में दिये गये हैं।

गुजराती और हिन्दी-राजस्थानी के विभिन्न कवियों द्वारा रचित माहेरों का तुलनात्मक अध्ययन विश्व विद्यालयों आदि के शोधार्थी छात्रों के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसी मेरी मान्यता है। इस प्रकार के सूक्ष्म अध्ययन से ही अनेक संदिग्ध-बातों का निवारण होगा।

समान-धर्मी भक्त

नरसिंह मेहता और मीराँबाई समान-धर्मी थे। दोनों भक्त थे और सखी-भाव से श्री कृष्ण-की मधुर भक्ति की उपासना करते थे। भक्त और जगत् के वैर होता है, यह उक्ति दोनों के विषय में सच्ची जान पड़ती है। नरसिंह और मीराँ को जगत् के मिथ्या व्यवहार और मर्यादाओं की लेशमात्र भी परवाह न थी। ये अपनेयुग में बड़ी क्रान्तिकारी विचारधारा के जन्मदाता कहे जा सकते हैं।

नरसिंह नागर जाति के उच्च ब्राह्मण थे। परन्तु, वे अस्पृश्य जातिवालों के यहाँ भी जाकर बिना संकोच भजन-कीर्तन करते थे। इस कारण जाति-जनों द्वारा मेहताजी को जाति से वहिष्कृत कर दिया गया था। पर भक्तराज को जाति और समाज की कुछ परवाह न थी। वे कहते हैं—

"सघला साथमां हुँ एक, भूंडो भूंडाथी वली भूंडो रे।
तमारे मन माने ते कहजो, स्नेह लाग्यो छे मने उंडो रे॥"[१]

---

१. नरसैंयो : भक्त हरिनो पृ० ८७।

लोकनिन्दा का मेहताजी को डर नहीं था। घर की स्त्री, सन्तान तथा योगक्षेम की भी चिन्ता नहीं थी। यहाँ तक कि भाई-भाभी से भी नाता टूट चुका था। अब केवल भक्तों के भगवान से ही सदा के लिए नाता बँध चुका था।

मीराँ की स्थिति भी इसी प्रकार की ही थी। गिरिधर नागर के सिवाय उसका अन्य कोई नहीं था।

"मात तात सुत कुटुम्ब कबीला, टूट गया जैसा तागा।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, भाग्य हमारा जागा॥"[1]

राणा के राजमहल को मीराँ ने साधु-सन्तों का अखाड़ा बना दिया था। राजरानी होते हुए भी साधु-सन्तों के संग भजन-कीर्तन करती थी और गिरिधर के समक्ष नाचती थी। राजवंश के दम्भी व्यवहार को तिलांजलि देकर गिरधरलाल की भक्ति में मग्न हो चुकी थी। उसे धन, वैभव आदि की भी परवाह नहीं थी।

इस प्रकार नरसिंह और मीराँ के जीवन-प्रवाह का ढंग समान था। अतः समान-धर्मी मीराँ ने जब जूनागढ़ और द्वारिका की यात्रा की तब उसे नरसिंह के भक्त-जीवन की जनश्रुतियाँ सुनकर बड़ा आकर्षण हुआ होगा। फलस्वरूप नरसीजी के माहेरो की रचना मीराँबाई द्वारा हुई हो, ऐसा अनुमान करना स्वाभाविक है।

हम अनुमान करते हैं कि द्वारिकावास के समय में अपनी भक्तिपरायण सखी मिथुला के साथ भक्त-चरित्र की चर्चा के प्रसंग में इस माहेरो की रचना हुई होगी।

"पच्छिम दिसा प्रसधि सुख श्री रणछोड़ निवास।
नरसी केरो माहिरो, गावंहि मीराँ दास॥"

राजस्थान और द्वारिका (गुजरात) की भक्तिभावना के मिलन की स्पष्ट रेखाएँ माहेरो में मिलती हैं।

---

१. मीराँबाई नां भजनो पृ० २१।

नरसी मेहता के हिंदी-राजस्थानी पद

नरसीजी का जन्म-स्थान और भक्ति-क्षेत्र गुजरात ही था। परन्तु, उनकी भक्ति की सुवास उत्तर में राजस्थान और दक्षिण में कोंकण-महाराष्ट्र तक पहुँच गई थी। नरसीजी के समय तक गुजराती और राजस्थानी भाषा में बहुत समानता थी। प्राचीन पश्चिमी-राजस्थानी से गुजराती और मारवाड़ी भाषाओं के उद्‌गम का प्रारम्भ हो चुका था। परन्तु, प्रारम्भिक व्यस्त दशा के लक्षण होते हुए भी तब तक भाषा के कलेवर और शब्द-भण्डार में बहुत अन्तर नहीं पड़ा था। अतः ऐसी परिस्थिति में नरसिंह और मीराँ के पद मारवाड़ी और गुजराती दोनों को समान भाव से रस-गठन कर सके।

राजस्थान और गुजरात के बीच सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और व्यापार विषयक अटूट सम्पर्क रहा है, इस कारण भी नरसी मेहता के पदों को जूनागढ़-गिरनार से उठाकर दूर-दूर जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर तक पहुँचा दिया। यहाँ से कई-एक पदों ने उत्तरप्रदेश और कलकत्ता तक की भी यात्रा की है। नरसीजी की प्रेमभक्ति और सुमधुर वाणी का प्रभाव कोंकण की जनता तक भी पहुँच गया था।

"देवा आमची वार कां वेदल होयला।
आपुला भक्त कां बिसरी गेइला॥[1]

यह सारा पद मराठी भाषा में सहज भाव से जा बैठा है। तात्पर्य यह है कि भक्तराज नरसीजी की वाणी महाराष्ट्र की सरहद से लेकर जैसलमेर तक और द्वारिका से लेकर कलकत्ता तक लोककंठ को लोलायमान कर चुकी है।

हिन्दी-राजस्थानी में इसी कारण नरसीजी के अनेक पद मिलते हैं। अनेक हस्तप्रतियों से पढ़कर और भक्तजनों के कंठ से सुन कर इन पदों को लिपिबद्ध करने की विशेष आवश्यकता है। आज तक नरसी मेहताजी के हिन्दी-राजस्थानी पदों का कोई अच्छा संग्रह प्रकट् नहीं हुआ है, यह विचारणीय है।[2]

---

१. देखिये इस पुस्तक में 'हारमाला' के पदों में पदांक १४

२. नरसीजी के कुछ राजस्थानी पदों का परिचय श्री मंजुल के १२वें अधिवेशन में दिया था। परन्तु, यह दिशा अ

हमने कुछ वर्षों से प्रयास कर नरसीजी के अनेक हिन्दी-राजस्थानी पद प्राप्त किये हैं। वे इस ग्रंथ में पाठांतरों के साथ दिये गये हैं। इन पदों की आवश्यक एवं संक्षिप्त टीका भी पुस्तक के अंत में दी गई है। हमें आशा है कि इन पदों के प्रकाशन से मध्यकालीन कविता के गुजराती और राजस्थानी शोधार्थियों के लिये तुलना और खोज का एक नया सूत्रपात होगा। नरसी मेहताजी के और भी अनेक पदों की खोज और प्रकाशन के कार्य में कदाचित् इससे उत्साह भी बढ़ेगा।

नरसीजी के प्राप्त पद प्रसंग और विषयानुक्रम से विभाजित कर दिये गये हैं। इस से पदों का भावार्थ समझने में सरलता होगी और संदर्भित विषय के प्राप्त गुजराती पदों के साथ तुलना करने का कार्य भी सरल हो सकेगा।

हारमाला का प्रसंग नरसीजी के जीवन में किस तरह घटा था, उसका कुछ विवरण पीछे दिया गया है। जूनागढ़ के राजा मांडलिक द्वारा नरसीजी की भक्ति-परीक्षा का रसप्रद वर्णन गुजराती में रची गई 'हारमाला' में मिलता है। इस प्रसंग के पद राजस्थान में भी प्रचलित हैं। इस प्रकार के पद 'हारमाला के पद' शीर्षक से दिये गये हैं।

तदुपरान्त माहेरो के प्रसंग में नरसीजी के पद दिये गये हैं। नरसीजी प्रेमभक्ति के मस्त कवि थे। वे गोपी-भाव से कृष्ण को भजते थे। इसी कारण गोपी-भाव के इनके पद प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ऐसे अनेक पदों में स्थूल शृंगार का अतिरेक भी मालूम होता है। इस तरह के 'शृंगार के पद' देने के बाद भक्ति के पद दिये गये हैं। 'बाल-लीला' के और 'दाण-लीला' के पद भी अलग-अलग दिये गये हैं। अन्त में 'वसन्त-होली के पद' और 'प्रकीर्ण पद' दिये गये हैं।

कुछएक पदों के दो या तीन पाठ भी मिल गये हैं। ऐसे पदों के कुछ पाठां-तर पाद टिप्पणी में दिये गये हैं। हिन्दी-राजस्थानी पदों से तुलनीय गुजराती पदों का पाद टिप्पणी में स्थान-निर्देश किया है। पदों की प्राप्त भाषा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया है। शुद्धि का प्रयास भी कदाचित् ही किया है।

नरसीजी के गुजराती पदों की तरह हिन्दी-राजस्थानी पदों की भाषा में परिवर्तन और अनेक पाठों का निर्माण स्वाभाविक ही हो जाता है। कंठ-परंपरा के कारण कभी पदों की भी दुर्दशा हुई है तो कभी चित्र-विचित्र गड़बड़ भी हो जाती है।

मीराँ के पद के समान नरसी का भी कोई पद मिल जाता है तो किसी स्थान पर एक पद का पाठ दूसरे में घुस गया है। भक्ति की महिमा गाने का प्रसंग आता है तब भक्तजन सब बातें– इतिहास, कालक्रम आदि भी भूल जाते हैं। ऐसी अवस्था में मीराँ के मुख में नरसीजी की बात और नरसीजी के मुख में मीरां की बात रख देने में पद के भक्त-गायक को कोई संकोच नहीं रहता है।

मीराँ बृहत्पदावली में मीराँ का एक पद है—

"भावना को भूखो सांवरो म्हारो भावना को भूखो ॥ टेर ॥
शबरी के बोर सुदामा के तंदूल भर-भर मूठ्यां ठूंको ॥ १ ॥"[1]

यह पद पाठांतर के कुछ भेद से और पंक्तियों के उलट-फेर से नरसीजी के नाम से भी उल्लिखित हुआ है। पदों के लोक-गायक 'नरसीयानो स्वांमी सांवरियो' के स्थान पर 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' की छाप लगाने में या इससे उलटा करने में पारंगत थे। अतः पदों के कवि-नाम की छाप को बहुत महत्व देना शोधन कार्य में कभी-कभी भयावह बन जाता है।

एक बात की स्पष्टता करनी आवश्यक है। 'नरसीजी रो माहेरो' की भिन्न-भिन्न कवियों द्वारा की गई रचनाओं में कुछ नरसीजी की छाप के पद मिलते हैं। ऐसे पदों को लोगों ने नरसी कृत ही मान लिये हैं। मीराँ कृत माहेरो में मीराँ की छाप के पद मिलते हैं, जिनको भी विद्वानों ने मीराँ कृत मान लिये हैं। नरसीजी के प्रामाणिक पदों की वाचना (संग्रह) प्रस्तुत करते समय ही इन पदों का संपूर्ण परीक्षण होगा। ऐसे परीक्षण के पूर्व नरसीजी के और भी हिन्दी-राजस्थानी अनेक पदों का संग्रह और प्रकाशन आवश्यक है। इस दृष्टि से माहेरो के नरसी-छाप के पद हमने नरसी के नाम पर दिये हैं। गुजराती हारमाला में भी नरसी के नाम की छाप वाले अनेक पदों को अभी तक विद्वान् लोग नरसीकृत ही मानते हैं। इससे राजस्थानी पद भी इस प्रकार नरसी के मान कर संगृहीत किये गये हैं। अनेक राजस्थानी पदों में राजस्थानी के साथ

---

१. मीरां बृहत्पदावली (प्रथम भाग) पृ० १६५। वहां पर सम्पादक ने पाद टिप्पणी में लिखा है "आनंदस्वरूपजी से प्राप्त"। इससे मालूम होता है कि यह पद कोई हस्तप्रति से नहीं लिया गया है। परन्तु, हारमाला का पदांक १६ वाला पद नरसीजी का है जो हमने माहेरो की (घ) प्रति में से लिया है। वास्तव में यह पद मीराँ का है या नरसिंह का यह मानना विचारणीय है।

गुजराती का मिश्रण भी पाया जाता है। नरसी कृत कुछ व्रज भापा के पद भी यहाँ सर्व प्रथम संगृहीत किये गये हैं।

माहेरो का सम्पादन

विभिन्न कवियों द्वारा हिन्दी-राजस्थानी नें लिखे गये 'नरसीजी के माहेरों' का एक सुघड़ संपादन प्रस्तुत करने का कुछ समय से हमारा विचार था। इसके लिये हम रतना खाती, मीराँ आदि के माहेरों की हस्तप्रतियों या प्रतिलिपियों आदि की खोज कर रहे थे। बीकानेर के शोधरसिक विद्वान् श्री अगरचन्दजी नाहटा ने भी हमें मीराँ कृत माहेरो की एक हस्तप्रति की नकल भेजी थी।

इस खोज के लिये मैं अक्टूबर १९६७ में जोधपुर गया था। इस विपय में 'राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान' के साथ मेरा पत्र व्यवहार चल रहा था। उक्त प्रतिष्ठान में मीरां कृत 'नरसीजी रो माहेरो' की ६ हस्तप्रतियां देखने में आई। इस प्रतिष्ठान के तत्कालीन निदेशक डॉ.फतहसिंहजी(एम.ए;डी.लिट्) के साथ इस सम्बन्ध में कुछ चर्चा हुई। डॉ० साहब का कहना था कि अन्य कवियों के माहेरों की अपेक्षा मीरां कृत माहेरो के संपादन और प्रकाशन की आवश्यकता अधिक है। उन्होंने मुझे मीरां के माहेरो का स्वतंत्र संपादन करने की सूचना दी। फलस्वरूप मैंने यह कार्य प्रारम्भ किया।

रा. प्रा. वि. प्रतिष्ठान की ६ प्रतियाँ और बीकानेर से प्राप्त हस्तप्रति की प्रतिलिपि के आधार से हमने यह संपादन प्रस्तुत किया है। इन हस्तप्रतियों का कुछ विवरण यहां देना आवश्यक है। इन प्रतियों को हमने (क) से (छ) तक की संज्ञा दी है और संकलन में प्रति का पाठ या पाठांतर सूचित करते समय इन संज्ञाओं का ही उल्लेख किया है।

'क' संज्ञक हस्तप्रति—

छुट्टे पत्रों की इस हस्तप्रति में कुल ११ पत्र हैं। प्रति का नाप १२$\frac{१}{२}$×५$\frac{१}{२}$ इंच है। रा.प्रा.वि.प्रतिष्ठान में यह प्रति ग्रन्थाङ्क १९३७७ पर क्रमाङ्कित है।

इस प्रति में लिपिकाल का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है परन्तु, लेखन, कागज आदि से विक्रमीय २०वीं सदी का अनुमान होता है। तुलसीदास के 'रामचरित-मानस' के गणपति-स्मरण में दिया गया मंगलाचरण इस प्रति में लिखा है।

नरसी मेहता के पूर्वजन्म की कथा का इस प्रति में बहुत विस्तार नहीं है किन्तु, संक्षिप्त रूप में अवश्य है।

'ख' संज्ञक हस्तप्रति—

छुट्टे पत्रों की इस हस्तप्रति की कुल पत्र संख्या ४८ है। प्रति का नाप १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इंच हैं। रा. प्रा. वि. प्रतिष्ठान में इसका ग्रन्थाङ्क ८३ (इन्द्रगढ़) है। पुष्पिका में लिपिकाल संवत् १९१९ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष बीज (द्वितीया) बताया है। पुस्तक बगसी रामरतन रामबगस बालाबगस की लिखी, इन्द्रगढ़।

इस प्रति में मंगलाचरण मीरां कृत है। पत्रांक १२ तक नरसी के पूर्वजन्म की कथा विस्तार से दी गई है। नरसिंह द्वारा की गई शिव-आराधना आदि का प्रसंग देकर विस्तार किया गया है।

'ग' संज्ञक हस्तप्रति—

बीकानेर के श्री अगरचन्दजी नाहटा से पास संवत् १९१२ अषाढ़ कृष्ण द्वितीया की लिखी हुई हस्तप्रति है। इसकी प्रतिलिपि श्री नाहटाजी ने भेजी थी। जिसके पाठ को हमने (ग) संज्ञा दी है।

इस प्रति में नरसिंह के पूर्वजन्म की कथा विस्तार से दी गई है। कथाक्रम अधिकांश (ख) प्रति से समानता रखता है।

'घ' संज्ञक हस्तप्रति—

छुट्टे पत्रों की इस प्रति की कुल पत्र संख्या १४ है। सुवाच्य और बारीक अक्षरों से लिखी हुई इस प्रति के ऊपरी और निम्न भाग में कुछ अलग पद भी लिखे गये हैं। कथावस्तु क्रमबद्ध है। इसमें क्षेपक अंश कम हैं। नरसिंहजी के पूर्वजन्म की कथा संक्षेप में ही दी गई है। प्रति का नाप ११$\frac{1}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इंच है। रा. प्रा. वि. प्रतिष्ठान के संग्रह में इसका ग्रन्थाङ्क २७८१७ है। यह प्रति हमारे संपादन में बहुत मार्गदर्शक बनी है। इसमे लिपिकाल प्राप्त नहीं है। विक्रमीय १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखी गई हो, ऐसा अनुमान होता है।

'ङ' संज्ञक हस्तप्रति—

यह भी छुट्टे पत्रों की प्रति है। कुल पत्र संख्या १६ हैं। प्रति का नाप ११×५½ इंच है। रा. प्रा. वि. प्रतिष्ठान में इसका ग्रन्थाङ्क ३०८७९ है। इसमें पूर्व जन्म की कथा संक्षेप में ही दी गई है। इसका लिपिकाल वि० संवत् १८८८ (शाके १७५३) है। पुष्पिका में इस प्रकार लिखा है—"सं० १८८८ शाके १७५३ मिती श्रावण वदि १ शुक्र दिने लिखितं मिश्र सालगरामेण स्व-पठनार्थं ॥"

'च' संज्ञक हस्तप्रति—

इस प्रति के छुट्टे पत्रों की कुल संख्या २४ है। प्रति सुवाच्य है। पत्रों के ऊपरी भाग में और निम्न भाग में कुछ पूर्ति के पद पीछे से लिखे गये हैं। प्रति का नाप १२½×६ इंच है। रा. प्रा. वि. प्रतिष्ठान के संग्रह में इस का ग्रन्थाङ्क २७८३३ है। नरसीजी के पूर्वजन्म की कथा इस प्रति में कुछ विस्तार से दी गई है। इसमें लिपिकाल उपलब्ध नहीं है परन्तु, अनुमान से विक्रमीय १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की प्रति मालूम होती है। पाठ-शुद्धि और पाठ्यक्रम के निर्णय में यह प्रति हम को ठीक सहायक बनी है।

'छ' संज्ञक हस्तप्रति—

छुट्टे पत्रों की इस प्रति में कुल पत्र संख्या २९ है। प्राप्त प्रतियों में हमें यह सब से प्राचीन लगती है। प्रति का नाप १०½×५¾ इंच है। इस प्रति की भाषा में प्राचीन अंश मिलते हैं।

इस प्रति में पत्रांक २ से ८ अप्राप्त हैं। इस प्रकार यदि यह प्रति खंडित न होती तो इस संपादन में बहुत मार्गदर्शक बन जाती। पाठों में भी यत्र-तत्र अविशदता मालूम देती है। प्रति का अन्तिमांश इस प्रकार है— संवत् १८६५ शाके १७३० प्रवर्त्तमाने मासानांमोत्तमे मासे श्रावण मासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ ११ भोमवारान्वितायां संपूर्ण। लिखतं ब्राह्मण गुलाब लिखावतं बाबाजी रागोदासजी स्वयं पठनार्थं ॥

उपर्युक्त भिन्न-भिन्न प्रतियों से उपयुक्त पाठ का चुनाव करके सम्पादित

संकलन प्रस्तुत किया गया है। संकलन में कहां पर किस प्रति का पाठ लिया गया है. यह जानने के लिये प्रतियों को (क), (ख) आदि संज्ञा सूचित की गई है। पाद टिप्पणी में कुछ आवश्यक पाठांतर भी दिये गये हैं। वहां पर पाठांतर की 'पा०' संज्ञा के बाद हस्तप्रति की (क), (ख) आदि संज्ञा दी गई है।

माहेरो के संकलन में अनेक क्षेपक अंश और मीराँ से इतर तत्वों को हटा देने का प्रयास किया गया है। परन्तु, यत्र-तत्र कुछ क्षेपक अंशों को निभाना भी पड़ा है। कारण यह है कि कथा का क्रम और कलेवर को अस्तव्यस्त करना हमने उचित नहीं समझा है। अधिक प्रमाणिकता के लिए उपर्युक्त प्रतियों से भी अधिक प्राचीन प्रतियों की उपलब्धि के बाद ही ऐसा प्रयास करना सरल और फलदायी होगा। इस कारण से कुछ प्रेमानदीय अंशों का भी निर्वाह करना पड़ा है।

नरसिंह के पूर्व जन्म की लम्बी-चौड़ी कथा क्षेपक है। परवर्तीकाल की प्रतियों में ही उसका अधिक विस्तार मालूम होता है। अतः हमने इस कथा का संक्षिप्त रूप रख कर शेष अंशों का त्याग कर दिया है। समधिन के गाली-प्रयोग एवं भोजन सामग्री का वर्णन आदि अनेक प्रसंगों को भी क्षेपक मान कर हटा दिया गया है।

माहेरो की दो हस्तप्रतियां

माहेरो का संपादन-कार्य पूरा हो जाने के बाद राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में माहेरो की दो और नई हस्तप्रतियां देखने को मिली। इन प्रतियों का भी मैंने अवलोकन कर लिया है। इन प्रतियों को (ज) और (झ) की संज्ञा देकर इनका विवरण यहां दिया जाता है।

'ज' संज्ञक हस्तप्रति—

छुट्टे पत्रों की इस हस्तप्रति में कुल १४ पत्र हैं। प्रति का नाप १२½×६ इंच है। रा. प्रा. विद्या प्रतिष्ठान में इसका ग्रन्थाङ्क ३६९५२ है।

प्रति की भाषा अशुद्ध है १४वें पत्र के पिछले भाग में संध्यावंदन की विधि लिखी है। इससे ज्ञात होता है कि लिखने वाला या पढ़ने वाला ब्राह्मण होगा, ऐसा अनुमान होता है। प्रति की लिखावट विक्रमीय १९वीं शताब्दी की मालूम

होती है। नरसोजी के पूर्वजन्म की कथा इस में संक्षेप में ही दी गई है। वस्तु तथा संकलन अधिकांशत: हमारे संपादित पाठ से साम्य है।

'झ' संज्ञक हस्तप्रति—

छुट्टे पत्रों की इस हस्तप्रति में कुल ६० पत्र हैं। प्रति का नाप ९×६ इंच है। राजस्थान प्रा. वि. प्रतिष्ठान के संग्रह में इसका ग्रन्थाङ्क ३६१५९ है। प्रति की लिखावट कुछ स्वच्छ है। इसमें नरसीजी के पूर्वजन्म की कथा बहुत विस्तार से दी गई है। इसमें क्षेपक अंश का बाहुल्य प्रतीत होता है। प्रति की अन्तिम पुष्पिका इस प्रकार है— संवत् १८८४ शा. १७४९ पौष शुक्ल ११ शुक्रवार ॥ श्री ॥ दसखत शिवबगस का स्वपठनार्थ ॥

इन प्रतियों में कोई विशेषता नहीं है। 'झ' प्रति कुछ पुरानी होने से उल्लेखनीय है। 'ज' प्रति में दिये गये पाठ का संकलन क्रमबद्ध है, परन्तु प्रति में अशुद्धियों की मात्रा अधिक है।

पाठ का चुनाव—

जहाँ संपादन में अनेक प्रतियों का प्रयोग किया जाता है, वहाँ सामान्यत: एक प्रति का पाठ आदर्श मान कर संपूर्ण रूप में दिया जाता है। यह पद्धति बहुजन-मान्य होने पर भी निर्दोष नहीं है क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रतियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के दोष, त्रुटियां, अशुद्धि और क्षेपक आदि रहा ही करते हैं। सच्चे अर्थ में संपूर्ण आदर्श पाठ वाली एक प्रति का मिलना प्राय: असम्भव-सा होता है जब तक कि किसी ग्रन्थकार की समकालीन अथवा उसकी स्व-लिखित प्रति ही उपलब्ध न हो जाय।

यदि एक प्रति को आदर्शाधार प्रति मान लें परन्तु,अन्य शोधकर्त्ता उसे त्रुटिपूर्ण भी मान सकते हैं। अर्थात् मेरे नम्र मत से किसी एक प्रति के समग्र पाठ को आदर्श मान लेने की संपादन-पद्धति परंपरागत होने पर भी संपूर्ण निर्दोष और सर्वथा अनुकरणीय भी नहीं है। अत: इस रूढ-परम्परा से कुछ अलग चलकर हमने किसी एक प्रति का पाठ आदर्श न मान कर विभिन्न प्रतियों के पाठ से पृथक-पृथक् खंडों का चुनाव कर के आदर्श पाठ का निर्माण किया है और इस आदर्श पाठ में 'माहेरो' के संपूर्ण प्रसंगों को समाहित करने का दृष्टिकोण रखा है।

उपसंहार

संपादन का कार्य पूरा हो जाने के वाद नरसी मेहताजी के और मीरांबाई के अनेक नये पदों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। तब मैंने देखा कि मीरां कृत माहेरो में जो मीरां की छाप (मुद्रा) वाले पद हैं वे मीरां के नाम से ही यत्र-तत्र स्वतन्त्र रूप से प्रकट् हुए हैं और भिन्न-भिन्न गुटकों में भी संगृहीत हुए हैं। इससे माहेरो मीरां कृत होने की मेरी मान्यता और भी दृढ़तर बन गई है।

नरसी मेहताजी के राजस्थानी-हिन्दी पदों के संग्रह में मुझे जोधपुर के राजस्थान प्रा० वि० प्रतिष्ठान का सहकार मिला है। इसके लिये मैंने दो बार राजस्थान (जोधपुर) का प्रवास किया। प्रतिष्ठान के गुटकों से कुछ पद मिले हैं। पाली-मारवाड़ से भी कुछ कण्ठस्थ पद मिले हैं। परन्तु, सबसे अधिक पद तो मुझे वीकानेर से मिले हैं।

वीकानेर के विद्वान् श्रेष्ठी श्री अगरचन्द नाहटा के पास के हस्तलिखित गुटकों से अनेक पद मिले हैं। श्री नाहटाजी ने अनूप संस्कृत लाइब्रेरी आदि के हस्तलिखित ग्रन्थों से भी नरसीजी के पदों की प्रतिलिपि करा कर हमें भिजवाई थी। गुजरात विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० अम्बाशंकर नागरजी के पास से भी कुछ पद मिले हैं। गुजरात और राजस्थान के अन्य अनेक साहित्य-रसिक मित्रों ने भी पदों की प्राप्ति में सहायता की है। इन सभी मित्रों का मैं ऋणी हूँ।

नरसीजी रो माहेरो आदि के अध्ययन और सम्पादन में मुझे सम्पूर्ण सहकार तथा सुविधा देने वाले रा० प्रा० वि० प्रतिष्ठान के भूतपूर्व विद्वान् निदेशक डॉ० फतहसिंहजी एम० ए०, डि० लिट् तथा उपनिदेशक डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारियाजी और प्रतिष्ठान के अभ्यासनिष्ठ अन्य कार्यकर्त्ताओं का भी मैं ऋणी हूँ। माहेरो और नरसीजी के पदों के प्रकाशन का कार्य-भार उठाने के लिये रा० प्रा० वि० प्रतिष्ठान तथा राजस्थान-सरकार का आभार प्रकट् करता हूँ।

इस प्रकार के शोध-कार्य में मुझे प्रोत्साहित करने वाले मेरे मित्र डॉ० भोगीलाल ज० सांडेसरा (संचालक, प्राच्य विद्या मन्दिर, बड़ौदा) का भी मैं हृदय से आभारी हूँ। अन्त में प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के वरिष्ठ शोध सहायक श्री

ओंकारलाल मेनारिया के प्रेमपूर्ण सहकार और मार्गदर्शन के लिये मैं अत्यन्त ऋणी हूँ और प्रकाशन विभाग के कार्यकर्ता श्री गिरधरवल्लभ दाधीच का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के प्रूफ-संशोधन में अपना पूर्ण सहयोग दिया। मेरा निवास संस्था से बहुत दूर गुजरात में होने के कारण मुद्रण-कार्य के साथ-साथ प्रूफ-संशोधन की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध नहीं थी, अतः मुद्रण में रही त्रुटियों के लिये मैं क्षमा-प्रार्थी हूँ।

कवि कुटिर : रांधेजा
(उत्तर गुजरात)
जिला : गांधी नगर

जेठालाल त्रिवेदी

मीरां कृत

नरसीजी रो माहेरो

मंगलाचरण

सोरठा

(छ) गुर गणपति गोविंद, बिनय करूं सारद सुमरि।
हरो मोरि मति मंद, करो कृपा तब काम सरि ।।
संत सुजस सुष दैंन, मैं मीरां इम उच्चरूं।
श्रुति पुरांन के बैंन, सुमरि सुमरि हिय हरि धरूं ।।
[दिवस एक आनंद मन, उपज्यौ मीरां तणै। ५
हरि मंदिर हरि नांम, वड़-भागी श्रवणां सुणै ।।]

दोहा

(क) पच्छिम दिसा प्रसधि सुख, श्री रणछोड़ निवास।
नरसी केरो माहिरो, गावंहि मीरांदास ।।
क्षत्रि-बंस में जनम जनू, जानि मेड़ते-बास।
कहु नरसी को माहिरो, नाना विधि इतिहास ।। १०
(छ) [सखी आपनी संग ले, हरि-मंदिर पैं आय।*
भक्ति-कथा आरंभी जनु, हरिगुर सीस नवाय ।।
हरि बासुर के समसि सुख, आये सब मिल संत।
ग्यांन-ध्यांन रसरंग तहां, मीरां मन हरखंत ।।]

---

* मीरांबाई की मिथुला नामक दासी-सखी और मीरांबाई के संवाद के रूप में नरसीजी का माहेरा पाया जाता है।

पद–राग सोरठ

(क) सांवरिया प्रीति निवाज्योजी । १८
थो तो छो प्रभुजी म्हारा गुणरा सागर,
औगुण सारु मति जोज्योजी ॥
काया–नगरी पेरो लाग्यो,[१]
उपर आप रखाज्योजी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, २०
वैयां गही सो निभाजोजी ॥ [१](अ)

मीरां उवाच राग काफी

(ख) धन्य–धन्य आज की घरी, सतसंग म(में) परी ॥ टेक ॥
श्रवनें सुनत श्रीमद्‌भागवत, रसना रटत हरि ।
स्यामा स्याम की माधुरी मुरत, निस–दिन हीया म(में) अरी ॥
मन बुड़त लालीगर सागर, देही पुनित करी । २५
मीरां चरन–सरन गीरधर के, भव की विपत हरी ॥

(ख) सुनि सखी मिथुला नाम, संत–सहाय प्रभु असैं करहि ।
नरसी के गृह आय, किय काम पुरण प्रभु ॥ [१] आ)

सखी उवाचै दोहा

(क) को मंडल को देस में, को संतन काज सवार ।
को नरसी किहि विधि भयो, कहो मोहि राजकवार ॥ ३०

मीरां उवाचै दोहा

होय प्रसन्न मीरां कही, सुनि सखी मिथला नाम ।
नरसी कौ अभय कियो, सारे सवही काम ॥ [१](इ)

---

१. पा० (च) कायानगरी घेरोजी लागो ।
१. (अ) पा० (व) "बांहि गहे की निवाज्योजि ।"
१. (आ) पा० (क):–"हरि भजतां कारज किये, नरसी जू के आय ।
जा को भजन जु कीजिये मिघन न व्यापै काय ॥"
१. (इ) पा० (च):–' नरसी कुं अभय किये, सिद्ध किये सब काम ।"

चोपई

पूरव दिसा नृपति यक होई, नाम सुभद्र जानि सब कोई ।
दियो द्विज श्राप ताहि यकवारा, होहु पसू बन जायनहारा ।।[२]
द्विज ही श्राप दे जांवन लागा, करि बहु क्रोध तनु तजे अभागा । ३५
सोहि गिरनारि नृपति पुनि जाई, रु चेर अधम तनू सिंह की पाई ।।

(ख) भये बहु काल बसत बन माहो, भयो अघ पूर पूरव सुधि नांहो ।।
हतै मनुष्य बहु आवत जाता, भयो विपुल बहुरि विख्याता ।।
भये तिहिकाल नृपति एक होई, वसत गागरुन पीपा सोई ।।
अवसर पाय पछिम कु धायो, श्री रणछोड चरन मन लायो ।। ४०

दोहा

गागरुनि गढ़को धनी, चल्यो द्वारका-धाम ।
ता वन मृगपति वसत है, पूरन एके नाम ।।

चौपई

मारग जात मीलो मृग ईसा, करत दरस तन नाय उसीसा ।
करि धरी सीस कंठिका बांधि, अघ छिनत तन जगी समाधि ।।
पुनि सिर नाय कहें कर जोरी, सुनहु नाथ यक बिनती मोरी । ४५
हते मनुस्य बहु आवत जाता, कसें अधम म(मैं) होउ सुनाथा ।।

(क) बोले गिरा सुधासम राजा, सरेहि सिंह तुमरे सब काजा ।
नग्र जाहु जूनागढ मांही, जन्म विप्र-कुल उत्तम पाहीं[३] ।।
हरि के संत निकसे कोउ आई, तिनकहु तात देउ पहोंचाई ।
बहु विधि ग्यान शिष्य जमु दीनो, नृप हरि हेत गवन पुनि कीनो ।। ५०

---

२. पा० (ख):–प्राचि दिश को भूप, धर्मसील द्विज भक्तवर ।
ते भयो सिंहस्वरुप, दियो श्राप दुज देख वपू ।।"

३. पा० (ख):–"बोले गिरा सुधासम राजा, ससिंघ तुमरे सब काजा ।
अब जावो जुनागढ माही, जन्म विप्र-कुल उत्तम पाही ।।"

दोहा

गयो नृपति द्वारावती, सिंह रह्यो वन माय ।
नित हरिगुन मुष उच्चरे, प्रेम सहित मन लाय ।।

चोपई

बीत्ते कछु दिन कठन कराला, जनमे आय विप्र घर बाला ।
नरसी नाम दियो द्विज देवा, करै सदा सुचि प्रभु की सेवा ।।[४]
भयो विवाह परम सुखदाई, तार्के येक कन्यका जाई ।　　५५
नगर रम्म यक पुरी सुदामा, तहां वसैं बिप्र सिरीरंग नामा ।।
ताके पुत्र येक परम विवेकी, नरसी कन्या दुइ विसेखी ।
ता कन्या के भई इक बाला, नाम सुलछा भग्तरसाला ।।[५]
(ग) प्रथम त्रिया सुरधाम सिधावा, नरसी कीनो द्वितीयक व्यावा ।
नरसी के पुनि सुत भये दोइ, सुखद सील जाए सव कोई ।।　　६०

दोहा

गिरवर पर उचो सीखर, परनकुटि रचि लाल ।
तुंब-बेल ता उपरे, सदा रहे मनु जाल ।।
सुत-दारा मिल ताहां रहै, करे भजन हरि-ध्यान ।
रहित भये संसार सु, ओर काज कछु आण ।।
(ख) ति अवसर श्रीरंग तव, रच्यौ कन्यका व्याह ।　　६५
पूजन लागे देव सव, मंगल परम उछाह ।।
तंदुल करि केसरी (सरस), नोत करी पुरवास ।
देख उछाह विवाह का, कवरी भई उदास ।।
कवरि बिचारे मन उक्त धरि, डारत सोक उसास ।
प्रभु कुं सीस नवाय के, गई सासु के पास ।।　　७०

---

४. पा० (ख)–"विते कछु दिन कठन कराला, जन्म द्विज सुमंत धरि बाला ।
हरके मात-पिता सव भाई, मानु रंक भूमि निधि पाई ।।"

५. पा० (ग) 'नाम सुलछन नक्तिरसाला ।" (ख) "नाम तुलसा भक्तिरसाला ।"

॥ चोपई ॥

चरना पाय निवायो सीस, रखे न बाईजी मों पें करीस्यो रीस ।
म्हारे छे माहेरानों काम, कागद लिखो-न जुनांगढ ग्राम ॥[6]

सासु उवाच चोपई

रे वहु तोहे काई लागो, माये मुई जब पीहर भागो ।[7]

दोहा

(क) बात सुनत हर-हर हसी, मुख मोरत सब नारी ।
संव पूरि समरण करै, कहा करै जिम नारी ॥ ७५

जिठानी उवाचै

देखो इन कवरी की बातें, मै उभी नभ डारत हाथे ।
ताल कूटणो पायो बाप, लिखि पत्री पहुचावन आप ॥
होड़ हमारी कियें कहा होत, तात के भवन मातको सोत ।
जद सासु मन करुणा थई, इतनी बात घणों सो कही ॥

दोहा

नरसीजी आवै नही, भला न कहासी लोक । ८०
कवरी के मन खटक ही, मात मुइ को सोक ॥

श्रीरंग उवाचै कागद- चोपई

(ख) लावोनी कागद लावोनी दवाति, कलम धरो श्रीरंग कें हाति ।
सिधि सिरी जूनागढ ग्राम, व्याहीनो नरसी महतो नाम ॥
थे छो महताजी म्हारा पुरणनाथ, देवा-लेवानी हवे स्युं मुज बात ।[8]
आवस्यां अठाला, मानस्यां भरे, इण ओसर थारी डीकरी मले ॥ ८५

---

६. पा० (ग) "मारू छ महिरा नुं काम, कागद लखो जुनागड़ गाम ।"

७. पा० (क) "रे वहु तन कांई लागो, माय मुई न पीर भागो ।"
(ग) रहै बहु तन काहे लागो, माय मुई जद प्रीहर भागो ।"

८. पा० (ग) "थे छो मेथाजी मारे पुरणनाथ, देवा-लेवानी स्युं छे वात ।"
(ङ) "थे छो महताजी माना पुरणनाथ ॥"

आठें सातें लावो मतिबार, बेग पधारो नवमी मंगलवार ।[१]
आपना घरनों पांडो कोकिल्यो, तिन जुनागढ़ सुधो मोकल्यो ॥

दोहा

दे केसर के छाटनां, विदा कीन द्विजराज ।
ले नोतो तांहां आइयो, बैठे सकल समाज ॥
चल्यो विप्र दंडोत करि, हृदय न हर्ष समात ।
सब पंचन के मुख वचन, जुनागढ़ कुं जात ॥

सभा उवाच

भक्त-भेष नरसी रहे, निज मुख संख बजाय ।
सनमंदी सब देखि है, तब तुम रहो लजाय ॥

सोरठा

श्रीरंग केरी मात, सब बिधि जाने व्याह की ।
तिन कौं पूछौ साथ, कही कथा करि है अवसि ॥ ९५

(क) सुनि वृद्धा पद सोर, ओर कोर चित्तवत्त रही ।
कागद लिख्यो बहोरि, जिहि नरसी आवै नहीं ॥

वृध्धा उवाच

दवात कलम कागद मगवावो, सब मिलि बैठो आय के ।
लिखिया येक बोल ले आवो, कागद दो लिखवाय के ॥

कागद दूसरो

पांच लाख तो लिखो जरी का, पांच लाख लिखो रेषमी । १००
पांच लाख गुजराती लिखद्यो, पांच लाख मुलतानी ॥
खासा अरु महमूँदी लिखद्यो, ओर पटोली कोर की ।
लाख बीस तो अंगिया लिखद्यो, कहा लिखो विधि ओरकी ॥
पचीस मण तो महदी लिखद्यो, पचीस मण लिखो रोली ।
पचीस मण तो गीरी गंदोरा, पचीस मण चारोली ॥ १०५

---

६. पा० (ग) साठ सात लावो मतिवार.........

पचीस मण मैदीया जानो, याहि लगावै प्यारी ।
तेरी सम माफक लिख दीनी, कहा लिखै बिधि सारी ॥[10]
श्रीफल सोलासे लिख भेजो, गाडा दोय सुपारी ।
लाख साठि तुम रोकड़ लिखद्यो, हाथ खरच है भारो ॥
ईतनौ ले करि आजो महताजी, सुंदर रथ सिणगारी । ११०
लिख वांची पत्री सब आगें, कही कथा सब कोकरी ॥
लिख दो दोय परवत फल ईनमें, यों उठि बोली डोकरी ॥[11]

दोहा

(घ) दो कागद करि में लिये, चल्यो विप्र सिर नाय ।
सब विप्रन अैसे कह्यो, दीज्यो बिनय सुनाय ॥

पद

(ग) लेजा रे कागद वा नरसी के पासरे ॥ टेक ॥ ११५
रामराम कह दीजे सबन को, और कीजै स्यावास रे ॥
जो इतनी विधि होय तुमारे, तो आजो रथ साजरे ॥
सनमंधि सब मिल इण औसर, कठन रहत है लाजरे ।
येवा वचन विप्र उर-धरिकें, गावै मीरांदास रे ॥

दोहा

(क) विप्र चले सुख मांनि के, हरख बढ्यो मन मांहि । १२०
पुत्र-बधू समजाय कें, जूनागढ कों जाहि ॥
ग्राम-निकट पुनि पूछियहु, महता नरसी-ठाम ।
पुरस येक अैसैं कह्यौ, ताको वन-विश्राम ॥
देषि नग्र महिमा अमित, विप्र लयो सुष मान ।
पुर-सोभा वरणो कहा, गृह-संपति सुनिधान ॥ १२५

---

१०. पा० (घ) "तेरी सम माफक लिखि दीनी, तोहि वनै आवै सारी ।"

११. पा० (घ) "लीषी दोय माटा इन मांहि........"

(ग) "लिषो दोय पाहूणा इन मांहि........"

॥ चोपई ॥

विप्र चल्यो सूधें बाजार, कोउ बतावो (महता) नरसीनो द्वार ।
वड़े भवन को देखत रह्यो, इनमें नरसी को घर कस्यो ॥
सेठ आये तहां ठाढो रह्यो, जै श्रीकृष्ण विप्रवर कह्यो ।[१२]
वनक कहै मैं नरसी नाहि, विप्र उदास भयो मन-मांहि ॥
जात पुरष यक पूछी बात, विप्र उदास भयो क्यों तात । १३०
परम दुखी छों रे हो बीर, वहत नेंनमें नीर अगात ॥

(च) भोजन मोहि मिल्यो नहि खान, श्रीरंग सो पाया जजमान ।
कर-गह पुरुष द्वार लै गयौ, नरसी भवन दिखावत भयो ॥
तुंव-वेलि तुलसी के वृंद, जहां नरसी जी करत आनंद ।
नरसीजी बैठा सेवा करै, पांड्यो जाय दडवत परै ॥ १३५
परकंमा दे लागो पाइ, आवो पांडेजी रसोइ थाइ ।
कागद दीनो महताजी-र हाथ, महताजी समर्वो द्वारका रो नाथ ॥

(क) नरसीजी पूछै घरनी बहु, बाईनो माहिरो आयो सहु ।
घरना टाबर भूखा मरै, स्यामी माहिरो स्योनो भरै ॥

(ग) छांनी रहो चुपकी रहो नार, माहेरो भरसी सरजणहार ।[१३] १४०
नरसी पूछ्यौ बाल-गोपाल, माहिरे मेलो झांझर-ताल ॥

दोहा

(फ) हीण बुद्धि बालक त्रिया, जानत नाही स्याम ।
यह पत्री गोपाल कों, पहोंचाउ निज धाम ॥
पत्री ले पीछी धरी, तुलसी तिलक चढाय ।
वन माही नरसी चले, देखि विप्र मुसकाय ॥ १४५
जुगल जोरी विनति करी, सुणजो श्री जदुराज ।
पत्री को पति राषजो, बाह गहे की लाज ॥

---

१२. पा० (च) 'सेठ आपनी हाट बेठो रह्यो........'

१३. पा० (क) और (च) "छानी रो छबकी रो बोली रो नारि........"

पद - राग : सोरठ

(च) कागद थानें आयो छै सांवलसाह (टेक)[14]
दोराणी जिठाणी वाकी सब मिल आइ ।
अब मत बार लगाय ॥
जिनस नाम जांनू नही प्रभुजी,
मति कोई भूल न आय । १५०
उनकों दोस नहीं मेरे प्रभुजी,
हम घर तुमसे साह ॥
पुरी सुदामा बेग पधारो,
तुम मति बार लगाय ।
नरसीयो न्यारो नहि तुमसू, १५५
लखमी लारां लाय ॥

दोहा

(छ) पत्री धरि पीपर तरैं, स्वामी आये ठाम ।
धरि विस्वास दयाल को, करिहैं पुरन काम ॥

(च) नरसी केरी बिनती, सुनत उठे भगवंत ।
कंपन लागे सेजमें, आए जहाँ श्रीमंत ॥[15] १६०
ले कागद अति वेग थी, सुन नरसी को काम ।
नरसी निज आश्रम गये, आप गये निज धाम ॥

(घ) तेहि अवसर कोप्यो नृपति, किंकर दीए पठाय ।
तेरी सोभा सूनि के, याद किए पुरराय ॥
विप्र सहित नरसी गये, नृप कुं कीन असीस । १६५
नृपति कहैं नरसी सुनउ, देखे चाहु ईस ॥
पुष्पमाल उरपें धरैं, हसि उठै पाषान ।
तेरो कुल तब ही बचै, मानौं भक्ति-प्रमान ॥

---

१४. पा० (छ) 'आयो छ जी सावलसाह कागद थांन .... ।"
१५. पा० (क) बचन सुनत कंपे प्रभु, लक्ष्मी जोरत हाथ ।
कौन भक्त-कारज भयो, किम कंपत प्रभु गात ॥

पद - राग : बिलावल

कृपा करि दरसण दीज्योजी सांवरिया माने ।।टेक।।
मैं तो भक्ति तजु नही, मन माने सोइ कीज्योजी । १७०
जो नृप नीच भयो प्रभु हमपें,
कुल दचाय मेरो लीज्योजी ।।
जो जस जाय रावरो अबही,
मोकुं दरसण दीज्योजी ।
कहै नरसी तुम सुनउ निरंजन, १७५
भक्त - साय तुम कीज्योजी ।।

दोहा

तृषित खेद नरसी भए, व्याकुल भयो शरीर ।
नरसी व्याकुल देखि के, आए श्रीजदुवीर ।।
श्रीपति तिरिया-रूप करी, आए जहां समाज ।
नरसी कु जल पाइ करी, गए फरि वृजराज ।। १८०

पद

मनै छै देवाजी थारा नाम रो आसरो,
तुम विन साह मेरी कुन करसी ? (टेक)
कोनु कहै गपीड़ो कोउ कहे कपटीड़ो,
कोई कहें तालकूट नाम खोटो ।।[16]
वोरान भरोसो ओर कोब सांवरिया, १८५
अमेन भरोंसो थानो मोटो ।।
मानैं तो यो राजा चकरवरती मारसी,
तीन लोक में थारी हांसी थासी ।।[17]

---

१६. पा० (क) "कोई कहै लोभियो, कोई कहु कपटियो ।
को कहै ताल - कुटियाल खोटो ।।"

१७. पा० (क) "म्हाने तो राजा चक्रवरती मारसी ।
घूलनी मूठड़ी धूल थासी ।।"

अबकी बेर मैरी साह किज्यो सांवरा,
तुमानि भक्तिनो बीरद जासी ॥ १९०
आज को हारडो नरसीयानू आपतां,
तुमानो बापनो सीम जासी ?

पद-कालगड़ो

(च) सांवरिया थारा गलनी माला द्योजी ॥टेक॥
भक्तवछल तेरो बिरद कहावे,
अबकी बेर जस ल्योजी । १९५
ओगण तजि धरिये गुण उरमें,
सुखका सागर छोजी ॥
जाइना फूल सूत-ने तागो,
थोड़ो ही वेवज छै जी ।
सांवरियो आवे रिम-जिम करतो, २००
महताजी माला ल्योजी ॥

दोहा

देय परिख्या नृपतिकु, चले लेय द्विजराज ।
उर-धरि मुरत-माधुरी, गावत गुन ब्रजराज ॥

चौपई

(छ) कीन विदा द्विजराज वहोरी, उर-धरी रमा-रमन वर-जोरी ।
पुनि नरसी गृहकु तब आये, श्रीरणछोडि चरन चित्त लाये ॥ २०५
पुनि बंधुनकु कथा सुनाई, सब मिल चलो संग सामुदाई ।[१८]
तदपि बंधु कहैं सुनउ भ्राता, संग मोडिया ल्यो तुम साथा ॥
नरसी वले सोच मन मांहि, बिन मोडिया मेरी गति नांहि ।

---

१८. पा० (च) "पुनि बंधुन सु कथा सुनाई । सब मिल चलो संग समुदाई ।
तदपि बंधु सद-विनय बहोरी । देखिये सो सामग्री तेरी ॥
तुलसी-पत्र चंदन है भाई । और नही मोहि राम-दोहाइ ॥

(छ) तंहि सहर बंगाली बसै। नरसी देखि मगन होई हसै ॥
धनि भाग प्रभु मेरो आज। तुम विन रह न मेरी लाज ॥ २१०
आदर करि मंदर ले आये। चरनोदक सु भवन सिचाये ॥

(घ) बिन पवन कछु गति, आही करै उपाय।
पुनि नरसी रथ कारने, आता विनय सुनाय ॥

चौपई

रथ तो तोहि देनउ नाही। ओदन छबना मुल येह मांही ॥
एक कह्यो बेल सो बूढा। रथपें कहा होय आरुढा ॥ २१५

दोहा

परस-बंस को रुप धरि, आये श्रीगोपाल।
रथकुं सुंदर साजिके, गोकल के प्रतिपाल ॥
वृषभ-जोय रथपें चढे, रथ हांके जदुवीर।
गृह नरसी के आयकें, गए सिंधु के तीर ॥

दोहा

बाजन लगे बाजंत्र बहु, संख मृदंग करताल। २२०
सुनि धुनि बालक ग्राम के, देखन आए ख्याल ॥
नरसी जी रथ उपरि, चढे नाय करी सीस।

चौपई

जो जन अरधपुरी सुं आये। संग साथी नरसीजु वतलाए ॥
काउना नाड़ा काउना जंत। बलदां कै मुख नहि अेको दंत ॥
पो पो करत नगर मैं गया। जाइ जदा मै डेरा होया। २२५
सासु पैं जद आज्ञा लई। पुत्री दोडि पिता पैं गई ॥
थेरे पिता मारैं भल आया। कहो-न माहिरो किण विधि लाया ॥
मारे छै वाई हरि को नाम। गंगा तुलसी सालगराम ॥
इह पिता सुक दे नहि सस्यो। जद मांगू जद हरि-हरि कह्यो ॥

दोहा

करि करुणां सजल-नयन, डूबी दीनता बाल। २३०
दीखत नांहि ताहि कछु, गहरी बाजै ताल ॥
कहां पिता तुम सों कहौं, सुनउ सांति मन लाय।
माई भर न माहिरो, ज्या की मात मर जाय ॥

चोपई

(क) नथी लायो यक मोड़ माटड़ी। नथी लायो ओठवारी घाटड़ी।
नथी लायो कुंकुनी पड़ो। नथी लायो डोरानी छड़ी ॥ २३५
नथी लायो महदीनी पुड़ी। नथी लायो पहरण री चुड़ी ॥
मायड़ हो तो जाने रीत। मायड़ हो तो मिलि-मिली गावै गीत ॥
मायड़ हो तो माहिरो भरे। माई माहिरो सूं न करे ?॥
खांड घृत बीन लुखो धान। माय बिना कुल में नहि मान ॥
माय बिना जूठो संसार। माय विना पुत्री निराधार ॥ २४०
माय मुइ जदिहुँ क्योंन मुई। येहु दुख सहवाने रही ॥"

माय दिये न पीरा के वेस। माय खिखाय विधि नाना पेस ॥
माय बिना देख्यो नहि पीर। माय बिना छूटो सव सीर ॥
माय बिनो कुण बुझै बात। माय बिना सगो नहि तात ॥
घोर जिठाणी बोलत बोल। माय बिना क्यों रहसी तोल ॥ २४५
अब मोहि मोत देहु गिरधारी। नाहि न लजा रहै हमारी ॥

---

१६. पा० (घ) नथी ल्याए तुम मोट मांड़डि। नथी ल्याएं वोठवानी गाटडि ॥
× × अब मोहि मोत देवो गिरधारी। नांही लजा रहंगि हमारी ॥
(छ) माइ मिलै मोहि बांहि पसारि। माइ ब्यानां वा दीसा ही वीसरी।
(ज) घरत खांड बीन [illegible] [illegible]। [illegible] बीना कुण पूछै वात ॥

डार उसास नैन-जल भरैं। अति करुणा मनमें धरैं॥
मूरछा खाय कें भूपरि परी। तन-सुधि नाहि गमरि नरहरि॥
धरि धीरज मन उठी वहोरी। पिता हांसी कीनी तुम मोरी॥
अति मति कलपै राखि इतबार। सव लिखल्या थारो परिवार॥ २५०
मन अति हरखि सास पें आई। दोनु कर जोरें विनय सुनाई॥
सुनोजी बाईजी अमनी बात। माहिर आयो अमनो तात॥
कर्यो एक नरसीजी विचार। मोने कह्यो लिखि ल्यावो परवार॥

जिठाणी उवाचै

देख्यो हे थारा बापनो हेत। आय सगा मैं करसो फजेत॥
देवानें नहि कापड़लानु ठाम। व्याही-सगा में आवियानु स्युं काम?॥ २५५
ताल वजाय मोडयो पेट भरै। स्यांमी माहिरो स्युं न भरै?॥
इना बापनी अरिधंग्या नार। तिनकौं जानें सब संसार॥
वडो भगत राम को नजोक। निठि-उठि मांग खात है भीख॥

द्योरानी उवांचै

(घ) कवरी वहुनो बाप भरसी माहिरो। लेस्यां पटोली सिरपाव साडी नही पेरो॥
देसी दखणी दा चीर ओर मोतियन की माला।[१९](अ) २६०
वे हाथ वजाडें म्रदंग सुत के करनाला॥

कवरी उवाचै चौपई

येहां बचन मानै जि न कहो। जेहो-तेहो बाप म्हानै जीवतो रहो॥
जे धन वहोत तुमारे पीर। कवहुक जल छाडत नदी-तीर॥
गरव न भलो सुनो तुम बात। यो धन गयो कोन की साथ॥
जैसे ओस गगन की छाय,[२०]। यो धन नैन देखतां जाय॥ २६५
अवधि भयो नृप नल सो नाम। ताउ विखो दियो भगवान॥

---

१९. (अ) पा० (क) कवरी वहुनूं बाप मरसी मांहरो, भारी लेस्यां पटोली सेउरी फारसारी॥

२०. पा० (क) "ज्यो जल गगन ओस की छाय......

(क) त्रिया सुत आप वीछवो पड्यो । ताको द्रव्य वहोत विधि हर्यो ।।
दुख-सुख संगी असें जान । गात्र निगम ही वेद पुरान ।।
सारी मिल वैठी इक ठाम । कही कथा निज पूरण काम ।।
लिख्यो कागद सखी वहोरी । भरन माहिरो दोलत थोरी ।। २७०
वाईनो देवर नरायनदास नाम । लिख ल्यायो छै सारो गाम ।।
गांची मोची ओर लवार । मोहिरो भरसी पैले-पार ।।
लिखि कागद कवरीनूं दीयो । कवरी आय पिता सोंपियो ।।

दोहा

(घ) दे कागद कवरी गई, वहोरि सास के पास ।
पुनि बोली पंचायति, करि है सगा में हास ।। २७५
आचारी पूजा करै, तीनकु घोर जिमाय ।
भेजो किंकर आपनो. काम करैं समुदाय ।।

चोपई

(क) जिद महताजी नें कोको थयो । तातो भोजन तयार भयो ।।
पुनि किंकर कहै कर जोर । सव मिलि चलो संत की ओड़ ।।[२१]

निरसी उवाच

पहरो माला तिलक विसाल । वाजन लगी खंजरी-ताल ।। २८०
वाजत संख घोर धुनि भई । प्रजा सव मिली देखण गई ।।
नाचत महतो कर-कर सेन । प्रजा देखत तिनके चेंन ।।
जव महतोजी पोली धस्या । सव गुजराती हड़-हड़ हस्या ।।[२२]
त्रिया देखि आई संख टेर । लागी कहन कथा उन वेर ।।[२३]

स्त्री उवाच राग-पनोती

कवरी-बहु तो धन्य, पीर पनोती छै । २८५
इनो वाप वजावै चंग, सैना पोती छै ।।

---

२१. पा० (य) । "पुनि किंकर कहैं कर जोरि। सव मिल चलो भक्त सिरमोर ।।"
२२. पा० (य) "सव गुजराती देखत हस्या ।"
२३. पा० (य) "त्रिया देखि वोली तिहि वेर । लागि कहन पुनि ताहि वेर" ।।

वैष्नव ने बयानो टोट, कंठी-माला छै ।
साथ विहारिया दस-बीस, टोपी वाला छै ।।
एक-एक छाप माल, सबकै दीनी छै ।।
माहिरानी भली चाल, सब विधि कीनी छै । २९०
मोसालो भरवानो ढंग, इन व्याई मांड्यो ।
नागरियानों विहार, इणै सर्व छांड्यो ।।
जल भरि कें प्रेम कटोर, कर पर दे जासी ।
मूको छाबड़ियां वे पाहन, नीतर उड़ जासी ।।
देखो तुम इनको चाल, जनम विगाडै छै । २९५
गहरी बजावै ताल, राग उचारै छै ।।
वेगो अंच लगाई, करो उनो पांनी ।
ज्यूं पडयो रहै दिन च्यारि, संख-धुनि रहै छांनी ।।

पद-राग सोरठ

(च) तातो पाणी धर्यो नावा नै,
चावल सीजै उनकै मांही, अैसो गरम कर्यो (टेक) ३००
थांका हुकम में ई'द महताजी, समधण ठठो कर्यो[२४] ।।
सांपड़वा ना मेली चरी, समोवण व्याइ नथी करी ।
जद व्याहनजी हांसी करी, समोहण दे नारायण हरि ।।

पद-राग मलार

सुणी मैं हरि आवन की वेर (टेक)
आज धुरां दिसी आवो मेरे प्रभुजी, स्याम-घटा घन घेरी ।। ३०५
काली-पीली घटा जिउ भाँगी, आवें गहरे फेर ।
गाजत घोर ज्यामें विजरी चमकै, लूंम रही चउफेर ।।
नरसीनो स्वांमि सांवरियो मती जी लगावो बेर ।

---

२४. पा० (छ) "पानी धर्यो छैं, नावान तातो पांनी धर्यो छै ।
चावल सीझवा कै मांहि अैसो गरम कोयो छै ।।"

चौपई

उलटा इंद्र अनंत अपार। पुत्री-घर बरसै मूसल-धार ॥
भीजे बसन रंग बउ परै। गारी देत भवन में बरै ॥ ३१०
इणमैं महताजी नो स्यूं जाई। येहा तो मावटा हमें सौं थाय ॥

दोहा

करी सिनान विनति करी, बउरी-बउरी सिर नाय।
भोजन चतुर प्रकार के, पहुँचाये जदुराय ॥
(घ) भोजन कियो नरसी तहां, प्रभु दीए पहुँचाय।
सामगरी उर-भाव की, देवत रहे लुभाय ॥ ३१५

चोपई

चोखा चावल हरिया मूंग। खांड-घृत की लूंमालूम ॥
आंब जंबीरी आमलो आदो। नरसी नै आयो सालण सादो ॥[२५]
जब नरसीजी जिमन भेरां थया। सब गुजराती देखत रह्या ॥

दोहा

पूजा धरी पुनि आसनै, पुनि आए तिहि ठाम।
देखि रूप त्रिया सबै, बिसरि सबही काम ॥ ३२०

छंद

सोहे अधर उपर गात, बेसर नां मोती।
माला मोत्यांनूं हार, उर पैं दल-क जोती ॥
सोहे जड़ाव चूड़ो हात, कांकण पलकै छै।
बाजुबंद बंगड़ी हात, सुंदर झलकै छै ॥
नांनां तिलक-विसाल, भालि कीनां छै। ३२५
रमडवा सोरसा वाल, कडिया लीनां छै ॥

---

२५. पा० (छ) आंब जमेरी और आचार, कृष्ण कीयो को वरनें पार।

(च) झूक अंग मोड नार, लहकै चालै छै।
झांझर नो जणकार, पायल वाजै छै ॥[२६]

दोहा

त्रियारूप देखत वहोरि, नरसी भये उदास।
करी करुणा कन्या तणी, आये हरि के पास ॥ ३३०
दोय घड़ी मध्यान्ह पर, दिन आयो बै आज।
वेग पधारों आपइ, टलै वेर व्रजराज ॥

पद

कहां लगाई इति देर हो सांवरिया, कहां लगाई इति देर। (टेक)[२७]
कह भगतन में भीर परी है, कह लियो निंदरा घेर।
कहैं जु रहे हो रास-विलास में, कह मुरली की टेर ॥ ३३५
कह कुबजा मति तेरो फेर्यो, तामैं नांही फेर।
नरसीयो कहै सुनउ निरंजन, मति जी लगावो अवेर ॥

चौपई

थे छो नाथजी असरण-सरण। करां उपरें दाग्यो करन ॥
भारत में भीषमपन रह्यो। वेद विमल जस तेरो कह्यो ॥
मंजारी-सुत लीनो राख। गजघंटा उपर करि ठाक ॥ ३४०
द्रोपद-सुता की राखी लाज। जल-डूबत राख्यो गजराज ॥
सैन भगतनो सांसो हर्यो। सेवग ने घर पानी भर्यो ॥[२८]
धेना भगत सूं कीनो हेत। बीना बीज निपजायो खेत ॥
पुनि राजा के आयो भाई। जलतो चंदवो दियो बुझाई ॥ ३४५

---

२६ पा० (क) "छुटै अमोले नार लहकै चाले छे, झाझरणरी झणकार पायल हालै छै" ॥

२७ पा० (क) "कहां लगाइ येती वेर सांवलिया, उचो चढिकें जोउ तुमकों सुनो जो हमारी" टेर। इत्यादि

२८ पा० (क) "सेन भगत को सांसो हर्यो, आपहि रुप सेन को कर्यो ॥"

मृतक-गऊ जिवाई आप। संतन को भेटी परताप ॥
सतजुग त्रेतायुग के मांहि। संतन सों डुरायो नाही ॥
चंद्रहास नृप को दुःख हर्यो। वैस्य पाप अपना सु मर्यो ॥
उच-नीच जानू नही तोय। कहा अब चूक करी है मोय ॥
जो करनी जानोगा स्याम। तो कछु सरइ न एको काम ॥ ३५०
अैसे वचन कहत अकुलाई। उठि देखे पुनि मघवा आय ॥
अबकै न आवस्यो सुंदरस्याम। पुनि नागरिया साथे काम ॥

दोहा

बहु विनती नरसी करी, भक्ति-पक्ष की मूल।
आए नांहि स्याम त्यां, उर-उठी बहु सूल ॥

पद

मेरी तो तेरे नाम सूं अटकी, (टेक) ३५५
मार्यो कंस वैर करो केशव, करत कला नट की।
प्रगटे प्रेम कृपा करो, नागरी ग्वालन की मटकी।
कहै नरसी अब हमरी वैर, कहां परी पटकी ॥

चौपई

कबीरो तुमे नो हो तो वाप। वालद ल्यायो आपहि आप ॥
सवरी तुमेनी लागती माय। जाके बन-फल जूठे खाय ॥[२९] ३६०
करमा तुमेनी काकी थाय। ता घर खीच बिना सुधि खाय ॥
जादु-कुलनो राजा थयो। जीमन साग विदुर-घर गयो ॥
अजामेल तुम कुटंबी जान। ताकुं तुम दीनो विमान ॥
गिनका तुमेनी गोतनी होइ। तीनकु सीस निवायो तोई ॥
तुमे कुलघाती मातुल आप। तेरो मुख देख्या को पाप ॥ ३६५
कैरु पांडु तैं मरायल राय। गरभ परीछत कीन्ही साय ॥
श्रृंग मेरपुर भील निवास। तिनसूं तुमे कीन्हो परगास ॥
तुमे हरिचंद बहुरि दुख दियो। ताहि तुमेहि दरसण निज थयो ॥[३०]
तेरे अवगुन कहां लग कहु। तेरो गुन हमहि सब सहु ॥

---

२९ पा० (क) 'कवीरो तुमें नू लागै वाप, बालद लायो आपो-आप।
स्योरी तुम्हारी लागे माय, ॥

३० पा० (क) 'तुम हरिचंद सीबर दुख दीयो, ताको तुम पुर दरसन दीयो ॥"

दोहा

कहा अवगुन तेरा कहुं, सुनिये कृपानिधान। ३७०
अबकी बेर नहीं आवस्यो, पुनि नागरथी काम ॥[३१]

चौपई

उठी ध्यावो–न सारंग पानी। साथे लखमी थई सेठानी ॥
सूनी करुणा के वचन सुरेसा। कंप उठसै न अवसेपा ॥
(घ) रथ बाजि लिए सुखपाला। नरसी पें चले नंदलाला ॥
संख–धुनि पुनि बाजै। सब सूर तेतीसूं विराजे ॥ ३७५
रथ सुंदर मोहनी–रूप। तापैं बेठ चले सुर–भूप ॥
पुर कै निकट प्रभु आये। सब देखत रूप लोभाये ॥
पूर त्रिया भरै जल पानी। तहां आये स्याम सयानी ॥
मिल पूछन लागी बाता। तुमे काहांथि आये नरनाथा ॥
नरसीनो मंगल गायो। तिनको मैं किंकर आयो ॥[३२] ३८०

दोहा

घट मटकी जलपें रही, चली संग सब जाय।
तिन्ही त्रिया कु सुधि नहीं, लीनी चित–चुराय ॥

चौपई

छड़िदारां वाट मुकाई। नागरी न्यात जोवण आई ॥
उतर्यो नागरीनो अभिमानै। जाणैं उग्यो ससी अरु भानै ॥

दोहा

एहो कोन आयो पुरुष, मन सब कियो विचार। ३८५
कहै श्रीपति त्रिभुवन–पति, लीन मनुज अवतार ॥[३३]

---

३१ पा० (छ) "अब मेरे नहीं आवस्यो, पुनि मोथी परि है कांम ॥"
३२ पा० (क) "नरसीजू झांझ बजायो, तिनको में किंकर आयो।"
३३ पा० (ग) "येक प्रभु त्रिभुवन–पति, लिनु मनज अवतार।"
(ख) "क यह त्रिमवन अखिल पति, लिने मनुज अवतार ॥"

पद - राग : खमायच

पूछैं लोग नगर को सब मिल, कहा तुमारो नांव छै।
कोन देस के बासी कहिये, कांहां तुमारो गांव छै।
व्रज-मंडल में जनम हमारो, पछिम दिसा विश्राम छै।
नरसीजी नो चाकर कहिये, साहा सांवरो नाम छै॥ ३९०

दोहा

नरसी धाम चालो सकल, जदपि होइ परमान।
यो नरपति विवेक सुनौ, आयो स्याम सुजान॥
चले सकल नरसंग कै, करी मन विविध विचार।
कहै नरसी इनको भगत, मानो वचन हमार॥

चौपई

रथ बैठे श्रीगोपाल। घोरा नै कटि गुघरमाल॥ ३९५
रथपे लखमीजी सोहाई। रथ हांकत श्रीजदुराई॥
जहां नरसी भांझ बजावै। लखमी सहित तिहां आवै॥

दोहा

आये संग यदुपति तहां, रहे टक-टकी पाय।
लखमी सहित निरखत प्रभु, नरसी प्रेम लुभाय॥

चौपई

भक्त आया जी सेठ सांवरिया। उठि महतो नै माधव मलिया॥ ४००
मिलतां बोले सुंदरश्याम। मेरो प्रगट न लीज्यो नाम॥
रसि नाम हमारो थरपो। थानै मन चावै सो खरचो॥
एक काना लेखण कोसी। थारो नाम दामोदर डोसी॥[३४]

---

३४. पा० (ङ) "कामक लेवण खोसी नाम धरो दामो दोसी।"

दोहा

सकल पुरुष चाले तहां, मन अति सोच-विचार।
भोजन की वरनों कहा, जलहि न पावै पार ॥ ४०५
ग्राम सकल अंबर लिये, दीने समधी भेज।
भई भगत पैरामणी, मति लगादो जेज ॥

चौपाई

(क) चलो नरसी जी रथ चढ तोही। तुज विन लज्या रह न मोही ॥
तुमही जाहु संतन के ईस। तेरे वचन सुनि आवै रीस ॥

दोहा

भुज गह लक्ष्मी कृष्ण तव, रथपें दियो चढाय। ४१०
रथ हांकै गोपालजी, लखमी ता रथ पाय ॥
जाय सभा ठाढे रहे, नरसीजी के स्याम।
बसन बिछाये नगर के, तोउ न पूरे ठाम ॥

चोपई

घणा बागा थुरमा भारे। हलवस सभा में पधारे ॥
आयो महतो श्रीरंग व्याई। तासों मिलिया श्रीजदुराई ॥[35] ४१५
मों पै तुम किरपा कीजे। तुम लिख्या प्रमानै लीजे ॥

दोहा

(च) लखमी सहित यदुपति तहां, देखि कवरि हरखान।
एक टक होय सखियन सहित, लगि करन तव गान ॥

पद

निरख वदन छवि मैं बलि जाउं (टेक)
पैलें तात भ्रात संग स्वामी, देखि-देखि मनमें मुरजाउं ॥ ४२०

---

३५. पा० (ख) 'जब आयो श्रीरंग महतो व्याई, तोसें मीले जादूराई।"

पुनि आगवन सुनत प्रभु तुमरो, अति आनंद हिय में हरखाउं ।।
बेग करो परान प्रभु तुम, मीरां दास प्रभु को जस गाउं ।।

दोहा

परजापति-पत्नी तहां, लीने कलस-बंधाई ।
पचीस म्होर वा मै धरी, आभूषण पहराई ।।
पुनि कलस ले स्वासणी, बाहिर निकसी आय । ४२५
जदुपति तोखी सकल, गल-माला पहराय ।।
सहस्र म्होर ता मै धरी, देखत सकल-समाज ।
नगर-लोक धनि-धनि करै, धन नरसी महाराज ।।[३६]
लोक-रीत सब विधि करी, पंचामृत कर पान ।
सनबंधि मिल परस्पर, करन लगे पहचान ।। ४३०
कागद तो करपै दियो, बाचत मन हरखाइ ।
लीखी सामग्री देत है, आपही श्रीजदुराई ।।

चोपई

दीए लख पांच जरी के थांन । पांच लाख दीने मुलतान ।।
पांच लाख दीने गुजरात । पांच लाख रेसमीरा पात ।।
अंगिया कोर पटोली मान । दिये आप सब लिखा-प्रमान ।। ४३५

दोहा

रोळी मोळी खोपरा, दाख चरोली बदाम ।[३७]
दीनी विधि सारी तहां, सुर नर पूरन काम ।।
नगर-लोग तहां सब खडे, प्रभु दीये पहराय ।
तिनही गृह जायकै, बाल-वृद्ध-समुदाय ।।
जैरामदास अपने गृहे, रह्यो सोच बस सोइ । ४४०
तजि उधव ताकुं गये, आय सु विना न होई ।।

---

३६. पा० (ख) " धन महतो धन मित्र यो, धन्य सब सोही देस ।"
३७. पा० (घ) रोळी मोळी खोपरा, दाख चिरूंजो बिदाम ।"

चोपई

एक वांगो केसरियां छांटै। पाग वांधी छै अवळे आंट ॥[३८]
वींटी देल करां आंगलियां। सादा मोचा पहर्या सांवलिया ॥
एक कांना-कुंडल जिलकै। मणि मानक सोनां झलकै ॥
सिर-पेच किलंगी सोहै। ताहि देखत हि मन मोहै ॥ ४४५
गल-माल मोतिन की राजै। छबी देखि कोटि रवि लाजै ॥
कोई जानै त्रिभुवन-भूप। प्रभु कीन्हो वणिक नो रूप ॥
एक कहैं सखी सुनो सारो। रथ बैठ देखो याकी नारी ॥
ओढण पंच रंग पटोली। जोवै नैणां मैं अंबर गोली ॥[३९]
सोहै अंबर अंब परवाली। गल सोनानी खुंगाली ॥[४०] ४५०
अणवट विछिया-बंद वाजै। मानो इन्द्र-घटा जिम गाजै ॥
बोले कोकिला सुर वानी। मानों लखमीं गति जानी ॥
एको रूप कहा लगि कहिये। छवी निरख नैन रस लइये ॥
या तो चंद्रमुखी सी बाला। याके चंचल-नैन विसाला ॥
शीष-फूल राखड़ी राजै। छवी निरख निशाकर लाजै ॥ ४५५
वींदी रतन जटित हो खचही। मानो कामकेलि सी रचही ॥
पलकां अलक विराजै। श्रवन-कुंडल छवि साजै ॥

दोहा

तदपि बहुरि बोले प्रभु, मम कुल-रीत विचार।
यथा जोग पहरावनी, या विधि मानो सार ॥
सैन भक्ति तर साबटु, पहराये जदुराइ ॥ ४६०
परजा-पति-पतनी बहुरि, दरजी लीन बुलाइ ॥
कारीगर खाती बहुरि, पहराये पुनि चोर।
मोल अमित भूषन बसन, दिये आप यदुवीर ॥

---

३८. पा० (क) "पाग वांधी प्रभु अलै आंट।"
३९. जोवै नैन अंबुज घोली।"
४०. पा० (क) "गल सोनां दी लगवाली।"

चोपई

दीन्ही सासु नै एक चुँदड़ी । कोर-कोर हीरां सु जड़ी ॥
दोराणी जिठाणी-न दीखण चीर। श्रीपति स्वामी वांधै पीर ।।[४१] ४६५
मोटी वाइनै आप्यो सिणगार। छोटी बाइनै गल-मोतीन-हार ।।
राजलदे नै आपी असी। तीन-लोक मैं सीधे जसी ।।
तोलादेननो लखो चीर। माहिरो भर्यो आप जदुवीर ।।
(क) राता साळु भैरू घणां। केइ सगा न कोणकणां ।।
जो जाको चाहो सोही दयो। नरसी-जस जग में अति छयो ।। ४७०
वहुर बुलाये वालक-वृंद। रुचि विचारि दीने नंद-नंद ।।
कु भट कुंभ कलस लै आई। नख-सिख तो श्रीपति पहराई ।।

(घ) सकल काम पूरण भये, मनमें भये उछाह।
अमित मोल भूषण दिये, कवरी श्रीपति साह ।।
रजत सुवरण कै गींदवा, दोय दिये पुनि ताहि। ४७५
सब वांछित पूरण किये, कवरी सासु पैं जाहि ।।

दोहा

कवरी मन अति हरख जुत, वध्यो सोक मन मांहि।
मनवांछित पूरन भये, आज मात यहां नांहि ।।[४२]

चोपई

(क) उठो सेठाणी दुख कंपो। कवरी नै हृदां सु चंपो ।।
कहता ही कमला हीडै। कवरी नै हृदा सु भीडै ।। ४८०
मीले परस्पर सुखदाई। दोनु आंखि जल भर आई ।।
तुमेनि सासु मोहि वताई। हात जड़ाव चुड़ो पलकाई ।।
तहां महतीजी मिलबा नै आई। जहां लीखमीजीउ बिठाई ।।

---

४१. पा० (क) "धोर जिठाण्याने दीखनीरा चीर, नाहिरो भरै आप जदुवीर।"
४२. (क) कवरी को दुख जान कैं, वोले श्रीजदुराइ,
ख मेटो भेटो कवरि लक्ष्मी सव जग माय। [इतनी पूर्ति (क) प्रतिमें है—संपादक]
४३. (क) कवरी नें हृदा सों मीड़े मारी मिठडी-न भरियै आंसु [पूर्ति]

जद महतीजी लखमी दिसि नारी। तद लखमीजी बांह पसारी ॥
व्याहरण लखमीजी नै पूछै। महता नै थारे सगपण सु छै ॥ ४८५
(घ) महताजीनी उथी मोटी। बोपार करां यांरि कोठी ॥
दाम महताजीना लीजै। वोपार कापड़लानो कोजै ॥
अबकं रुठे है स्वामी। अमे राखै नहीं इण ठांमी ॥
तुमे कहिये नरसी कै आय। एवा समाचार समजाय ॥
यही विनती हमारी सुनीजै। तुमे महता नैं आगळ कहीजै ॥[४४] ४९०

× × ×

देस–देस व्योपार इनिका। जन्म सफल मानो जननी का ॥
राखे किंकर हमहु सोई। रहे देस आता हम दोई ॥
ता दिन गई पत्रि हम पासा। लगे मेघ नहीं दीए प्रकासा ॥
तासू दीवस बहुत ही लाग्या। भये क्रोध हम तजि सु आग्या ॥

दोहा

सकल कथा अतिहास कह, चले बहुरि सिर नाय ॥ ४९५
जोगी ताकुं रटत है, सेस पार नही पाय ॥
रथ पै चढे ब्रजराज तबै, नरसीनी आयसु पाइ।
पूरन काम संवारकै, श्रीपति श्रीयदुराइ ॥

चोपई

धन्य तिलक कंठि अरु माल। धन्य खंजरी झीजर ताल ॥
धन्य बंगाली धन पुनि साध। तिन्ह की माया परम अगाध ॥ ५००
नणदीनी वेटी अनपूर्णा नाम। कापड़लार कारण छोडै गाम ॥
राजल तेजलदे इण विधि। धरै मन मुसकायन बाता करै ॥
मोडियो माहरो क्यानों भर्यो। लिखी सुरति क्यों विसर्यो ॥
सुनि अनपुरणा दूड़ी आई। इण विध वचन कहत अकुलाई ॥

४४. कंस के मृत्यु के बाद मगधपति जरासंध मथुरा पर चढ़ आता है और इस कारण श्रीकृष्ण आदि मथुरा को छोड़कर जूनागढ़ आते हैं और महताजी के यहां रहते हैं। इस प्रकार की विचित्र कथा यहां दी गई है। हमने यह वृतान्त छोड़ दिया है। (संपादक)

पद

(छ) ठाढो रो हेरि नरसी मैंता, तनक सोउं ठाढो रोह। (टेक)५०५

सबर गावैं कु भर्यो माहिरो, मोंमैं दोस बता।

तोन तो महता कछु २ कहु नही, कहां गयो सांवल साह ॥

नरसी कह तुम सुनु निरंजन, अब क पिंड छुड़ा।[४५]

दोहा

(च) राजल तेजल की कहन, सुनि सबन की वाग।

कवरी नरसी पै गइ, लगे बचन जनु आग ॥ ५१०

चोपई

पुत्री दोरि पिता पे गइ। देख तात अमे मोडियानी कही ॥

काढो क्यों न इक ओरु काप। दियो-लियो सब होय छै खाक ॥

पूरणवाळा पूरन गया। नरसी स्वामी अेकला रह्या ॥

जद नरसी जी करुणा करी। पोट वीस दोय औरूं धरी ॥

एक-एक मोहर पुनि एक-एक काप। माहिरो भर्यो प्रभु आपौं [आप] ॥५१५

दाख चारोली नागर-पान। विप्र जोग दिये अमान ॥

जैरामदास जाय दंडवत करी। तुंबा तिलक माला आगै धरी ॥

मोहरां भरिया तुंबा दोय। दिये नरसी पुनि द्विजकुं सोय ॥

दोहा

हात जोड़ि विनती करी, सुनिये कृपा-निधान।

मेरी दिखणा लिजिये, जथा जोग-परमान ॥[४५] ५२०

---

४५. यह पद सब प्रतियों में अशुद्ध रूप में मिलता है। देखिये इस का प्रारंभः—

(क) प्रति मेंः— "तनक सो तु ठाढो रह वो नरसी महता ॥"

(च) प्रति मेंः— "तनक सो ठाढो रहै नरसी महता ॥"

(घ) प्रति मेंः— "ठाढ़ो रोर नरस महत्तां तनक सो तु.... ॥" और

(ख) प्रति मेंः— "तनकश तु ठाडो रहर नरसी महता (टेक)"

४५. पा० (छ) "प्रथम विप्र धन बीन रह्यो, तीन कुं दियो बहोरो।

हरख विप्र वधू पुत्र जुन, करत प्रसंस सबहोरी ॥"

यह कन्या गंधर्व की, भयो मुनिन्ह को श्राप ।।
गई आप निज धाम कुं, पाय कृष्ण को काप ।।
पूरन कीनो काम सब, नरसी जी के स्याम ।
नरसी गढ जुना गये, आप गये निज धाम ।।

(छ) सनमंधी सब बदि पुनि, कन्या हृदये लगाइ । ५२५
नरसी जी रथ पै चढे, झालरी संख बजाइ ।।
नरसी केरो माहिरो, सुनत सब चित्त लाय ।
जन्म-जन्म नर-नारि के, पाप पराभव पाय ।[४६]
गंगा जमुनां सुरस्वती, और कासी अरु प्राग ।
भक्ति सुजस श्रवनां सुनै, ताको पूरन भाग ।। ५३०
मीरां कृत यो माहिरो, संतन को सुख-मूल ।
जो सजन श्रवनां सुनै, पाप जरत जम उल ।।
भूमिदांन गोदांन-सम, सुनत पुन्ये असे होइ ।
मैं मीरां हरिजस कह्यो, सुनूं सखी सति जोइ ।।

मिथुला वाच सोरठा

धनि जन्म धरि देह, सदा सरन तेरी रई । ५३५
कीनूं संत सनेह, आजि सुफल साची भई ।।
धनि तेरा पिउ मात, धनि मीरां जनमी जहां ।[४७]
कीनी मोहि सुनाथ, श्रवन सुनत श्रीकृष्ण-जस ।।
अरुन उदय की बेर, संगे लीन मिथुला सखी ।
उभय चली निज गेह, बरनत श्रीगोपाल-जस ।। ५४०

---

४६. पा० (घ) नरसी केरो माहरो, सुनत पूर चित्त लाइ ।
गवु वउ कन्या-दान सम, सकल पाप विनसाइ ।।
(ड़) नरसी केरा माहिरो, सुण पुरष चित्त लाय ।
गो कन्यानुं दान सवा, सब पाप-गति जाय ।।

४७. पा० (ग) "धन तेरे पितु मात............. ॥"
(ख) "धन्य तेरो पितु-मातु, धन्य धरा जनमी तांहां ।।"

दोहा

मम बुद्धि प्रमान कछु, हरि गुरु-कृपा निवास ।
नरसी केरो माहिरो, गायो मीरां दास ।।
सकल धर्म सुख-मूल है, सकल पुनि के धाम ।
संत सुजस तीकूं कह्यो, मन सब पूरन काम ।।

इति श्री भक्त सुजस मीरां-मिथुला संवादे नरसीजी
सकल चरित संपूर्णम् ।[४८] ५४५

४८. पा० (क) "इति श्री भक्त विलासरस नरसीजी को माहिरो मीरांजी कृत संपूर्णम् ।।"

परिशिष्ट (क)

मीरां के अवशिष्ट पद

[मीरां कृत माहेरो की कोई-कोई हस्त प्रतियों में ऊपर और नीचे के हासियों में पीछे से कुछ पद लिखे गये हैं। ये पद माहेरो के संकलन में समाविष्ट नहीं किए गये हैं। अतः पाठकों के अवलोकनार्थ वे पद यहां परिशिष्ट के रूप में उद्धृत किये जा रहे हैं। इन पदो में मीरां के शब्द-माधुर्य का कुछ दर्शन होगा]

(१)

दरद न जाने कोई, भई मेरो दरद न जानै कोई (टेक)
गायल की गत गायल जानै, जो कोई गायल होई ।। दरद०
बीरह विथा तन में रलई है, ओसद लागैं न कोई।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, वर सांवरियो होई ।। दरद०

(२)

नरसी महतो भगति कु भावे न, नाग ढक माहिरा आया।
साधु सु उरजन राखै, पाप पडल पाटाही ।।
बांध गुगरानि निरत करत है, हरि-मंदिर के मांही।
नरसी नो स्वामी सावरियो, उब रही हिरदा मांही ।।

(३)

सांवरियाजी कीज्योजि मारी साह। (टेक)
तृषित खीन्न व्याकुल भयो, अतहि अधर जीह सुखाय ।।
करि जु करिजे करनि की, करजी मेरी आप सहाय।
नरसी केरी विनती, सुनि कर आये श्रीजदराय ।।[१]

---

१ यह पद नरसिंह के व्याकुल होने का द्योतक है। मांडलिक राजा नरसिंह की कसोटी करता है, उस समय तृषातुर नरसिंह सांवरिया से विनती करता है।

(४)

चलो सब मिल भाई, पुत्री कै माहिरो भरवा।
सुणि बन्धु असै कहत वहोरि, किण विधि करिजे सजाई ॥
चनण तुलसीपात गंगाजल, ताल संख समुदाई।
ढोलक सिंगासण मस्तक कर, नरसी विधि समजाई ॥[१]

नरसी वचन

(५)

हरिजन मीलवे मैन तो, सजन भावै की पाय।
वो दुरजन दीय न आववो। (टेर)
हरिजन मिलियां हरि मिलवो, हरि कै रहै हजुर।
दुरजन मिलियां दो मिलवो, कं गारी अरु धूर॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर निति-प्रति रहैं हजुर॥

(६)

कामणगारो री मारो धुतारो वीधारो, नंद को (छैयो)
कामणगारो रे। (टेक)
तैं कामण कीधा कांई, म्हारो जीवडो वस थां-मही॥
मैं घर-धंधो सब भूली, थारो मुखडो देखर फूली॥
तैं कहा कर कीयो गोविंदा, मोंमै पड्या जेम का फंदा॥
नरसीयानो स्वामी तुम, तीन लोक मैं नामी॥

(७)

सब मील करै विचारिजी, नरसी के नाने को पन है।
कोउ कहै नरसी कामणगारौ, मुरत लीन नचाय॥
सबहि मिल करि जुक्ति उपाई, तातो जल करवाय।
मीरा कै सखि सुन सादरउ, गिरधर कीन सहाय॥[२]

---

२ यह पद माहेरा के लिये जाने की तैयारी का है।

३ नरसी की हाँसी करने के लिए समधी के घर की स्त्रीयाँ ताता (गरम) जल नरसिंह के स्नान के लिए प्रस्तुत करने की विचारणा करती हैं।

नरसी वचन (८)

भावनो भूको रे गोविंदो भावनो भूको ।। (टेक)
दुरजोधन का मेवा त्यागे, साग विदुर-घर लुखो ।। १
करमावाई को खीच आरोग्यो, लुखो गोण्यो न सुखो ।। २
सवरी का वेर, सुदामा का तंदूल, ले-लै मुखि मूको ।। ३
नरसिया नो स्वामी सांवरियो, औसर कवउ न चूको ।। ४

(९)

वेलां वार वटै, चलोजी वेगै वेलां वार वटैं । (टेक)
जल जाचत चातक पठि डारत, निस-दिन रटन रटैं ।।
विन बीन उठि निहारत मारग, कवउ न प्रीत गटै ।।
नरसी कहैं तुम पगे चलो प्रभु, सजन ठाढे जुठै ।।

सोरठ (१०)

जेई विधि काम सरैं, कीनो मोहनी-रूप । (टेक)
नख-सिख वेस मनोहर वनतउ, आये जहां वहै भूप ।।
रति संत कोटि ताहि पर लाजै, अखौ दिव्य अनूप ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर करव पार भवकुप ।।[४]

राग चरपरा (११)

तुमे पानै गर जावो मार वावल, तुमे मारी लाज गुमाई ।।
नहीं घर होय घाट घाघरिया, आय करी लोग हंसाई ।।
संग लिये तुम संत वंगाली, तोउन लाज न आई ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर कंवरी वात वनाई ।।[५]

---

४ हार प्रसंग के समय तृषित नरसिंह को जल-पान कराने के लिए भगवान मोहिनी-स्वरूप धारण कर आते हैं।

५ कुंवरवाई अपने पिता – नरसिंह को उपालंभ दे रही है।

(१२)

मोहन मेरा अंतरजामी हो। (टेर)
मेरे औगुन नैक न गिनए, कपटी कामी हो ।।
पापी लोभी क्रोधी कहिये, पतित - सिरोमण नामी ।
नरसी कह याही वन आई, मोरे तुम से स्वामी हो ।।

(१३)

करै पहरान आय यदुराई, मन में अति हरखाई रे। (टेक)
लखी नहीं प्रीति सरन पहचानी, सुरनर समुदाई रे ।।
सोइ करी कै प्रीत नागरिया से, निगम पार नाहि पाई रे ।।
अति आनन्द उमंग मगन प्रभु, लै कागद कर माहिरी ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, करी सफल मन-चाहिरी ।।[६]

(१४)

हरि तुम हरो जन की भीर।
द्रौपद-सुता की लाज राखी, आप बढायो चीर ।।
भगत-कारण रूप नरसिंह, धर्यो आप शरीर ।
हिरण्यकश्यप मार लीनो, हरी भक्तन-भीर ।।
बूड़त तें गजराज राख्यो, कियो बाहर नीर ।
दास मीरां लाल गिरधर, चरण-कंवल सीर ।।

-:- इति -:-

---

६. सांवलसाह द्वारा की गई पहरावनी के प्रसंग में भक्त-शिरोमणि मीराँ ने आनंन्द-विभोर होकर हरि का संक्षिप्त अपितु सुमधुर चित्र खींचा है।

परिशिष्ट (ख)

भक्त कवि बखतावर और मीरां

परिचय

भूमिका में हमने मीरांबाई के प्रशंसक-अनुरागी भक्त कवि बखतावर का उल्लेख किया है। यहाँ बखतावर का कुछ संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

बखतावर राजस्थान का एक अज्ञात भक्त कवि है। उसके अनेक पद हस्तप्रतियों में पाये जाते हैं। परन्तु बखतावर का समय और स्थान आदि का ठीक पता नहीं मिलता।

बखतावर के पदों में बोल-चाल की भाषा राजस्थानी पायी जाती है, इससे अनुमान हो सकता है कि वह राजस्थान के कोई ग्राम-विस्तार में रहा होगा। उसके पदों में मीरांबाई का उल्लेख बड़े आदर के साथ किया गया है। अतः वह मीरां के परवर्ती-काल का कवि होगा।

बखतावर की कविता में मीरांबाई की प्रशंसा और सखी-भाव की भक्ति का प्रभाव दिखाई देता है। यह कृष्ण-शाखा का श्याम-वियोगी कवि था और विरह-झंझना के गीत गुंजाया करता था। यथा :-

> "देखो जी बिहारी जी, मांसु नेहड़ो निभाज्यौ जी !! (टेक)
> जोड़त-जोड़त बोहो दिन बीता, तोड़त दरद न आयौ ॥ १ ॥
> तन मन धन अरपण कीया थांने, बहु कर भांत रिझायौ ॥ २ ॥
> बखतावर कपटी तन केरो, अपणौ कपट जणायौ[1] ॥ ३ ॥"

निम्नलिखित पद से विरह-व्यथा उछल पड़ती है :-

> "घणा दिन बीता हो बिहारी जी, औलूं थांरी आव ॥ (टेक)
> निस-दिन पंथ निहारुं माधो, घर आंगणो न सुहावै ॥ १ ॥

---

१. रा० प्राच्य० वि० प्रति० के हस्त लिखित ग्रन्थ (ग्रन्थांक १०८४७) से उद्धृत।

अन्तर-बिथा क्या न समावै, हिवड़ो बोहो उकलावै ॥ २ ॥
बखतावर वो दिन कब होसी, भुज-भर कंठ लगावै[२] ॥ ३ ॥"

मीरां के 'बड भाग' की प्रशंसा निम्नांकित पद से सूचित होती है :-

"आज तो मेड़ताणी रै, म्हलां रंग छायौ। (टेक)
कोटक भांण-प्रकाश भयो है, सही तो गिरधर आयौ ॥ १ ॥
जाकूं सेस महेस रटत है, वेद पुराणां मैं गायौ ॥ २ ॥
बखतावर मीरां बडभागण, घर बैठो हर पायौ[३] ॥ ३ ॥"

तात्पर्य है कि बखतावर सखी-भाव के भक्त और मीरां के अनुरागी थे। मेड़ताणी मीरां की प्रशंसा में बखतावर छाप के अन्य पद भी मिलते हैं। परन्तु अधिक पद उद्धृत करके विस्तार करने का प्रयोजन नहीं है। अतः अब हम यह बताना चाहते हैं कि बखतावर का मीरां कृत माहेरो से परिचय था।

बखतावर और मीरां कृत माहेरो

मीरां कृत माहेरो की कोई-कोई हस्तप्रतियों के अन्तिम भाग में बखतावर का उल्लेख वाला पद हमें मिला है। हमारे अवलोकन में आई हुई (क) प्रति में इस तरह का पद अन्त में लिखा है :-

सोरठ

धन्य धन्य महता जी रो भाग।
बूरी-भली सब सही जगत की, दामोदर जी सों लाग।
महताजी से म्हांरे कैसी बरोबर, कहां हंस कहां काग ॥

---

२. वही।

३. वही (पृ० ६१०) इस पद का अन्य पाठ भी मिला है :-
"आज तो मेड़ताणी मीरां के राज-महलां रंग छायो।
सहस्र किरण सूं सूरज उगियो, मानो सखि गिरधर आयो ॥
सुर-नर ज्यां का ध्यान धरत है, वेद पुराणां गायो।
कह 'बखतावर' मीरां बड भागण, घर बैठी श्याम मनायो ॥"
— (शोध पत्रिका भा० ३, अंक ४ (जून १९५२)

दे परिदक्षन प्रीति घनेरी, उपजत अति अनुराग।
वखतावर नरसी सिव के संग, पायो अटल सुहाग ॥

यह उल्लेख फलश्रुति से आगे की पंक्तियों में मिलता है। (घ) प्रति में इस तरह का उल्लेख है :-

पद

धन धन नरसी जी को भाग। (टेक)
भूरी भली मैं सही जगत की, दामोदर जी सूं लाग ॥
भक्तिन की गीणती में आयो, सोभा अति अनुराग।
वखतावर नरसी सिव के संग, पायो अतुल सवाग ॥

(च) प्रति के अन्त में भी इस तरह का उल्लेख पाया जाता हैं। इससे अनुमान होता है कि वखतावर अपनी भक्त-मंडली में मीरां कृत माहेरा गाया करता होगा और उसके अन्त में भक्ति-भाव से यह पद जोड़ दिया होगा। इसके अतिरिक्त तीन पृथक्-पृथक् प्रतियों में वखतावर की छाप का पद मिलने का कोई सन्तोषजनक स्पष्टीकरण नहीं मिलता।

सम्भव हो, वखतावर इस प्रकार मीरां कृत माहेरो का गायक और प्रचारक रहा होगा। मीरां कृत माहेरो की प्राचीनता और उसका मीरां-कर्तृत्व के लिये यह एक प्रतीतिजनक प्रमाण है।

"माहेरो केवल रामानन्दी-पंथ वालों से संगृहीत रहा है" ऐसा डॉ० प्रभात का कथन, माहेरो के अन्त में उपलब्ध वखतावर-छाप के पद के सम्मुख टिक नहीं सकता।

गुटका क्रमांक १०८४५ में भी वखतावर का एक पद हमें मिला है। इस गुटके का लेखन-काल वि० सं० १८३४ से १८८६ का माना गया है। अत: वखतावर का कवनकाल इससे पूर्व का मानना युक्ति संगत रहेगा। अनुमान से इसका कवनकाल वि० संवत १७८५ से १८३५ के आसपास का मानना अनुचित न होगा।

परिशिष्ट (ग)

वसंत कृत नरसी जी को माहेरो

वसंत का समय

राजस्थान के एक कवि वसंत द्वारा भी 'नरसी जी को माहेरो' की रचना हुई है। वसंत का ठीक काल जानने में नहीं आया है, परन्तु उसके द्वारा वर्णित माहेरो की भाषा, रचना-शैली और प्राप्त हस्तप्रतियों की इति आदि से कुछ अनुमान किया जा सकता है।

वसंत कृत माहेरो की हमें तीन प्रतियाँ मिली हैं। एक प्रति बीकानेर में श्री मोतीलाल खजान्ची संग्रह वाली प्राप्त है, जिसमें माहेरो का 'नरसी मैहैता' नाम दिया है, परन्तु वास्तव में यह नरसी मेहता का सम्पूर्ण चरित्र नहीं है, केवल माहेरो ही है। श्री अगरचन्द नाहटा के मतानुसार कृति उन्नीसवीं शताब्दी की लिखी हुई है[1] जिसे (क) संज्ञा दी गई है।

दूसरी प्रति राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के संग्रह में है जिसके गुटके का क्रमांक १७७८० है। उस गुटके में 'नरसी मुतै जी को माहेरो' शीर्षक देकर वसंत कृत माहेरो लिखा है जिसे (अ) संज्ञा दीगई है। लिखावट आदि से उसका लिपिकाल भी प्रायः विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध प्रतीत होता है।

तीसरी हस्तप्रति भी राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में उपलब्ध है। मध्यकालीन वनियों की वही के आकार के लम्वे गुटके में प्रारम्भ के १ से ६ तक के पृष्ठों में वसंत कृत माहेरो लिखा गया है। अन्त में 'पद २४, चरण १२० ।। इति श्री नरसी जी माहेरो संपूरण। राम।' ऐसा लिखा है। इस प्रति को (ब) संज्ञा दी गई है। अन्य प्रतियों की तुलना में यह अधिक शुद्ध है। यद्यपि इसका लिपिकाल उपलब्ध नहीं है, किन्तु यह प्रति विक्रमीय १६ वीं शताब्दी के अन्त में लिखी हुई प्रतीत होती है।

---

१ व्रज भारती (त्रैमासिक) भाद्र-मार्गशीर्ष, सं० २०११; पृ० ७-८।

इस प्रति की एक विशेषता है। अन्य प्रतियों में नरसी मेहता जी का उल्लेख तृतीय पुरुष में 'वे' आदि सर्वनाम से किया गया है। यथा --

श्री गनपति की आज्ञा पाउ, हरि-भक्तन को जश गाउ।
'वे' उत्तिम कुल गुजराती, 'वे' जोनागढ के वासी ॥ -(क) प्रति।

इस (व) प्रति में नरसी जी का उल्लेख प्रथम पुरुष में कर के आत्मचरित्र का आभास पैदा किया है। यथा --

गनपत की आज्ञा पाउ, हर-भगतन को जस गाउ ॥
'हम' उत्तम कुल गुजराती, 'हम' जुनागढ के वासी ॥
'हम' सिव ही सिव कु ध्यावैं, 'हम' जल से सिनान करावै ॥ १ ॥
'हम' चोवा-चंदन चिरचावे, 'हम' आक धतुरा लावै ॥
'हम' सूरज-ध्यान लगावैं, 'हम' ठाढे गाल वजावैं ॥ २ ॥

मानों नरसी मेहता ने स्वयं आत्मचरित्र लिखा हो, ऐसा आभास इस प्रति के पाठ में मिलता है। हस्तप्रतियों की प्रतिलिपि करने वाले या कठोपकंठ गाने वाले लोग अपनी रुचि के अनुसार इस तरह के परिवर्तन करते ही रहते हैं। ऐसे परिवर्तित अंशों को वास्तविक कविकृत मान लेना युक्ति-युक्त नहीं होगा।[२]

हम अनुमान लगाते हैं कि (व) प्रति, 'क' और 'अ' प्रतियों से परवर्ती-काल में लिखी गई होगी। परिवर्तन और लेखन की शुद्धि एवं रतना खाती का कुछ अनुसरण भी इस वात को पुष्ट करता है।[३]

वसंत के माहेरो की प्रतियां विक्रमीय १९वीं शताब्दी में लिपिबद्ध होने के कारण वसंत का काव्यकाल इससे पूर्व ही मानना चाहिये। अतः वसंत का समय १९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मानना समुचित ही होगा।

---

२ मीरांकृत 'माहेरो' में परवर्तीकाल में जो परिवर्तन संवादात्मक-रूप की शैली के और क्षेपक अंशों के कारण हुए हैं, इनमें उपरोक्त लोक-रुचि आदि ही कारणभूत है। यह वात हमने भूमिका में प्रकार भेद से स्पष्ट की है। इसकी पुष्टि में वसंत कृत माहेरो के ये पाठभेद द्रष्टव्य हैं।

३ रतना कृत माहेरो में गाली-प्रदान आता है जिसका कुछ अंश (व) प्रति में पाया जाता है।

माहेरो की आलोचना

वसंत कृत माहेरो संक्षेप में रचा गया है। लम्बी चौड़ी इतर कथाएं छोड़कर कवि ने अपना ध्यान माहेरो के प्रसंग पर ही केन्द्रित किया है। तो भी रस की जमावट के लिए श्रीकृष्ण को समधिन द्वारा गालीप्रदान कराया है। भोजन के छप्पन भोग का वर्णन भी विस्तार से दिया है। तात्पर्य यह है कि संक्षेप के कारण कृति नीरस नहीं होकर लक्ष्यगामी बनी है।

वसंत के माहेरो में मीरांकृत माहेरो का भी कुछ प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सांवलसाह के आगमन के समय लोग उनसे पूछते हैं। यथा :–

पद

"पूछै लोग नगर को सब मिल, कहा तुमारो नांव छै।
कोन देस के वासी कहिये, कांहां तुमारो गांव छै॥
व्रज-मंडल में जनम हमारो, पछिम-दिसा विश्राम छै।
नरसी जी नो चाकर कहिये, साहा सांवरो नाम छै॥"
– (मीरां कृत माहेरो : पंक्ति : ३८७ - ३९०)

इस प्रसंग का वर्णन वसंत ने इस तरह किया है :–

"कौन तिहारी जाति वखानौं, कहा तुमारो नांव है।
कौन देस तैं आये हो, कहा तुमारो गांव है॥
वनिया जाति हमारी कहिये, साह सांवलो नांव है।
नरसी के हम चाकर कहिये, पुरी द्वारका गांव है॥"

उपरोक्त मीरां के पद के शब्द, लय और भाव का स्पष्ट अनुकरण यहाँ मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि वसंत ने मीरां कृत माहेरो से काफी प्रेरणा लेकर अपनी कृति का निर्माण किया होगा। रतना खाती के माहेरो से भी वसंत ने प्रेरणा ली है, इसका विवरण अलग परिशिष्ट में किया गया है।

अब यहाँ वसंत कृत माहेरो पाठांतर के साथ दिया गया है। (क) प्रति के पाठ के साथ मिला कर पाद-टिप्पणी में (अ) और (ब) प्रति के महत्वपूर्ण पाठांतर दिये गये हैं।

अथ नरसी मँहेता लिख्यते

राग : पिंगला

श्री गणपति की आज्ञा पाउ, हरि–भक्तन को जस गाउ ।
वे उत्तिम कुल गुजराती, वे जोंनागढ के वासी ।।
वे हरि ही हरि को धावें, गंगाजल सो अस्नान करावे ।[1]
वे वेलपत्र ही चढावें, चांमर चन्दन चरचावें ।।
वे निहचें करी ध्यान लगावै, वे ठाढे गाल वजावै ।[2]
जव रीझै सिव राजा, करी कहा तिहारो काजा ।।
जव वोलै महादेवजी वांनी, हम तुम रे मन की जानी ।
तुम जो मांगो सो दहिगे, तुमसो नहीं नांहीं कहिगे ।।
हमे और कछू नहि चहिये, श्री राधाकृष्ण वतइये ।
तुम वर मांगो है भारी, धनि नरसी जी तुमारी ।।[3]

राग : खमायची

जाय पहुचे गउलोक वृन्दावन, हरिजूनें रास रचाये है ।[4] (टेक)
गोपी–रूप धर्यो गोपेसुर, नरसी सखी वनायो है ।
[वाजत ताल मृदंग मधु-धुन, झांझरीयां झरलायो है ।।]

---

१ पाठांतर (व) :– "हम उत्तम कुल गुजराती, हम जूनागढ के वासी ।।
हम सिव हु सिव कु ध्यावै, हम जल से सिनान करावै ।।"

२ पा० (व) :– "हम चोवा-चन्दन चिरचावै, हम आक धतुरा लावै ।
हम सूरज–ध्यान लगावे, हम ठाढे गाल वजावै ।।"
(अ) :– × × "वैठा ते गाल वजावै ।।"

३ पा० (व) :– "तव रीझ हे शिव राजा, मांगो कहा तमारै काजा ।।
तम कवन जोग वस कीनो, सो कहै तम हम सें दीनो ।।
मेरे और कछु नहि चहिए, श्री राधा क्रिश्न मिलइये ।।
तव वोले सदा सीव वानी, हम तमारै जिव की जानी ।।
तम वर माग्यो छै भारी, धिन नरसी वुध तमारी ।।
तम सखा वणै संग म्हारी, में जावा मिलाउ पिय प्यारी ।।"
(अ) :- " × × , धनि नरसी वुधि तिहारी ।।"

४ पा० (अ) –" × × , हरजी रास रचायो है ।।"

जहां पिय प्यारी निर्त करत, निरखी-निरखी सुख पाये हैं ।।
मनमोहन किरपा करी बोले, शिवजी भकत कहां ते लाये हैं ।।[५]
जूनैगढ़ के वासी कहिये, तुम सरनागत आयो हैं ।।
मांग-मांग देउ नरसीला, तू मेरे मन भायो हैं ।।
हमैं और कछू नहिं चाहये, दीन को दरस दिखाये हैं ।।[६]
मनमोहन किरपा करि दियो, राग केदारौ गाये हैं ।।

राग : जैजैवंती

नरसी महैता कें एक पुत्री जाइ, ताको कीनो ब्याह हो ।। (टेर)
भक्त-हेत करुणानिधि मोदी, सांमलिया से साह हो ।।
जहां लरिकी परनाय दइ है, नरसी कियो विवाह हो ।।
सात मास को गर्भ रहियो, हांसी करत बेन माय हो ।।
कागद लिखौ इक जूनागढ़ जू, करे माहेरो आय हो ।।
अेक तिलक की कोथली, तुलसी की माला लाय हो ।।
(ब) देंण लेण कु कछुज नांही, गावें जांझ वजाय हो ।।[७]

पद राग : मारु

दोत-कलम कागद मंगवाये, सब मिल बैठी आय के ।
जूनागढ़ को वासी कहिये, कागद दो लिखवाय के ।। (टेर)
पचीस मण तो लिखो सोपारी, पचीस मण लिखो रोरी ।
पचीस मण तो लिखो कलेवो, ओर मेवन की बोरी ।। १ ।।
खासा अरु मेंमूदी लिखज्यो, सालू साड़ी कापरी ।
ठठा करें मसकरी सब ही, बगतावर या को बाप री ।। २ ।।
हजार थांन तो लिखो जरियन का, साल-दुसाला दोयसें ।
या विध के सब सांमा लिखज्यो, ओर जिनस सब ही होय से ।। ३ ।।

---

५ पा० (अ) :- "हस-हस पूछै सांवरिया इह. सखी कहाँ सें लायो हैं ।।"

६ पा० (ब) :- "और कछु हमकुं नहिं चहिये, दया कर दरस दिखायो हैं ।।"

७ पा० (क) :- "उनकौ तौ हनि नहीं है, गहरी झांझि वजाऊं ।।"

एक हजार तो मोहोर लिखज्यो, हजार रूपिया रोकरी ।
कागद में दोय भाठा लिखज्यो, यूँ उठ बोली डोकरी ।। ४ ।।[८]

पद राग : बिहाग

(क) लैजारे कागद वा नरसी के पास रे । (टेर)
राम-राम कहि जो सबन सों, हम जू करें तुमारी आस रे ।। लैजा रे०
विदा करी अरु खरच बँधायो और कहियो स्याबास रे ।
और कहियो जलदी सूं आवै, सकल जिनस लियें साथ रे ।। लैजा रे०
तुम तो सेठ बड़े नरसी जी, कहा कहिये तुमारी बात रे ।
हमने सुनी संग तिहारे, सांवलिया से साह रे ।। लेजा रे०[९]

राग : सोरठ

कागद त्यां रे आयो छै जी सांवल साह ।। (टेक)
सासु ननद और द्योरानी जिठांनी, लिख्या छे जिम तौं उपाय ।
उनको दोष कहा कहि दीजै, जान्यौं छे जी भारौ साह ।। कागद०
और जिनस री गिनती नाहै, और लिख्या छे दो भाटा ।
कुबेर सो भंडारी थारें, और लछमि का संला ।। कागद०[१०]

---

८ पा० (क) :- "हजार मोहौरे लिखि देउ तुम यामें, दो हजार रुपैया रोकरी ।
और लिखो दो भाटा यामें, भीतर सु बोली डोकरी ।।"

९ पा० (अ) :- "अरे लेजा रे कागद वा नरसी कै पासिहा रे ।। लेजा रे कागद० (टेक)
कागद दीनो विदा जु कीन्हो, खरची दीन्ही साथ ।
राम नाम कहिज्यो उनसु, और कहियो सावास रे ।।
और उनसौं तुम यौं जाय कहियो, सकल जन लो साथ रे ।
तुम नरसी जी भकत सुने हो, सांवलियो थांरी थरे ।।"

१० पा० (अ) :- 'आयो छै जी सांवलसाह, कागद म्हांने आयो छै सांवलसाह ।
थेइ जमा जी म्हारे थेइज पूंजी, थेइ करोला निवाह ।।
के के सासु नणद देराणी, जिठाणी लख्यो छे मतो जी उपाय ।
उन को दोस कहा को दीजै, जानै छे मोटो साह ।।
और जिनस गिणतों नहीं, लिखिया छै दो भोटाह ।
नरसी मेहतो दास तुम्हारो, पुन चरन सरनाह ।।"

पद

बेटीरो मामैड़ा करि, चाल्यो सब मिलि भाई ।। (टेक)
भाई तो सब यों उठि बोले, सुनि रे नरसी भाई ।
पांच सात मोडा संग लीजो, अरु पांच सात लइ बाई ।। बेटी०
नरसी महता डिगरी चल्यो जब, सब कु हांसी आई ।
अब देखौ यह कहा करैंगो, इन गहरी झांझि बजाई ।। बेटी०
तूटी-सी एक गाडी लीनी, बोदे बैल जुराई ।
पांच सात मोडा संग लीने, पांच सात लइ खाई ।। बेटी०
हांकत-हांकत गौडें पउंच्यो, समधी खबरि जु पाई ।
राम-राम कही मेरे सबनकु, गंत में जगै बताई ।।[११] बेटी०

राग : सोरठ

तातो पाणी धर्यो न्हायब नै,
चावल गेरें सीजै जामें, असो गरम कर्यो ।
जब नरसी ने कर डार्यो वामै, ऊंगरिन दाधि बर्यो ।। तातो०
थोरो सीरो देउ समोयवे, यो मुख सों उचर्यो ।
तुम्हारे हुकम में मेह नरसीजी, सब मिलि ठठ्ठो कर्यो ।। तातो०
नरसी महता उठि बैठा, तवहि तहां हाथ में ताल पकर्यो ।
भइ घटा जल वरसन लागौ, सीरौ पांनी कर्यो ।। तातो०
नरसी मैहेता ताल बजाई, घटा-घुमडि करी आई ।
जल वरस्यौ ओर जल ही समोयो, असें स्याम सहाय करी ।।[१२] तातो०
भकत-हेत प्रभु कारनें ही, सब विधि काज कर्यो ।
आगै-आगें भक्तन की पछि कीनी, जब सांमल सुमर्यो ।। तातो०

राग . परज

बेटी कहै सुनौं वाबाजी, थे कांई-कांई सांमा लाया छौ ।। (टेक)
हम कौं तो कछु दीसत नाहै, संग वैरागी लाया छौ ।

---

११ पा० (अ) :- " × × × , गोत्रम जागि बताई ।"
१२ पा० (अ) :- "दीनदयाल कृपा कीन्ही माधौ, तुरत ही मेह पर्यो छै ।
नदीय तलाव उमरि सब आये, नरसी न्हान कर्यो छै ।।"

तूटी-सी एक गाडी दीसे, गहरे तिलक बनाया छौ ।। बेटी कहै०
पांच सात मोडा संग लाया, झांझि बजावता आया छौ ।
मेरे पति नें सब कोई पूछै, कौन द्वार परनाया छौ ।। बेटी कहै०
जावो पिता तुम कांही जावौ, हमकु लाज लजावा आये छौ ।[१३]
नरसी कहैं सुनोंरी बेटी, हम सांवलसाह बुलाये है ।। बेटी कहै०
बेटी कहै सुनों बाबाजी, वे सामलिया कब आवेंगे ।
कालि तुम्हारो समय होयगौ, कहा-कहा वे लावेंगे ।। बेटी कहै०
नरसी कहै सुनोंरी बेटी, थे बोदी बात विचारी है ।
एक पलक में सब कछु करिवैं, सामलिया गिरधारी है ।। बेटी कहै०

राग : सोरठी

कहां लगाई एती बेर सांवरे, कहां लगाई एती बेर । (टेक)
ऊंचै चढिकें तुमकु टेरां, सुनि लीजो मेरी टेर ।
कैंकहु काज लिये भक्तन के, कै निद्रां लियो घेर ।।[१४] सांवरे०
कुबेर सो भंडारी थारे, अरु लिछमी संग तेरें ।
जो-जो जिनस लिखी कागद में, उनहुं मांही हरें ।। सांवरे०
माला दीनी कहै संजोयौ, उठि ही सवारी बेर ।
अब चौथे मामेड़ा करिया, आवैं क्यों न सवेर ।। सांवरे०
ये गुजराती गिवर उपासी, पूजें सांज-सुबेर ।
नरसी महेतो दास तिहारो, इन चरनन को चेर ।। सांवरे०

राग : जैजैवंती

माइ सोवत ही पलिका पै होंतौ, पल लागत पलही में पिय पाये ।
जु उठी आदर लैंन पिया को, जागि परी पिय ढूढ न पाये ।।
सो कोउ सखी पिय पोय गमावै, मैं अपने पिय जागि गमाये ।
कहा जू कहूँ में निकी बतियां, सुपनें स्याम की लेत बलैया ।
प्यारे बसंत कू मिले हैं प्रेम कै, उछि है गये मन फूंके भाये ।।

---

१३ पा० (ब) :- "जावो पिता घर जावो आपणे, लाज लगावण आये हो ।।"
१४ पा० (अ) :- "कैंकहु काज अटक्यो भकतन को, कैं निद्रा लियो घेरि ।।"

जैजैवंती

अपने हाथन हांकें रथकू, रथ बैठे रणछोरजी आये ।। (टेक)
कमला रथी अरु आप सारथी, अष्ट-सिद्धि नव-निधि लाये ।। अपने०
जड़ाउ कलंगी हेम-रजू वामें, कंकन बीचे झलकाये ।। अपने०
सोने की है लक घोरन कें, अद्‌भुत गहनो अधिक बनाये ।। अपने०
चीरा पटका और बखतरी, कलम कनपटी ढांकें ही आये ।। अपने०
कांख में वही भक्त के काजें प्रभु बनिया को भेष बनाये ।। अपने०
हांकत-हांकत धारे आये, नरसी मेंहैता नचियाये ।। अपने०

पद

(अ) कहां तिहारी जाति बखानौं, कहा तुमारो नांव है।
कोन देस तें आये हौ, कहा तुमारो गांव है ।।
बनिया जाति हमारी कहिये, साह सांवलो नांव है।
नरसी के हम चाकर कहिये, पुरी द्वारिका गांव है ।।[15]

राग : परज

(क) दीनें पट-पाटंबर अंबर, जरीयाव दुसाले हैं।
खासा अरु महमूंदी दीनी, कोर लगी दरियाई है ।।
कितेक मन तो दइ सोपारी, कितेक मन दोइ रोरी ।।[16]
कितेक मन तै दिये कलाश्रे, अरु मेवन की बोरी ।।
हजार मौहोर तो दीनी नगदी, दो हजार रुपैया रोकरी ।।

---

१५ पा० (क) :- "कौन तिहारी जाति बताऊं, कौन तिहारो गांव रे।
कहां ते तौ तुम आये होजू, कहा तिहारो नांव रे ।।
बनिया मेरी जाति बताऊं, पुरी द्वारिका गांव रे।
नरसीजी के चाकर कहिये, साह सांवलिया नांव रे ।।"

१६ पा० (अ) ।- "पचीस मन तो दइ सोपारी, पचीस मन दोय रोरी ।।"

और दिये दो भाटा, एक सोने को एक चांदी को ।।[१७]
देखत लोग चकित होय रहें, देखी वात अयानीसी ।।
नरसी महैता ताल वजावै, मगन भयो गुन गावै ।
धनि रनछोर द्वारिकावासी, जो यह साखि चलावै ।।

पद

भोजन करि लै श्री नंद दुलारे,
गंगाजी गंगोदक लाई, नारद मुनि पनवारे । भोजन०
छप्पन भोग छतीसो[१८] विंजन, कमला आपसु धारे ।। भोजन०
लडू पेड़ा और जलेवी, नुकती दहीवरा रे । भोजन०
खजला खिजूरि पुरी पापरी, पागि मा सकरपारे ।। भोजन०
दही भात और कढ़ी पकैवी, रोटी धोवा-दारि रे । भोजन०
टेंटी अदरख अमिलि चारे, चोसे सबै अचारे ।। भोजन०
इहि विधि भाजी कृष्ण ही राजी, वौ रनछोर पियारे । भोजन०
पनवारे नरसीकूं दीने, कटिजोई पाप हमारे ।।[१९] भोजन०

(पद)

अचमन कीजे कृपानिधान ।।[२०] (टेक)
लछिमीजी झारी भरि लाई, नारद मुनि लाये पान । अचमन०
सेसनाग के भये विछौना, पोढ़िये श्रीचतुर सुजान ।। अचमन०

---

१७ पा० (व) :- "भात परावणे चले नरसीलो, संग सायवो सांवल आये । (टेर)
लोक नगर के सवही बुलाए, मन ईच्छा सवही पहराये ।।
जै-जैकार करत ब्रह्मादिक, देवतां नै प्रसद वरसाये ।।
दोय भाठा मूवा का चोक में, उपर से तो वे वरखाये ।।
इक सोना को इक चांदी को पथर, देख सखीने वेग उठाये ।।
ले लै हि तुं ले लै सासु, कागद लिख्यो जासु कौट गुणे आये ।।"

१८ पा० (अ) :- 'बतीसू ।"

१९ पा० (अ) :- आयो नीवू और ल्हसेरो, टेढी अद्रक अचारे ।
बऊ विधि भाजी गोविंद राजी, जिमत प्रेम पियारे ।।"

२० (अ) यह पद प्रति में नहीं है ।

पद[२१]

हरि कारो री हरि कारौ, यह देवापन को वारो। (टेक)
याकूं गारी कंहि विधि दीजं, याकी सहज बलैया लीजै ।। कारौ०
अपनी ससुरारि लजाई, याहि नेंक लाज नहि आई ।
यानें दुष्ट कंस ही मार्यो, याने संतन सू पन पार्यो ।। कारौ०
गोवरधन कर पर राख्यो, याने इन्द्र को गर्भ गार्यो ।
हरि कारो री हरि कारौ, यह देबापन को वारो ।।[२२]

पद

सव. विधि काज सवारिकें, विदा हैं गोविंद पियारो। (टेक)
सनजुग त्रेता द्वापर कलिजुग, चारो जुग भकतन के प्यारो ।। सबविधि०
धनि नरसो धनि सांवलिया, धनि समधी ताके द्वारहि आये। सबविधि०
कहे सुने कौ बुरौ मति मानों, हम नरसीजी दास तिहारे ।।[२३] सबविधि०

राग : परज

अक्र वहनि नरसी-समधीकी, सौवीं भीकत आई है ।।
काहेकी हम बहनि तिहारी, काहे के तुम भाई है ।।[२४]

---

२१ (अ) यह भी प्रति में नहीं है ।।
२२ पा० (व) : वाकुं गारी देह कु दीजै, वाकी सहज वलैया लीजै।
हर कारोजी हर कारो, दोय वापन को वारो ।।
वाका वाप नंदजी जाणै, सो तो वेद पुराण वखाणै ।
हर नटवोजी हर नटवो, करे राधाजी आगै लटवो ।।
हर गरवाजी हर गरवा, वाको वापें दजी भरवा ।
वा की भुवा कुन्ता भारी, जिण जायो करण कुंवारी ।।" इत्यादि
२३ पा० (अ) :- "विनती करै सब लोग नगर को, हम नरसी दास तुम्हारे ।।"
(व) :- लोक नगर को सब ही ठाढ़ो, कर जोरे विनती करवाए।
वारंवार नरसीलो विनवै, हम प्रभुजी है दास तुमारे ।।"
२४ पा० (अ) :- "हम कहों की वाहन तुम्हारी, तुम कहा के भाई हो ।।"

अेकन कूँ सालु सारी पहराई, अेकन साल उढाई है ।।
हमरी वेर कूं भूलि गये तुम, तेरी मति वीराई है ।।
कहां गयो वह नरसी महता, हमकु देह वताई है ।।
जाऊँगी लाऊँगी उनसों, मोकूं राम दुहाई है ।।
कोस भरे लों जान न दैउगी, तौ वावाकी जाई है ।।

पद राग : परज

तनक तू ठाडौ रहि रे नरसी मैहेता ।। (टेक)
दौरि–दौरि तेकूं हेरति आंऊ, एक वात मेरी सु (न) जा ।
माया वहुत लुटाई तुमनें, हम सों कहै कहा ।। तनक तू०
तुमसो तौ मैं कछु न कहुँगी, कहुँगी सावलसाह ते ।
एक काप आंगीहूँ कौ दै, तव तौ घर कूं जाऊं ।। तनक तू०
नरसी मैहेता ताल बजाई, हों न लगी छै वरसा ।
कितने काप जरी के वरषे, एकहि लियो उठाय ।।[२५] तनक तू०
भकतन के प्रभु कारनै ही, आप आये है हरिराय ।
कहत वसंत सुनि प्रेम पियारे, भले ही लियो छै निरभाय ।। तनक तू०

राग : सोरठ

जो नरसीकु गावै, वासि वैकुंठ वहुरि नहि आवै ।।
जो नरसीकु सुनि है, ताको कोटि जग्य को पुन्य है ।।
ताकी भक्ति दिनादिन बाढ़ै, ताके पाप रहें नहि ठाढ़ै ।।
भक्तन में प्रेम पियारे, सव मिलि सव सों हे न्यारे ।।
ताकी महिमा अगम अनंता, हरि–चरनन की सरनि वसंता ।।[२६]

।। इति श्री वसंत कृत नरसी मैहेता संपूर्ण ।।

---

२५ पा० (अ) :- "अव नरसीजो सावल सुमरो, होन लगी वरखाह ।।
फेइ काप जरियन के वरखे, एकही लियो छै उठाय ।।"
२६ पा० (व) :- भकतन में प्रेम पियारो, हे सव में सव तें न्यारो ।
ताकी लीला ओर अनंता, इन चरन सरण वसंता ।।

परिशिष्ट (घ)

गुजराती और हिन्दी माहेरो की तुलना

माहेरो की कथा भक्तराज नरसिंह (नरसी) मेहता के जीवन से संबंध रखती है। नरसिंह मेहता का जीवनक्षेत्र गुजराती में ही था। अतः गुजरात में प्रचलित नरसिंह-जीवन के प्रसंगों को सबसे प्राचीन मानना चाहिये। गुजरात से इन प्रसंगों और नरसिंह-विषयक कविता का प्रचलन बाद में राजस्थान आदि प्रान्तों में हुआ होगा।

परन्तु मीरां-कृत माहेरो मीरां के गुजरात-निवास (द्वारिकावास) के कारण स्वतंत्र स्वयंस्फुरित कृति बनी। उसकी रचना में नरसिंह-विषयक जनश्रुतियाँ ही आधारभूत बनी होंगी। नरसिंह-विषयक गुजराती कविता लिखने वाला सबसे प्रथम गुजराती कवि विष्णुदास माना जाता है। उसने "कुंवरबाईनु मोसाळु" सं० १६२४-२८ के आसपास लिखा होगा। मीरांबाई तब विद्यमान न थी। अतः हम मानते हैं कि नरसी-विषयक कविता सबसे पहले मीरांबाई ने ही लिखी। इस तरह मीरां-कृत माहेरो में जो गुजराती कविता के अंश मिश्रित हो गये हैं वे मौलिक न होकर परवर्तीकाल में जोड़ दिये गये क्षेपक हैं।[१]

मीरां के बाद में नरसीजी को माहेरो लिखने वाले कवियों ने रतना खाती, वसंत आदि ने गुजराती कविता से काफी प्रेरणा ली है। गुजराती के विश्वनाथ और प्रेमानन्द आदि के कुछ पद और पंक्तियों का अनुवाद भी इनकी कृतियों में मिलता है। परन्तु कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि रतना खाती और वसंत में केवल प्रेमानन्द आदि का अनुकरण ही है। इनमें मौलिकता और विशेषता भी है। प्रान्त-भेद के कारण वस्तु-संकलना में भी कुछ तफावुत मालुम होती है। इन कारणों से गुजराती और हिन्दी-राजस्थानी माहेरों की संक्षिप्त तुलना अभ्यासनिष्ठ जनों के लिये प्रस्तुत की जाती है।

---

१ देखिये भूमिका।

गुजराती माहेरो की रचना–

माहेरो रचनेवाले सर्वप्रथम गुजराती कवि विष्णुदास ने सं० १६२४-२८ के आसपास माहेरो (कुँवरबाई नु मोसाळुं) लिखा। 'मामेरु' और 'मोसाळं' ये दो गुजराती शब्द हिन्दी–राजस्थानी माहेरो के प्राय: समानार्थी हैं। विवाह आदि प्रसंग पर वधू के नैहर (पीहर) से आनेवाली पहरावनी को मामेरु या मोसाळं कहते हैं।

नरसिंह मेहता की पुत्री का नाम गुजराती कविता में कुँवरबाई है। हिन्दी में कुँवरबाई का संक्षिप्त रूप कूंवर–कुँवरी–कवरी (कबरी) बन गया है। परन्तु रतना खाती ने कबरी के स्थान पर नानीबाई नाम रखा है।

"भगत–वछल प्रभु सारे सब काज ॥
नानीबाई रा माहेरा री ठाकुरजी ने लाज ॥
सीतारामजी ने लाज, जै जै नारायण हरि ॥[२]"

'नानीबाई' हमारे विचार से लाड का नाम है। उसका वास्तविक नाम कूंवरबाई या कवरी से विरोध मानने का कारण नहीं है।

विष्णुदास ने भात भरने के लिये आये हुए पिता के साथ कुंवरबाई का जो करुण संवाद दिया है उसका अनुकरण परवर्ती कवियों ने किया है। प्रेमानन्द और विश्वनाथ भी इस करुण संवाद के भाव को नहीं छोड़ सके है।

पिता के पास माहेरो के उपयुक्त कुछ सामग्री आदि न देख कर पुत्री कूंवरबाई को बड़ा खेद होता है। वह पिता से पूछती है :–

"को हो मारा तातजी भले आविया, अमने मौसाळुं शुं लाविया ॥"
"अमो लाव्या छुं वाई चंग ने ताल, मोसाळुं करशे श्रीगोपाल ॥"
अे वापथी हुं कहीअे न ठरी, ज्यारे मागुं त्यारे को बाई हरी ॥
मा मोई तारे अमो शें न मुआं, निर्धन मा–बाप ने उदर शीद रह्यां ॥
आछो पातळो पीरसनो रावड़ी, दोहली वेला मारी मावड़ी ॥
जेम बहु उतरो सली, तेम दूधनो भंडार मारी मायड़ी ॥

---

२ रतना खाती कृत: 'नरसीजी रो माहेरो' से।

मा विना आंगु पीग्राणु कोण करे, मा पहेलु छोरु शें न मरे ।।
जल-वछोइ जेम माछली, मा विना कुँवरबाई तेम ग्रेकली ।।
घड़ो जेम भागे ठीकरी, मा पहेली मरजो दीकरी ।।
दीपक तेल विना झांखां तेज, मात विना तेम वापनां हेज ।।
घृत विना जेम लुखां अन्न, मात विना तेम बापनां मन ।।
मा मोइ तारे बाप चोरीअे गयो, मा विना संसार सुनो थयो ।।
मा विना न शोभीअे कापडूं, मा विना छोरु होवे बापडुं ।।"[३]

(विष्णुदास)

गुजराती कवि कृष्णदास ने इस प्रसंग का संक्षिप्त चित्रण किया है । यथा -

महेते माथे मूकयो हाथ, संभारवा दामोदर नाथ ।
पुत्री-आंखे झरियां नीर, देखे नहीं कांई एके चीर ।।
ल्याव्या नहीं कांई साथे तात, फांसू शुँ समझावो वात ।
सालिग्राम सजाई ताल, मामेरानी छे कंई चाल ।।
बाई पुत्री कां तु वली, शा माटे थाआं आकली ।
दामोदरजी मोटा देव, मांहांमेरु करशे ततषेव ।।
राखो चीत पोतानु ठाम, समरो श्रीवर सुंदर शाम ।
पुत्री शीष हलावी रही, उत्तर वाली आप्यो नही ।।"[४]

कृष्णदास की विशेषता यह है कि नरसिंह जैसे भक्तराज की पुत्री के मुख से पिता को तिरस्कृत वचन नहीं कहलवाये गये । अपितु यहां तो पुत्री पिता की सांत्वना से कुछ सन्तुष्ट होती है ।

परन्तु गोविंद (सं० १६८०) अपने 'मामेरु' काव्य में कुंवरबाई के कड़े धिक्कार और आक्रन्द का चित्रण करता हैं । इससे करुण-रस की अभिव्यक्ति तो होती है, परन्तु कुंवरबाई के पत्रालेखन की रेखाएं मंद हो जाती है ।

---

३ कवि चरित भा० २ : पृ० ३३१ ।

४ वही पृ० ४४६ ।

देखिये:-गोविंद द्वारा आलेखित कुंवरबाई पिता से कहती है :-

"जो नो होती मांहांमेरानी पेर्य, तो शीर्द आव्या मारे घेर्य ॥
आगे सहु को मुहने मिहिरणां दे. दाढी उठी तालकुटीयानी कहे ॥
नगर-लोक ठगविद्या करें, पुत्री आंखे-आंसु भरे ॥
एहवा निरधन ने पेट कांपड़ी, सासरामां सहु कहे वापड़ी ॥
ए पिता थी हुं नवि ठरी, याहारें मागुं त्यारे जपो बाई हरी ॥

× × ×

माय विना सुनो संसार, माय विना पुत्रीनो धिक अवतार ।
माय विना लोक महेरणां दीध, माय विना बापने चोरे लीध ॥
माय विना बापनुं एहवुं मंन, भक्ष नाना-विध लूखू अन्न ।
माय विना तातनुं एवुं हेज, तेल घट्ये दीपकनुं तेज ॥
माय विना पुत्री सदा धामरणी, येम मृगबाल भूलू रण भणी ।
माय विना कुण करावे लाड, माय विना पीहरनी भागी वाडच ॥"[५]

प्रसिद्ध कवि प्रेमानन्द ने भी कुंवरबाई के मुख द्वारा धिक्कार और आक्रन्द का चित्रण करवाया है। कुछ शब्द और अलंकार आदि का भी अनुकरण द्रष्टव्य है।

महेते मस्तक मूकी हाथ, पासे बेसाडी पूछी वात ॥
कहो कुंवरबाई कुशल-क्षेम, सासरियां राखे छे प्रेम ॥
रुडो दिवस आव्यो दीकरी, तो मोसाळुं करशे श्रीहरि ॥
कुंवरबाई बोल्यां विनती, मोसाळुं कंई लाव्या नथी ॥
नागरी नाते रहेशे केम लाज, द्रव्य विना आव्या शें काज ॥
निर्मां निर्धननो अवतार, निर्धननुं जीव्युं धिक्कार ॥
निर्धननुं सौ कौतुक करे, निर्धनने सौ घेलो गणे ॥

× × ×

पिताजी कांईन करो उद्यम. तो अवसर सचवाशे कयम ?
नथी लाव्या तमो नाडाछडी, नथी मोड़ ने कुंकुम-पडी ।

---

५ कविचरित भाग २ : पृ० ४५६ ।

नथी माटली चोळी घाट, आमशं आव्या वारे वाट ?
केम करी लज्जा रहेशे तात, हुं शेंन मुई मरतां मात ?
मात विना सुनो संसार, मात विना ते शो अवतार।
जेवुं आथमता रविनुं तेज, मा विना तेवुं बापनुं हेज ।।
सुरभी मरतां जेवुं वच्छ, जळ-विण जेम तलपे मच्छ ।
टोळां वछोइ जेवी मृगली, मा विना पुत्री एकली ।।
लवण विना जेवुं फीक्कु अन्न, भाव विना जेवुं भोजन ।
कीकी विना जेवां लोचन, मा विना तेवुं बापनुं मन ।।
घड़ो फूटे रझळे ठीकरी, मा विना हूवी दीकरी ।
गोळ विना मोळो कंसार, मात विना सूनो संसार ।।
शीद आव्या करवा उपहास, साथे वेरागी पांच-पचास ।
न होय तो जाओ पिता फरी, एम कहीने रोई दीकरी ।।"[६]

उपरोक्त अवतरण देखने से स्पष्ट होता है कि प्रेमानन्द ने भी अपने पुरोगामी कवियों के भाव, शब्द आदि का अनुकरण किया है। अतः गुजराती के माहेरो से प्रेरित राजस्थान के माहेरो में क्वचित् इस तरह का अनुकरण होना स्वाभाविक ही है। प्रेमानन्द वैसे समर्थ कवि है। उसने अपने पुरोगामी कवियों के भाव में कुछ नवीन प्रतिभा भी दिखाई है, परन्तु आकर्षक-भाव और उक्तियों के अनुकरण से वह अपने आपको नहीं बचा सका। फिर सामान्य कवियों का तो बात ही क्या ?

गुजराती माहेरो का राजस्थानी माहेरो में अनुकरण

उपर्युक्त प्रसंग का काफी अनुकरण हिन्दी-राजस्थानी के विभिन्न कवियों द्वारा रचित माहेरो में भी मिलता है। मीरां-कृत माहेरो में भी ये अंश क्षेपक बन कर घुस गये हैं। माता के अभाव से पुत्री की जो उपेक्षा होती है, इसके दृष्टान्त विष्णुदास, गोविंद और प्रेमानन्द से ही लिये गये हैं। यथा :-

"खांड-घृत विण लुखो धान, माय विना कुल में नहि मान।
माय विना जूठो संसार, माय विना पुत्री निराधार।

---

६ प्रेमानन्द कृत 'मामेरु' कडवुं-५।

माय मुइ जदि हूं क्यों न मुई, येहु दुख सहवाने रही।
माय विना कुण बूझै वात, माय विना सगो नहि तात ॥"[७]

वसंत की रचना में तो गुजराती वर्णन का अनुकरण स्पष्ट दिखाई देता है। जैसा कि :-

"वेटी कहै सुनों वावाजी, थे कांई-कांई सामा लाया छौ।
हम कौं तो कछु दीसत नाहै, संग वैरागी लाया छौ ॥
तूटी-सी एक गाडो दीसे, गहरे तिलक वनाया छौ। वेटी कहै०
पांच-सात मोडा संग लाया, झांझि वजावता आया छौ ॥
मेरे पति ने सव कोई पूछै, कोंन द्वार परनाया छौ।
जावो पिता तुम कांही जावौ, हमकूं लाज लजावा आया छो ॥"[८]

'छो' (छौ) और 'परनाया' इत्यादि गुजराती शब्दों के प्रयोग भी ध्यानपात्र वनते हैं। वसंत गुजराती माहेरा के अधिक संपर्क में रहा होगा। कदाचित् गुजराती भाषा का भी उसे अच्छा ज्ञान रहा होगा। गुजरात से राजस्थान और उत्तर-प्रदेश में आये हुए अनेक कुटुंव आज भी गुजरात और गुजराती से कुछ न कुछ सम्पर्क रखते ही हैं। वसंतलाल भी कदाचित् ऐसे किसी कुटुम्व के सदस्य होंगे।

रतना खाती द्वारा वर्णित रचना में भी नानीबाई अपने पिता नरसी मेहता को कड़ा उपालंभ देती है। देखिये :-

दोहा[९]

मारी सासु नित लड़ै, माहेरा रै काज।
आया हाथ हलावतां, (मोहि) उलटी आवे लाज ॥

पद

मोकूं लजावन आये पिताजी ॥ (टेर)
मायड़ होय तो भरे माहेरो, के मायड़ के जायो।

---

७ 'मीरां-कृत माहेरो' पंक्ति : २३९-२४१, २४४।

८ वसंत-कृत माहेरो से।

९ रतना खाती-कृत माहेरो : चतुर्थ प्रकाश।

भरी सभा में करे ऊजली, राखे मान सवायो ॥
ताल मृदंग झांझ डफ झालर, संग मोडया ले आयो।
सब नागर मिल करत मसकरी, नरसी मण्डप छायो ॥
नरसीजी री कंवर लाडली, नरसीजो समझावै।
बैठूं ध्यान धरूं आसन पर, सेठ सांवलियो आवै ॥"

परन्तु पुत्री को शांति नहीं होती है, वह आगे चलकर पुनः कहती है :-

पद

"बोली पुतरी सूण बाबाजी, कांई-कांई सोदा ल्याया।
तुम पै तो कछु दीसे नांही, सूरया साथै आया ॥
फाटया-कपड़ा तूटीं-गाड़ी, बैल पुरातन लाया।
समदी के घर माहेरो भरणै, ताल बजावत आया ॥
कण्ठी-माला और तूमड़ा, मृदंग शंख बजाया।
गोपीचंदण और रामरज, तीखा-तिलक बनाया ॥
जीमण का जीमणारा थे तो, कोड़ी एक न ल्याया।
कंवरी कहै लाज तुम खोई, देश विराणै आया ॥"[१०]

दोहा

क्यांनै आया बापजी, बिना जु घर की पूंछ।
घरां परायां ऊपरै, भली मुडाई मूंछ ॥

कंवरी इस तरह अपने पिता को कठोर वचन सुनाती है। आगे चल कर वह माता का स्मरण कर आक्रन्द करती है, उसमें भी गुजराती कवियों के भाव और शब्द-प्रयोग प्रकारान्तरेण मिलते हैं। यथा :-

"आज म्हांरी हुती जो जनम की माय।
एक दोय कापड़लो तो देती मोय आय ॥
काजल बिना कांई आंखियांरो तेज।
मायडी बिना तो कांई बापजी को हेज ॥

---

१० रतना खाती-कृत माहेरो चतुर्थ प्रकाश (कलकत्ता) पृ० ३०।

गुड़ विना फीको लागै सारो ही कंसार।
माय विना तो फीको लागे सारो परवार ।।
मायड़ी विना तो म्हांरो कौण राखे मान ।
घिरत विना तो जैसे लूखो लागे धान ।।
मायड़ी विना तो धीवड़ निराधार।
माय विना तो यो झूठो संसार ।।
पूरब–जनम का प्रगटया है पाप।
थांरे तो सरीखा म्हांने मिलिया है बाप ।।"[11]

अनुकरण में भी रतना खाती की विशेषता दृष्टिगोचर होती है। प्रेमानन्द ने "कीकी विना जेवां लोचन" ऐसा लिखा है। इसका शब्दशः अनुकरण रतना ने नहीं किया है। वह शब्दान्तर करके कहता है—"काजल विना कांई आंखियारो तेज"।

पहरावनी की तालिका बड़ी सासू आदि स्त्रियां लिखाती हैं उसका भी गुजराती और हिन्दी-राजस्थानी में एक-एक कवि ने अन्यान्य का अनुकरण किया है। तालिका लिखाने वालों की तरह कवियों ने भी उसे काफी लम्बी-चौड़ी बनाने की प्रतिस्पर्धा की है।

विश्वनाथ जांनी (गुजराती कवि) ने बड़ी सास द्वारा पहरावनी की सूची प्रस्तुत कराई है। इसकी कुछ पंक्तियाँ निम्न प्रकार हैं :-

"वड़सासु कहे रहे छानी, हुं रे लखावु लेख, वहुजी।
ते कागळ महेता ने आपजो, विगते करी विशेख, वहुजी ।।
लखो पड़ीकां कुमकुम केरां, पटोळां दश–वीस, वहुजी।
नारीकुंजर नाना विधनां, आपशे श्री जुगदीश, वहुजी ।।
रेट शणीयां साळु सावटु, छापल लखो सें चार, वहुजी।
पामरी ने पटका पछेड़ी, वहु मुल्यनां सार, वहुजी ।।
थोक लखो दग थरमा केरा, चोलेरां पंचाश, वहुजी।
कमखा कापड़ां घरोरां जोईये, लोक करे सहु आश, वहुजी ।।

---

११ वही पृ० ३३।

सहस्र म्होर सोनानी, श्रीफल लखो सें-सात, वहुजी।
वीशमण वांकडिया जोईये, मळशे नागरी-नात, वहुजी ॥
खीरोदक मशरु ने मोळींआं, मगीयां अमरी घाट, वहुजी।
ताजां ने टपके सुरंगे, निर्खी लेजो नाट, वहुजी ॥
जे ने जे गमे ते लखावो, अेटलु तो जोईये आज, वहुजी।
पछे पोषाय तेवु करजो, जेम घरनी रहे लाज, वहुजी ॥"[१२]

प्रेमानन्द ने भी उक्त तालिका का अनुकरण किया है और उसे और भी लम्बी बना कर सामग्री की संख्या में भी वृद्धि की है जो इस प्रकार है :-

"लखो पांचशेर कंकु जोईये, श्रीफल लखो सें-सात।
वीशमण वांकड़ियां फोफळ, मळशे मोटी न्यात ॥
पांच वस्त्रना पंचवीस वाघा, चार चोकड़ी तास।
लखो पछेडी पन्दर कोडी, पटोळां पचास ॥
साठेक मुगटा ने सोएक शणीआं, चीर लखो चाळीश।
धोतियां ब्राह्मणने जोईये, लखो कोड़ी वीश ॥
बे कोड़ी जरकसनी साड़ी, रेशमी कोड़ी बार।
सादी साड़ी लखो त्रणसें, छापल लखो सें-चार ॥
घट-साड़ी लखो दश-वीश कोड़ी, सोळ चोकड़ी घाट।
छींट-मोखी टुकड़ी सोएक, नव कोड़ी लखो नाट ॥
मशरु गजियाणी दरियाई, लखो थान पंचाश।
हजार बारसें लखो कापडां, लोक करे बहु आश ॥
सोलसें लखो शेलां साळु, तेन पान नोंशो-आंक।
आशरा पडतु अमे लखाव्युं, बाप तमारो रांक ॥
तमने सोळ-शणगार करवे, बाप लडावे-लाड।
घरे-जमाई ने सोना-सांकळां, तेमां अमने शानो पाड़ ॥
सहस्र म्हारे सोनानी रोकड़ो, कहेतां पामु क्षोभ।
अमो घरडां ए धर्मे सखाव्युं, न घटे झाझो-लोभ ॥"[१३]

---

१२ 'बृहत्काव्यदोहन' से।

१३ प्रेमानन्द-कृत मामेरु : कड़वु ६।

विश्वनाथ ने पटोलां 'दश-वीस' लिखे थे, परन्तु प्रेमानन्द ने इसे 'पचास' लिख कर इसमें और संख्या-वृद्धि की है एवं तालिका में अन्य सामग्री मिला कर विस्तार भी किया है। इस तालिका का कुछ अनुकरण हिन्दी-माहेरों में भी हुआ है।

वसंत-कृत तालिका इस प्रकार से मिलती है :-

"पचीस मण तो लिखो सोपारी, पचीस मण लिखो रोरी।
पचीस मण तो लिखो कलेवो, ओर मेवन की बोरी॥
खासा अरु मेमूंदी लिखज्यो, सालु साड़ी कापरी।
ठठा करें मसकरी सब्रहो, वगतावर या को वापरी॥
हजार थांन तो लिखो जरियनका, साल-दुसाला दोयसें।"[१४]

वसंत ने अपनी तालिका में शतक से हजार तक उल्लेख किया है परन्तु रतना खाती ने कुंवरबाई के देवर नारायण के हस्तक जो तालिका बनवाई है यह तो और भी अद्भुत है। वहाँ तो लाख से भी आगे बढ कर अगणित संख्या की तालिका बनती है। उस लम्बी तालिका से कुछ पंक्तियाँ यहाँ दी जाती हैं :-

(पद)

"आजा तो फलसा का, तू तो सुरतिया रे बीर।
थारां तो लिख देऊँ, दोयसो ने हन्दा तीर॥
जितरा तो विनायक, हन्दा चालै छै चाक।
जिणका तो लिख द्यो, रुपिया सवा-सवा लाख॥"[१५]
पारस पीपल का, जितरा छै पान।
उतरा तो लिख दो वीरा, जरियां हन्दा थान॥"

बस, समधान के लिये अब गणितिक संख्याएं लक्ष-कोटि आदि भी छोटी बन जाती हैं, अतः वह अगणित संख्या पीपल के पान की संख्या का आधार लेती है। यह बड़ा ही हास्योत्पादक भाव है।

---

१४ वसंत-कृत माहेरो से।

१५ रत्ना खाती-कृत माहेरो : पंचमप्रकाश।

"बूडली ब्यायणजी ने तो उपजी सला।
मने तो पग-धोवण लिखद्यो सोने की सिला॥"[१६]

गुजरात में विवाह के प्रसंग पर, वधू-पक्ष की स्त्रियों द्वारा समधिन (व्याहण) के पग धोकर उसे भेंट दी जाती है। उक्त पद्य में बड़ी सास ने पाद-प्रक्षालनार्थ निर्लोभ- भाव से सोने की शिला माँगी। कवि ने इसमें मानवीय लोभ का खासा चित्रण प्रस्तुत किया है।

मीरां-कृत माहेरो में भी ऐसी तालिका आती है। उसमें भी शतक या सहस्र नहीं अपितु लक्ष-लक्ष के हिसाब से सामग्री लिखवाई गई है। देखिये :-

"पांच लाख तो लिखो जरी का, पाँच लाख लिखो रेशमी।
पांच लाख गुजराती लिखद्यो, पांच लाख मुलतानी॥
खासा अरु महमूंदी लिखद्यो, और पटोली कोरकी।
लाख वीस तो अंगिया लिखद्यो, कहा लिखो विधि ओरकी॥"[१७]

इस तरह गुजराती माहेरो की तालिका हिन्दी माहेरो में रूपान्तर से आई है। भक्त और भगवान की महिमा बढ़ाने के लिये कवियों ने उसमें उत्तरोत्तर अतिशयोक्ति का काफी रंग भर दिया है।

परन्तु उपरोक्त चर्चा से ऐसा न मान लेना चाहिये कि हिन्दी-राजस्थानी माहेरों के कथा-वस्तु या वर्णन में गुजराती माहेरों का संपूर्ण प्रतिबिम्ब पड़ा है। हिन्दी माहेरों की कथा में कुछ स्वतंत्र प्रसंगों की कल्पना और स्थानीय रंग-चित्रण भी मिलता है।

हिन्दी माहेरो की निजी-विशेषता

हिन्दी में 'नरसीजी को माहेरो' लिखने वाले कवियों को मीरां से भी कुछ प्रेरणा मिली होगी। उन्होंने नरसी के माहेरों के प्रसंगों को स्थानीय सामाजिक-प्रणाली के संदर्भ में ही अपनाये हैं। गुजरात-राजस्थान के विवाहोत्सव की रूढ़ियों का कुछ समन्वय माहेरों में दृष्टिगोचर होता है।

---

१६ वही।

१७ मीरां-कृत माहेरो : पंक्ति १००-१०३।

गुजरात में पुत्री के सीमन्तोत्सव के प्रसंग पर 'मामेरु' भरने की रूढ़ि है। इसके अलावा पुत्री की ज्येष्ठ कन्या के विवाह के समय भी मोसालं (माहेरो) भरने की प्रथा है। परन्तु राजस्थान और उत्तरप्रदेश के कुछ लोगों में सीमन्त के प्रसंग पर माहेरो को अधिक महत्व नहीं दिया जाता है। इस कारण से गुजराती में कुंवरबाई के सीमन्त-प्रसंग से संबंधित माहेरो हिन्दी में कुंवरबाई की लड़की के विवाह-प्रसंग को लक्ष्य कर बनाया गया है।

मीरां-कृत माहेरो में इस प्रकार उल्लेख है :-

"भयो विवाह परम सुखदाई, ताकें येक कन्यका जाई।
नगर रम्य यक पुरी सुदामा, तहां वसै विप्र सिरिरंग नामा ॥
ताके पुत्र एक परम विवेकी, नरसी कन्या दुइ विसेखी।
ता कन्या के भई इक बाला, नाम सुलछा भक्त-रसाला ॥"[१८]

उक्त पद्य नरसी की पौत्री (पुत्री की पुत्री, दौहित्री) सुलछा के विवाह के प्रसंग में है और नरसी मेहता के माहेरो भरने का प्रसंग हिन्दी में वर्णित है।

रतना खाती भी इस प्रकार लिखता है :-

"नरसीजी री डीकरी, नानीबाई नाम।
व्याही श्रीरंग के घरां, नगर अंजार सुगाम ॥
जासु सुता के लगन रो, श्रीरंग कियो उछाव।
न्योत्यो सकल बिरादरी, नागर कुल को भाव ॥"[१९]

रतना ने भी पौत्री (दौहित्री) के लग्न-प्रसंग में माहेरो भरने का वर्णन किया है, परन्तु वसंत ने गुजराती-कविवृन्द का ही अनुकरण किया है। और उसने नरसी की पुत्री के सीमन्त के उपलक्ष्य में ही माहेरा भरना पड़ा, इस तरह का वर्णन किया है :-

"नरसी महैता कें एक पुत्री जाई, ताको कीनो व्याह हो।
जहां लरिकी परनाय दई है, नरसी कियो विवाह हो ॥

---

१८. मीरां-कृत माहेरो पंक्ति ५५-५८।

१९. रतना खाती-कृत माहेरो : द्वितीयप्रकाश।

सात मास को गर्भ रहियो, हांसी करत बेन-भाय हो ।
कागद लिखौ इक जूनागढ़ जू, करे माहेरो आय हो ॥"[२०]

राजस्थान-निवासी वसंत का गुजराती होने के अनुमान को इस बात से भी पुष्टि मिलती है क्योंकि रतना खाती और मीरां की परिपाटी का उसने अनुकरण नहीं किया है। सीमन्त के प्रसंग में माहेरो का भरना उचित मान कर वसंत ने अपना 'गुजराती' पना सूचित किया है ऐसा हमारा खयाल है।

हिन्दी-माहेरों में नरसिंह मेहता की प्रथम पत्नी के देहान्त के पश्चात् दूसरी विवाहित पत्नी से दो पुत्रों की उत्पत्ति बताई है।

"प्रथम त्रिया सुर-धाम सिधावा, नरसी कीनो द्वितीयक ब्यावा ।
नरसी के पुनि सुत भये दोइ, सुखद सील जाण सब कोई ॥"[२१]

गुजरात के लिये तो यह एक नई अचरज की बात है। गुजराती रचना और जनश्रुति-अनुसार अपनी पत्नी माणेक मेहती के देहान्त के बाद नरसिंह विधुर ही रहा था। वसंत के माहेरो में भी नरसिंह के द्वितीय विवाह का कोई उल्लेख नहीं है।

परन्तु रतना के निम्नलिखित उल्लेख से नरसी के घर में माणेक मेहती की सौत होने का आभास होता है :-

"घर में सूं बोली महता नरसीजी री नार ।
कुंकुपत्री झेलण मोडयो है गयो तैयार ॥
थांका तो घर में छै आगे अन्न की भूख ।
क्यां सूं तो करोला थे माहेरा रो सलूक ॥
थांरे तो घर मांहे नाहीं पाव ही जुवार ।
माहेरो भरणैं नै मोडयो हो गयो तैयार ॥

× × ×

बोली रेज्या चुपकी रेज्या घर, की तूं नार ।
थांनै म्हांरा माहेरा रो, कांई आयो भार ॥

---

२०. वसंत-कृत माहेरो से ।

२१. मीरां-कृत माहेरो : पंक्ति : ५६-६० ।

साधुड़ां की ठेल करीजो, चालो म्हांके लार।
माहेरो भरेलो म्हांरो, सिरजन-हार॥
भगत-वछल प्रभु, सारे सब काज।
नानीबाई रा माहेरा री, ठाकुरजी ने लाज॥
सीतारामजी ने लाज, जै जै नारायण हरि॥"[22]

पुत्री के सीमन्त के प्रसंग पर ऐसा क्लेश कराने वाली स्त्री नानीबाई की सौतेली माँ ही हो सकती है। यदि नरसिंह के चरित्र की दृष्टि से द्वितीय लग्न का प्रसंग सुरुचिपूर्ण न होते हुए भी कुंवरबाई के माहेरो के करुण-रस को प्रगाढ़ बनाने में तो उपयोगी होता ही है।

रतना खाती ने नरसिंह मेहता का पूर्व जीवन-चरित्र दिया है जिसमें नरसिंह को बड़ा धनपति साहूकार बताया है :-

"गोधन वृषभ विभव अति भारी, रथ शिविका गजवाजि सवारी।
बहु गुमाश्ता सेवक दासा, लक्ष्मी बसे सदा तिन पासा॥
झाझा चले दिसावर जावे, कर वेपार माल बहु लावे।
अजबपति धन का नहीं पारा, गहणा राखे देय उधारा॥"[23]

परन्तु एक दिन वैराग्य की लहर उठी और सब द्रव्य लुटा कर नरसिंह निष्कामी भक्त बन गया, किन्तु गुजरात में प्रचलित नरसिंह के जीवन-वृत्त में ऐसा कोई उल्लेख नहीं है। गुजरात के अनुसार तो नरसिंह मेहता प्रारम्भ से ही भक्त थे वे न कभी धनवान और न व्यापारी ही रहे। अतः इस तरह की बातें गुजराती रचना में हास्यास्पद भी लगती है।[24]

नरसिंह मेहता के पूर्व-जन्म की जो रंगीन कल्पना मीरां-कृत माहेरो में जोड़ दी गई है यह भी गुजरात में प्रचलित नहीं है। अतः इसके क्षेपक होने में कुछ संदेह नहीं है।

---

२२. रतना खाती-कृत माहेरो : द्वितीयप्रकाश।

२३. वही : प्रथमप्रकाश।

२४. देखिये : "नरसैयो भक्त हरि नो" (श्री क० मा० मुन्शी) पृ० ६६ की पाद टिप्पणी।

रतना खाती का माहेरा राजस्थान में लोकप्रिय है। नाथद्वारा-अंचल में तो यह माहेरा भक्तों द्वारा देहातों में आज भी गाया जाता है। आज से ५०-६० वर्ष पूर्व प्रेमानन्द का माहेरा (मामेरु) भी गुजराती स्त्रिओं द्वारा कंठपरंपरा से गाया जाता था। लग्न के अवसर पर तो इसके सिवा काम ही नहीं चलता था।

रतना के माहेरो में अनेक रसिक-प्रसंग के वर्णन हैं जो प्रेमानन्द में नहीं हैं। इस तरह के प्रसंगों के वर्णन रतना की विशेषता के द्योतक हैं।

माहेरो भरने का दिवस आता है तो भी नरसिंह के सामलसाह का आगमन नहीं होता है। कुंवरबाई (नानीबाई) चिंता से व्यग्र बनी है। श्वसुर-गृह के देवर, नणद आदि के कठोर वचन से उसको बहुत दुःख होता है। क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, जल में डूब मरूँ, ऐसी व्यग्रता के साथ नानीबाई घडुला (जल-पात्र) लेकर सरोवर पर चली जाती है। यह प्रसंग रतना खाती ने दक्षता से प्रस्तुत किया है।

पद

हुं तो सरवर पाणीड़े चली ए माय, नरसी मेता की बालकी।
जल भरू-क डूब मर ज्याउ ए माय, नरसी मेता की बालकी।।
म्हारो सुसरोजी घणो बखतावर, मैं तो बाबल निरधन पायो ए माय।
देवराण्यां जेठाण्यां म्हांने मेणा ही देवे, म्हने सासु नणद सता ए माय।।

× × ×

"म्हारे तो नहीं छै-जामण जायो वीरो, कुण मने चीर ओढावे ए माय।
म्हारे नहीं छै जनम की माय, मने हिवड़े कुण लगावै ए माय।।
म्हारा तो बाबा असल निर्वाणी, ज्यारे पल्ले पइसो नाहीं ए माय।
म्हारो तो नहीं छै मामो नै मोसालो, म्हांरो सांवल काज सुधारै ए माय।।
के तो सांबलियो काज सुधारै, नहीं तो परत न पाछी जाऊं ए माय।।"[२५]

---

२५. रतना खाती-कृत माहेरो : षष्ठमप्रकाश।

नानीवाई निश्चय करती है :-

दोहा

"खाली चुकल्यो हाथ में, उभी सरवर-पाल।
भर चुकल्यो घर आवशुं, जब आसी गोपाळ ॥"[२६]

नानीवाई भी आखिर में तो भक्त की वेटी है अतः वह गिरधरलाल का ही स्मरण करती है।

पद

वीरा गिरधरलाल इण अवसर नहीं आयो रे, फेरू कद आवसी। (टेर)
म्हे तो जाण्यो छो रे माहेरो ल्यासी, तू तो खाली हाथन आयो रे॥
मनं खरो रे भरोसो गिरधारी, थें तो पत पंचा में खोई रे।
म्हारो उमंग-उमग हियो ऊवकै, म्हांरी छाती भर-भर आवै रे॥
हुं तो माय विना की डीकरी, म्हें तो निरधन वावल पायो रे।
नानीबाई कहै सुण सांवलिया, म्हारे मात-तात तूंही भाई रे॥"[२७]

गुजरात-राजस्थान की नारी सीमन्त और विवाह के प्रसंग पर नैहर से आने वाले माहेरो को भांखती है। भाई-भावज भात भरने के लिये अवश्य आते हैं और वहन इनकी वाट देखती है अर्थात् प्रतीक्षा करती है। इस प्रसंग में नारी के मन और हृदय के भावों में एक अपूर्व उत्कंठा होती है।

रतना की नानीवाई गिरधरलाल को वीरा (भाई) का संवोधन कर बैठती है यह भी उपरोक्त झंखना का सूचक है। इस अवसर पर वीर की वाटड़ी (प्रतीक्षा) देखना उत्कंठ वहन के मनोभाव नानोवाई द्वारा प्रगट होते हैं। ऐसा मनोरम चित्र अन्य किसी कवि ने नहीं खींचा है। ऐसे मार्मिक चित्रणों से ही रतना का माहेरा आज भी लोकप्रिय रहा है।

गुजरात में मोसाला के प्रसंग पर परंपरा से गाये जाने वाले गीतों में वहन के मन में भाई के आगमन के लिये जो भावपूर्ण उत्कंठा एवं आतुरता प्रकट होती है उसका सरस चित्रण मिलता है। यथा :-

---

२६. वही।
२७. वही।

तव सांवल सिर पै कर फेर्यो, आनंद हरख वधाविया ॥
नरसीजी री कुशल पूछ कर, नैण-नीर ढलकाविया ॥
नानीवाई पूछै कुशल परस्पर, रिध-सिव कंठ लगाविया ॥
सोवन सुरज आज भल उग्यौ, गिरधर मो-घर आविया ॥
छूकल्यो लेकर चली है भवन कूं, मन में हरख वधाविया ॥
सासूजी ने कहै उठो माहेरो वधावो, बीरो गिरधर आविया ॥"[२९]

नरसी मेहता के लिये गिरधर भलेही भगवान-इष्टदेव हों, परन्तु नानीवाई के तो वे वीर (भाई) बन जाते है। यह एक कवि की विशेषता है।

प्रेमानन्द आदि की रचनाओं में ऐसे प्रसंग उपलब्ध नहीं हैं जबकि ऐसे अनेक अन्य प्रसंग भी रतना के माहेरो में मिलते हैं और पहरावनी का चित्रण भी स्वतंत्र है।

यथासमय माहेरो भरने के लिये सांवलसाह अपना रथ द्रुतगति से चलाते हैं। रथ को धीमा कराने के लिये लक्ष्मीजी (रुक्मिणी) कृष्ण से कहती हैं। इसमें कवि ने भयभीत नारित्व-चित्रण प्रस्तुत किया है। यथा :-

"थोड़ा धीमा रथ हांको जी नन्दकुमार ॥ (टेर)
रथ ता(था)रो कड़कै, हियो मारो धड़कै, टूटै छै जी हिवड़ा रो हार ।।
गांवतड़्यां ना म्हांरा कंठज धूजै, हचका तो लागं छै अपार ॥
ऐसा हांक्यां हरि हू ज्यांस्यां म्हे पाली, आस्यां थांरा रथड़ारी लार ॥
पाली-पाली चालां साँवरा मंगल गास्यां, पहुचां तुरत अंजार ॥"[३०]

परन्तु भक्तवत्सल भगवान कहते हैं :-

"सुण राधा सुण रुकमिणी, नरसी करै विलाप।
अवसर पर पूगां नहीं, लागै भक्त-सराप ।।"[३१]

संक्षेप में कहने का तात्पर्य यह है कि रतना खाती ने अपने माहेरो में गुजराती के प्रेमानन्दीय अंशो और शैली का केवल अनुकरण ही नहीं किया है अपितु उसने अपनी निजत्व-शक्ति भी प्रकट की है।

२९. रतना-कृत माहेरो : षष्ठमप्रकाश।
३०. वही।
३१, वही।

मीरां कृत माहेरो में परवर्तीकाल में कुछ प्रेमानन्द के और रतना खाती के क्षेपक अंश अवश्य घुस गये हैं, परन्तु मीरां के मधुर-पदों से उसकी विशेषता प्रकट होती है। देखिये :-

पद

"मेरी तो तेरे नाम से अटकी ॥ (टेक)
मार्यो कंस वैर करी केशव, करत कला नटकी ॥
प्रगटे प्रेम कृपा करी, नागरी ग्वालन की मटकी ॥
कहै नरसी अब हमरी बैर, कहां परी पटकी ॥"[३२]

वसंत ने अपनी लघु कृति (माहेरो) में अनुकरण तो काफी किया है, परन्तु सृजनशक्ति का भी कुछ परिचय दिया है। निम्नलिखित भाव का पद रतना खाती की रचना में भी मिलता है, परन्तु वसंत ने उसमें मधुर-लययुक्त शब्दों की सजावट द्वारा अपनी कुछ विशेषता प्रकट की है।

पद

जाय पहुंचे गउलोक वृन्दावन, हरजी ने रास रचायो है। (टेक)
गोपी-रूप धर्यो गोपेस्वर, नरसी सखा बनायो है।
बाजत ताल मृदंग मधु-धून, झांझरियां झर लायौ है॥ १ ॥
पिय प्यारी जहां निरत करत है, देख-देख सुख पायो है।
मनमोहन किरपा करि बोलै, शिवजी भक्त कहां ते लाये है ॥ २ ॥
जूनागढ़ को वासी कहिये, तुम सरनागत आयो है।
मांग-मांग देउ नरसीला, तू मेरे मन भायो है॥ ३ ॥
हमैं और कछू नहिं चहिये, दीन को दरस दिखाये है।
मनमोहन किरपा करि दियो, राग केदारो गाये है[३३] ॥ ४ ॥

प्रेमानन्द आदि की रचना में समधिन का गाली-प्रदान का प्रसंग नहीं मिलता है, परन्तु रतना खाती और वसंत की रचनाओं में गालीप्रदान के प्रसंग हैं।

---

३२. मीरां-कृत माहेरो : पंक्ति ३५५-५८।

३३. वसंत-कृत माहेरो से।

वसंत के गालीप्रदान में भी कुछ विशेषता प्रकट होती है। यथा :—

हार कासी री हार कारी,

यह दो वापन की वारी ।।

याकू गाली कहीं विधि दीजे,

याकी सहज वलैया लीजे ।।

हरि नटवो री हरि नटवो,

करे सावाली आगे नटवो ।।"[34] इत्यादि

तदुपरांत — "भोजन करिलै, श्री नंददुलारे ।।

[illegible] मुनि [illegible] ।।

भोजन करिलै, श्री नंददुलारे ।।"

तथा — "अचमन कीजे, कृपानिधान,

लछिमाजी झारी भरि लाई, नारद मुनि लाये पान ।।

अचमन कीजे, कृपानिधान ।।

इत्यादि पदों की मधुरता वसंत की निजता की द्योतक बनती है।

रतना खाती का ठीक समय ज्ञात नहि हुआ है। अब प्रचलित माहेरो में विरजलाल शिवकरण द्वारा प्रतिसंस्कार हुआ है। एक पद में शिवकरण के नाम की छाप भी मिलती है :—

"वंसी [illegible]

।। [illegible] कहै [illegible] शिवकरण [illegible] ।।"[35]

इस माहेरो से शिवकरण के अंश का पृथक्करण करना कठिन है परन्तु अशक्य नहीं है। यह अन्वेषण का बड़ा रसप्रद प्रश्न है।

वडोदा के लोकरसिक विद्वान डॉ० मंजुलाल मजुमदार ने अपने 'मीरांवाई एक मनन' पुस्तक में रतना खाती के माहेरो की रचना सं० १७१६ में

---

३४. वही ।

३५. वही ।

३६. रतना खाती-कृत नरसीजी रो माहेरो : [illegible]

मानी है। परन्तु उसका कोई ठीक प्रमाण आपने नहीं दिया है। राजस्थान के साहित्यिक इतिहास में रतना खाती का भी स्थान है, परन्तु इसके काल के संबंध में अधिक खोज नहीं हुई है।"[३७]

रतना के माहेरो का समय सं० १६१६ संशयग्रस्त लगता है। इसे सत्य मान लिया जाय तो रतना खाती की कृति प्रेमानन्द के 'मामेरु' से भी पूर्वकालीन बनेगी। इस ख्याल से वसंत ने रतना का अनुकरण किया है यह बात स्पष्ट हो जायेगी। मीरां-कृत माहेरो से रतना ने कदाचित् कुछ अंश अपनाये होंगे।

हिन्दी-राजस्थानी माहेरो के कुछ पद ऐसे हैं जिनमें नरसिंह मेहता की नाम-मुद्रा मिलती है। ऐसे कुछ पद राजस्थान में नरसी-कृत माने जाते हैं। देखिये :—

"हूँ तने सिवरूं तु भरन माहेरो करलो अन्टो-म्हारो।
भणे नरसीलो सुण सांवलिया, तो लखनयूंजी रो वाटो॥"

तथा : कठै तो लगाई इति वेर सांवलिया, कठै तो लगाई इति वेर।

× × ×

आगूं भक्त अनेक उवारे, अब कै मेरी वेर।
नरसी मेहता दास तुम्हारो, सुमरे सांझ-सवेर॥"[३८]

इस तरह के अन्य पद भी मिलते हैं। क्या वे पद नरसी-कृत होंगे और इनको कवियों ने अपनी कृतियों में पाठ-भेद के साथ रख लिया होगा?

वसंत कृत माहेरो में भी यह पद कुछ पाठभेद से मिलता है :—

"कहाँ लगाई एती वेर सांवरे, कहाँ लगाई एती वेर॥

× × ×

नरसी महतौ दास तिहारो, इन चरनन को चेर॥"

---

३७. रतना के काव्य में माहेरो का वर्ष वि० संवत् १६१६ (शाके १४८१) दिया है, इसका भी विचार करना उचित है।

३८. रतना खाती-कृत माहेरो : पंचमप्रकाश।

मीरां-कृत माहेरो में भी पाठ-भेद से यह पद पाया जाता है :-

"कहां लगाई इति देर हो सांवलिया, कहां लगाई इति देर।
कह भकतन के भीर परी है, कह लियो निदरा घेर॥

× × ×

कह कुवजा मति तेरो फेर्यो, ता मैं नाहीं फेर।
नरसीयो कहै सुनउ निरंजन, मति जी लगाओ वेर॥"[३६]

कदाचित् मीरां से यह पद लेकर रतना ने उसको विस्तृत किया होगा और वसंत ने भी ऐसा किया होगा।

गुजराती 'हारमाला' में भी कुछ पद नरसिंह के नाम की छाप वाले मिलते हैं। कुछ लोग इनको मौलिक नरसी-कृत ही मानते हैं। इस तरह उपर्युक्त पदों का कर्तृत्व भी नरसिंह का माना जाता है।

एक प्रश्न हमारे मन में खड़ा होता है। कुंवरवाई (नानीवाई) के श्वसुर का गांव कौनसा होगा ? भिन्न-भिन्न गुजराती तथा हिन्दी कवियों ने अलग-अलग नाम दिये हैं।

कुंवरवाई का माहेरो का प्रसंग विश्वनाथ जानी मांगरोल ग्राम में वताते हैं, और रतना खाती अंजार में वताता है। मीरांबाई ने सुदामापुरी नाम दिया है। 'हारमाळा' में उंना ग्राम का नामोल्लेख है। विष्णुदास ने विजयनगर ग्राम वताया है। यह भी शोध का विषय वन जाता है।

---

३६. वसंत-कृत माहेरो से।

शब्दकोश

[माहेरो में प्रयुक्त कुछ अपरिचित या अल्प परिचित शब्दों के सरल अर्थ यहाँ दिये गये हैं

संकेत चिह्नों का विवरण

अ.=अव्यय।	सं.=संस्कृत।	गु.=गुजराती।
क्रि.=क्रिया पद।	सर्व.=सर्वनाम।	फा.=फारसी।
क्रि. वि.=क्रिया-विशेषण।	स्त्री.=स्त्रीलिंग।	प्रा.=प्राकृत।
क्रि. स.=क्रिया सकर्मक।	हि.=हिन्दी।	दे.=देशज।
पु.=पुंलिंग।		पं.=पंक्ति।

अतिहास- (सं.) इतिहास का अपभ्रंश रूप। (संस्कृत में तो 'अतिहास' का अर्थ 'अविषय हास-हँसी' ऐसा होता है) पं० १०

हरि-वासुर- हरिभक्ति-भजन कीर्तन के लिये नियुक्त किया गया दिवस (वासर) ऐसा अर्थ प्रतीत होता है। पं० १३

निब्राज्योजी- निर्वाह करिये-रक्षा करिये। पं० १५

औगुण- (सं. अवगुण) दोप या दूषण। पं० १७

मति (क्रि. वि)-नहीं। (निषेधवाचक शब्द) पं० १७

जोयोजी- (गु. क्रि. 'जोवुं' पर से) देखिये। पं० १७

पेरो- 'घेरा' के अर्थमें प्रयुक्त पं० १८

रखाज्योजी- रक्षक। (आप रक्षक हो) पं० १९

निभाना (क्रि. सं.)- संबंध या परम्परा रक्षित रखना। पं० २१

अरी ('अड़ी' गु. क्रि.)- स्पर्श कर गई। मनमें बस गई। अरी पं० २४

भिघन (सं. विघ्न)- बाधा, अड़चन। पं० २८ की पादटिप्पणी

सिष्य (सं. शिक्षा)- उपदेश। पं० ५०

भूमिनिधि- भूमि से निकला हुआ धन। पं० ५४ की पादटिप्पणी

तुंब-बेल- तूंबड़ी की बेल। पं० ६२

रहित- उदासीन। पं० ६४

उछाह (संज्ञा पुं.)- उत्साह। पं० ६६

बाईजी (स्त्री.)- सासू के लिये प्रयोजित आदरसूचक शब्द। पं० ७१

* माहेरा (सं. मातृगृह-प्रा० महिवर से व्युत्पन्न):- विवाह के प्रसंग पर वधू के मातृगृह से आने वाले [illegible] सौगात इत्यादि। पं० ७२

पीहर-(सं. पितृगृह >प्रा. पियहर> गु. पीहर),- स्त्री के पिता का घर।

पीर (पीहर):- पितृगृह   पं० ७३ की पादटिप्पणी

हर हर हसे - अवज्ञा से मुक्त हास्य करना।   पं० ७४

ताल-कूटपो :- (ताल कूटा: संज्ञा: पुं.):- झांझ बजाकर भजन गाने वाला। पं० ७७

होड़- (संज्ञा: स्त्री.) - शर्त्त (प्रतिस्पर्धा)।   पं० ७८

पटक- (खटक):- खटकना, मनमें दुःख होना।   पं० ८१

झाला- (गु. ठाला):- रिक्त हाथ से   पं० ८५

ओसर- :- मौका, अवसर।   पं० ८५

* तुम्नर-(हि. तंबूरा: संज्ञा: पुं.):- तंबूडा से युक्त एक प्रकार का ततुवाद्य।   पं० ९३

लिखियां- (सं. लेखक):- लिखने वाला।   पं० ९९

महमूदी- (फा. संज्ञा: स्त्री):- एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा जो मुगल-काल में बहुत प्रसिद्ध था।   पं० १०२

पटोली- (सं. पटोल):- एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जो प्राचीन काल में गुजरात में बनता था। गुजरात के पाटण शहर में आज भी 'पटोलाँ' बनते हैं।   पं० १०२

अंगिया- (सं. अंगिका संज्ञा: स्त्री.):- चोली, कंचुकी।   पं० १०३

गंदोरा- (हि. गँडोरा: संज्ञा: पुं.):- कच्ची खजूर, खारिक।   पं० १०५

स्याबास-(फा. शाबाश)- प्रशंसा सूचक शब्द।   पं० ११६

बनक- (सं. वणिक):- बनिया।   पं० १२९

अगात- (अगाध: सं. वि.):- अथाह।   पं० १३१

बाईनों- पुत्री कुवरबाई को।   पं० १३८

भाटा- (हि. पु.):- पत्थर।   पं० ११२ की पादटिप्पणी

पति- (हि. पत):- लज्जा, आबरू।   पं० १४७

---

* स्व० रामलाल मोदी (संस्कृत शब्द-मातृगृह से 'मावहर') की उत्पत्ति मानते हैं। मावहर शब्द से भी 'माहेरो' का व्युत्पत्ति हो सकती है।

* पंक्ति सं. ९३ पर 'तुमर' के स्थान पर तुम रहो मुद्रित हो गया है। अतः 'तुमर' शब्द ही सही मानें।

संदर्भ-सूची

१. मीरां की पदावली (श्री सदानन्द भारती : प्रकाशक S. S. Mehta & Brothers, सूत तोला, बनारस सीटी)

२. मीरांबाई की शब्दावली (बेलवेडियर प्रेस प्रयाग)

३. मीरांबाई का काव्य (श्री मुरलीधर श्रीवास्तव : प्र. साहित्य भवन लि० प्रयाग)

४. मीरां, एक अध्ययन (पद्मावती 'शबनम')

५. मीरांबाई–एक मनन (डॉ० मंजुलाल र० मजूमदार : प्र. प्राच्य विद्या मंदिर, बड़ौदा)

६. मीरांबाईनां–भजनो (श्री हरसिद्धभाई दिवेटिया)

७. मीरांबाई नां पदो (भूपेन्द्र बालकृष्ण त्रिवेदी)

८. कविता-कौमुदी-भा० ५ (श्री रामनरेश त्रिपाठी)

९. मारवाड़ के मनोहर गीत (श्री रामनरेश त्रिपाठी)

१०. ब्रृहद्काव्य दोहन (गुजराती प्रेस, बम्बई)

११. नरसिंह मेहेता–कृत काव्य-संग्रह (गुजराती प्रेस,बम्बई)

१२. हिन्दी–साहित्य का इतिहास (डॉ० रामकुमार वर्मा)

१३. हिन्दी-साहित्य का उद्भव और विकास (श्री रामबहोरी शुक्ल : प्र. हिन्दी भवन, इलाहाबाद)

१४. नरसैंयो भक्त हरिनो (श्री क० मा० मुनशी)

१५. भालणनां पद (श्री जेठालाल त्रिवेदी)

१६. प्राचीन फागु-संग्रह (डॉ० भोगीलाल सांडेसरा)

१७. कविचरित–भाग १ तथा भाग २ (श्री के० का० शास्त्री)

१८. नरसीजी रो माहेरो (आर्यावर्त्त प्रकाशन गृह, कलकत्ता)

१९. Gujarat & It's Literature (R. M. Munshi)

२०. Selections from Gujarati Literature (Dr. Taraporawala : Publisher, Calcutta University)

२१. जयमल–वंश प्रकाश (श्री गोपालसिंह राठोर)

२२. भक्तमाल (नाभादास)

२३. मीरांबाई–शोध प्रबन्ध (डॉ० सी० एन० प्रभात, बम्बई)

२४. मीरां स्मृति ग्रन्थ (बंगीय हिन्दी परिषद, कलकत्ता)

२५. ब्रजभारती–त्रैमासिक (मथुरा)

२६. प्राचीन काव्य मंजरी (सम्पादक-जेठालाल त्रिवेदी)

२७. मीरांबाई (श्री भा० नि० मेहता)

२८. तुलसीदास (श्री जेठालाल त्रिवेदी)

२९. दयाराम नां भजनो (सस्तु सा० व० कार्यालय, अहमदावाद)

३०. हिन्दी-साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास (श्री सूर्यकान्त)

३१. Mile Stones In Gujarati Literature (K. M. Zaveri)

३२. बंगाली-साहित्य नो इतिहास (प्र. गुजरात विद्या सभा, अहमदावाद)

३३. भागवत संप्रदाय (श्री बलदेव उपाध्याय)

३४. बंगाली प्रवासी मासिक (कलकत्ता)

३५. वसंत (मासिक)

३६. गुजरात (मासिक)

३७. कौमुदी (मासिक)

३८. कुंवरबाई नुं मामेरु : प्रेमानन्द-कृत (स्व० रामलाल मोदी)

३९. शोध पत्रिका (जून १९५२)

४०. गुजराती साहित्यना मार्ग सूचक स्तंभो (स्व० कृ० मो० झवेरी)

४१. गुजराती-साप्ताहिक : दीपोत्सवी अंक : सन् १९३७।

४२. स्त्री जीवन (मासिक)

४३. मालण (स्व० रामलाल मोदी)

४४. प्रेमानन्द-कृत मामेरु (रांधेजा की सं० १८७९ वाली हस्तप्रति)

४५. हारमाला (सं० श्री के० का० शास्त्री)

४६. वघेकाशाई बनावट (स्व० चुनीलाल व० शाह)

४७. संत कबीर (साहित्य भवन लि० प्रयाग)

४८. पुष्टिप्रवाह मर्यादा भेद (गुजराती टीका : शास्त्री छगनलाल अमरजी)

४९. गवरी कीर्तनमाला।

५०. मीरांबृहत्पदावली-प्रथम भाग (राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

५१. मीरां बृहत्पदावली – द्वितीय भाग (कुछ अंश) – „ „

हारमाला के पद

प्रार्थना

'प्रभुजी माहरै ताहरा नांम नौ आसरौ, तुम विना सार कुण करै अमारो'?
दीनना नाथ तूंहीज दामोदरा, अवसरै मुजने लै उबारी ॥१॥ (टेक)
कोई कहै लंपटी, कोई कहै लोमियौ, कोई कहै ताल-कूटियौ खोटो।
सार कर श्रीहरि, दीन जाणै मुझनैं, हार आपै तो तूं नाथ मोटो ॥२॥
महादेवनी क्रिया मोनें थई, ताहरे लिछमीनाथ गायौ।
मामेरे री वेला लाज जाती हुती, गरुड चडै नै प्रभु साहि आयौ ॥३॥
आगै-आगै मुहि अतिस विगोईयो, उष्णोदक मूकै नै हास कीधौ।
द्वादश मेघ ते मोकळै श्री हरि, [२]आपणा भगत कौ मान दीधौ[२] ॥४॥
भगतनी लाज राखौ लछमीवरा, नाम दयाल छौ बिरद भारी।
ताहरे सेवग कोट छै सावला, [३]अमारै जाचिवानै एक ठौर थारी[३] ॥५॥
सोरठमें मोनै सऊ साचो कहै, पुत्री नै मामेरो तमे कीधौ।
नागरी-न्यातमै ईडो चढाईयो, नरसीया नै अभैदान दीधौ ॥६॥ ❀

नाथ न आयौ

चहूँ-दिश जोऊँ तारी वाटड़ी, मारो नाथ न आयौ।
मंडली खडग काठै रह्यौ, समाचार न कहायौ ॥१॥

पाठांतरः—(१-१)"प्रभु माहिरे ताहरा नाँवनो आसरो,
तम विना सार कुण लै हमारी ॥"
(२-२)..............................,आपणै भक्ति कौं मान दीधौ।"
(३-३)..............................,अमारै कहिवा नैं एक ठौड थारी॥"

❀ गुजराती 'हारमाला' के पदांक १०५ के साथ तुलना करें।

हठीलो हठ मूके नही, हार आपै न अमनैं।
मार्या केरै मेरां नाथजी, खोड लागै छै तमनैं ॥२॥
मामेरो कीधो भलौ, गांठी गरथ न होतौ।
लखमीजी वेगि मोकळे, मनैं कीधौ सपनोतौ ॥३॥
वामन-रूपै वल छल्यो, अवनी त्रिपद कीधी।
ईंद्र ईंद्रासण राखियो, सार सेवगनी लीधी ॥४॥
सामनो समर मैं रह्यो, नरसीयो मेल्यो विसारी।
वैकुंठ थी वेग करीनैं, हार आयो मुरारि ॥५॥
नरसै नै हारड़ो आपताँ, नाथ तूं देर लगाड़ै।
रोखे भराणौ छै मंडली, मुनैं खडग दिखाड़ै ॥६॥ ❀

(रागः रामकली)

उपालंभ

बधिर भयेलो देवा बधिर भयेलो, आपणौं विरद किम विसरेलो ?
कोपियो मंडली, कह्याड़ नैं मारिसी मूंठड़ी, कछू लिनीं दावि थायसी ॥
यौं करि कहिसीं भक्ति करी तौ नरसीयो,
मारियौ तौं भकत-बिछ्ल थारो बिड़द जायसी ॥
मलेछनीं जाति कवीर उधारियो, नामाना छापरा दिया छाई।
जैदेव नैं पदमावती आंपी, नागरा ने अव मूंकि भाई ॥
जायना फूल सूतनौ धागौं, दोय दमड़ी नै मोल पाविसी।
नरसिया नै इक हारड़ो आपतां, थारा बापना बापनौ स्यौं जाविसी ? ❀

❀ गुजराती 'हारमाला' के पदांक ८५ के साथ तुलनीय। वहाँ पद का राग 'मलार' बताया है।

❀ गुजराती 'हारमाला' के पदांक ५२ और परिशिष्ट पदांक ६२ के साथ तुलनीय ॥

गपीड़ो—(हिं. गप्पी):- डींग मारने वाला । मिथ्या माषी पं. १८३

तुमानी :- तुम्हारी । पं. १९०

गलनी :- गले की। पं. १९३

मोडिया—(हि० मुंडिया) मुंडन किए हुए साधु के लिये प्रयुक्त है। पं. २०८

मोड़—(सं. मुकुट>प्रा. मउड> गु. मोड़):- विवाह आदि शुभ प्रसंगों में घर की मुख्य नारी मस्तक पर मुक्ताजटित अलंकार धारण करती है उसे मोड़ कहते हैं तथा विवाह के अवसर पर वर-वधू भी इसे धारण करते हैं। पं. २३४

माटड़ी—(गु. माटली: हिं. माट):- मटका, जल-पात्र । पं० २३४

घाटड़ी—(घाट: गु. घाटड़ी) :- स्त्रियों का एक रेशमी वस्त्र । विवाह आदि में इस माङ्गलिक वस्त्र का महत्त्व माना जाता है। पं २३४

मायड़—(सं. माता>प्रा. माय>मायड़:- माँ, जननी । पं० २३७

लूखो—(सं रूक्षः गु. लुखुं):-घृत तैल आदि स्नेह द्रव्यों से रहित रूक्ष भोजन पं० २३९

खांड:—कच्ची शक्कर । पं० २३९

तोल:—मान, इज्जत । पं० २४५

अमनी:—हमारी । पं० २५२

अमनो:—हमारो । पं० २५२

बापनी:—पिता की । पं० २५७

दषणीदा चीर—दक्षिण भारतीय प्रान्त के मूल्यवान वस्त्र । पं० २६०

सेडरी—(गु. छीदरी):- स्त्रियों का एक आकर्षक वस्त्र । पं० २५६ की पादटिप्पणी

वीछवो—(हिं. विछोह):- वियोग । पं० २६७

टोट—(हिं. टोटा):-कमी, अभाव । पं० २८७

विहारिया—(गु.वहेवारिया):- व्यवहार जानने वाले । पं० २८८

मोसालो—(गु. मोसालुं):- माहेरो । पुत्री और बहन के यहाँ भात भरना । पं० २९१

नागरियानो विहार—नागर जाति का व्यवहार । भात भरने(देने)की रीती पं० २९२

तातो-(सं. तप्त, हिं. ताता: वि.) :- गरम, उष्ण । पं० २९९

समोवण—(क्रि. समोना):- अधिक उष्ण जल को ठंडा करने के लिये उसमें ठंडा जल स्नानार्थ मिलाना पड़ता है उसे 'समोवण' कहते हैं। पं० ३०२

मावटा– (सं. माघवृष्टि,हिं. मावठ गु. मावठुं):– वर्षाऋतु की समाप्ति के बाद की वर्षा । पं० ३११

वेसरनां मोती–(गु.):– मुक्ताग्रथित माला की पंक्तियाँ पं० ३२१

जड़ाव चूड़ो– (गु.):– सुवर्ण जटित हस्तिदंत की चूड़ियाँ पं० ३२३

बाजुबंद– (फा. बाजूबंद):– बांह पर पहनने का एक गहना, भुजबंध । पं० ३२४

कडिया लीनां छै– कटि पर उठाये गये हैं । पं० ३२६

वेर– (गु. वेला):– अवसर, समय । पं० ३३२

टेर– (हिं. संज्ञा. स्त्री.):– गीत की तान । पं० ३३५

झांझण–(गु. झांझर > हिं. झांझन):– पायल । पैर में पहनने का एक आभूषण । पं० ३२८ की पादटिप्पणी

करनी– (हिं.):– कर्म, करतूत । पं० ३५०

काकी– चाचे । पं० ३६१

स्योरी– शवरी । पं० ३६० की पादटिप्पणी

गोतनी– (सं. गोत्र, हिं. गोत):– कुल या वंश में उत्पन्न हुई । पं० ३६४

कुलगाती–(सं. कुलघातक):– कुल की हत्या करनेवाला । पं० ३६५

कैरु– कौरव । पं० ३६६

परगास– (सं. प्रकाश):– प्रसिद्ध पं० ३६७

नागरी नो–(गु.):– नागर स्त्रियों का । पं० ३८४

एहो– (गु. अेवो):– ऐसो, ऐसा । पं० ३८५

साहा– (हिं. साह):– साहूकार, धनी या सेठ । पं० ३९०

खोसी– (गु. क्रि. खासवुँ):– घाली या रखी । पं० ४०३ की पादटिप्पणी

कोसी–(गु. खोसी) :– रखी या घाली । पं. ४०३

वागा–(गु.संज्ञा. पुं) :– पोशाक, बढ़िया जामा पं. ४१४

हलवस–(गु. हलवे थो) :– धीमे से । मंदगति से । पं. ४१४

टक–(हिं. संज्ञा. स्त्री):– स्थिर दृष्टि । पं. ४१८

परजापति–(गु. सं.) :–कुम्भकार के अर्थ में प्रयुक्त । पं. ४२३

स्वासणी–(गु. सुवासिनी से) :– सुहागन । सौभाग्यवती स्त्री । पं. ४२५

तोखी–(सं. संतुष्ट) :– संतुष्ट किया । पं. ४२६

गोपरा—नारियल का गर्भ । पं. ४३६

रोळी-(हि. रोरी संज्ञा. स्त्री) :- रोरी जिसका तिलक लगाते हैं । पं. ४३६

वेल-(गु. वेठ) :- अंगूठी, मुद्रा । पं. ४४३

कांना-(गु. कान) कर्ण में । पं. ४४४

गुंगाली-गले का आभूषण पं. ४५०

एको-(गु. एनुं) .- इसका । पं. ४५३

अवले- गु.अवळा) :- उल्टा । औंधा । पं. ४८२ की पादटिप्पणी

सावटू-[सं. स्वापतेय, सावतेय ?] रेशमी वस्त्र । गोविंद-कृत 'मामेरा' में सावटुयाँ सागोयां. ऐसा प्रयोग है । रतना खाती-कृत माहेरो में, 'सावटू खरीद धायो' इस तरह का उल्लेख है।'कान्हड़दे प्रबन्ध' में भी. सावटू शब्द पाया जाता है। पं. ४६०

गोंदवा-(हि. गेंद) :- गेंद अथवा पाषाण के टुकड़े । पं. ४७५

हीडे-(गु.क्रि.. हींडवुं" से) :- चली । पं. ४८०

महतीजी :- ब्याही श्रीरंग मेहता की पत्नी । पं. ४८३

थारे-(राज. सर्व.):- तुम्हारे । पं. ४८५

उथी-(गु. संज्ञा. स्त्री. ओथ) :- आश्रय, सहाय । पं. ४८६

वोपार-(सं. व्यापार) :- वाणिज्य । पं. ४८६

माहरो:- माहेरो । पं. ५०३

मुरति-(सं. मूर्ति) :- व्यक्ति, चेहरा । पं. ५०३

सचर-(सं. समग्र) :- सारे गांव को । पं. ५०६

मोडियानी-(हि. मुंडिया) मुंडिया की पुत्री । पं. ५११

काप-(गु. कापड़ा) :- चोली, कंचुकी । पं. ५१२

खाक-(गु. खाक) :-राख, मिट्टी, नष्ट । पं. ५१२

झालरी-(हि. झालर) :- झांझ । पूजा के समय बजने वाला (घड़ियाल) पं. ५२६

उल-(गु. आंलो ?) :- 'ऊल-चूल्ह' चूल्हे के पास की भट्टी । पं. ५३२

जम-(हि. क्रि. वि. जिमि) :- जैसे, यथा । प. ५३२

पुनि- पुण्य । पं. ५४३

पुरवणी-शब्दकोश

वसंत-कृत माहेरो में अनेक अल्प परिचित या अपरिचित शब्द पाये जाते हैं। इनके सरल अर्थ यहां दिये जाते हैं।

वेल पत्र- (गु. बिलीपत्र) :- बिल्वपत्र, जो महादेव को चढ़ाये जाते हैं।

निहचें-(सं. निश्चय):- निश्चयपूर्वक अर्थात् एकाग्रभाव से।

धनी-(सं. धन्य) :- धन्य है।

केदारो-(हिं. केदारा):- राग-रागिनी विशेष। नरसीजी द्वारा केदारा-राग में भजन गाने पर श्रीकृष्ण ने उन्हें दर्शन देने का वर दिया था।

परनाय-(गु. परणाववु स.क्रि.) :- विवाह करना।

कलेवा-(सं. कवल) विवाह-प्रसंग पर वरपक्ष हेतु सत्कारभोजन के लिये बनाई हुई सुखड़ी। मंगल कवल।

वगतावर :- गरीव।

हनि-(सं. हानि) :- क्षति।

मामेड़ो-(गु. मामेरु) :- माहिरो भरना।

गैत :- पशुओं को रखने का स्थान (?)

सीरो-(सं. शीतल) :- ठंडा।

पांछ-(सं. पक्ष) :- सहाय।

कालि-(अ.) कल। दूसरा दिन (आनेवाला)

वोदी-(गु. वधी) :- सर्व। तमाम।

टेरां-(हिं. टेरना) :- वारम्बार पुकारना, बुलाना।

चेर-(हिं.) :- दास, सेवक।

गमाये-(हिं. क्रि. स. गमाना) :- खोया।

लक :- लगाम

दरियाई :- एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

अयानीसी-(अजानी) :- आगे न जानी गई हो, ऐसी।

पनवारे :- पान देने वाले (?)

दे वापन :- दो वाप का।

लटवो-(हिं. लटका) :- हाव-भाव, कृत्रिम चेष्टा।

काप-(गु. कापड़ा) :- चोली, कंचुकी।

तनक :- तनिक, जरा, थोड़ा-सा।

(२)

देवा अमची वार किम बदल हुइला,
आपणा भगत किम भूल गेला ?
ऊठों हो सांवला, मूक मन आवला,
ऊठ गोपाल असुर थाए।
नरसिया नें एक हारडो आपतां,
तारा बाप नौ स्यौ जाए ॥ १ ॥

अमनें तो राजा मंडलीक मारसै
मूंठड़ी धूड़नी धूड़ थासी।
भगति करतां कांई नरसियो मारियो,
भगत बछल तारो बिड़द जासी ॥ २ ॥

मलेछ माटे कांई कबीरो उधर्यौ,
नामै ना छापरा दिया छाई।
जैदेव नै तें पदमावती आपी,
नागरा माटें स्यु ये हर वाही ॥ ३ ॥

अमै ष(ख)ड़ भडतां तमे खड़भड़सो,
बैकुंठ मै किम थिर रहस्यौ ?
नरसिया नै कांई एकलो मूक के नें-
राधिका संग विनोद करस्यौ ? ॥ ४ ॥

ऊठियो श्री हरि हार आप्यो सही,
नरसिया चे स्वामी बिरद मान्यौ।
दोऊ कर जोड़ राजा मंडलीक पायं पंड्यौ,
तारो रे मरम अमे नथी जाण्यौ ॥ ५ ॥❀

❀ गुजराती हारमाला के पदांक ५३ आदि के साथ तुलनीय। (देखिये : 'नरसिंह महेता कृत काव्यसंग्रह' पृष्ठ २० और पृष्ठ ५६२)

वाचा पाली

दातण करवा वेला मारै वालै,
वाच पोतानी पाली ।
अपणै जननै लाड लडा कर,
विपतै सहु नै टाली ॥ १ ॥
मुनीजननों तेडयो नथी(वि) आऊ,
ब्रह्मादिक नै वसि न थाऊ रै ।
नरसैया नै एज गोपी,
हूँ एक सरूप कहाऊँ रै ॥ २ ॥❀

गलनी माला द्यौजी

(राग : कालिंगरो)

गलनी माला म्हाँने द्यौजी राजि ॥ टेक ॥
कृपा जु कीजे बिमुख पतीजे,
मुख सौं वचन कहो जी ।
अननाथन ना नाथ वंधू वाल्हा,
सुखना सागर छौजी ॥ १ ॥
जाय ना फूल सूत नौ धागौ,
सो कांई गाढ़ गहोजी ।
भगत-बछिल थारो बिड़द लजै छै,
करुणासागर छोजी ॥ २ ॥
सांवरी सूरति माधुरी मूरति हि,
बड़ा माँझ रहोजी ।
रमझिम करतौ सांवलियो आवियो,
नरसी मैता माला ल्यौजी ॥ ३॥

❀ गुजराती हारमाला के पदांक १२६ के साथ तुलना करें। (देखिये : 'नरसिंह महेता कृत काव्यसंग्रह' पृष्ठ ४७)

औट परी

तुम कुं लाज हरिरया मेरी ॥ टेर ॥
हरनाकुस नष (ख) उदर विडार्यो, जन की सहाय करी ॥ १ ॥
अति अघपूर गौतम की नारी, श्रीपद-रज परस तरी ।
नाम प्रताप जगत सब जानै, जल पर उपल तरि ॥ २ ॥
भकत रंक रंक कुं राजा, करत न लाग घरि ।
विप्र सुदामा कुं बौत विभो दियो, भुज सू भुज पकरि ॥ ३ ॥
कोटि ष(ख)ल अधम उधारै, हम कुं कहाँ चूक परि ।
नरसी कहैं तुम सुनहौ निरंजन, याँहि औट परि ॥ ४ ॥❀

ते किम मेल्यो जाय ?

भगवा ! ते किम मेल्यो-रे जाय, जानें सिव ब्रह्मादिक ध्याय ॥ टेक ॥
विषयी जननें उधारवा वालै, भूतल अवतार लीधौ ।
छेल छबीलो नैं छोगालो, विश्व कृतारथ कीधो ॥ १ ॥
जिणे जेहो दीठो तिणें तेहो धायो, मैं मग वाणीयौ न गायौ ।
राधिका नें संग बीड़ी ग्रही तो, ते मारे हृदे मैं समायौ ॥ २ ॥
मधुरें वाच कहि हरि वीनया, निरख्या कांनड कामी ।
विरह-विदाहरण भवदुःख भंजण, मिलीयो नरसैया चौ स्वामी ॥ ३ ॥+

संन्यासी को प्रत्युत्तर

ते किम मूकी यै रे, अध खिण मूकीयो रे न जाय ।
जाना हूँ जोवणनी बलिहारी रे, त्याना कृष्ण हृदे समाय ॥टेक॥
अमे छांवै वैश्नव छबीलाना रे, ते में तूं नथी जाणै काय ।
राधा चंद्रभगा चंद्रावल, ते मोहि दीधो सहाय ॥ १ ॥

❀ पाठांतर :-(४) "नरसी कहैं तुम अधम उधारण, यहाँ कयों औट परि ?"
+ गुजराती 'हारमाला' के पदांक २० के साथ तुलनीय ।

नरसीयो सिंगार गावसी रे, भीवड़ौ रीसां बलसी रे ।
आप दोऊ वाद मंडाणौ, नां जांणू कुण तिरसी ॥ २ ॥
या रसनो स्वाद संकर जाणै, के जाणै सुक जोगी ।
कै जाणै छै व्रजरी नारी, के नरसीयो भोगी ॥ ३ ॥❀

पत राखोजी नंदकुंवार

मेरी पत राषो (खो) जी नंदकुंवार,
पतित उधारण बरद तिहारो, जासें करू मैं जहार ।
नीतर बरद जायगो त्यारों, जासें उतारो पार ॥ टेर ॥
नर पंषी (खी) क पष तिहारो, जासें मेरी धार ।
अरज करूँ आतुर होय हमहि, ज्युहि वणो ज्युहि तार ॥ २ ॥
कटुंव ग्यांति सुषका वेलि, अरधंग्या घरनार ।
कहैं नरसी तूम सुनौ निरंजन, दरसन दिज्यौ सार ॥ ३ ॥

सार किजै सामला

(राग : सिन्धुडो)

सार किजै सामला, मेली दै आमला,
ऊठ झट विहाणु वायै ।
फूलनो हारडो नरसी नै आपतां, थारा ते बापनु
स्युं रे जायै ? सार किजै० ॥ १ ॥
हारडो जाय नी सूतनो धागड़ो, कृपण कां तू
थियो कृष्ण आजै ?
रिध नै सिध भरी, लछमी भार्या प्रभु,
चूप वैठी कहै कां न लाजै ? सार किजै० ॥ २ ॥
मंडली राय तो कोप अदको करै, विरद तिहारु
जसै देर कीधै ।

❀ गुजराती 'हारमाला' के पदांक २६ के साथ तुलना करें ।

पाय पड़ि विनवौ, हारडो आपनै, भगत नौ
काज इण विध सीधै ॥ सार किजै० ॥ ३ ॥
भूधरा भगतरी सार लेस्याँ नहीं, पतीज त्रिलोक मैं
थारी जासै ।
नरसी को हार हरि नवि तमे आलस्याँ, गुन तिहारा
प्रभु कुण गासै ? सार किजै० ॥ ४ ॥
सरण मैं थारी निसदिन मैं तो हरि, हार आल्या
विना किम भावै ।
नरसीयो इम भणै, हार कंठै धरि, किम वैकुंठ मैं
निंद आवै ? सार किजै० ॥ ५ ॥❋

नागरिया से उपालंभ

देख्यो रे नट नागरियाने, हमने मना विसार्यो रे ।
प्रेम प्रीतनी याही सगाई, विनती कर कर हार्यो रे ॥ १ ॥
कबीर कांई थारो काको हुतो, जिण रे वालद लायो रे ।
हुय विणजारो वालद लायो, दूर देश से आयो रे ॥ २ ॥
नामदेव कांई थारो नानो हुतो, जिणरी छाँन छवाई रे ।
हुय चेजारो छाँन छवाई, बहुत करो चतुराई रे ॥ ३ ॥
सेनो कांई थारो सुसरो हुतो, जिणरो कारज कीनो रे ।
धाल धाल छानी गल बिच वाले, तुरत पयानो कीनो रे ॥ ४ ॥
फरसो काँई तारो फूंफो हुतो, जिणरी पैड़ो पूढयो रे ।
विना बुलायाँ आपे आयो, रात्यूं लकड़ो कूटयो रे ॥ ५ ॥
मीरां कांई थारे मासी लागै, जिणरो विषड़ो पीनो रे ।
चरणामृत को नाम जु धरियो, विष अमृत कर लीनो रे ॥ ६ ॥
करमाँ कांई थारे काकी हुती, जिणरो खीचड़ खायो रे ।
धावलिया रो पड़दो कीनो, रुच रुच भोग लगायो रे ॥ ७ ॥

❋ गुजराती 'नरसीमहेताकृत काव्यसंग्रह' पृष्ठ ५७२ के पदांक ८१ के साथ तुलना करें ।
पाठांतर : (५) "सरण में थारी मैं तो हरि आवियौ, भोग विलास थांने किम भावै ?"

भीलणी कांई थारे भूवा हुती, जिणरा बोर जु पायो रे ।
अेंठा चूंठा कछु न जाण्या, खाँडा खाँडा खायो रे ।। ८ ।।
जुनागढ को राजा कोप्यो, जग में होसी हाँसी रे ।
नरसीला रो कछु नँहि बिगड़े, बिरद तुमारो जासी रे ।। ६ ।।※

थारा नाम रो आसरो

(पद)

मानै छै देवाजी थारा नामरो आसरो,
तुम विन साह मेरी कुण करसी ?(टेक)।।१।।
कोनु कहै गपीड़ो, कोई कहै कपटीड़ो,
कोई कहे तालकूट नाम षोटो ।।
वोरा न भरोंसो और कोव साँवरिया,
अमे न भरोंसो थानो मोटो ।। २ ।।
मानैं तो यो राजा चकरवरती मारसी,
तीन लोक में थारी हांसी थासी ।।
अवकी वेर मेरी साह किज्यो सांवरा,
तुमारी भकति नौ विरद जासी ।। ३ ।।
आज को हारडो नरसिया नै आपतां,
तुमानो वापनो किम जासी ? ।। ४ ।।+

※ पाठांतर : (२) "........................, ज्यो घर वालद ल्यायो रे ।
खाँड खोपरा गिरी छुहारा, आप लदावन आयो रे ।।"
(५) "परसी खाती थारो फूंफो हुतो, ज्यां को पैडयो पूर्यो रे ।"
(६) "........................, जिणरा विषण जार्यो रे ।
विखका पियाला राणानैं भेज्या, विष अमृत करी डार्यो रे ।।"
(७) "भीलणी कांई थारै भुआ लागै, जिणरो खीचड़ खायो रे ।
ऊंच नीच की संक न मानै, रुच रुच भोग लगायो रे ।।"

+ पदांक १ के साथ तुलना करें ।
पाठांतर : (३) "ताहरि भकित नूं विडद जासी ।"
(४) "तुमानो वाप नो स्यूं य जासी ? ।।"

दरसरा दीज्योजी

(पद : राग—बिलावल)

कृपा करि दरसरा दीज्योजी सांवरिया मानै । (टेक) ॥ १ ॥
मैं तो भकति तजु नहीं, मन माने सोई कीज्योजी ।
जो नृप नीच भयो प्रभु हम पें, कुल बचाय मेरो लीज्योजी ॥ २ ॥
ओ जस जाय रावरो अब ही, मोकु दरसरा दीज्योजी ।
कहैं नरसी तुम सुनउ निरंजन, भकत साय तुम कीज्योजी ॥ ३ ॥

मराठी पद

(राग : सिंधुडो)

देवा ! आमची वार कां बेदल होयला,
आपुला भक्तन कां बिसरी गेइला ।
ध्रुव अंबरीष प्रल्हाद विभीषरा,
नामा चे हाथ ते दूध पीइला ॥ देवा० ॥ १ ॥
म्लेच्छ मांहे तुंमी कबीर ऊगारीला,
नामा चा छापरा दीला छाई ।
जयदेवाची तुंमी दीली पद्मावती,
मी नागरा माटे रखे मेलो वाइ ॥ देवा० ॥ २ ॥
देवा ! अमी रे खलभल तां तुंमी रे खलभलशो,
वैकूंठ एकला क्यम रहीला ।
वृंदरावन मां राधिका ने संग,
अेकला विनोद ते क्यम करीला ॥ देवा० ॥ ३ ॥
देवा ! राजा मंडलीक मारसे मुजने,
भीज सें धुल्य कशी हारा थइला ।
देवा ! भकित करतां कहेशै नरसैयो मारियो,
तो भकतवत्सल तोरा बरद गेइला ॥ देवा० ॥४॥ +

+ हारमाला के पदांक ३ के साथ यह मराठी पद तुलनीय है ।

करज्यौ वेग सहाय

(राग : सोरठ)

करज्यौ वेग सहाय रघुवर, करज्यौ वेग सहाय ।। टेर ।।

मूढ़ नृप कियौ अत लागौ मरम गयो है छिकाय ।
मोत नौ कछु भय है नाहि, विप्र विहाई पठाय ।। १ ।।
नृप नेंण कबु नही पेखों, काना सु अधिकार ।
ज्या सु तो फेर जनम मरण होय, हरि भलौ है वार ।।
तेरो वरद मेरो है सरणो, नरसी कारज सार ।। २ ।।

भावनौ भूकौ

(पद)

भाव नौ भूकौ रे गोविंदो, भाव नौ भूकौ ।। टेक ।।

दुरजोधन का मेवा त्यागै, सांग विदुर घर लूषो ।
करमा वाई को पीच आरोग्यो, लूषो गीण्यो न सूपो ।। १ ।।
सवरी का वेर सुदामा का तंदूलि, ले ले मुषि मूकौ ।
नरसीयां नो स्वांमी सांवरियो, औसर कबउ न चूकौ ।। २ ।।❀

❀ यह पद "मीरां वृहत् पदावली" (प्रथम भाग) पृष्ठ १६५ ऊपर पाठांतर से इस तरह छपाया है : "भावना कोभूखो, सांवरो म्हारो भावना को भूखो ।"

माहेरो के पद

भरो जी माहेरो

(पद)

कठैतो लगाई इती बेर सांवलिया, कठै लगाई इती बेर ।
कांई भगतन की करत नौकरी, कांई निद्रा लियो घेर ? ।। १ ।। (टेर)
जो जो चीज लिखी कागद में, सो सब आज्यो लेर ।
नारद शारद गणपति लाज्यो, ऋद्धि सिद्धि का ढेर ।। २ ।।
राधा तो रुकमण साथे लाज्यो, और भण्डारी कुबेर ।
माला दीनी साध जिमाया, हुण्डी दई छै सीकेर ।। ३ ।।
आगैं काज अनेक सुधार्या, भरो जी माहेरो फेर ।
मोय भरोसो तेरो सांवरा, कांई लगाई देर ? ।। ४ ।।
कांई रुक्मिणी बिलमाये प्रभुजी, कांई राधा लिया घेर ।
थारे भरोसे खाली आयो, कछु न आयो लेर ।। ५ ।।
आगूं भकत अनेक उबारे, अब कै मेरी बेर ।
नरसो मेहता दास तुमारो सुमरे सांझ सबेर ।। ६ ।। ❀

भरोसो

(पद)

बड़ो ही भरोसो तेरो सांवलिया, बड़ो ही भरोसो तेरो । (टेर)
खम्भ फार प्रहलाद उबार्यो, नखसू उदर विडार्यो ।। १ ।।
इन्दर कोप कियो व्रज ऊपर, नख पर गिरवर धर्यो ।
द्रुपदसुता की लज्जा राखी, दुष्ट पच्यौ बहुतेरो ।। २ ।।
जल डूबत गजराज उबार्यो, कृष्ण कृष्ण कर टेर्यो ।
नरसी कहै तुम सुणियो सांवल, काज सुधारो मेरो ।। ३ ।।

❀ पाठांतर : (१) "कठे लगाई इती देर सांवलिया, कठे लगाई इति देर ।
के भगतन की करता चाकरी, के निद्रा लियो घेर ?"

सांवरिया से प्रार्थना

(पद)

क्यों नहीं आयो रे सांवरिया,
म्हारे भात-भरण की बिरियाँ ॥ १ ॥ (टेर)
तेरे भरोसे खाली आयो, संग कछु नहीं लायो।
ब्याह सगा में लाज मरुँ हूँ, यों काई लोग हँसायो ? ॥ २ ॥
या राधा रुकमण बिलमायो, या थाने नींद सतायो ?
के भकतां में भीड़ पड़ी है, सहाय कर्या ने धायो ॥ ३ ॥
जव लेने को काम पड़्यो तव, दौड़्यो दौड़्यौ आयो।
अव देने को काम पड़्यो जव, थारो जीव घबरायो ॥ ४ ॥
इतनी टेर सुनी नरसी की, तब सांमलसा आयो।
नानी बाई को भर्यो माहेरो, तींनू लोक जश गायो ॥ ५ ॥ ❀

कहाँ लगाई एती बेर

(राग : सोरठी)

कहाँ लगाई एती बेर सांवरे, कहाँ लगाई एती बेर। (टेक)
ऊँचें चढिकें तुमकुं टेरां, सुनि लीजो मेरी टेर।
कैक हु काज किये भकतन के, कै निद्रा लियो घेर ॥ सांवरे० ॥ १ ॥
कुबेर सो भंडारी थारे, अरु लछमी संग तेरें।
जो जो जिनस लिखी कागद में उन हुं मांही हरें ॥ सांवरे० ॥ २ ॥
माला दीनी कहैं सें जोयो, उठि ही सवारी वेर।
अव चौथे मामैड़ा करिया, आवैं क्यों न सवेर ? ॥ सांवरे० ॥ ३ ॥
ये गुजराती शिवर उपासी, पूजैं सांज सुवेर।
नरसी महतो दास तिहारो, इन चरनन को चेर ॥ सांवरे० ॥ ४ ॥

❀ पाठांतर : (१) "तू नहीं आयो रे सांवलिया,
बीतै भात-भरण की वेला ॥"

नाथ थाँने जानत हूँ

(पद)

नाथ थाँने जानत हूँ दिन दिन का,
थे तो तार्या कीर अरु गनिका । (टेर)

नाई कीर कसाई तारे, भेद कहुँ भिन भिन का ।
नाथ थाँने जानत हूँ दिन दिन का ॥ १ ॥
दिब काया कर कुबजा तारी, संग किया अहिरिन का ।
नाथ थाँने जानत हूँ दिन दिन का ॥ २ ॥
डूम भील कोली कुल तारे, पला न छूवै जिनका ।
नाथ थाँने जानत हूँ दिन दिन का ॥ ३ ॥
नागर वंस नाम नरसीलौ, तिन सौं तोड़्या तिनका ।
नाथ थाँने जानत हूँ दिन दिन का ॥ ४ ॥
नीच निवाज करत हो प्रभुजी, उज्वल कुलते छिनका ।
नाथ थाँने जानत हूँ दिन दिन का ॥ ५ ॥+

म्हाँरा नटवर नागरिया

(पद)

एजी म्हाँरा नटवर नागरिया, भगतां रे क्यों नहिं आयो रे ॥ टेर ॥

धना भगत की भगत्ति पुरवली जिनको खेत निपायो रे ।
वीज लेर साधां नै बांट्यो, बिना बीज निपजायो रे ॥ १ ॥

नामदेव थारो नाना लागै, ज्यारो छप्पर छायो रे ।
मार मंडासो छावरण लागो, लिछमी बन्ध खिचायो रे ॥ २ ॥

सैन भगत थारो सुसरो लागै, ज्यारो कारज सार्यो रे ।
वगल छीडी नाई बरण ग्यो, नृप को सीस संवार्यो रे ॥ ३ ॥

+ पाठांतर : (४) "नागर वंस में नाम नरसैयो, तिन सौ तोर्यो तिनका ।"

फरसो थारे फूंफो लागै, ज्यांरो पैड़ो पूठ्यो रे ।
विना वुलायो आपै ई आयो, रात्यू लकड़ो कूट्यो रे ॥ ४ ॥
कवीर कांई थारो काको लागै, ज्यां घर वालद ल्यायो रे ।
खांड खोपरा गिरी छुहारा, आप लदावन आयो रे ॥ ५ ॥
भीलणी ते थारी भूआ लागै, जिणरी जूठन खायो रे ।
ऊँच नीच की संक न मानी, रुच रुच भोग लगायो रे ॥ ६ ॥
करमा कांई थारे काकी लागै, जिणरो खीचड़ खायो रे ।
धावलिये रो पड़दो करती, रुच रुच भोग लगायो रे ॥ ७ ॥
मीरां ते थारी मासी लागै, जिणरो विपडो जार्यो रे ।
राणै विषरा प्याला भेज्या, विप अमृत कर डार्यो रे ॥ ८ ॥
वाल भोग को भूखो वाला, खोस खा गयो वोर रे ।
नानी वाई रो माहेरो भरतां, तन्ने लागै जोर रे ॥ ९ ॥❀
जीमण को जिमणारो वाला, फिर फिर सार्या काम रे ।
नानी वाई रो माहेरो भरतां, घर सूं लागै दाम रे ॥ १० ॥
कहै नरसीलो सुण सांवलिया, आणा है तो आवो रे ।
व्याही सगां में भूंडा लागां, यूं कांई लांज गुमावो रे ? ॥ ११ ॥

कर लो आटो सांटो

(पद)

सांवरिया किसी दिसावर न्हाटो । (टेर)
आगे तो तूं आवतो रे वाला, अव कांई पड़ गयो घाटो ॥ १ ॥
नामदेव थारै रंगै रे धोतियां, जिणसूं छायो टाटो ।
करमा के घर नित को जातो, खातो खीचड़ खाटो ॥ २ ॥
वामण का तू चावल खाय ग्यो, विदुरा के सागर वांटो ।
थारी जीभ चीटोकड़ी रे सांवरा, म्हारै नहिं छै आटो ॥ ३ ॥
वक वक म्हांरी जीभ दुःखाई, तें ढल वाह्यो नी भाटो ।
म्हांरी वेला आंख दुःखाई, पग के वांध्यो पाटो ॥ ४ ॥

❀ पाठांतर : (९) "नानी वाई रो माहिरो भरतां, तूंने आवै जोर रे ॥"

'भगत-वछ्छल' बिड़द भूठो बाला, थारो तो जिवड़ो काठो ।
जे थारो बिड़द बचायो चावै, खोल कान को दाटो ॥ ५ ॥
हूं तोने सिवरू तू भर माहेरो, कर लो आटो साटो ।
भणै नरसीलो सुणं सांवलिया, यो जस क्यूं नी खाटो ? ॥ ६ ॥+

कापड़ो

मारा तातजी मांमेरो मोटो कर्यो, एक कापड़ौ वले वीसर्यो ।
नणंदनी नंदी नाभीबाई नाँव, तेनै येक कापड़ा नौ ठाव ॥ १ ॥
महतौ कहै पुत्री तमें स्यौ कर्यो, लिखता तमनै का वीसर्यो ।
मारा तातजी हवै स्यों किजीयें, नाभीबाईने उत्तर स्यौं दीजिये ? ॥ २ ॥
पुनरपि महतैं धरियो ध्यांन, क्रिपा करी वले श्री भगवान ।
गड़गड़तौं कापड़ो उतर्यो, नरसी महतैं आंगली धर्यो ॥ ३ ॥
कहै नरसी वारौंवार, आग्यां विणां न खूलै द्वार ।
पुरणहारौं पुरी गयो, नरसी महतौ बैसी रह्यो ॥ ४ ॥

वेलां बार वटै

वेलां बार वटै, चलोजी वेगै, वेलां बार वटै । (टेक)
जल जाचत चातक पठि डारत, निसदिन रटन रटै ॥ १ ॥
बिन बिन ऊठि निहारत मारग, कव उन प्रीत गटै ।
नरसी कहैं तुम वेग चलो प्रभु ! सजन ठाढै जठै ॥ २ ॥

नरसी को उपालंभ

ठाढौ रो हेरि नरसी मैता, तनक सोउं ठाढौ रोह । (टेक)
सबर गाँव कु भर्यो माहिरो, मों मैं दोष - बता ॥
तो न तो महता कछुर कहु नहीं, कहाँ गयो सांवल साह ।
नरसी कहैं तुम सुनु निरंजन, अब के पिंड छुड़ा ॥

+ पाठांतर : (४) "म्हारी बेला आंख खुजाई, पग के बाँधो पाटो ।"
(५) "जे थारो बिड़द वधायो चावै, ... ।"
(६) "......................, करल्या आटो साटो ।"

कहाँ लगाई येती बेर

(राग : सोरठ)

कहाँ लगाई येती बेर, सांवरिया ! कहाँ लगाई येती देर । (टेक)
कर गयो भगतन के कारज, के लियो निद्रा घेर ? ॥ १ ॥+
के कर रहो कोउ रास-विलासा, के मुरली की टेर ? ॥ २ ॥
के कुबजा तेरो मतो ज फेर्यो, तामां नहीं फेर ॥ ३ ॥
नरसी कहैं तुम सुन हो निरंजन, मत ज़ी लगारो अबेर ॥ ४

कहां परी पटकी

(पद)

मेरी तो तेरे नाम सूं अटको । (टेक)
मार्यो कंस वैर करी केशव, करत कला नटकी ॥ १ ॥
प्रगटे प्रेम-कृपा करी, नागरी ग्वालन की मटकी ॥ २ ॥
कहैं नरसी अब हमरी बेरे, कहाँ परी पटकी ? ॥ ३ ॥

हरि आवन की बेर

(पद : राग मलार)

हरि आवन की बेर, सूनी री मैं तो हरि आवन की बेर । (टेक)
आज घुरां दिसि आवो मोरा प्रभुजी, स्याम घटा घन घेर ॥ १ ॥
काली पीली घटा उमड़ आई, आई ग्रहकु फेर ॥ २ ॥
गाजत घोर ज्यामें विजुरी चमकै, लूम रही चहु फेर ॥ ३ ॥
नरसी नो स्वामी सांवरियो, मत जि लगावो बेर ॥ ४ ॥×

+ पाठांतर : (१) (अ) "के कहु काज किये भकतन के, के निद्रा लियो घेर ।"
(ब) "कह भगतन में भीर परी है, कह लियो निद्रा घेर ।"

× पाठांतर : (१) "सुणी मैं हरि आवन की बेर । (टेक)"
(२) "काली पीली घटा जिउ भांगी, आवै गहरे फेर ॥"
(३) "गरजत घोरत घन बिजली चमकै, ………………… ।"

तरछन लाग्यो नैन

(पद : राग विहाग)

तरछन लाग्यो दोऊ नैन, दरस विन तरछन लाग्यो नैन । (टेक)

सांवरी सुरत माधोरी मूरत, मूष(ख) पर सोहै बैन ॥ १ ॥
रेन नहीं आवत मोये निद्रा, दिन नहीं घड़ी भर अब चैन ॥ २ ॥
लछमी सहित तुम दरसन दीजो, मतर लगावो अब टैल ॥ ३ ॥
नरसी कहै तुम सुणो निरंजन, अब सूणजो मारां वैन ॥ ४ ॥×

सांवल की मनवार

(पद)

सु मनवार करां अब सांवल थारी । (टेक)

तु तो बणा रहा बोहोरिया षा(खा) को, हम पद गान फरा ॥ १ ॥
लेखो न लीनो आज लग तेरो, अब कु चाल धरा ॥ २ ॥
तुम तो नाथ नाथन के ईश्वर, हम घर भुक(ख) मरा ॥ ३ ॥
नरसी कहैं तुम सूणु हो निरंजन, पर घर किम झगरा ? ॥ ४ ॥

शरणागत

हुँ तो थार शरण आयो रे सावल साहजी । (टेर)

दिराणी जिठाणी सब मिल आई, अब मति बार लगाये ॥ १ ॥
और नाम जाणु नहीं प्रभुजी, मति तुम भूल रह्या ॥ २ ॥
पुरी सुदामा वेग पधारो, मत तुम वार लगाय ॥ ३ ॥
नरसी न्यारो नहीं तुम सु, लछमी लार लेतो आय ॥ ४ ॥+

× पाठांतर : (१) "श्यामली सुरत मधुरी मूरत,.......................।"
+ पाठांतर : (२) ".....................", मत तुम भूल जाय ।"

कागद

(पद : राग सोरठ)

कागद थांनै आयो छै सांवल साह । (टेक)

दोराणी जिठाणी वाकी सब मिल आइ,
अब मत बार लगाय ॥ १ ॥

जिनस नाम जाणु नहीं प्रभुजी,
मति कोई भूल न आय ।

उनकों दोष नहीं मेरे प्रभुजी,
हम घर तुमसे साय ॥ २ ॥

पुरी सुदामा वेग पधारो,
तुम मति बार लगाय ।

नरसीयो न्यारो नहीं तुमसु,
लछमी लारां लाय ॥ ३ ॥

नानी बाई रो माहेरो

(पद)

सुरंगो नानी वाई रो माहेरो । (टेर)

ए तो धन धन राधा रुकमणी, धन धन रे रिध सिध नार ।
धन धन रथ बैल्यां नै घोड़ला, धन धन सांवलसा रो साथ ॥ १ ॥
धन धन छै वो द्वारका, धन धन रे नगर अंजार ।
सोवरण सूरज भल ऊगिया, हरखत इम नरसीलो गाय ॥ २ ॥

शृंगार के पद

स्वप्न

(राग : आसावरी)

आज तौ हूँ स्वपनै मैं, झबकी नैं जागी ।
जाना मारै बाला जी रे, कंठड़ै लागी ॥ (टेक)

ललकती वीनी खलकंती चूड़ी ।
मारा प्रीयानी संग मैं, भाऊ छू रूडी ॥ १ ॥

अत रंग कीधा, अधर-रस पीधा ।
सेजडीयां आव्यौ बालौ, उर पर लीधा ॥ २ ॥

सुनो री सखी मारू, स्वपनो विचारो ।
नरसीया चो स्वामी, मारै मंदर पधारो ॥ ३ ॥

नैंण सवार्यां

(राग : आसा सिन्धु)

नैंण सवार्यां मारा नाथजी नैं काजैं ।
निलवट टीलोरी, कुमकुमरी छाजैं ॥ १ ॥ (टेक)

कंचुक ना कसन वाला, कस कस बांध्या ।
भौंह - कमाण मदन-सर सांध्या ॥ २ ॥

अमथी भाव भले रो रे भोगी ।
नरसीया चो स्वामी, बालो सदानो संजोगी ॥ ३ ॥+

+ गुजराती "नरसी महेताकृत काव्यसंग्रह" के पृ० ४०४ पर छपा हुआ पदांक ४८३ के साथ तुलना करें ।

दरसणीयो आलौ

मारा स्वामीजी रे, दरसणीयो अमनें आलौ ।
क्रिपा करो नै मिंदर पधारौ, दुःखनो दुहेलडो टालौ ॥ १ ॥ (टेक)
जै जै वोलडा बोलाया हुता, तै वोलडा तमे पालौ । ×
नरसीने स्वामीनैं यों जाय कहीयो, वांहलडी अमारी झालौ ॥ २ ॥

स्याम को उपालंभ

(राग : पंचम)

रातड़ी रमैं ने किह थकी आविया रे ?
वलवंता वार म ठेल रै ।
दोसडु लगायौ रे अमने स्यांम टेरे ।
जिह जाचो तिह रंगनी रेल रै ॥ १ ॥ (टेक)

राता राता नेण नींदाला,
वा रे राती अधरज रेख रे ।
कोटड़े कुसुम कुमलावी रै,
कांई धूत नें धूतारो तारु भेष रै ॥ २ ॥

पीतांबर कयां पलटाविया रे,
पलट पटोली पाछी आल रे ।
मिंदरी यै पधारौ पेली नारनें रे,
अम घेर आवज्यौ काल रै ॥ ३ ॥

नींदड़ी आवी रे तारै टडै रे,
भोलड़ी भरम न आण रै ।
जोई जोई मागैं सोई दिन देऊ रै,
वचन आमारौ मान रै ॥ ४ ॥

× पाठांतर : "जै जै बोलडा वोलाया हुता तमै, जै बोलडा तमे पालौ ।"

पंचम आलाप्यो पंथी सूर कीयो रै,
प्रगट थयौ परभात रै ।+
नरसी नौं स्वामी मिंदर पधारियो रै,
कांई प्रेम घणो थोरी रात रै ॥ ५ ॥

न जावां मा पाणीडै

अमै न जावां मा पाणीडै, अण मारग अमनैं कांन मलै ।
पाल ऊभी मारी सासुड़ी जोवै छै, अमे टलां पण उ न टलै मा ॥ १ ॥ (टेक)
जाई ने जोई ने वालो सामो आवै, छब छत्र नाखै बिकड़ा ।
कंसराय की आंण न मांनै, जसमत रै घर लाड़कड़ा मा ॥ २ ॥
अंमे व्रजसुंदर सदा अति कोमल, तुं करडो रै कांनूड़ा ।
नरसी नो सामी भल मिलीयो, वृंदावन मैं अेकलड़ा ॥ ३ ॥

गलै बाहड़ी घाली

(राग : कालेरो)

मारा बाला रे, वाटै वात न करीयै ।
लोकड़ा जोई जोई कांई कांई कहैं छैं, ऐवे बोलड़े मरीयै ॥ १ ॥(टेक)
बंसी वट जमुना रै तीरै, अंमे घडुलौ भरस्यां ।
ज्यां आवी नैं तुमैं ऊभा रही, ज्यां मननी वातां करस्यां ॥ २ ॥
काला रे काला कामणगारा, काला तै स्युं मलीयै ।
काला साथे नैह करंतां, माणस माहिथी टलीयै ॥ ३ ॥
अमानी तमानी प्रीत निरंतर, पूरब भवनी चाली ।
अम करतां नरसीनो स्वामी, मो गलै बाहड़ी घाली ॥ ४ ॥

म करिश्य आली रे

कानुड़ा म करिज आली रे ।
वांकी वांकी नजर न जोई रे, भूधरिया अंमे नथी एवा वाली रे ॥ १ ॥ (टेक)

+ पाठांतर : "पंचम आलाप्यो पंखी सूर कियो रे, उदै थियौ परभात रे ।"

नथी आऊँ आणंदघन देवा, था संग थाऊं काली रै ।
व्रजनारी नो वचन सुणें नें, हसिया दे कर तारी रे ॥ २ ॥
अंतरगत नौं भाव पिछान्यौ, पूरन प्रीत समारी रै ।
इम करतां नरसी नें स्वामी, वाहड़ी कोटलै वाली रै ॥ ३ ॥

कान कामणगारो

कान तूं कामणगारो रे, मन हरीयौ मारो रे ॥ (टेक)+
काम करूं घर मांही, मारो जीवड़ो वसै तो मांही ॥ १ ॥
सासूड़ी संतापै रे, मारी नंणद औलंभो आपै ॥ २ ॥
पीत तणा फल पांमी रे, मानूं मिल्यो नरसीनो स्वामी ॥ ३ ॥×

घेली गोपिका

(राग : कालेरो)

म्हारा सांवलिया रे वाला, सांमो जोवतो जाय रै ।
सामो जोइने सांभल मारी वात ।
तारी कहि तौ जा वाला, मांरी सांभलं तौ जी ॥ १ ॥(टेक)
अंमे तमना त मे अंमनौं, जांणै सऊ वै लोक ।
आपण बिह मैं अतर जांणै, तेनो जीयो फोक ॥ २ ॥
तू ने वन वन ढूंढुं माधो, प्रीत थई छै पेली रे ।
तारै पाखैं जोय नै वीठल, हुं थाई छुं घेली रे ॥ ३ ॥
मारी रे तारी वाला, जांणै (इक) जगदीस ।
नरसीना स्वामी सांवलिया, षोलै मेल्यो सास ॥ ४ ॥

राधाजी ना प्राणनाथ

(राग : झींझोटी)

राधाजी ना प्रांणनाथ वगेला न रहीए । (टेक)
मंदरे मंदरे जातां लपट(ना) थईये ॥ १ ॥

+ पाठांतर : "कांन तूं कांमणगारो रै, मन बसियो मारै रे ।"
× गुजराती नरसिंह महेताकृत 'शृंगारमाळा' के पदांक १४२ के साथ तुलनीय ।

दिन दिन उठै भूठा सम न षा(खा)ईयैं ।
बाहड़ी मोड़ो नैं कोटै हाथ न लईयैं ॥ २ ॥

तेल नैं तंबोले भीना गुलाले राता ।
मिंदरे पधारो मारै वांसुली वाता ॥ ३ ॥
नरसी ना स्वामी भल मिलीया मदनैं माता ।
त्रिपत न थाईस तारा गुण नैं गाता ॥ ४ ॥

जोग भोग एकांत भलौ

(राग : वसंत)

नहि देहूं साइ लेवा रस लेवा, कुच फल ग्रहवा ।
आवा रूडा नदजी रा कुंवर, लंपट कां ये बा ॥ १ ॥(टेक)

आटला पाछैं अमारा कुल मै नथी कांई कवा ।
लाज लागै लखमीवर अमनैं, रो अमथी अलगा ॥ २ ॥

जोग भोग एकांत भलौ रे, जांणै जै विरला कोई ।
नरसीइना स्वामी मुख दिठडै, विसु रह्यो सब मोई ॥ ३ ॥

मारी भूखलडी भागी रे

कान नैं जोवतां मारी भूखलडी भागी रे ।
ग्रहन थीर हवो पडै आंषडली लागी रे ॥ १ ॥ (टेक)
मुख नैं मरकलडै मारूं मंन जो लीधौ ।
न जाँणु कानुड़े कोई कामणीयो कीधौ ॥ २ ॥

संसारी ना सहु सुख छाड नै बैठी ।
प्रीतड़ी परिब्रह्मनी मारै पिंजर पैठी ॥ ३ ॥

सनेह नें सांकलै कांई जाय बंधाणी ।
वीठलै वातडी मारै जीयनी जांणी ॥ ४ ॥

अमनें मा हुवै कोई अंतर नथी ।
नरसी नै स्वामी सांवरीये कथनी कथी ॥ ५ ॥

सोकलडी

सोकलड़ी नौ रे सौ मो पैं सह्यौ न जाय,
जव हूँ मिलवानैं जाऊं आडी आडी आवै रे।
चितड़ो चोरावै मारो मनड़ो भरमावै रे ॥ १ ॥
पांणी मैं पावक जालै, तेल सुं वुभावै रे।
कागदानी नाव करै नैं, सिंधु मैं तरावै रे ॥ २ ॥
पांख ना पारेवा करि मुखड़े वोलावै रे।
वालुडा नी चूंण करै नैं देखंतां चुगावै रे ॥ ३ ॥
एक हाथ सरस्यौ वोवे, मृगला चरावैं रे।
नरसीनो सामी सांवलीयौ आण मिलावै रे ॥ ४ ॥

प्रेमरस का स्वाद

राधा चंद्रभागा चंद्रावल, ते मोहि दीधौ सहाय ॥ १ ॥
नरसीयो सिंगार गावसी रे, भीवडो रीसां वलसी रे।
आप दोऊ वाद मंडाणो, ना जांणु कुण तिरसी ॥ २ ॥
या रसनो स्वाद संकर जाणै, के जाणै सुक जोगी।
कै जाणै छै व्रजनारी, कै नरसीयो भोगी ॥ ३ ॥+

अमृत पीधूं

आज नो रजनी नौ रंग कह्यौ न जाय।
सांभलो मारी सजनी, आनंद उर न समाय ॥ १ ॥(टेक)
अंग अंग भीर भीर भेटिला साई।
अधर अमृत लेता रह्यौ न जाई ॥ २ ॥
सुर नर मुनि जानौं लहै न पारा।
मभली रजनी आवै कीधूं व्यौहारा ॥ ३ ॥
सांवली सूरत मारूं मन जो लीधूं।
नरसी नैं स्वामीनी संगत अमृत पीधूं ॥ ४ ॥×

+ तुलना के लिये देखिये : नरसिंह महेताकृत 'काव्यसंग्रह' पृ० ४६६ के पद : 'भूतल भकति पदारथ मोटुं' का अंतिम चरण।

× तुलना के लिये देखिये : 'नरसै महेतानां पद' पदांक १०६ तथा नरसी महेताकृत 'काव्यसंग्रह' परि. २, पदांक ४५।

कानुड़ा कृपाला वाला

कानुड़ा कृपाला वाला मारै सिर अप कचहोडयौ ।
मोरो तो मन तो तो सौं वलग्यौ, कांई वोहडे नथी बहोडयौ ।। १ ।।(टेक)
सासूड़ी नणद मारी देराणी जेठांणी, सऊवै मुखड़ो मोड़यौ रे ।
इण घर मैं मारो नथी रे सहायवो, इवो उपद्रव रौंड्यौ ।। २ ।।
भलौ भलाई न तजै आपणी, बुरो बुराई रीधो ।
अपणो ऊंठ कुहाडै नात्थौ, तवो आरसी सीधो ।। ३ ।।
भली कहौ कोऊ कहौ में, लजानो ताग तोड़यो ।
नरसी ने सामी सुं सजनी, लिखत विधाता जोड़यौ ।। ४ ।।

गिरधरिया गमांनी रे

गिरधरीया गमांनी रे, वाला तारी बदनामी मीठी रे लो ।
तो सूं वाला वात करंतां, कांई दुरजण माणस दीठी रे ।। १ ।।टेक।।
मा पण मारी धी भणै, कांई भाईडो भरोसो आणे रे ।
वापज मारौ भुंडो बोलै, गांव जो सऊ जांणें ।। २ ।।
वांसलड़ी बजावतौ गावतौ, माहूवो मो घर आवै रे ।
वारी रे जाऊं मारा सोडा रे साजन, सेवग जांण समाली रे ।। ३ ।।
तो मलवानौ कोड घणेरो, सगा सेण संतापै रे ।
नरसी ना स्वामी भल मिलीयौ, भव ना वंधन कापै रे ।। ४ ।।

संकेत

मारग मारू मेल रे,
अरण अरण ईग पग लड़े कांई, आवी सहीयड़ो हेल रे ।। १ ।। (टेक)+
वंसीवट नी छांहडी काई, ऊभा रहिजो राज रे ।
वैली आवीस वीठला रे, कोइ पांणी समानो काज रे ।। २ ।।

+ पाठांतर : (१) "…………………, आवीस हीयडो हेल रे ।। "

तूं मत जांणे मा हुवा कांई, ग्वालन वोल जोवाय रे ।
सूंय करूं मोरा सोभा साजण, नणदोली घर दाहै रे ॥ ३ ॥
ग्वालन केरा वोलड़ा कानुड़ा नें मन भाया रे ।
नरसीनो स्वामी भल मिलीयौ, घडूलडा उखणाया रे ॥ ४ ॥

धूंतारो

(राग : कालेरो)

न मानौं वाई भूठड़ा रै, सांच लीयी सम खाया ।
रातलडी पर मिंदर रमी नैं, आवै विहाणौं थाया ॥ १ ॥(टेक)
धुखतां गोलां धीज करै रे, वालौ तातड़े तेल जो नावे रे ।
कुंडला ना सम कुण पतीजै मारै तौ मंदर नावै रे ॥ २ ॥
में जाण्यौ अमथी मन मान्यौ, जीव जुवा नहीं थावै रे ।
वातडीये वेसास देईने, वालो मारूं पर घर जावै रे ॥ ३ ॥
'तारा सम जो तूं वाली छैं', एवा एवा वचन जो वाये रे ।
धरती मैं धूंतारो दीठो, हाथ माहिथी जाये रे ॥ ४ ॥
नेंणौं वेणौं नख अहि नाणौ, जुवा चेह जणावै रे ।
नरसो नो स्वामी नैं परखो, ए वातै आल पावे रे ॥ ५ ॥

छांनौ मौं नौ आयौ

(राग : मेरूं)

छांनौ मोंनौ आयो वालो, पाछली सी रातैं ।
मुरली मैं मेरूं गावै, वैकुंठ नाथै रे ॥ १ ॥ (टेक)
सम खाय सूती मैं, नहीं वोलूं तुम साथे रे ।
वार खोल पाय पड़ी, मुरली के नातें रे ॥ २ ॥
केवा तप कीधलां, अहीरड़ानी जातैं ।
नरसी नो स्वामी रीझ्यौ, गोपिका नी वातै रे ॥ ३ ॥+

+ नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह पृष्ठ ४१६ के पदांक ५२० के साथ तुलनीय ।

राधा पांणी संचरै

बेडुलै भार घणो छै राज, वातां किम कर कीजै ।। (टेक)

सोना नौ मारू विड रे विडलो, हाथ रूपानी झारी ।
राधा पांणी संचरै, कांई सोला वरसनी नारी ।। १ ।।
सासूड़ी मारी बिलगणी रै, नणदल नैं समझाऊं ।
एक पलक नी विलमखो मोहू, बिडूलौ मूकै नें आऊं ।। २ ।।
एक ठिकाणौ अमै रै कीयो छै, ज्यों जाय ऊभां रहिसां ।
सुख दुख नी दोय वातां करस्यां, नेणे निरख सुख लेसां ।। ३ ।।
लटकै आंऊं लटकै जांऊं, लटकै गाऊं गीतौ ।
नरसी नो स्वामी मिल्यौ, मारी पूर्व जनमनी पीतौ ।। ४ ।।

व्रजराज कुंवर

व्रजराज कुंवर वर काना, मोरै ग्रेह आवज्यौ छांना मांना ।।(टेक)

मारे आंगण आसुड़ो रै, आवज्यो मुरारी रे ।
दोपीडा केई भालसी, कांई अमै अबला व्रजनारी ।। १ ।।
सासूड़ी मोरी बिलगणी, नणद धूतारी रै ।
तमनैं देसी ओलंभडो रे, बाला अमनै देसी गारी ।। २ ।।
छांनी मानी प्रीतड़ी रै, सनेही रूडो ।
नरसी नौ स्वामी मिल्यौ, तारै पहेरायौ चूड़ो ।। ३ ।।

मंदिर आया छै वनमाली

मारै मंदर रे आवा छै वनमाली, वांसलड़ी बजाइ रे ।
बालै रातलड़ी उजियारी ।। १ ।। (टेक)
सुखसागर सांवरियै अमनै, हँस हँस दीनी तारी ।
उर भेटी नै आलंगन दीधो, रात भर मैं रसीली ।। ।। २ ।।+

+ पाठांतर : (२) "..................., राम तर मैं रसीली ।"

अलवेलौ आवी नै रसीयै, एकलड़ी मोहि भाली रे ।
नरसी नैं स्वामी सांवलिया, अंतर आरत टाली ।। ३ ।।

सांवलियानी सोभा

सांवलियो अमनैं भावे रे, वृंदावन में धेन चरावैं ।
गोकुल काहि न आवैं रे ।। टेक ।। १ ।।

सूं कहूँ वाना मुखनी सोभा, अमसूं कही न जावें रे ।
कुंडल लोल कपोलन की छवि, नेंन सें न वतावें रे ।। २ ।।

सासूड़ी नणद मारी सहूवै वरजं, घर में रह्यौ न भावै रे ।
नरसी नें स्वामी नी सोभा, अमनें खरी खरी सुहावें रे ।। ३ ।।

मन मानंता मोती

ल्यावजौ ल्यावजो राज मांने, निरमल मोती ।
द्वारका दरयाव ढूकडूं, रतनागर ना गोती ।। १ ।। (टेक)
सांवलिया रे संदौसो कहुँ छु, मारू लेजो मानी ।
तामै अमानौं ग्रंथ करो तौ, वेला देजो आणी ।। २ ।।
अेटला धाड़ाना न होती, हीयैं अमैं वोली चाली ।
मंन मानंता लाड लड़ावौ, तारै तमनै वोली ।। ३ ।।
पग माहे झांझणीयौ झणकै, हाथ कनकनी चूड़ी ।
मंदरीयै पधारौ मारै, रंमती दीसू रूड़ी ।। ४ ।।
मन मानंता मोती लाया, सुन्दर सागर सारू ।
नरसी नें स्वामी सौं सजनी, मन हरष्यौ छै मारू ।। ५ ।।

रमरा रंगीलडु

(राग : कालेरो)

सजनी साँवलियौ सनेही वालौ, मारू नैंणा नैंह जणावै रे ।
रस नी बात तै मीठड़ी लागै, आड्ड आड ड्ड जावै रे ।। १ ।। (टेक)

उपर वाडै साद सांभली, मणि भोजन न भावै रे ।
मुख नौं ग्रास रह्यौ मुख माहि, अमयो उठी नै आवै रे ।। २ ।।
अण अण मारगडे आवंतां जावंतां, वालो मारी केड न छोडै रे ।
नरसीनौं स्वामी सांवरीयो, रमण रंगीलडु माडै रे ।। ३ ।।

कामण कीधों

चालै माने कामण कीधों लो, चित चोरी नें लीधो रे ।। (टेक)
काम न सूझै काज न सूझै, सहीयल कीजै के मारु चित्त-
भ्रमे भूधरीया साथै, मुझने तारा सेम ।। १ ।।
छेल छबीलो नाव छोगालो, साम रै सारी सी देह ।
जारे जोऊं तारे लोक दिखाले, कानूड़ा वाली छै एह ।। २ ।।
गेहली कीधी गुवालिये, बाई घर मैं किम रहवाय ।
सीठड़ा मोहनलाल, नरसीया राखी दे अंषड़ी मांह्य ।। ३ ।।

हरि विन रह्यो न जाय

(राग : पंचम)

आंखड़ीया नौं चालौ चतुरभुज लाई गयो ।
हम किम कर जिवौ हीं भोली हे माय ?
विरह संतापै मारी देहड़ी रे,
हरि विन रह्यो न जाय ।। १ ।। (टेक)
आंगणियै हूँ ठाढी मधकर केल में ।
सेरया में जावता दीठा कान ।।
अटड़लौ कीधौ मित्र मित्र मिलावनौ ।
वालौ मारौ दैय गयौ नेंन की सेंन ।। २ ।।
मोर पंछ कौ मुकट सुहावनो ।
मनोहर मुरली हरि कै हाथ ।।
वृंदावन में धेन चरावतौ, बालौ म्हारो अहीरडा नैं साथ ।। ३ ।।
महू वाहूँ तारै रे मिस नीसरी रे, आई आई वृंदावन मंझार ।
नरसीया नौ स्वामी सपी अमने मिल्यौ, वाला मारा आवागमण निवार ।। ४ ।।+

× 'नरसिंह महेता कृत काव्यसंग्रह' के पृष्ठ ३११ के पदांक १५९ के साथ तुलना करें ।

भूधरीयो भावै

मनें भूधगीयौ भावै लो, वीजो कोई चित्त न ग्रावै ॥ (टेक)

माथै मंजीठ नो मोलियो वाधै, गाय चरायवा जाय ।
कालिंदा नै कांठड़ै वालौ, वैण मधुरो वाय ॥ १ ॥
मारी ग्राल नै मूकै ग्रालीगारौ, करडै ज्यु रै कुराक साईडें ।
देस हुवें जोवता रे बोल्या, लोकड़ा नौं स्यु वांक ॥ २ ॥
जग जाणंती कानण कीधी, मैंज मूकी लाज ।
मारौ मन मान्यौ मोहनजी साथे, नरसी सरीया काज ॥ ३ ॥

धूतारा नंदना रे

धूतारा नंदना रे वीधो, धूतीयो गोकल गावै ॥ (टेक)

धूतार विद्या क्यां रे पठ्या छो, चाल देखाड़ो ने ठाम ।
धूतार विद्या ग्रमनें ग्रालौ, जो कीजीयै तारां काम ॥ १ ॥
धेन दुहायवा चाली जो वाला, मुरली सांभली कांन ।
गोरस ढोली नैं गागरी फोड़ी, चित्त न रहीयौ ठाम ॥ २ ॥
वांसुलडी वसु कीघी जो वाला, मुरली फेर बजाय ।
नरसीना ना स्वांमी सावलीया, मंनैं रंग में रास रमाय ॥ ३ ॥

खंडिता नागरी

(राग : पंचम)

ग्रालस मोड़ै रे उजागरी, कोमल मुख करमाणौ ।
दीसै नैन नचावैं नागरी ॥ १ ॥

सेजैं थी उठंती स्यामां सीस ग्रमोडो बालैं ।
वदन सुधाकर वाली ने उदयो दिनकर नै ग्रजवालैं ॥ २ ॥
ग्रदफंडियाली ग्रांखड़ली, हलवी करती नमेषा ।
ग्रधर डंक ग्रदभूत परि, दीसैं खंडित तिलकची रेखा ॥ ३ ॥

लड़सड़ती अवर सिखोढें, कंचुकी कसन सवारै ।
वाहूं लला जोडें कंध उपरि, निसासुख रहि रहि संभारै ॥ ४ ॥
यो रस जांनै जो नरनारी, निश्चै भूतल कहिये ।
नरसीयया चा स्वांम पतलो, मागौ अध खिण अलगा न थइये ॥ ५ ॥

हरवे आवौ जी

(राग : चरचरी)

हरवे हरवे हरवे ···· ···· ···· ···· ···· मंदरीए आवोजी ।
प्रेम प्रीत प्रवीय ···· ···· ···· ···· ···· ओ गो वालाजी ॥ १ ॥ (टेर)
मारी रे पलक ···· ···· ···· ···· ···· री डगर बुवारुजी ।
घड़ी घड़ी पल पल ···· ···· ···· ···· थारोई रूप नीहारुजी ॥ २ ॥+
थारी तो सुरत नें वालाजी, जोय जोय नें जीवाजी ।
थारी तो मुरत पर वार्या, मीठड़ा पाणी पीवाजी ॥ ३ ॥
···· ···· ···· ····ख वीन दादुर, तलफ तलफ जीव जावैजी ।
आ ···· ···· ···· कनैया, नेंण नींद न आवैजी ॥ ४ ॥
मेरे तो मींदरीए वालाजी, फुलडा सेज बीचाईजी ।
आप विराजो मैं हाजर छनी, दासी चवर ढोलाई जी ॥ ५ ॥
नारायण नीरलेप नीरंजन, नटवर मेंस बणायाजी ।
नरसी लो स्वामी सावरीयो, गट गट अंतर छाया जी ॥ ६ ॥

पूरव सनेह

(राग : गौरी)

जोरे मारा वाल वाल वाल जी, खिण अलगा म रहस्यौ राति नै दिह ।
तमारी जिणि जांणी वात, विसारी गया ना तिह ॥
अमारें तमारें पूरव सनेह, महता नरसीयचा सामी तारी देह ॥×

+ पाठ खंडित मिले हैं ।
× यह पद भी खंडित है ।

मंदरिये आया जी

हरवे हरवे हरवे हरजी, मोरे मींदरीये आया जी ।
मोटा मोटा मोटा हरजी, मोट नाम केवाया जी ॥ १ ॥

चाली चाली मु तो, हरी मुख जोवा चाली जी ।
वाली वाली वाली माने, प्रभुजी री भगती वाली जी ॥ २ ॥

फुली फुली फुली मैं तो, हरी मुख देख्या फुली जी ।
भुली भुली भुली मोरा, घर को धंधो भुली जी ॥ ३ ॥

लाजी लाजी लाजी मैं तो, लोक लाज सु लाजी जी ।
भाजी भाजी भाजी मोरा, मन की भ्रमना भाजी जी ॥ ४ ॥

वारी वारी वारी मैं तो, अव गत उपर वारी जी ।
प्यारी प्यारी प्यारी लागै, मारा प्राण ....री जी ॥ ५ ॥ +

प्रेमी प्रेमी प्रेमी मैं तो, ... प्रेमी जी ।
मीलीया मीलीया मीलीया मों को, नरसी नों सामी मीलीया जी ॥ ६ ॥

मुखडु मीठडु जोस्याँ रे

(राग : कालेरो)

भेट करूंगी सांवलिया नी, नवल अंग संवारी जी ।
उर सरोज नैं उपर राखू, वाली वाली वारी जी ॥ १ ॥

मेरा मन नौं मुनसी गोविंद, गातौ गातौ आवै जी ।
आंखडली में अमीरस भरस्याँ, मोहन मीट मिलावै जी ॥ २ ॥

पालव पीतांबर जी केरो, हंसी हंसी नै स्हास्याँ जी ।
कहैं नरसी लो हरख हरख के, मुखडु मीठडु जोस्याँ जी ॥ ३ ॥ ❀

+ संभवित पाठ : "म्हारा प्रांण से प्यारी जी ।" यह पद के साथ 'नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह' का (पृ० ५०४) पदांक २३ की तुलना करें।

❀ अंजन पदांक २८४ के साथ तुलनीय ।

गोविन्दो मित्र हमारो

गोविन्दो मित्र हमारो रे, म्हाँनै जग लागै खारो रे ।। (टेक)

वन वन ढूंढंत मैं फिरी, अपणे पिव के काज ।
कृपा कर के दरसन दीजौ, शरणे आयाँ री लाज ।। १ ।।
पूर्व जनम री प्रीतड़ी, प्रभुजी लीजै निभाय ।
कलियुग केरी वात सुणी नें, मत दीजो छिटकाय ।। २ ।।
घड़ी पलक नहिं आवड़े रे, घर आँगण न सुहाय ।
कहाँ करूं कित जाऊं मोरी सजनी, हरि विन रह्यौ न जाय ।। ३ ।।
विरहन जोवै बाटड़ी, कबे मिलोगे आय ।
नरसीलो स्वामी साँवरियो, घट घट रह्यो समाय ।। ४ ।।

गोविन्दो प्राण हमारो

गोविन्दो प्राण हमारो रे, बीजो जुग लागत षा(खा)रौ रे ।। (टेक)

रैंन दिवस कल ना परे रै, गृह अगना न सुहाय ।
पूर्व जन्म की प्रीतड़ी मोहन, लीज्यो वोई निभाय ।। १ ।।
कलजुग केरी वात सुने, मुनें मत दीज्यो छिटकाय ।
मोर मुकट मकराकृत कुंडल, उ पर बाजै पाय ।। २ ।।
कहा करूं कत जाऊं सषी री, हरि बिन रह्यौ न जाय ।
कहै नरसीयो रूप तिहारो, षु(खु)वी रह्यौ हीरदै माय ।। ३ ।।+

आमंत्रण

(राग : सोरठी)

रंग भीना मुख पर वारी हो ।
कवहूंक खेलन नै गिरि वाला, आज्यो गली हमारी हो ।। १ ।। (टेक)

+ जोधपुर से प्राप्त इस पद का पाठ इसके आगे के पद के साथ तुलनीय है ।
पाठांतर : (२) "........................, सुनि मत दीज्यो छीटकाय ।"

तुम विन जिवरो यौं तरसत, ज्यौं पांनी विन पनवारी ।
जैसी प्रीत चकोर नी वाला, तैसी लगनि हमारी हो ।। २ ।।

तुमारैं कारन प्रीतम प्यारा, फुलड़ा सेज वणाई हो ।
नरसोना स्वांमीनी सूरति, उपर बलि बलिहारी ।। ३ ।।

किम आविया

(राग : मारू)

[शृंगार के पदांक ४ : 'श्याम को उपालंभ' पद का अलग और कुछ विशेषतायुक्त पाठ मिला है जो यहां दिया जाता है ।]

रातड़ली रमीं नैं हौ कंता किम आविया,
वलिवंता वार म ठेलि हो ।
दोसड़लो न लावो हो, हमनैं स्यो वड़ो,
जावो जावो जहां दीन्ही रंगनी रेलि हो ।। १ ।।

राता राता हो नैंन निदालूड़ा,
अधरन राती थांनी रेख हो ।
कंठड़लै बिराजे हो विणि गुण मालियां,
धूत धूतारो थारो भेष हो ।। २ ।।

पीतांबर हो थारो क्यां पालट्यो,
पलटि पटोली पाछी आलि हो ।
मंदरिये पधारोजी पेली नारि नै,
हम घरि आविज्यो कालि हो ।। ३ ।।

नींदड़ली तौ आवी प्यारी थारैं आंगणै,
भोलै भोलै भरम न आणि हो ।
सोई सोई मागौ सोई सोई दिवियां,
वचन अमे नौ मांनि हो ।। ४ ।।

चांदलो वहास्यो हां हिरणीं आंयथी,
तारां लग जोई थारी वाट हो ।

कुसमां नी सेजां जो सूंनी पड़ी,
बोलिया बोल सो माट हो ॥ ५ ॥
पंचम आलाप्यो हो पंछीडे सुर कियो,
प्रगट थयो परभात हो ।
नरसी ना स्वामी महल पधारिये,
प्रेम घणौं थोड़ो रात हो ॥ ६ ॥+

गूजरिया

(राग : कालिंगडो)

बुलाई नां बोले गूजरिया ।
मांथे माट महीनौ मेरी सजनी, घर घर बेचती डोलै ॥ १ ॥
चंद-वदनी मृगलोचनी बाला, तेरैं संग कलोलै ।
तीन भुवन मोहन प्रतिपाला, सो तेरैं संग कलोलै ॥ २ ॥
वृन्दा बन नी कुंज गलीनि मैं, निति नव नव कहि बोलै ।
नरसी नौं स्वाभी सांवलियो, अरस परस झकझोलै ॥ ३ ॥

हंसि हंसि कंठि लगाज्योजी

(राग : सोरठी)

बिंजन करतां म्हारैं आज्यौ जी सांवलिया ।
फूलांनी माला गूंथिनैं कांई, म्हाँ नैं लै पहराज्यो जी ॥ १ ॥
पापिणी जी म्हारी छै पाडोसणि,ज्यां नैं जिनि बतल्यालो जी ।
घूंघटड़ा नैं बोलखैजी कांई, ले संकेत बतात्योजी ॥ २ ॥
सास नणद म्हारी द्यौराणीं जिठांणीं, वांनै भी जिनि जिनि सुणाज्यौ ।
रंग रंगीली छैल छबीली, वातांई मैं वौराज्योजी ॥ ३ ॥

+ पाठांतर : (५) "चांद्र लो ऊग्यौ हो हिरणी आथमी।"
(६) "उदे थियो परभात रे।"

वृंदावन बंसीवट जमुना, मुरली मधुर वजाज्यौजी ।
चन्द्रभागा चन्द्रावलि विमला, त्यां मैं मारो भी नाम वुलाज्योजी ॥ ४ ॥
थांसौं तौ म्हारी प्रीतड़ली पुरांणीं,
सो म्हां सौ वोउ निवाज्योजी ।
नरसी ना स्वांमी सांवलिया,
म्हाँ नैं हंसि हंसि कंठि लगाज्यौजी ॥ ५ ॥

माया लागी

थारा मुखड़ा नी माया लागी रै, हो मुरली वाला ।
मेरी भवकी भावट भागी रै, हो मुरली वाला ॥ १ ॥
मुने संसार थियौ षा (खा) रो रै, हो मुरली वाला ।
मांने मोहन लागै प्यारो रै, हो मुरली वाला ॥ २ ॥
तूं तो नरसी मेता लो स्वामी रै, हो मुरली वाला ।
थे तो सब को अंतरजामी रै, हो मुरली वाला ॥ ३ ॥

म्हारा लालजी

(राग : सोरठी)

हालौ तौ दिखालौं म्हारा लालजी नैं,
वो पैलो घर म्हारौ रै म्हारा वाल्हा ॥ १ ॥
म्हारा लालजी हो,
गोपाल नन्दलाल कृपालजी हो,
वो पैलो घर म्हारौ रे म्हारा वाल्हा ॥ २ ॥
भाव सहित थारी भक्ति करिस्यां,
म्हारै मंदरिये तो आय नैं पाव धीरो ।
वाल्हाजी मैं दरसण करौंगी तिहारौ ॥ ३ ॥
वाल्हाजी तू अदभुत रुप उज्यारो,
वाल्हाजी तू प्रांन नि हंते प्यारौ ॥ ४ ॥
वाल्हाजी तू कपटी कामणगारो,
वल्हा थारी माय गोरी त तौ कारोजी ॥ ५ ॥

थे तो म्हारा प्रांण सनेहो हूं तो,
थां पर तन धन जोबन वारौं ॥ ६ ॥
वाल्हा म्हारी पलकां सौं वगड बुहारौ ।
लालजी हौं पलक पांचडा डारौं ॥ ७ ॥
वाल्हा थारै काजलियो रंग सारौ ।
वाल्हा थां पर राई लौंन उतारौ ॥ ८ ॥
वाल्हा थारैं कूलड़ा री पाटी पारौं ।
लाला रुचि मोतीडानी मांग सवारौं ॥ ९ ॥
वाल्हा नैं उढांऊंगी भीनूंडो सो सालू ।
लालाजी हूं घूंघटडा नी वोर निहालूं ॥१०॥
[म्हारा दुर्जणियां नी छाती वालू जी] ।
लाल म्हारी सौतडल्यां नौ जीव तरस्याजो जी ॥११॥
वाल्हा थारी मुरली मधुर वजाज्यो ।
नरसी ना स्वांमी सांवलिया, म्हारैं रच मचता घर आज्यौ ॥१२॥ +

नाथजी अलबेलो

(राग : सोरठी)

बाई म्हारो नाथजी अलबेलो ।
पायो पायो री म्है अजब अकेलो ॥ १ ॥ (टेक)
वैं रे मोर मुकट छबि राजै री ।
वैं रे पाय नूंपुरिया बाजैं री ॥ २ ॥
अभिमान राधाजी नैं छाजै री ।
कटि काछनी पीत पिछोरा (राजै) री ॥ ३ ॥
गुंजाहार मुकतावलि गोरा रि ।
मुरली मन रीझ्यौ मोरारि ॥ ४ ॥

+ हस्त प्रति में 'नरसो' के नाम की मुद्रावाली पंक्ति के वाद दो पंक्तियां आती हैं। हमने मुद्रावाली पंक्ति अंत में रखी है।

सषी नागर पान चवावैरी
वाल्हो मंद मंद मुसकावै री ॥ ५ ॥
कान्हौं नैंननि मैं समुझावै री ।
हूं तो दुरजण्यिां नथि दाखौं री ॥ ६ ॥
हूं तौ प्रेम सुधारस चाखौं री ।
म्हारी पलकां हीं ऊपर राखौं जी ॥ ७ ॥
[झख मारो वई मारया दोखी री]
मिलीयो नरसी नौ स्वांमी सौंखी री ।
सब ही विधि वात संमोखी री ॥ ८ ॥

गुमानी गिरधरिया हो

(राग : ईमन कल्याण)

गुमांनी गिरधरिया हो, म्हारै समुझतौ आव ।
नंद कान्हूडा हो, म्हारै समुझतौ आव ॥ १ ॥ (टेर)
तुम मो जीवन मैं तो जीवन, इह जानैं सब कोय ।
हम तुम मांही अन्तर जाणैं, सोई गहला होय ॥ २ ॥
सास नणद अर धौर जिठांणी, ये मोहि बहुत संतावैं ।
जौ तुम सहज आस निक, सौं इत तौ ऊ मोहि खिजावैं ॥ ३ ॥
जमुना तीर कदंब नी छहियां, हमर घड़लो भरिस्यां ।
ह्यां तुम आवो रंगना भीना, मधुरी वात करिस्यां ॥ ४ ॥
वृंदावन मैं रास रचावो मुरलीं मधुर बजावौ ।
नरसी ना स्वांमी सांवलिया, प्रेम मगन व्है गावौ ॥ ५ ॥

थारी बदनामी

(राग : कालिंगरो)

थारी बदनामी म्हांनैं मीठी रे म्हारा वाल्हा ।
लालजी थांसौं वातड़ी करंतां दुरजण मांणसा दीठीरे म्हारा वाल्हा ॥ १ ॥

जौ हौं घर नै धंधे भूली, थां सौं तो नथी दीधी पीठी ।
सांवलिया नौ मुखड़ो जोवंता,म्हारी नणदल भई छै अंगीठी ॥ २ ॥

म्हारा वाल्हा थारी बदनामी म्हानैं मीठी ।
रचमचता म्हारे मंदरिये पधारो, म्हां थां किसी व सीठी ।
नरसीना स्वामी सौं सजनी, ऊघड़ी हमारी चीठी ॥ ३ ॥

पुनर-जनम न थाइ रे

(राग : विहगडो)

कांई करु म्हारै घरि नाथ न आवै, छिन छिन जौबनियौं जाइ रे माई ।
तिल तिल जौ पल घड़ी घड़ी रै, थोड़ौ थोड़ौ रडो थाइ रे माइ ॥ १ ॥(टेक)

जा कारणि अम्हे त्रिहूणीयां, जुरा देखि देखि विहाइ रे माइ ।
जे रस पहली अनभवता रे, तै रस पछै न थाइ रे माई ॥ २ ॥

ह्लाइ विधाता ऐ स्यूं सिरज्यूं अमर न सिरजी देह रे माई ।
नरसीय्या चौ स्वांमी सुमरतां, पुनर जनम न थाइ रे माई ॥ ३ ॥

कांन्हजी तू कामणगारो

(राग : कालिंगडो)

कामणगारो रे कांन्हजी तूं कामणगारो रे ।
कांमण कीधौ कांई रे ॥ १ ॥ (टेक)

म्हारौ जीवड़ो वसै था मांही, मारी नणद वोलंभा आपै रे ॥ २ ॥
हूं घरनौ धंधो भूली रे, थारो मुखड़ो जोय जोय फूली रे ॥ ३ ॥+
म्हे झाल्यो भगतिनो वीडो रे, दुरजणियां नै खावो कालो कीड़ो रे ॥४॥
कोई पूरबला फल प्रामी रे, मिलिया नरसी महताना स्वाँमी रे ॥ ५ ॥

+ पाठांतर : (३) "मैं घर को धंधो भूली रे ।"

सांवलिया नीं साथे

म्है तौ जायस्यां सांवलिया नीं साथे ।
वाईजी म्हारौ नेहड़ो आयौ छै हाथे ॥ १ ॥
हिलि मिलि पांणीडै चाली री, वाल्है आवि अचांणक झाली री ।
म्हारै वांहडली आय गल घाली री, वृन्दाविपिन विलासी री ॥ २ ॥
आनंद अमित प्रकासी री, वाल्हडा रै प्रेमनी पासी री ।
म्हारी छैयां सौं छैयां मिलावे री, म्हारा पग सौं मुकट लगावै री ॥ ३ ॥
वंसी मैं राधा राधा गावै री, म्हारै चूड़िलो महदी सोहै री ।
नैंणा रो काजल मोहैरी, म्हारौ घूंघटड़ा मैं मुख जोहैं री ॥ ४ ॥
मो पैं सोभा वरणी न जाई री, स्यांम घटा झर लाई री ।
म्हारौ चित वित लियो चुराई री, मिलियो नरसी महतानौं स्वामी री ।
म्हे सदा सुहागणि प्रांमी री, झख मारो जगत हरामी री ॥ ५ ॥

मिलिया श्री जगध्यानीजी

(राग : कालंगरो)

आज्यौ म्हारै आज्यौ मोहन, निरत करंता आज्यौ जी ॥ (टेक)

नीकौ रे तूं तीकौ मोहन, सव हिन सौं तूं नीकोजी ।
परम भांवतौ जी कौ तू, सव व्रजवासिन कौ टीकौजी ॥ १ ॥
आप्यां रे तैं आप्यां मोहन, भुक्ति तणां फल आप्यां जी ।
कांप्या कांप्या म्हारा, वौहौरा वांधन कांप्या जी ॥ २ ॥
नरसी नौं स्वामी सौं म्हारी, प्रीतलडी र पुराणीजी ।
पूरवले कांई पुंन्य कीया छा, मिलिया श्री जगध्यानी जी ॥ ३ ॥

माला थारी क्यां छै रे

(राग : कालिंगडो)

माला थारी क्यां छै रे, वा माला थारी क्यां छ रै ।
सासड़ पूछै छै वहू वात हो ॥
कान्ह कुंवर के गल विच देखी, तातैं हिय उतपात हो ॥ १ ॥

एक समै हूँ सासड़ न्हांवण नैं वेठी, सासड़ न्हांवण नै हूँ बैठी ।
माला मांडु डै उलगांणीं जो ।
अमे तौ विलौघ्या वाई घर नैं धंधे, वैं माला नीं गति नथि जांणी जो ।। २ ।।
ताही समैं इक कां हुडली उडांणी, इक कां हुडली उडांणी ।
माला गगनि मंडल लै नै बांधी जी ।
माला गिरी वृंदावन मांही, कान्ह कुंवरजी नैं लाधी जो ।। ३ ।।
अब ही आज्ञा म्हाँ नैं आपीजे सासड़, आज्ञा आपी जे सासड़ ।
म्हैं कान कुंवर पैं जावां जो ।
झगड़ां लड़ां जाय बहु विधि ल्यौ, माला अपंणी ल्यांवां जो ।। ४ ।।
सास कहैं बहू अब ही जावो, बहू अब ही जावो ।
ल्यावो अपंणी माला जो ।
नरसी ना स्वांमी नै सजनी, जा भेटी वृजबाला जो ।। ५ ।।

ईढूंणी चोरी रै

(राग : कालिंगडो)

सरवर पाणीं ना जांऊ मा मोरी रै ।
कहां ठाढै नंदकुमार ईढूंणीं चोरी रै ।। १ ।।
जल मो भरनैं ना दिवै मा मोरी रै ।
भरै उछांटै नीर ईढूंणीं चोरी रै ।। २ ।।
भीजे वसन तन सौं लेगे मा मोरी रै ।
लाजौं भीनैं चीर, ईढूंणीं चोरी रै ।। ३ ।।
अंग अंग सब देखई मा मोरी रै ।
कहत अनौठे बैन, ईढूंणीं चोरी रे ।। ४ ।।
कुच मेरे ऊंचै कहैं, मा मोरी रे ।
बड़े बड़े कहैं नैन, ईढूंणीं चोरी रे ।। ५ ।।
कटिया की कहै दूबरी, मा मोरी रै ।
बोलत अैसे कान्ह, ईढूंणीं चोरी रै ।। ६ ।।
या की मईया कठिन है, मा मोरी रे ।
धांन न देहै खांन, ईढूंणी चोरी रे ।। ७ ।।

सरवर पांणी नां जाऊं हृद थावी रे ।
नरसीनौ स्वांमी दयाल, इंडूंणी आपी रे ॥ ८ ॥

मंदिर म्हारे हालोजी

(राग : कालंगरो)

हलवैं हलवैं हलवै हलवैं, प्रभुजी मंदिर म्हारे हालोजी ॥ टेक ॥

म्हैं तौ थांनौं मुखड़ो जोवाँ, जोय जोय म्हैं जीवांजी ।
वारी अपनां साहिब उपरि, मिठड़ौ पांनी पीवांजी ॥ १ ॥

म्हांरी जी पलकां सौ वालाजी, थांनी वगड़ बुहारांजी ।
घरी घरी पल छिन छिन छिन छिन, थांहगै रूप निहारांजी ॥ २ ॥

ठगारी धूतारी वाला, वै सब व्रजनी नारी जी ।
नैक चितवनि मैं मन हरि लेहै, मौनैं कुंजविहारी जी ॥ ३ ॥

नरसी नौं स्वामी सांवरियो, छौकड़ली सी आयो जी ।
पूरवलै कोई पुनि कीया छानां, वहै मारौ स्वामीजी ॥ ४ ॥

म्हारै दिवाली ना दिवा

(राग : कालंगरो)

म्हारै दिवालीना दिवा, मदन मोहन म्हारैं आंगणि आविया ।
करौंगी हौ तन मन सेवा ॥ १ ॥ (टेक)

जगमग जगमग दिवला जोई, या नाथ तणी करौं सेवा ।
मौतियन चौक पुराये मोरी सजनी, गिरधर नौं मुष जोवा ॥ २ ॥

गाघा माधौ कातिग मासौ, हमैं न दरसन देवा ।
नरसी नो सांमी सांवरियों, करै चरन कमल नी सेवा ॥ ३ ॥

जीवन प्राण आधार

(राग : कालिगरो)

रे कांनू राधा रै, भाव नै भवन जाहै रे ।
सीर दीया हो पन सराजी, नीछा कीय्या नैंन ।
इच्छा ना लोन भोला कानजी ॥ २ ॥+

प्यारा मीठरा लागो थारा वैन रे ।
मारगो में छोड्यो रे कान्हजी, जाय सहल्यारो साथ ।
अमैं सई मईडारा माणस, तमैं त्रिभुवन नाथ ॥ २ ॥

वृन्दावन मैं रास रच्यो है, माहेर जन्त की ताल ।
नरसी लो स्वांमी साँवलियो, जीवन प्रांन आधार ॥ ३ ॥

लीज्यो महोला मेरा

(राग : बघतेरा)

लीज्यो महोला मेरा, अबकी वेर मया करी माधो ।
लीज्यौ महोला मेरा ॥ १ ॥

सुमरन टोप ग्यांन का झलका, कहा करै जम मेरा ।
काम क्रिया को गरदन मारू', लीज्यो महोला मेरा ॥ २ ॥

सेर धरो मारी सावलिया, दूजै ओछो नही टांक ।
सरावनी तो तुजनै आली, मुज में काही वांक ॥ ३ ॥

सासु तरै सावला तू आव रे मेरे घर ।
पालनो स पली न दीनो, धोरी कैसी यैज ॥ ४ ॥

धोली पीली सावरी सलोकी जो सार ।
नरसी नो स्वामी सावलियो, जीवन प्रान आधार ॥ ३ ॥

+ इस पंक्ति का अर्थ अस्पष्ट है ।

गुवालिया केस्यां रे

(राग : सोरठ)

हेरे वाला कान्हजी कान्हजी तुम कहो,
हम तो गुवालिया केस्यां रे वाला ।। टेक ।।
भूधरिया नो भाव धरिनो, मथुरा में जाय रे सारे ।।
मात जसोदा नंदजी की रांनी, इंषल वंदो तनी रे ।
भलो मिलियो नरसी लो स्वांमी, प्रीति प्रीति म जान रे ।।

बालाजी

(राग : रामग्री)

म्हारा बालाजी, दूर मति जाईस म्हारी दृष्टि था अलगो रे ।
गोपी को सब छोड़ सांवरियो, म्हारी बांहोडिये वलगो रे ।। १ ।।
बालाजी थारूं ध्यांन धरूं, अति व्याकुल थाऊँ ।
सुकोमल सामल मुखड़ा नैं, भामणडे जाऊँ ।। २ ।।
बालाजी आवी नै ओरा, छिन हिवड़ा खोल बताऊँ रे ।
नरसी ना स्वांमी सांमल की, मैं सुनर सेज बिछाऊँ रे ।। ६ ।।+

अंबर स्यें ताणै

अम्बर स्यें ताणै बालाजी, हम छौं अबला बाली ।
मारगड़ो रोकी नै ऊभा, क्यों बाला वनमाली ।। १ ।।
अंबर स्यें०
पटोली तो फट्टी बाला, तैं चोली नी कस तौड़ी ।
कुच फल ग्रेही नै बाले, हृदया साथै भीडी ।। २ ।।
अंबर स्यें०

+ 'नरसैं महेतानां पद' के पदांक ३२० के साथ तुलना करें ।

अधुर अमृत रस पल पल पीधौ, 'मा मा' हम करंतां ।
भणे नरसीलो नयण नचावै, अंबर व्हांज सरंतां ॥ ३ ॥
अंबर स्यें० +

दूधां मेह वूठा

(राग : रामगरी)

पधार्या म्हारे कुंकुरा पगले ॥ टेक ॥
डगमग करता मोहनजी पधार्या, पग भरता डगले ॥ १ ॥
लटपटि पाग लीलांबर सोहै, पीतांबर सोहै ।
भाल तिलक झलमलता मोती, देखत मन हरले ॥ २ ॥
साकरड़ी आंगण वीच वूठी, ढिग वूठा ढिगले ।
दूधां मेह वूठा नरसी घर, आंगणिये सब ले ॥ ३ ॥×

फुलि आनी

(राग : रामगरी)

सांमलिया नाक फुलि ल्यावै सोंती, जे मारा मन नी गमती ।
हरि नां मैं हीरला जड़ावसि, मांहि मदसुदन मोती ॥ १ ॥
मारा पीयजी रे तमे मांनी हुंति, तुझ नें गड़ावसी छांनी ।
येटला द्योवस हुं वोली न हुंति, जब लग होती नानी ॥ २ ॥
सउ कोनै नांके नख फुली सोहै, मारे नाक छै वाली ।
सइ समाणी मैं रंग भरि रमतां, महणा दे दे भारी ॥ ३ ॥
रातडे डां तेरा थी रिसांणीं, सावलिये फुली आंनी ।
नरसी नी स्वामी भल मिलियो, जग सचराचर जांनी ॥ ४ ॥

+ नरसिंह महेता कृत 'काव्यसंग्रह' परि० २ के गुजराती पदांक ५६ के साथ तुलनीय ।

× नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह – 'शृंगारमाला' के गुजराती पदांक १४३ के साथ तुलना करें ।

नन्द को लाल

(राग : कालिंगडो)

देखीलो मैं कांन्हूडो गुवाल ।
मोर मुकट पीतांबर राजै, तिलक बिराजत भाल ॥ १ ॥

अलक झलक मकराकृत कुंडल, सुन्दर नैंन विशाल ।
नागर पांन चवावै मुसकावै, उर वैजंती माल ॥ २ ॥

कर कंकन कटि किंकिनी, नूपुर काछिनी सुण को जाल ।
धीर समीरे जमुना तीरे, वाजत वेणु रसाल ॥ ३ ॥

कहा वरनूं वाकी माधुरी मूरति, मोही मद गज चाल ।
नरसी नौ स्वांमी सांवलियो, सुन्दर नंद को लाल ॥ ४ ॥

भक्ति के पद

रामजी भावै

(राग : कालंगडो)

म्हानें माहा को रामजी भावै हो, दूजो मोरे दाय न आवै। (टेक)

भीलरी का बोर, सुदामा के तांदूल, द्रोपता को चीर वधावै।
दरजोधन का मेवा त्यागा, साग बिदूर घरि पावै ॥ १ ॥
सैन भगत का सांसा मेट्या, धनाजी को षेत नपावै।
जन रैदास को जनेऊ दिषावो, कबीरा बालद ल्यावै ॥ २ ॥
दूध पिलाय दे हरे फेर्यो, मरत गउ जिवावै।
सुवा रूप होय भोजन पावै, नांमदेव की छानि छीवावै ॥ ३ ॥
जल डूबत गजग्राह उबार्यो, अजामेल पद पावै।
जन प्रल्हाद प्रतंग्या पाली, लंका भभीषन पावै ॥ ४ ॥
जिहां जिहां भीर परै भगतन में, तिहां तिहां उठि धावै।
नरसी लो स्यांमी सांवरियो, नित्य ऊठे दरसन पावै ॥ ५ ॥+

केवी केवी कृपा रे संभालौ

केवी केवी कृपा रे संभालौ मारा नाथजी।
अबला नैं लाड़ पूराव्यौं मांरे बालौ ॥ १ ॥ टेक❀

+ पाठांतर : (१) "म्हाने तो म्हारो रामजी सुहावे, दूजो तो म्हारे दाय न आवे।
भीलनी के बेर, सुदामा के तंदूल, रुच रुच भोग लगावे ॥"
(३) "देवल केरो दूधों पिलायो, मरती गऊ जिवाई।
स्वान रूप होय भोजन पायो, नामदेव की छान छवाई ॥"
(४) "जल डूबत गजराज उवारयो, जल में ही चक्र चलाये।"
(५) "कहां कहूं करुणानिधि स्वामी, तेरो पार नहीं आये।
वारी रे नरसीला स्वामी, नित उठ दरसन पाये ॥"

❀ पाठांतर : (१) "केवी केवी कृपा ते, संभालू मारा नाथजी।
अबला नै लाड़ पुराव्यौ मारै वालै ॥"

नन्द को लाल

(राग : कालिगडो)

देखीलो मैं कांन्हूडो गुवाल ।
मोर मुकट पीतांबर राजै, तिलक बिराजत भाल ॥ १ ॥

अलक झलक मकराकृत कुंडल, सुन्दर नैंन विशाल ।
नागर पांन चवावै मुसकावै, उर बैजंती माल ॥ २ ॥

कर कंकन कटि किंकिनी, नूपुर काछिनी सुण कौ जाल ।
धीर समीरे जमुना तीरे, बाजत वेणु रसाल ॥ ३ ॥

कहा वरनूं वाकी माधुरी मूरति, मोही मद गज चाल ।
नरसी नौ स्वांमी सांवलियो, सुन्दर नंद को लाल ॥ ४ ॥

बिड़द

काहा बिड़द दे गायुं यो सांवरा,
काहा बिड़द दे गायुं ।+

अगर चनणरी गार घलायुं,
मोतीयन चोक पुरायुं ।। १ ।।

धूप दीप ले आरती उतारूं
कंचन कलस वधायुं ।। २ ।।

परणांम परकमा देयु,
ध्यांन धरे धर ध्यायुं ।। ३ ।।

नरसी मांतो दास तमारो,
भगत बंदगी पायुं ।। ४ ।।

मत जोवो करणीं हमारी

पद

मत जोवो करनी हमारी रे, तूं थारो बिड़द जोय सांवरिया ।
हम तो नाथ ओगुनै भरिया, आसा एक तूम्हारी रे ।। १ ।। (टेक)

अजामेल सुत नाँव उदारो, गज गीनका को तारी रे ।
पुरयो पुरयो चीर ज पुरयो, पांच पांडव री नारी रे ।। २ ।।

अहल्या इन्द्र तणी उपवासन, ताय सीला कर डारी रे ।
रंज लागी रंघुनाथ चरण री, नौ जोबन भई नारी रे ।। ३ ।।

प्रहलाद नी परतंग्या राखी, प्रगटे नरह मुरारी रे ।
हिरणाकुश नष उद्र बीडारयो, ये ही बिड़द तोह भारी रे ।। ४ ।।

+ पांठांतर : (१) गावुं, घलावुं पुरावुं । (२) वधावुं । (३) देऊ, ध्यावुं ।
(४) पावुं ।

गोकुल रख गोवरधन धरियौ ।
इन्द्र तणो गरब हेले हरियौ ॥ २ ॥
वृंदावन में रास रमायौ ।
सब गौपीयौ नौ भलो मनायौ ॥ ३ ॥
बाल बिनोद राग रंग हासी ।
नरसीया नौ स्वामी वालो लील विलासी ॥ ४ ॥

ध्यान धर नंदना कुंवरनो

(राग : प्रभात)

ध्यांन धर ध्यांन धर नंदना कुंवरनो,
तिण थकी अखिल आनंद पावै ।
अष्टमा सिद्धि ठाटी रहै बारनै ।
देहना ताप ते त्रिविध जावै ॥ १ ॥ (टेक)
मोर ना चंदा नौ मुगट मस्तक धरैं,
मकर कुंडल दोउ कांन झलकै ।
निलवटै तिलक तै सुभग केसर तणौ,
कंठलै मोतीयन हार ढलकै ॥ २ ॥
पीतांबर चटकतै पलवट कर तटै,
त्रिभंगी ऊभो रहैं वैंन वावै ।
कलपतरू हेठडै राधिका रसि भरी,
हरिजी नैं संग आलाप गावैं ॥ ३ ॥
नवल व्रजसुंदरी सऊए आई खड़ी,
गोपका केरडा वृंद आवै ।
नरसीया नैं मन आनंद अति घणो,
पोहप मुक्तावली लै वदावै ॥ ४ ॥+

+ नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह– 'भक्ति ज्ञान' के पदांक २५ और "नरसैं महेतानां पद" के पदांक ६५ के गुजराती पदों के साथ तुलना करें ।
पाठांतर (१) "अष्टमा सिध ऊभी रहै बारणै, देहना तृप्ता दूर थावै ।"
(२) मोर ना चंदनो मुकट माथे धरै, कर कुंडल दोऊ कान झलकैं ।"

बिड़द

काहा बिड़द दें गायुं यो सांवरा,
काहा बिड़द दे गायुं ।+

अगर चनणरी गार घलायुं,
मोतीयन चोक पुरायुं ॥ १ ॥

धूप दीप ले आरती उतारूं
कंचन कलस वधायुं ॥ २ ॥

परणांम परकमा देयु,
ध्यांन धरे धर ध्यायुं ॥ ३ ॥

नरसी मांतो दास तमारो,
भगत बंदगी पायुं ॥ ४ ॥

मत जोवो करणीं हमारी

पद

मत जोवो करनी हमारी रे, तूं थारो बिड़द जोय सांवरिया ।
हम तौ नाथ ओगुनै भरिया, आसा एक तूम्हारी रे ॥ १ ॥ (टेक)

अजामेल सुत नाँव उदारो, गज गीनका को तारी रे ।
पुरयो पुरयो चीर ज पुरयो, पांच पांडव री नारी रे ॥ २ ॥

अहल्या इन्द्र तणी उपवासन, ताय सीला कर डारी रे ।
रंज लागी रघुनाथ चरण री, नौ जोबन भई नारी रे ॥ ३ ॥

प्रहलाद नी परतंग्या राखी, प्रगटे नरह मुरारी रे ।
हिरणाकुश नष उद्र बीडारयो, ये ही बिड़द तोह भारी रे ॥ ४ ॥

+ पाठांतर : (१) गावुं, घलावुं पुरावुं । (२) वधावुं । (३) देऊ, ध्यावुं ।
(४) पावुं ।

जुग जुग भकत अनेक उत्तारया, वह ही निगम पुकारी रे।
भणै नरसीयो नांव निरंतर, हम नै ओथ तुमारी रे ॥ ५ ॥+

ताकुं तजीयै रे

(पद राग : भैंरू)

रामईये रो सीवरण करताँ, वरजैं जाकुं तजीयै रे।
मनसा वाचा और करमणा, लोछमी वर नै भजीयै रे ॥ १ ॥ (टेर)

कुल तजोयै कुटुम्व तजोयै, तजोंयै माय र बाप रे।
भ्रात सेत भगनी कुं तजीयै, जेम काचली साप रे ॥ २ ॥
जिन प्रहलाद पिता तज दीनो, तज्यौ नहीं हरि नांम रे।
भरत शत्रुघन तज दीवी जननी, बलभ कीया भगवांन रे ॥ ३ ॥
रिषपतनी जदुवर कै साटै, तज दीनो भरथार रे।
याही में कोई कुड न कथियै, पाया पदारथ च्यार रे ॥ ४ ॥
व्रिज वनिता वीठल के कारण, तरत ज वन कुं हाली रे।
भणै नरसीयो नाम निरंतर, मोहन के संग माली रे ॥ ५ ॥×

म्हां नै पार उतारो

(पद)

म्हां नै पार उतारो जी, थां नै निज भकतन की आन।
हमरे अवगुन नेक न चितवो, अपनो ही करि जान ॥ १ ॥

+ पाठांतर : (१) "तूं थारो विड़द जोय रे सांवरिया, जोवे न करनी म्हारी।"
(२) "द्रोपद सुता को चीर वड़ायो, पंच पंड़वा घार नारी ॥"
(४) "खम्भ फाड़ प्रहलाद उबारयो, प्रगटें है आप मुरारी।"
(५) "आगे तो भकत अनेक उबारयो, अब के है बेर हमारी।
कह नरसीलो स्वामी निरंजन, म्हारे है आस तुमारी ॥"

× नरसिंह मेहेताकृत 'काव्यसंग्रह' में भक्ति ज्ञाननां पद के गुजराती पदांक ५९ के साथ तुलना करें।

काम क्रोध मद लोभ मोह बस, भूल्यौ पद निर्वान ।
अब तो सरन गही चरनन की, मत दीजो मोहि जान ॥ २ ॥
लख चोरासी भरमत भरमत, नेक न परी पिछान ।
भवसागर में बह्यो जात हौ, रखिये श्याम सुजान ॥ ३ ॥
हौं तो कुटिल अधम अपराधी, नहिं सुमरयो तेरो नाम ।
नरसी के प्रभु अधम उधारन, गावत वेद पुरान ॥ ४ ॥+

वधावणा

(पद)

सखी आज घरे गुरांनै वधावणा है ।
म्हाँ रे आनंद घणे रो मंन भावना है ॥ १ ॥
सखी मांडवे बिछाऊं साउ धोतियां रे ।
हूं तो चौक पुराऊं गज मोतियां रे ॥ २ ॥
सखी कंचन कलस वधावस्यां रे ।
म्हें तो कर चरणामृत पावस्यां रे ॥ ३ ॥
सखी भावता ते भोजन लावस्यां रे ।
म्हें तो सीत प्रसाद रुच पावस्यां रे ॥ ४ ॥
सखी कर कृपा नै पधारिया रे ।
म्हाँरे घर आंगण पाँवडा धारिया रे ॥ ५ ॥

+ पाठांतर : (१) "अबै म्हाने पार उतारो महाराज ।
प्रभु थांने निज भगतांरी आन ॥"
(२) "अब तो शरण आयो चरणांरी, थे मति दी ज्यो जान ।"
(३) "………………, मोड़ी पड़ी पिछान ।
बुहो जात हूं भवसार में, तारो श्याम सुजान ।"
(४) "मैं हूं कुटिल अधम अपराधी, भजियो नहीं भगवान ।
कह नरसी तुम पतित उधारण, गावै छै वेद पुरान ॥"

सखी मिठोड़ा स्वामी आविया रे।
माहते नरसीलै स्वामी नै वधाविया रे ॥ ६ ॥+

आज नी घरी रलिआवणी

(पद)

सखी आज नी घरी रलिआवणी हे।
म्हांरा हरिजी आया नी वधावणी हे ॥ १ ॥
सखी प्रभुजी पधारया आवना है।
मैं तो भरी भरी लेऊं अपनी भावना रे ॥ २ ॥
सखी उठ सुहागण पूरो साखिया हे।
म्हारे घर आया हरिजीना हाथिया हे ॥ ३ ॥
सखी कदली ना खम्भ रोपावस्यां हे।
म्हारा गुरुजी नै नारेलां वधावस्यां हे ॥ ४ ॥
सखी मिटोड़ा स्वामी मीठोड़िया हे।
मोहते नरसीला स्वामी मैं दिठोड़िया हे ॥ ५ ॥×

राम - भजन

(पद)

रांम - भजन को चोगडीयो।
वंदा वार वार नहीं आवै ॥ १ ॥
जद मातारी कुंख से जनमियौ,
ऊंधै सीस पुकारयो रे।
भीड़ पड़ी जव वालो लागो,
वायर आय वीसारयो रे ॥ २ ॥

+ पाठांतर : (५) "सखी कर कृपा ने पधारिया है।
म्हां रे पग घर पांवडा धारिया है ॥"

× नरसिंह महेता कृत 'काव्य-संग्रह' में शृंगारमाला के गुजराती पदांक ४९२ तथा ५२२ के साथ तुलना करें।

रामजी सरीसा अमृत भूलौ,
विषयां में लपटाणो रे ।
धोले दिन रा धाडा पड़सी,
चोहटड़े लूटाणो रे ॥ ३ ॥

बारौडयां रै वास वसोला,
जनम जनम दुःख पासो रे ।
मीनष जनम तेरो छुट जायलो,
पसु कै पंखेरू थासो रे ॥ ४ ॥

पीलंग पालखी तौ ढल्या रहैला,
रोड़ां में रूड़वड़सी रे ।
मिंदर मालीया लारै रैसी,
जवरो उजड़ रखड़सीं रे ॥ ५ ॥+

कहैं नरसीलो सायव सरणै,
यु वोले संत बांणी रे ।
गैली दुनियां मरम न जांणे,
पथर तिर गया पांणी रे ॥ ६ ॥

सरणे आवूं छूं

(पद)

सरणे आवूं छूं मनमोहनजी, नाम भलै तारो ॥ टेक ॥

व्याध भीलणी नें गज गणिका, बले अजामेल पापी ।
अंतकाल नारायण समरयौ, मुकत संपदा आपी ॥ १ ॥

अटला तै कीधा तै थोड़ा, गिण्या न जावै मारे ।
म तो वखाणू मनमोहनजी, जो नरसी नें तारे ॥ २ ॥

+ पाठांतर : (५) "जमड़ों उजड़ खड़सी रे ।"

हरि - पूजा

(पद)

मिठड़ा करूं रै तारै नांवना,
आवतड़ा पर तन-मन वारू रै ।
भावणीया लेवुं रे तेरे गावरा ॥ टेक ॥ १ ॥
पावड़ींयां नै पाटम्बर झाडूं रे, मोतीड़े चवक पूराडू रै ।
आरती कर मनहार उतारूं रै, उर नवछावर वारूं रै ॥ २ ॥
चोवा चंदण और अरगजा, हिवड़ै आण कर चरचुं रै ।
कुमकुमानी सीसी भर भर, सुन्दर उर पर सींचु रै ॥ ३ ॥
भूषण वसन अंबरी उत्तम, हरष हरष पहिरावैं रै ।
नरसी नै स्वामी नै आगें, राग परजीयौ गावैं रै ॥ ४ ॥

गोप्या रौ प्रीतम

(पद)

हूं कांई बोलू रै, अम नै वोलवो नई आवै ।
मुख कांई औरै अन्तर कांई ओरै, एवी वात न भावैं ॥ १ ॥ (टेक)
पाव ऊभांणी वालौ गऊ चरावैं, मुख वांसुली बजावै ।
सोले सहस गोप्या रो प्रीतम, ब्रह्मचारी कहावै ॥ २ ॥
हीवड़े आवण कहि गयौ सजनी, रंगनी रैण विहावै ।
नरसी नो स्वामी सांवलियो, वसन पलट घर आवै ॥ ३ ॥

भगति - रस

लाग्यो म्हांनै नटवर सूं नेहड़ो, फरां मैं माथै नांखि छैड़ो । (टेक)
दुरजनियां तौ निंदा करसै, मारु मन लज्जा नहीं धरसै ॥ १ ॥
स्वांनड़ा भसि भसि मरसै, गज तिहां नजर नहीं करसै ।
हरि मांनै रिदिया सूं राखौ, नरसीले भगति रस चाखौ ॥ २ ॥+

+ नरसिंह महेताकृत 'काव्य-संग्रह' के परिशिष्ट के पदांक २६ से तुलनीय ।

भक्ति नी संगति बिना

(पद)

देवा ताहरी भक्ति नी नित संगति बिना,
भ्रष्ट थायै भूधरा मन म्हारूं ॥ टेक ॥

विष पांन पे पेठा दुरिजन दोहिला,
विष पीए तेनौ तेज हरसै ।
तें थकी वेगला, त्यानी तो संग तैं,
जनम-जनम कोटान कोट विणसै ॥ १ ॥

अमृत नी ओपमा साध नै नव घटै,
राह नी दुष्टता न गई तेंणैं ।
ध्रुव पेहलाद नारद संगत करि,
वस कीधा वैकुंठनाथ जेणैं ॥ २ ॥

चत्र विधा मुक्ति जे जुजवी जोवता,
त्ये त्यांनै मन नव राचै ।
दोय कर जोडि नैं नरसीयो वीनवै,
जनम-जनम ताहरी भक्ति जाचैं ॥ ३ ॥

धन्य तूं धन्य तूं

(राग : रामग्री)

धन्य तूं धन्य तूं इम कहै हरि, नरसीयौ मारू भकत साचूं ।
छाड़ पुर स्वारथ सघी रूपैं थयौ, तारैं हूं ताहरै रंग राच्चूं ॥ टेक ॥
अजौ परतीत तोहि नथी पड़ी, माहरी तारा रै मोकल्यौ ठाडु पाणी ॥ १ ॥+
मामैरो पूरब्यौं ते तो नैं वीसरचौं, हार आप्यो ते प्रगट भूपैं ।
चवदै लोक मैं तो सम को नथी, माहरूं ताहरूं एक रूपै ॥ २ ॥

+ पाठांतर : (१) "माहरे काजि तैं मोकल्यौ ढाडु पानी ।"

जो तारा अक्षर गाय नें सांभलै, जाना कोटि कुल पवित्र थायै ।
भणैं नरसीयौ मीठा वोल सम रीझवौ, द्वइ कर जोडै कृश्न समजायै ॥ ३ ॥+

वटल्यौ नागर नरसईयो

(पद)

वटल्यौ रे नागर नरसईयौ, अहीरड़ा नौं झूठौ खाधौ रे ।
और सुख मैं घोली कीधा, अमृत नौं कटोरो लीधौ रे ॥ टेक ॥
कांध कंठरीया हाथ लकुटीया, वालौ गाय चरायवा जावै रे ॥ १ ॥

वृन्दावन मैं रास रमंता, जुथ वनताना वैठा रे ।
अध कर औ तंवोल आपीयौं, मोहता नरसी ने लागौ मीठा रे ॥ २ ॥

यौं वटल्यौ कोई हरि नौ वैश्नव, त्याना भाग पोतानौं जागे रे ।
भणैं नरसीयो जौड़ विने कर, जंनम - जंनम या मागे रे ॥ ३ ॥

भूधरियो

(राग : सोरठी)

पिया थारौ भूधरियो भाहेलो ।
तीन लोक नैं पूरणहारो, तूं कांई कंत दुहेलो ॥ १ ॥ ॥ (टेक)

जादौं पति नैं जाचण हालौ, हाथ सौं कडली डेलो ।
जनम जनम नौ दालिद जासी, सुखसागर नौ रेलो ॥ २ ॥

तीन लोक नौ खंड मंड मैं, दाता कृष्न अकेलो ।
नरसी नौ स्वांमी सांवलियो, चारि पदारथ देलो ॥ ३ ॥

+ संभवित पाठ : "भणैं नरसीयो मीठा बोल एम रीझवैं ।
द्वय कर जोड़, कृष्ण समजायैं ॥"

राम नाम कौ नातौ

(पद)

हमारें राम नाम कौ नातौ ।
बिनि गोपाल सगौ नहीं अपनूं, सब जग दीसै जातौ ।। १ ।। (टेर)
मन्सा सो कि फिरैं मैमंती, रती न मानैं तांतौ ।
देवरीआ पांचू दुखदाई, जीवरो रहै डरांतो ।। २ ।।
दुरजोधन को अब न हौतौ, तो कृष्न रसोई पातौ ।
नरसी नो स्वामी सांवरियौ, रहै रामरस मातौ ।। ३ ।।

पद

.....................ल पर अमृत पखानी, ब्रह्मा जाचक तरयो ।
भणैं नरसीयौ सुफल फल्यौ छै, पैली ब्रजनारी रे नेरयौ रे ।। ३ ।।+

थारे वैकुंठडे नथि हालौं रे

(राग : सोरठी)

हूं तो थारे वैकुंठडे नथि हालौं रे ।
जे म्हांनैं कोई वृन्दावन बुलाईसी, तौ बिनि पावां ही ऊठि चालूं रे ।। १ ।। (टेक)
वैकुंठ मांहे आप चतुर्भुज, ज्यैं ना रामा चरण पलोवै रे ।
म्हारै तौ गोकुल मांझै दुभुज तृभंगी, ऊखल बांध्यौ रोवै रे ।। २ ।।
वैकुंठनायक सब सुखदायक, शिव सनकादिक ध्यांवै रे ।
म्हारै तो मुरली मांझै स्याम सुन्दरजी, राधा राधा राधा गावै रे ।। ३ ।।
वैकुंठनायक अमृत भोगी, गरुड़ चढे नैं धावै रे ।
म्हारै तो वृन्दावन में खेल मैं हारे छै, सीदामा नैं कंध चढावै रे ।। ४ ।।

+ अप्राप्य पद का अन्तिम भाग ।

वैंकुंठ मांहे अमृत कुंड छै, ज्यैं नैं विरला ही कोई पावै रे ।
म्हारै तो वृज मैं छाछि पिवै छैं, मांखन चोर कहावै रे ॥ ५ ॥
वैकुंठड़ा मैं कलपवृक्ष छै, जगमग जोति दिपावै रे ।
म्हारै तो वृन्दावन मैं श्री जमुना तटनीं, वांनि वोलै पावै रे ॥ ६ ॥
जिण नैं निगम नेति कहि बोलैं, सब नौ अंतरजांमी रे ।
वृन्दावननी कुंज गलनि मैं, मिलियो नरसी मैता नौ स्वामी रे ॥ ७ ॥

हरिभजन का महत्त्व

पद

वास नथी ज्यां वैष्णव केरो, तहां म वसिये बासड़ियाँ ।
मोहन मोहन की माया विलख्यो, सो पड़ती ज्यम पासड़ियाँ ॥ १ ॥
जिण कानां हरि कथा न सुण ही, सो सरवन की बाँवड़ियाँ ।
जिण नैनां हरिरूप न निरख्या, सो मोहन की पाँखड़ियाँ ॥ २ ॥
सास साम सिमरण नहीं कीनो, धमण धमे वाकी साँसड़ियाँ ।
जिस रसना हरि नाम न गायो, सो जिभ्यां है काँसड़ियाँ ॥ ३ ॥
जिण पायो हरिपंथ न चाल्यो, सो पग कहिये ठाँवड़ियाँ ।
जिण हाथां हरि पुण्य न कीनो, सो कर कहिये डाँडड़ियाँ ॥ ४ ॥
जनम दियो सो लेखो लेसी, क्यूं न होय हरि दासड़ियाँ ।
कहैं नरसी उन बोज्याँ मारी, मावड़ली दस मासड़ियाँ ॥ ५ ॥ +

थारा नांव नों आसरो

(पद)

हे देवा मारो थारा नांव नों आसरो,
तुज वन सार कुन लहै म्हारी ॥ टेक ॥

+ नरसिंह महेताकृत 'काव्य-संग्रह' में 'भक्ति ज्ञाननां पदों' के गुजराती पदांक ५८ के साथ तुलना करें ।

कोही कै लुकठी कोही कै लोभियो,
कोही कै तालकुटियो खोटो ।
हीवडारो हार मुज जापियो दीनहर,
त्रभवन मांहे जी मारो नाथ मोटो ॥ १ ॥ हे देवा०
हे देव महादेव की मो पैं किरपा जव,
मैं लछमी नौ नाथ गायो ।
माहेरारी वेला लाज जाती होतीं,
गुरुड चढँ नै साहै आयो ॥ २ ॥ हे देवा०
आगों आगो मो पैं आठो उवारी हो,
अ समो दुख में आन दीनो ।
सुरस तौ माल मोकलो श्री हरि,
अपना जन को मान कीनो ॥ ३ ॥ हे देवा०
सोरठ में मुनें सोई साचो कीयो,
पुत्री नें माहरो तुम कीनो ।
नागरी पंथ मैं टेक यो ही कीयो,
नरसीया नैं अवदांन दीनौं ॥ ४ ॥ हे देवा०❀

प्रार्थना

(पद)

मोहन मेरा अंतरजामी हो ॥ टेर ॥

मेरे ओगुन नेक न गिन ए ।
कपटी कामी हो ॥ १ ॥
पापी लोभी क्रोधी कहिये ।
पतित-सिरोमण नामी हो ॥ २ ॥
नरसी कह याहीं बन आई ।
मोरें तुमसे स्वामी हो ॥ ३ ॥

❀ इस पद का पाठ अशुद्ध मिलने पर कुछ शुद्धि करनी पड़ी है ।

राधावर नै भजनो छै

(पद)

हेरी म्हांरै राधावर नै भजनौ छै ।
आ भवसागर पार उतरनौ छै ।। टेक ।।

जगना दुरजणिया झख मारै छै,
म्हाँरा नाथ भजन थी तारै छै ।। १ ।।

मैं तो संसारीडो छोड्यौ छै,
मेरा नाथ से नेहड़ो मैं जोड्यो छै ।
मैंने लाज जगतनी तोड़ी है,
मांकी सुरता सांवलिया से जोड़ी है ।। २ ।।

हेरी जगत लाग्यौ म्हाँने षा(खा)रो रै,
शरनागत पार ऊतारो रे ।
आ जगत भुजगरो छै भारो रै,
प्रभु सरन गह्यौ मैं तारो रे ।। ३ ।।

किरपा कर नाथ उवारो रै,
म्हाँनै चरन कमल में राखो रै ।
कहैं नरसीलो हिये लगाड़ो रै,
मैं प्रेम पदारथ चाखो रै ।। ४ ।।

वनरावन में

(पद)

म्हैं तो वनरावन मैं रहेस्याँ रे, मोरा वालानु मुख जोस्याँ रे ।।टेक।।

वनरावन मैं नाथ नीं साथै, निरत करंतां रमस्याँ रे ।
वनरावन नी कुंज गलिन मैं, नाथ नै साथे भमस्याँ रे ।। १ ।।

ऊभां रै जुमना के तट पर, कानड़ मुरली सुणस्याँ रे ।
राधा ललिता नै चन्द्रभागा, साहेलड़ी मैं वनस्याँ रे ।। २ ।।

'राधा राधा' कहै तो माधो, मुरली मधुर बजावै रे ।
सांभली म्हांरा हिवडा मांहि, भगति - भाव ऊभरावै रे ॥ ३ ॥
गोप गोपालां री साथै बालो, लील विलासी रमतो रे ।
सिव सनकादिक नैं जे दुरलभ, वा म्हाँरे मन गमतो रे ॥ ४ ॥
बाला तोरी साथै गोकुल, मैं भी गौवां चराऊँगा ।
मधुरी मूरत स्यामली सुरत, जोतां खूब हरखाऊँगा ॥ ५ ॥
वृन्दावन में रास रचायौ, नरसी दिये टीयौ थाये रे ।
पीतम केरडी लीला जोवंता, धन - धन श्रे तो गाये रे ॥ ६ ॥+

मैं संतन को दास

(पद)

मैं तो उन संतन को दास, जिन्होंने मन मार लिया ॥ टेक ॥

मन मारया तन वस कियाजी, सभी भरम भया दूर ।
बाहर से कछु दीखे नाहीं, भीतर चमकै वांके नूर ॥ १ ॥
आपा मार जगत मैं बैठे, नहीं किसी से काम ।
उनमें तो कांई अंतर नाहीं, साधु कहो या राम ॥ २ ॥
काम क्रोध मद मोह छोड़ कर, छोड़ी जग की आस ।
बलिहारी उन सन्तन की जो, प्रगट करत विश्वास ॥ ३ ॥
नरसैया को सतगुरु मिले, दिया अमीरस पाय ।
एक बूंद सागर में मिल गई, कांई करस्ये जमराय ॥ ४ ॥×

भगत म्हारै मुगटमणि

(पद)

मैं तो छौ भक्तन को दास, भगत म्हारै मुगटमणि ॥ टेक ॥

+ पाठांतर : (६) "जनम जनम जस गावे रे ।"

× पाठांतर : (४) "नरसीजी के सतगुरु स्वामी, दिया अमीरस पाय ।
एक बूंद.............., कांई करेलो जमराय ॥"

मुझको जो भजै भजूं में उनको, म्हैं दासों का दास ।
सेवा करे उनरी करूं मैं सेवा, सच्चा हो विश्वास ॥ १ ॥

जूठो खाऊं गले लगाऊं, नहीं जाति-पाति को ध्यान ।
आचार विचार कछु न देखूं, देखूं एक प्रेम सुजान ॥ २ ॥

चरण जो चांपूं सेजे बिछाऊं, नौकर बनूं हजाम ।
हांकू बैल बनूं गढवालो, चौकी करूं विन दाम ॥ ३ ॥

अपना प्रण विसराय भकत को, पूरो प्रण मैं निभाऊँ ।
जहां-जहां भीड़ पड़े भक्तन में, दोड़-दोड़ कर जाऊँ ॥ ४ ॥

गरुड़ छोड़ वैकुंठ त्याग के, नंगे पैर मैं ध्याऊँ ।
भकत हमारो मैं भकतन को, वेचे तो विक जाऊँ ॥ ५ ॥

जो कोई भक्ति करे कपट से, उसको भी अपनाऊँ ।
साम दाम और दंड भेद से, सीधे रास्ते लाऊँ ॥ ६ ॥

सच्चा मन से करै ध्यावना, मैं उनको हो जाऊँ ।
नरसीलो बांधै प्रेम-पास में, खिचे त्यम खिचाऊँ ॥ ७ ॥+

+ पाठांतर : (१) "मैं भकतां को दास, भकत म्हारै मुकटमणी :"
(२) "एंठो खाऊं गले लगाऊं, नहीं जाति रो ध्यान ।
........................., देखूं प्रेम सम्मान ॥"
(३) "........................., विण तिणको रखवाल ।"
(७) "नरसीलो वन्ध प्रेम-पास में, जल्दी ही खिच जाऊँ ।"

बाल लीला के पद

ओलंभडो

(पद)

रजनी छैं अत दूर मारा बालाजी, वेलु वेलु वलण रे ।
नंद तणे घर अठ सिध लिछमी, बैठो पसून पालै ॥
कोमल कान्ह कुंवडलौ नित ऊठ, वन नैं पांव धारै ॥ १ ॥
रांणी जसुमति नै ओलंभडो आपुं, लोप नें कुल लाजै ।
गोप घणा छैं गोधन साथै, पेला बालक नौं स्यु काजै ॥ २ ॥
पीत घेलडी व्रजनी नारी, उर सकल फली ।
नेत्र कवल माला ऊर रुपी, मोहता रा स्वामी नें मिली ॥ ३ ॥

माता का उपालंभ

(राग : विलावल)

तिण तो नै वारूं छूं मारा वीठलजी रे, पर घर पांव म दीजै ।
गोकल गांव गवार अहीरड़ी, जानो संग म कीजो ॥टेक॥
नवलख धने दुझै घर अपणैं, महीयां नें कांई माग ॥ १ ॥
एटलड़ा माखण नें काजै, मधुसूदन ओलंभडा सिद ल्यावौ रे ॥
नरसी ना स्वामी तुम नें कहु छुं, त्रिभुवन नाथ कहावौ रे ॥ २ ॥

कुंवर नै वारौ रे

जसोदा कुंवर काला नै, साद करि नैं वारौ रे ।
कान्हड धूम मचावै वृज में, लागे अम्हनै प्यारो रे ॥ १ ॥
घर में आवै गोरस ढोलै, फोड़े महीनी गोली रे ।
खाय पीअे नै ठोलै बालो, भींजै म्हांरी चोली रे ॥ २ ॥

दा'डी कु'वर पजवैं अंमने, हवै नां राखु' भार रे ।
नरसैया नौ स्वामी कान्हड़, डरै ना कोथी लगार रै ॥ ३ ॥+

दधि मांगो रोटी

दधि मांगो रोटी गोपाल,माखन सोती दै मोरी मईया ।
सकल सषा(खा) भरिया मोटी ।
काहे को वालक श्रोलु करत है, काहे को गोरस लूटी ॥ १ ॥
व्रिज वन मैं धनै चरावै, हाथ लुकरीया कामरी छोटी ।
नरसीलो स्वांमी सांवलियो, जै जै में मुष(ख) को जोती ॥ २ ॥

+ नरसी मेहता कृत 'काव्य-संग्रह' में वाल-लीला के गुजराती पदांक ११ के साथ तुलनीय ।

दाण लीला के पद

ऊभौ ऊभौ आंण दिरावै

(पद)

गुवालीडा रे तु कुण माणस रे, ऊभौ ऊभौ आण दिरावै रे ।। टेक ।।

नां तु गांव गिरासीयौ रे, नां तु राजकुमार ।
नंद मैहर गोकुल वसै रे, जिणरी गईया चरावनहार रे ।। १ ।।
हूं गोकुल नी गुवालनी रे, तु मथुरा नौ कांन ।
पतज राखौ अपनी रे वाला, आज घरां दौ मोहे जांण रे ।। २ ।।
गुजर गरव गवालनी रे, अवला बोल न बोल ।
तीन लोकन नै राजवी, जिण सु खाच न तोड रे ।। ३ ।।
बैन बजावै वालौ बांसुरी रे, तट जमना के तीर ।
नरसीनौ सांमी सांवरियो, वाला आखर जात अहीर रे ।। ४ ।।

ठगारा बांसुरी वाला

(पद)

राधा :—ठगोरा वांसुरी वाला रे, चल्यो जा पाधरी बाटै ।
सकौं छों नंद नै माटे, चल्यो जा पाधरी बाटै ।। १ ।।(टेक)
गोकुल गांव मैं नंद बसै छै, जिणि नीं जाति अहीर ।
जिणिनौ छोरा होय नै तूं, मागत दान सधीर ।। २ ।।
दांनस लौंग सुपारियां, सुनि नागर चतुर सुजान ।
दूध दही नौ दांन न व्है छै, कंसराय नी आन ।। ३ ।।
कृष्ण :—तूं वेटी वृषभांन री, राधा तेरो नांम ।
दान लियां बिन जांन न दैहौं, सुनौं सकल वृजभांम ।। ४ ।।
राधा :— तूं अपना घर ना ठाकुर हो, हूं म्हारा घरनी ठाकुरनी ।
म्हां पर ये तो जोर चलावै, नां थारा बापनी चांकरनी ।। ५ ।।

तब भुज मेली लाल कंध पर, सुंदर नंदकुमार ।
दांन लियो मन भाव तो, नरसी नै सिरदार ॥ ६ ॥

कांकरड़ी न डालो

(पद)

कांकरडी न डारो म्हारी, फूटे गागडली ॥ टेक ॥

तूं तो थारे घर में ठाकर, मैं भी ठाकडली ।
आकड़-आकड़ बोलो कान्हा, मैं भी आकडली ॥ १ ॥

मोडे थारी काली कामल, हाथ में लाकडली ।
नो लाख धेनु नंद घर दुहिया, एक न वांखडली ॥ २ ॥

माखन-माखन आप खा गयो, रह गई छाछडली ।
जाय पुकारूं कंस के आगे, मारे थापडली ॥ ३ ॥

वृंदावन में रास रच्यो है, मोर की पांखडली ।
नरसी री स्वामी सांवरियो, दूध में सांकडली ॥ ४ ॥+

महीड़ो मागै जाड़ो

(पद)

जारेवा जाईये रे नाथजी अलवेलो ।
रमता-रमता रमत मैं जाणी रे गुमानी राज गहेलो ॥ १ ॥ (टेक)

वाल पणा री प्रीत पछाणी रे, आय नै ऊभौ आडो रे ।
काकरण रणकै जेहड़ झमकै, लुंबां-झूंबां लाडौ ॥ २ ॥

कंसराय नी आण न मांनै, मतो कीयो छै गाढो रे ।
नरसी नौ स्वामी सावरियो, महीड़ो मागै जाडो ॥ ३ ॥

+ पाठांतर : (४) "नरसी नो सामी मघरातै, नाय छै वांसडली ।"

दान मांगै दाडी

(राग : काफी)

ज़सोदा वार नें तारा वीठलानैं, मनैं मारगड़ो रोकै ।। टेक ।।

बांह मरोडै गागरी फोडै, ग्वालन दै छै गारी ।
मथुरा केरे मारग जावंतां, दान मागै दाडी ।। १ ।।

नरहर मीरू छै नाहडौ, बाई कर स्यूं जाणै आल ।
कड़ कड़ा मोडौ कांई तै कामण, स्यांनै देवौ तमे गाल ।। २ ।।

माऊजी तारो छै खोटो ते वीठलो, करै छै खोटां ते काम ।
वास मूकीस्यां वीठला काजै, छांडस्यां गौकुल गाम ।। ३ ।।

टेव पडै पर-नारी नी, ते टाली न टलसै ।
लाज जासै मनमोहन नी, तारे नरसी नैं मलसै ।। ४ ।।

गोपीनाथ कहावै

(राग : काफी बंगालो)

जसोदा वा तन तोरा गुजराज की जगात वारा जोर लगाई ।
मधरा न छाड़ै तैरो कुंवर कनाई ।। १ ।।

जोर जबरदसत गुजर वन-वन डोलै ।
दधरा लूटै मुख मधुरा वोलै ।। २ ।।

जमुना के आसपास धने चरावे ।
साहिब सुलतान गोपीनाथ कहावै ।। ३ ।।

वृंदावन नी कुंज गलन वैं नव जावै ।
हरकस करै मेरे दिल कौं रिझावैं ।। ।। ४ ।।

मोर-मुकट कुंडल छवि मन मैं भावै ।
जिण नित नरसैयो गुन गावैं ।। ५ ।।

गोपी गोविंदनी गोठड़ी

(पद)

चल्यौ जा पाधरी वाटै रे, सकुं छुं नंदना माटै ॥ टेक ॥

छई वरस नौ छौकरो रै, छानै पितौ छाछ ।
वसतर तोनै वाधी आलौं, तूं आव हमारै पास ॥ १ ॥

गज सवानों घूंघंट तारै, मरकडा नों मांन ।
दांनज देती मान करै, तारो ऊतारौ अभमांन ॥ २ ॥

समझीनैं वोलौ सांवला, संगांती करसै राड़ ।
भीख मागौ ने पेट भरो रे, परमेसर नें पाड़ ॥ ३ ॥

समझै नै बोलो सांवलडा, अम्हनै मारग जावा दे ।
जाय पुकारूं कंस नै आगै, दाण अमारूं ले ॥ ४ ॥

गोपी गोविंदनी गोठडी रे, ब्रह्मा नें आगम सूं जाणै ।
नरसी वापड़ो रे, कंई कैम विचारै ॥ ५ ॥

दाणी

सखी मैं आजि जानी हो, नंद नौ कुंवर छै दानी ।

अमै जाणै कंसराय वैठानो दानी ।
झालो वा चोर नै मथुरा ले जावो ताणी ॥ १ ॥

राधा कहै सौ नार नै राखी लेवो ।
नरसी नो सुवो कोयो सावलियो, येक कोड़ो न देवो ॥ २ ॥

वसंत-होली के पद

वसंत आयो रे

(राग : वसंत)

वसंत आयो रे, बाई हरि संग रम्य गो होरी ।
सब सुन्दरी अति सुन्दर दीसै, मुधि राधा जूं गौरी ॥ १ ॥(टेक)

फाग रमै नै फगवा मागै, हरि आगै थइं भागैं ।
नारि आगलि नासौ नरहरि, तमनै लाज न लागै ॥ २ ॥

एकै पासि थयां व्रजनारी, सांमी गवालां नी टोरो ।
ठाम-ठाम थी हरिजी उपर, नांखै गुलाल नी झोरी ॥ ३ ॥

चोवा-चंदन अगर कुमकुमा, मांहि किसतुरी घोरी ।
एक-एक पैं अनुपम दीसै, सब मिलि भामर घोरी ॥ ४ ॥

वसंत मासि रम्या हरि होरी, सब घटि अंतरजामी ।
दीनदयाल सांवरियो मोहता नरसीजी नौ स्वामी ॥ ५ ॥

होली

(राग : वसंत)

रस भरि रंग तणां झाकम झोला, होलो रमै रलसालो ।
मृग-मद चंदन हरिजी नै छांटै, धार-धार धावलियालि ॥ १ ॥(टेक)

वाला मली छै तेवड़-तेवड़ी, हरिजी नी वांहे साहै ।
व्रंदावन में स्याम मनोहर, वेण मधुरो वाहै ॥ २ ॥

हारया क्रिश्न जीत्या जन गोपी, लोपी लाज विराजै ।
नरसी नो स्वांमी भल मिलियो, भगत बिछल-बिड़द छाजे ॥ ३ ॥

रंग - भरी रमस्यां होली

(राग : वसंत)

मोरो पालव मेल्हो मांहाराज, हूं छौं दासी तमारी ।
हाथ पाग मप-कमल पखाली, ओवंरे वैण संवारी ॥ १ ॥(टेक)

प्रणि प्रीति नहै आसो त्रम, म मोडि मारी चूडी ।
खांडी काठैं जोर न चालै, इहै वात सब कूडी ॥ २ ॥

खलकै गोली भीजै चोली, सइ घर मां भर भोली ।
नरसी ना स्वामी नी संगति, रंग-भरि रमस्यां होली ॥ ३ ॥

प्रकीर्ण पद

हुन्डी

(राग : भैरवी)

बड़ो भरोसो थारो सांवरिया, बड़ो भरोसो थारो ।।टेक।।

सतजुग मैं पृथ्वी के कारन, रूप वराह को धारचो ।
खम्भ फाड़ नरसिंह होई प्रगटे, भक्त प्रह्लाद उबारचो ।। १ ।।

इन्दर जब व्रज उपर कोप्यो, नख पर गिरिवर धारचो ।
द्रुपद - सुता को चीर बढ़ायो, दुष्ट दुशासन हारचो ।। २ ।।
भारत में भरुही के अन्डे, घन्टा तोड़ उबारचो ।
कहै नरसीयो सुन सांवरिया, हुन्डी बेग सिकारो ।। ३ ।।+

सुदामा के चावल

(पद)

कांई थारो भायलो गोविन्द, हरि नै जांचण जावो जी ।। टेक ।।

औरां के पिया अन्न-धन लिछमी, थे क्यूं भया जी कंगाल ।
जादवपति को जाकर जांचो, छिन में कर दे निहाल ।। १ ।।

विप्र सुदामा की पटराणी, बोली इम संभाल ।
वो है थारो परम सनेही, पढ़िया एक पोसाल ।। २ ।।

चावल लेकर चले सुदामा, मन में नहीं उसात ।
जादवपत कुं जाय देखस्याँ, अेवा कांई रसात ।। ३ ।।
पांच पैंड हरि सामा आया, मिलिया भुज पसार ।
चरण धोय चरणामृत लीन्हां, अतेस कीधी सार ।। ४ ।।

+ पाठांतर : (२) "इन्दर कोप कियो व्रज उपर................"

चावल तो हरि मुख में लीन्हा, उठ्या दीन - दयाल ।
दूरी टमरी महल चिणाया, जड़ दिया हीरा लाल ॥ ५ ॥

छिन में रंक राय कर डारे, ऐसा प्रभु क्रिपाल ।
नरसी नौ स्वामी सांवरियो, भगतन को प्रतिपाल ॥ ६ ॥×

धरम की चूनड़ी

पद

ओढो - ओढो पतिवरता नार, धरम की चूनड़ी ।
थारे ठाकुरजी भेजी है, सियावर सत की चूनड़ी ॥टेक॥

रमल - विद्या की सेवाई, बूंटी बुद्धि की छपवाई,
गोटा गोखरू ज्ञान लगाना ।
या तो सत्संगति में त्यार, इस विध ओढ़ो चूनड़ी ॥ १ ॥

लहंगो तो भलाई को पहेरो, चोली चित्त-धर्म में हेरो ।
म्हारो मन माला में लाग्यो, थे तो रल - मिल करो वसेरो ॥
पति की सेवा करो हर वखत, इस विध ओढ़ो चूनड़ी ॥ २ ॥

वाजूबंद दया का पहरो, हरदय हार ज्ञान को पहरो ।
थारो मन माला में हेरो प्यारी, झूठ कभी मत वोलो,
इस विध ओढ़ो चूनड़ी ॥ ३ ॥

गंगा जमना को नीर मंगावो, ताजा तुलसी - दल तुड़वावो ।
सेवा सालगराम की सुहावे, सव सन्तों के मन भावे ॥
ये पद नरसीलो नित गावे, म्हाने भवसागर से तारो,
इस विध ओढ़ो चूनड़ी ॥ ४ ॥

× पाठांतर : (२) "विप्र सुदामा की घर की नारी, वोली वचन संभाल ।"
(३) "जादवपत कुं जाय रहेस्यां, ………………………… ।"
(६) "…………………………, ऐसा दीन - दयाल ।"

ताली लागी रे

(पद)

बड़े घर ताली लागी रे, मना थोरी उणत भागी रे ।
ताली लागी तासूं रे, पड्यौ समंद में सीर ।
मीठा मेवा त्याग के म्हारे, कुण पीवे कड़वो नीर ॥ १ ॥

छी भरियां न्हाऊं नहीं, समदरियां कुण जाय ।
न्हासां गंगा गोमती, म्हांरो पाप शरीरां जाय ॥ २ ॥
कांसी कथीर विणजूं नहीं, लोह भरे कुण भार ।
सोनो रूपो म्हारे दाया न आवै, हीरां रो व्यापार ॥ ३ ॥

हाली माली जाचां नहीं मैं, नहीं जाचां सिरदार ।
उमरावां सूं काम नहीं, मैं तो जाय मिलुं दरबार ॥ ४ ॥

नरसीलो स्वामी सांवरियो, सब संतन को दास ।
चरण कमल छाडूं नहीं मैं, रहस्यां तुमारे पास ॥ ५ ॥

सुख-दु.ख मन में नहीं आनिये

(राग : वेरावल)

सुख - दुःख मन में नहीं आनिये, घट साथै घड़ियां ।
टाल्या किस का ना टले, रघुनाथ नै जड़ियां ॥ टेक ॥ १ ॥

सीता सरीखी भारजा, जिण रघुपति स्वामी ।
लंका रो पति ले गयो, सती महा दुःख पामी ॥ २ ॥

हनुमान सरीषा (खा) महा वली, कारज किया मोटा ।
प्रारब्ध को पायवो, पाया तेल लंगोटा ॥ ३ ॥

हरिश्चंद्र सरीखा राजवी, जिणी तारादे रानी ।
काशी नगर के चोहटै, शिर ढ़ोया रे पानी ॥ ४ ॥

नल रा सरीखा नर नहीं, दमयंती सी नारी ।
वन - वन भटकत वे फिरया, विन अन अरु पानी ॥ ५ ॥

पांच पांडव सरखा राजवी, वन मांहि विगूता ।
वैठण जागां ना मिली, नहीं सुख भर सूता ॥ ६ ॥
रावण सरीखो राजवी, जिणी मंदोदरी रानी ।
दस मस्तक छेदाई गियां, सुवरन लंका लुटाणी ॥ ७ ॥
भीड़ पडी महादेव में, सुमरया अंतरजामी ।
भीड़ को भंजन भूधरो, गावै नरसीलो स्वामी ॥ ८ ॥+

उण रो कदे न करिये संग

(पद)

जिण मुख राम तणो नही रंग, उण रो कदे न करिये संग ॥(टेर)

नुगरा नर से आसंगो भाई, दूर से वंदन करिये ।
पत्थर वांध कुवा में पड्से, कहो सावां किम करिये ॥ १ ॥
पापी जिवड़ो पाप करै जब, आप तो अलगा रइये ।
पापी के पड़ोसी होयकर, पापी जेवा नहीं थइये ॥ २ ॥
हस्ती घोड़ा माल खजाना, देषि (खि) न गैला थइये ।
अंतर वीच कतरणी राखै, तिनसे अलगा रइये ॥ ३ ॥
सांच होय तो सांची कहिये, झूठी हामल नव भरिये ।
कहैं नरसीलो सुण भाई संतो, हरि भज पार उतरिये ॥ ४ ॥×

वांसुरी रे

(पद)

सोले सहस्र अन मानीती, मानीती वांसुरी रे ।
वस कीना वैकुंठनाथ, धूतारी तूं जा परी रे ॥ १ ॥ (टेक)

+ 'नरसिंह मेहता कृत काव्यसंग्रह' के पृ० ४६४ पर गुजराती पदांक ६५ के साथ तुलना करें।
पाठांतर : (२) "……………………, रघुपति मोटा स्वामी ।"
"……………………, वन में विपत्ति जागी ।"

× पाठांतर : (३) "……………………, दरगे गैलो थइये ।"

बाई यानौ काज कवण, बिड़ानी न राखीयै ।
आपण स्यौं करसै जादौनाथ, फगावी नु नाखीयै ॥ २ ॥
बाई एवी म करो बात, एवो स्यु आदरौ ।
मैं किम नांखी जाय, यानौं प्रभु पाधरौ ॥ ३ ॥
या सौं कीजै मित्राचार, सनेवट राखीयै रे ।
मोहता नरसी नी विनति, याही सौ भाखीयै ॥ ४ ॥

हरि भजन रो टाणो

(पद)

मूल में किम फिरो छौ, आयो हरि-भजन रो टाणो ॥ टेक ॥

स्यूं स्यूं करीनै राम सुमर ले, स्यु लागे छै नाणो ।
पाव पलक में विणस जायगा, काया रो कमठाणो ॥ १ ॥
आत अकेलो जात अकेलो, थिर नहीं है थाणो ।
कियोड़ा करम तेरा छूटै नहीं, जोरावर जमराणो ॥ २ ॥
या जुग मांहि थिर नहीं दीसे, ना कोई रंक न राणो ।
लंका रो पति रावण हो तो, तिन भी कियो पयाणो ॥ ३ ॥
किसके मात पिता तिरिया सुन, झूठे भरम लुभाणो ।
मिनखा - जनम छाड़ छिन मांहि, फिर पीछे पछितांणो ॥ ४ ॥
या देही थारी रतन अमोलख, वेलू मांहि मिलांणो ।
कहै नरसीलो जिन राम न सुमरयो, ताको नहीं ठिकांणो ॥ ५ ॥

कीज्यो मारी साह

(पद)

सांवरियाजी कीज्योजी मारी साह ॥ (टेक)
तृषित खिन्न व्याकुल भयो, अतहि अधर जीह सुखाय ॥ १ ॥
करि जु करिए करनि हरजी, मेरी आप सहाय ।
नरसी केरी विनति सुनि कर, आये श्री जदुराय ॥ २ ॥

न भूलूं दिवस रातड़ी

(पद : राग : विलावल)

नथी मांनु थारी बातड़ी, हो कुड़ा वीला ॥ टेक ॥

सुर नर असुर नाग मुनि किन्नर ।
कोय न जानैं थारी जातड़ी ॥ १ ॥

जसुमति नंदजी हेज कियो तुमसु ।
सोई छोड़े पितु मातई ॥ २ ॥

तुम कृत(कृत्य)करो सो जगत सब जाणै ।
कोई न बैठे थारी पातड़ी ॥ ३ ॥

नरसी कहै तुम सुन हो निरंजन ।
दिवस न भूलूं तुन (ने) रातड़ी ॥ ४ ॥

नरसी महतो भगति कुं भावै

(पद)

नरसी महतो भगति कुं भावै न नाग ढ़क माहिरा आया ।
साधु सुं उरजन राखै पाप पडल पाराही ॥ १ ॥

बांध गुगरा नि निरत करत हैं, हरि - मंदिर के मांही ।
नरसो नो स्वामी सांवरिया (खू)ब रही हिरदा मांही ॥ २ ॥

नरसी मेहता के पूरक पद

आरती

(पद)

जय जय नटवर वेषा, आरती उतारुँ जदुवर जगदीशा । जयदेव जयदेव ॥ १ ॥

मोर-मुकुट मस्तक पर राजै, कंठै बनमाला,
प्रभु कंठै बनमाला ।
श्रवणैं कुंडल ललकै, संग लिये ब्रजबाला । जयदेव जयदेव ॥ २ ॥

नृत्य करै नारायन वृंदावन, घुघरड़ी घमकै,
प्रभु घुघरड़ी घमकै ।
नाचै राधा माधव, पायल तां ठम-ठमकै । जयदेव जयदेव ॥ ३ ॥

घम घम घम घुघरड़ी घमकै, ताल पखाल बाजै,
प्रभु ताल पखाल बाजै ।
सुन्दर स्वर छै मधुरो, ऊँचै स्वर गाजै । जयदेव जयदेव ॥ ४ ॥

ताता थेई ताता थेई, सबद थाय आजै,
प्रभु सबद थाय आजै ।
नूपुर पांव विराजित, कौस्तुभमणि राजै । जयदेव जयदेव ॥ ५ ॥

ऊँचे स्वर गाजै गिरवरधारी, ऊँचै स्वर गाजै,
प्रभु ऊँचे स्वर गाजै ।
मनमोहन री शोभा, मनमथ बहु लाजै । जयदेव जयदेव ॥ ६ ॥

रास रच्यौ वृन्दावन, जोवा नै जईये,
प्रभु जोवा नै जईये ।
माधव मुख निरखी नैं, नरसैं दीवड़ियो लईये । जयदेव जयदेव ॥ ७ ॥+

+ नरसिंह मेहता कृत 'काव्यसंग्रह' में यह पद गुजराती स्वरूप में पृ० ४६८ पर पाया जाता है ।

छबीला सांवरिया

(पद)

छबीला सांवलिया रे वाला, मोहि दरसण देतो जा । (टेक)
दरसण देतो जा छबिला, मान हमारी वात ।
हम बुलाया तुम नहीं आया, आया किम परभात ? ॥ १ ॥
कालद्री नै रुडे काठि, हम घडूला भरस्यां ।
तिहां ठाडो रहे नदलाला, तनड़ा री वाता करस्यां ॥ २ ॥+
वृन्दावन की कुंज गलन मैं, मधुरी सू बीन वजाजा ।
नरसैं नो सांमी सांवरीयो, हरख हरख गुण गाजां ॥ ३ ॥

महीड़ो विसर गई

(पद)

महीड़ो विसर गई, कोई लै-लो कोई कान(कान्ह) रे ।
धरनींधर सू लागो मारो ध्यान रे ॥ (टेक)
वेचत गुजरी चलिसि रे वजार रे ।
सांमा मिलिया कृष्ण मोरार रे ॥ १ ॥
लोक कहै गुजरी बावरी थई रे ।
वेचत कान वाके माथे मही रे ॥ २ ॥
सेस सहस मुख पार न पावे ।
सो कांनो क्यूं मोल विकाये रे ? ॥ ३ ॥
पाव पाताल, सीस उनरा असमान रे ।
सो कांनो क्यूं आवै, मटको मांय रे ॥ ४ ॥
नरसीं मुंथा रो सांमी सधीर रे ।
आंप सरीखा वाले कीधा छै, अहीर रे ॥ ५ ॥

+ पाठांतर : (२) "कालंद्री जमना रे कांठे, हम घड़ोला भरस्यां ।
ठाड़ो रहे नंदजी रा लाला, तनड़ा री वातां करस्यां ॥"

मनड़ो

(पद)

आज म्हारो मनड़ो घणो छै राजी ।
सखी साहेली सुणौ माहारी हेली भक्ति करां मैं ताजी ॥ १ ॥
सांवरिया से प्रीति करतां, लोक बचनें ना लाजी ॥ २ ॥
नरसी नौ स्वामी सांवरीयो, मनड़ा री भ्रमणा भाजी ॥ ३ ॥

खोजत मदन गोपाल*

(राग : सामेरी)

साखी : कुंज-भवन खोजती प्रीते रे, खोजत मदनगोपाल ।
प्राणनाथ पावे नहिं तातें, व्याकुल भइ व्रजबाल ॥

चाल : चालता ते व्याकुल भइ व्रजबाला, ढुंढती फिरे श्याम तमाला ।
जाय बूझत चंपक जाइ, काहु देखो नन्दजी को राइ ॥

साखी : पीय संग एकान्त रस, विलसत राधा नार ।
कंध चढावन को कहो, तातें तजि गये जु मौरार ॥

चाल : तातें तजि गये जु मोरारी, लाल आय संग ते टारी ।
त्यां ओर सखी सब आई, क्याहू देख्यो मोहन राइ ।
मैं तो मान कियो मोरी बाइ, तातें तजि गये कनाइ ॥

साखी : कृष्ण चरित्र गोपी करे, बिलसे राधा नार ।
× × × × ॥
एक भई त्यां पूतना, एक भइ जु गोपाल लाल ।
एक भइ जु गोपाल लाल री, तेणे मारी पूतना काल ॥

---

* 'रास-सहस्रपदी' का पद : ११६ ।

चाल : एक भेष मुकुंद को कीनो, तेणे तृणावत हरि लीनो ।
एक भेष दामोदर धारी, तेणे जमला-अर्जुन तारी ॥

साखी : प्रेम प्रीत हरि जानि के, आये उनके पास ।
मुदित भई त्यां भामिनी, गुन गावै नरसैयो दास ॥

हरिजन मिलज्यो

(पद)

मिले तो हरिजन मिलज्यो रे, दुरिजन दूर टलीजो रे । (टेक)

हरिजन मिलते हरि मिले, राखैं राम हजूर ।
दुरजन मिल्यां दुःख उपजै, वांरे एक कपट प्रभु दूर ॥ १ ॥+
हरिजन नैड़ा राखिये रे, दोष नैणां आगे ।
दुरिजन दूरी टालज्यो, म्हाँनै कौवच ज्यूं लागे ॥ २ ॥
हरिजन आवत देख कर, हसत अम्हारी देह ।
माया का ग्रह ऊतर्या रे, म्हारे नैणां इदक सनेह ॥ ३ ॥
धिन गोकुल धिन मथुरा नगरी, धिन जसोदा माय ।
नरसी सुथारो स्वामी सांवरीयो, रम रह्यो हिवड़ां मांय ॥ ४ ॥

झूला

(पद)

हांरे अम्है सखे-सखी जोड़, हां रे झूलें हींडोलै बाला ।
झूलै छे राधाजी पियारां, झुलावै कांनड़ तो काला ॥ १ ॥
सखी मिल घालै घूमड़ियाँ, राधा संग शामलियो झूलै ।
कर जोड़ि नरसीनो कहे छै, मुगति बारणियूं खुलै ॥ २ ॥

+ पाठांतर : (१) "हरिजन मिलीयां हरि मीले, राखे राम हजूर ।
दुरजन मिलीयां दुःख उपजे, वां रे एक कपट दूजो दूर ॥"

म्हांरे घरे आज्यो

(पद)

म्हांरे घरे आज्यो, करस्यां गोठड़ो रे गिरधर सांवरिया । (टेक)

थांरे समान म्हारे कोई नहीं रे बाला, नर नारी सम जोय ।
माणस रो तोटो नहीं रे बाला, मन मेलु कोई होय ॥ १ ॥

मैं जाण्यु हरि लोडस्यां रे, प्रेम तणी कर पोट ।
आपण-पौ भारी भयो, तन भयो लोटा-लोट ॥ २ ॥+

प्रेम पियारा तम्हे रामजी, मा(म्हां) में सारा खोट ।
नरसीला नें राखज्यो रे वाला, चरण-कंवल की ओट ॥ ३ ॥

भक्ति पदारथ

(पद : राग प्रभात)

भूतल भक्ति-पदारथ मोटा, ब्रह्मलोक में नाहीं रै ।
पुण्य करि अमरापुर पाम्या, अंते चौरासी मांही रै ॥ भूतल० ॥ १ ॥

हरि-ना जन तो मुगति न मांगै, मांगै जनम-जनम अवतार रै ।
नित सेवा नित कीरतन उत्सव, निरखवा नंदकुमार रै ॥ भूतल० ॥ २ ॥

भरतखंड भूतल में जनमि, जिणै गोविन्दरा गुण गाया रै ।
धन-धन इनरा मात पिता नै, सुफल करी इणे काया रै ॥ भूतल० ॥ १ ॥

धन वृन्दावन धन ये लीला, धन ये व्रज नां वासी रै ।
अष्ट महा सिद्धि जिन के आंगणे ऊभी, मुगति उनरी दासी रै ॥ भूतल० ॥ ४ ॥

अे रस-नो स्वाद शंकर जाणै, कि जाणे सुक जोगी रै ।
कछुक जाणै ब्रजनी गोपी, भणै नरसीयो भोगी रै ॥ भूतल० ॥ ५ ॥×

+ पाठांतर : "आपणो भारी भयो, तन भयो लोट पोट ।"

× देखिये : 'नरसिंह मेहता कृत 'काव्यसंग्रह' पृ० ४६६ का गुजराती पद ।

हरि आयो

(पद)

रथ हांकण हरि आयो, मोरो रथ हांकण हरि आयो ।
लारे कमलाजी को लायो ॥ मोरो रथ० ॥(टेक)। १ ॥

दुवारिका थी दोरी आयो, हार मोरो दुवारिका थी दोरी आयो ।
लारे चटका पटका लायो ॥ मोरो रथ० ॥ २ ॥

भगतन की सार कुं आयो, हरि मोरो भगतन कुं काज धायो ।
नरसो नो स्वामी भाख्यौ, मुनै नरसीलो स्वामी भाख्यौ ।
प्रभु मोरो भगतन री भीरे आयो ॥ मोरो रथ० ॥ ३ ॥

नरसी मेहता के पदों की संक्षिप्त टीका

टिप्पणी—(   ) इस प्रकार के कोष्ठक में दिये गये अंक पद की कंडिका के सूचक हैं।

हारमाला के पद

पदांक १ : प्रार्थना— प्रारंभ की कुछ पंक्तियाँ गुजराती 'हारमाला' के पदांक १०५ से समानता रखती है। 'हारमाला' के परिशिष्ट के पदांक १६ की प्रथम पंक्ति का भाव दूसरी कंडिका में आता है, परन्तु यह पद स्वतन्त्र है।

(१) सार=सहाय। (२) ताल कूटियो=ताल पखावज बजा कर भजन करने वाला। (३) लिछमीनाथ=लक्ष्मीनाथ। (४) इस कंडिका में कुंवरी(नानी) बाई की ससुराल वालों ने नरसीजी को स्नान के लिये अति उष्ण जल दिया था उसका उल्लेख है जिसे ठंडा करने के लिये श्रीहरि ने द्वादशमेघ द्वारा जल-वर्षा की थी, ऐसी जनश्रुति प्रचलित है। (५) सेवग=सेवक। (६) मामेरो=माहेरो। ईडो चढाईयो=श्रेष्ठता स्थापित की।

पदांक २ : नाथ न आयौ— गुजराती 'हारमाला' के पदांक ८५ के साथ तुलना करने पर इस हिन्दी पद का पाठ सुश्लिष्ट लगता है। इस पद के पाठ से गुजराती पद की चौथी पंक्ति के अर्थ की अस्पष्टता दूर हो जाती है।

(२) षो(खो)ड़=दोष, त्रुटि। (३) गांठी=जेब में। (४) बल=राजा बलि। (५) साम नी समर मैं रह्यो' इस पाठ के स्थान पर गुजराती में 'तमो राधाजी शुं रंगे रमो' ऐसा पाठ है। इससे ज्ञात होता है कि शुद्ध पाठ 'सामा नी संग रमै रह्यो' इस प्रकार का होना चाहिये। (६) मंडली=मांडलिक राजा।

पदांक ३ : उपालंभ— यह पद महत्व का है। इस विभाग के पदांक १४ के साथ इसकी तुलना करनी आवश्यक है। नरसी मेहता मराठी भाषा से परिचित थे ऐसा अनुमान इन पदों से हो सकता है। (१) चौथी पंक्ति अस्पष्ट है। असुर=विलंब। हारड़ो=पुष्पमाला। (३) 'नागरा माटें स्युं ये हर वाही' के स्थान पर 'नागरा माटें स्युं बेपरवाही' ऐसा पाठ संभावित हैं। नागर=नरसीजी।

पदांक ४ : वाचा पाली—(१) दातण करवा वेला=प्रात:काल, दंतमंजन् एवं स्नानादिक का समय। वाच पाली=वचन का पालन किया।

पदांक ५ : गलनी माला०— (१) गलनी=कंठ की।

पदांक ६ : औट परी— (२) अघपूर=पाप से भरी। (४) औट परी=गांठ पड़ी।

पदांक ७ : ते किम०— भगवा=हे भगवे वस्त्र पहनने वाले सन्यासी। 'हारमाला' में नरसीजी का सन्यासी के साथ संवाद होता है उस प्रसंग का यह पद है।

पदांक ८ : सन्यासी को०— (१) खिण=क्षण। अमे=हम। छांवै=छैयै (हैं)। (२) भीवड़ो=भीम नाम का सन्यासी। (३) सुक=शुकदेव।

पदांक ९ : पत राखो— (१) पत=प्रतिज्ञा, लज्जा (टेक)। (२) पष=पंख, पक्ष (भरोसो)। (३) सुष का=सुख का। अरधंग्या=अर्द्धाङ्गना।

पदांक १० : सार किजै— (१) आमला=रीस, आक्रोश। (४) पतीज=लज्जा, प्रतिष्ठा। नवि=नहीं। (५) हार आल्या विना=पुष्पमाला दिये बिना।

पदांक ११ : नागरिया से०— रतना खाती कृत माहेरो में भी इस पद का बहुत अंश कुछ पाठभेद से मिलता है। (देखिये पंचम प्रकाश)। (१) मना=मन से। (७) घाबलिया रो=घाघरे का या लहँगे का। (८) अैंठा चूंठा=भूंठा (वह वस्तु-भाग जो खाने-पीने के बाद में शेष रह गया हो)।

पदांक १२ : थारा नाम रो०— (३) चकरवरती = चक्रवर्ती। साह=सहायता।

पदांक १३ : दरसण०—यह पद माहेरो की 'ग' प्रति में भी पाया जाता है। उसमें तीसरी कंडिका की प्रथम पंक्ति इस प्रकार है—

"ज्यो जस जाय राव रो प्रभुजी, मोकु दोष मत दिज्यौजी।"

पदांक १४ : मराठी पद— सारा पद मराठी (कोंकणी) भाषा में है। पाठकों की सुविधा के लिये पुनरावर्त्तन होते हुए भी यह सारा पद दिया गया है। पद की भाषा को जो मराठी का स्वरूप मिला है, यह नरसीजी कृत है या अन्य भक्तजन कृत है, यह प्रश्न विचारणीय है।

पदांक १५ : करज्यौ— (१) विप्र विहाई पठाय = राजस्थानी माहेरो के अनुसार जब मांडलिक राजा नरसीजी की कसौटी के लिये हार का प्रसंग उपस्थित करता है, तब नरसीजी के विहाई (समधी) द्वारा प्रेषित विप्र नरसीजी के घर आया हुआ है। उसका उल्लेख उक्त नरसी-वचन में मिलना है।

पदांक १६ : भावनौ भूकौ— आश्चर्य की बात है कि यह पद कुछ पाठ और क्रम-भेद के साथ मीरां के नाम से भी उल्लिखित है—

"भावना को भूखो सांवरो, म्हारो भावना को भूखो। टेर।
शवरी के बोर सुदामा के तंदूल, भर-भर मूठ्यां टूंको ॥ १ ॥
दुर्योधन का मेवा त्यागा, साग विदुर घर लूखो ॥ २ ॥
करमा के घर खीच आरोग्यो, लूखो गण्यो नहीं सूखो ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भजन विना नर फीको ॥ ४ ॥"

—मीरां वृहत्पदावली (प्रथम भाग)

माहेरो के पद

पदांक १ : भरोजी माहेरो— यह पद रतना खाती कृत माहेरो में नरसीजी की उक्ति के रूप में दिया गया है। (पंचम प्रकाश) यह स्वतंत्र रूप से भी गाया जाता है। कलकत्ता से प्रकाशित भजनसागर में भी उसका पाठ प्रकारान्तर से छपा हुआ मिलता हैं।

(३) माला दीनी=मांडलिक राजा द्वारा की गई नरसी की परीक्षा के समय भगवान ने अपने कंठ की माला नरसीजी को दे दी। हुण्डी दई छै सीकेर= नरसीजी ने साधुओं से द्रव्य लेकर द्वारिका सांवलशाह के नाम की हुण्डी लिख कर दे दी थी। सांवलशाह ने द्वारिका में प्रकट् होकर भक्त की हुण्डी को स्वीकार कर साधुओं को नकद द्रव्य-राशि चुका दी थी। (५) बिलमाये = प्रेम में फंसा कर विलंब कराती है।

पदांक २ : भरोसो— यह पद भी रतना कृत माहेरो में मिलता है। (३) उवार्यो=उठा लिया, कष्ट से मुक्त कर दिया। टेर्यो=स्तुति की।

पदांक ३ : सांवरिया से०— भात-भरण = माहेरो भरना। बिरियां= समय। (२) खाली आयो=रिक्त हाथ से आया, कुछ नहीं लाया। व्याह-सगा= समधी व उसके कुटुम्बी।

पदांक ४ : कहां लगाई— इस पद का कुछ अंश पाठ-भेद से प्रयाग से प्रकाशित 'संतवाणी संग्रह' में भी पाया जाता है। यह पद वसंत कृत माहेरो से लिया है।

(१) टेराँ=स्तुति करें, वुलावें। टेर=प्रार्थना, स्तुति। (४) शिवर=शिव का।

पदांक ५ : नाथ थांनें०— (१) कीर=तोता। (५) छिनका=तिरस्कार के अर्थ में।

पदांक ६ : म्हांरा नटवर०— माहेरो का यह पद हारमाला के पदांक ११ के साथ तुलनीय है। यहां भी नरसीजी भक्तवत्सल भगवान को कटु भाषा में उपालंभ दे रहे हैं। भाव और पाठ में यत्र-तत्र समानता होते हुए भी दोनों पद पृथक् हैं।

(६) संक=शंका। (६) वोर=वेर।

पदांक ७ : कर लो०—(१) न्हांटो=चला गया, बैठ गया। (३) चीटोकड़ी=लालची, स्वादू। (४) तें ढलवाह्यो नी भाटो=तूंने ढेला और पत्थर भी नहीं फेंका अर्थात् मेरी सुनवाई भी नहीं की। (५) खोल कान को दाटो=कान का पर्दा खोल कर मेरी विनती सुन ले। (६) सिवरूं=स्मरण करूं। आटो-साटो=प्रत्यावर्त्तन करना। (वस्तु के वदले वस्तु लेना) खाटो=उपार्जन करो।

पदांक ८ : कापड़ो — (१) मांमेरो = माहेरो। वले = और, फिर। (४) वारी-वार=वारम्वार। आग्यां=आज्ञा।

सांवलशाह माहेरो भर कर विदा होते हैं। वाद में नानीवाई पिता-नरसीजी के पास आकर नँणद की नँणद के लिये कपड़ा माँगती है। यह प्रसंग इस पद का विषय वना है।

पदांक ६ और १०— नरसीजी की स्तुति के पद हैं। ११ वां पद पदांक ४ का भाव प्रकारान्तर से व्यक्त करता है। १२वें पद की भाषा और भाव देखकर मीरां का स्मरण होता है।

पदांक १३ : हरि आवन०— माहेरो की 'ग' प्रति में यह पद पाया जाता है। (१) वेर=वेला, समय।

पदांक १४ : तरछन०— (१) दरस=दर्शन। तरछन लाग्यो=तृषातुर भये। (३) टैल=देर। (४) वैन=वचन, स्तुति।

पदांक १५ : सांवल की० (१) बोहोरियो=वोहरा, लेन-देन करने वाला। हम पद गान फरा=हम पद गाते फिरते हैं। (४) झगरा=लड़ाई।

पदांक १६ : शरणागत— (१) थार=तुम्हारे। (३) पुरी सुदामा= सुदामापुरी। नानी वाई का श्वसुर-गृह कुछ राजस्थानी माहेरों में सुदामापुरी बताया गया है, परन्तु रतना खाती ने अंजार बताया है।

पदांक १७ : कागद— इस पद में भी नरसीजी भगवान को माहेरो भरने के लिये सुदामापुरी में पधारने हेतु कहते हैं। यह पद १६वें पद का ही पाठांतर है।

शृंगार के पद

पदांक १ : स्वप्न— (१) वीनी=वेणी। चूड़ी=चूड़ियों का समूह। भाऊ छूं रूडी=शोभा पाती हूँ। (३) सुनो री=सुनिये। मंदर=मंदिर में।

पदांक २ : नेंण संवार्या—प्रियतम कृष्ण पर विजय पाने के लिये किये गये शृंगार आदि प्रसाधनों का रसमय वर्णन है। गुजराती स्वरूप में इस पद का प्रारम्भ इस प्रकार है—

"नयण समारूं महारा, वालाजी ने काजे।
कांइ नीलवट टीलड़ी, हुं करूं रे कुमकूमची ॥"

(१) टीलोरी=तिलक। (२) कसनवाला=कंचुकी की डोरी बांधने वाला। (३) भलेरो=अच्छा।

पदांक ३ : दरसणीयो०— (१) दरसणीयो=दर्शन। मिंदर=मंदिर में। (२) वोलड़ा=वचन। बांहलड़ी=हाथ, कर।

पदांक ४ : स्याम को०— इस पद के बीकानेर से अलग-अलग दो पाठ मिले हैं। अन्य नायिका के साथ विहार करके आये हुए प्रियतम को उपालंभ दिया जाता है।

(१) किह=कहाँ। ठेल=ठेलना, खटखटाना। (२) अधरज रेख= अधर की रेखा। भेष=वेष। (५) थोरी=थोड़ी, स्वल्प।

पदांक ५ : न जावां०—(१) पानीड़ै=पानी भरने के लिये। (२) जाइने जोईने = जान बूझ कर। बिकड़ा = जल के छींटे। जसमत = यशोदा। (३) करड़ो=कठोर।

पदांक ६ : गलै वाहड़ी०— इस पद में संकेत-स्थान वताया जाता है। कृष्ण की श्यामता पर भी कटाक्ष किया गया है।

(१) ऐंवे=ग्रैसे। वोलड़े=टीकात्मक वचनों से। (२) करस्यां=करेंगे। (३) माणस माहिथी टलीयै=काले (श्याम) कृष्ण के सम्पर्क से श्याम-वर्ण हो जाने का निर्देश है। (४) मो=मेरे।

पदांक ७ : म करिश्य०— इस पद की यह पंक्ति बड़ी मनोहर है—

"नथी ग्राऊँ ग्राणंदघन देवा, था संग थाऊँ काली रे।"

गौरांगना गोपी कहती है : 'हे कृष्ण, मैं तेरे पास नहीं ग्राऊँगी। तेरे श्याम-वर्ण के स्पर्श से मेरा वर्ण भी श्याम वन जायगा।' कैसा मधुर विनोदपूर्ण कटाक्ष है ?

गुजरात के प्रेम-भक्ति के कवि दयाराम ने इस विनोद का माधुर्य ग्रौर भी वढ़ा दिया है—

"श्याम रंग समीपे न जावुं, मारे ग्राज थकी श्याम रंग समीपे न जावुं। (टेक)
जेमां कालाश ते सहु एक सरखुं, सरवमां कपट हशे ग्रावुं। मारे०
कस्तूरी नी विन्दी ते करूं नहीं, काजल ना ग्रांखमां ग्रंजावुं। मारे०
कोकिला नो शब्द सूणुं नहीं, कागवाणी शकुन मां न लावुं। मारे०
नीलांवर काली कंचुकी ना पहेरूं, जमना ना नीरमां न न्हावुं। मारे०
मरकट-मणि ने मेघ दृष्टे न जोवा, जांवू वंत्याक ना खावुं। मारे०
दया ना प्रीतम साथे मुखे नीम लीधो, पण मन कहे जे पलक न निभावुं। मारे०'

—[प्राचीन काव्य-मंजरी, पृ० ४००]

पदांक ८ : कान०— (१) कामणगारो = जादू-टोना से वश में करने वाला। (२) ग्रोलंभो=उपालंभ। (३) पीत=प्रीति।

पदांक ९। घेली गोपिका— इस पद में नरसीजी का गोपी-भाव सरल ग्रौर भाव-प्रचुर शव्दों में प्रकट् होता है। ग्रंत में ग्रपना श्वास-प्राण प्रियतम कृष्ण को सौंप दिया जाता है। (२) फोक=निरर्थक।

पदांक १० : राधाजी ना०— (१) वगेला=ग्रलगा, दूर। मंदरे मंदरे= ग्रन्य रमणियों के भवनों में। (४) त्रिपत=तृप्त।

पदांक ११ : जोग भोग०— 'नरसी मेहतानां पद' (गुजराती) में इस पद का प्रारम्भ इस तरह पाठांतर-भेद से होता है—

"नहीं दियु' शांइ लेवा, अधर-रस पीवा।
कुचफल ग्रे'हवा, नंद तणा नानड़िया वाला, कां लंपट एवा"

(१) साइ लेवा=ग्रहण करने के अर्थ में। (२) कवा=कड़वापन, दोष। रो= रहिये। (३) विसु=विश्व।

पदांक १२ : मारी भूख०— (१) भागी=दूर हुई। (२) मरकलड़ै= स्मित से। (४) जीवनी=जीव की, हृदय की।

पदांक १३ : सोकलड़ी— सौत की विदग्ध-चातुर्य का अपूर्व वर्णन इस पद में पाया जाता है। सौत अशक्य बातें भी सिद्ध कर सकती है। जैसे कि—

"पांणी में पावक जालै, तेल सु' बुझावै रे।
कागदा नी नाव करै नैं, सिन्धु में तरावै रे।" इत्यादि।

इस तरह के उलट-पलट विधानों से जीवात्मा और परमात्मा के विषय में अनेक गहन अर्थ निकालने की परिपाटी-परम्परा, सन्त-साहित्य में चली आती है।

वाक्यार्थ से उल्टा अर्थ सूचित करने वाली इस तरह की गूढ़ वाणी गुजराती सन्तों के पदों में और कबीर के पदों में भी पाई जाती है। देखिये—

"तंग भिड़े असवार नें तोरी, ढोलि नें ढोल बजावै।
पुस्तक बेसि पुराणी नें वांचै, खेडुत ने बीज वावै॥
बिन्दु मांहि सिन्धु समावै, आ दशा सद्गुरु थकि आवै॥"

—ऋषिराज (नीति बोध चिंतामणि)

तथा

"पहले पूत पीछे रे माइ, गुरु लागै चेले के पाइ।
एक अचरज तुम देखो भाई, देखत सिंह चरावत गाई॥
जल की मछली तरवर बिआई, देखत कुत्ता ले गई बिलाई।
तले रे डाली उपर मूला, तिसके पेट लगा फूल-फूला॥
घोड़े चढ़ भेंस चरावन जाइ, बाहर बेल गोन घर आइ।
कहत कबीर जो इस पद बुझै, राम रमत ये सब कुछ सुझै॥"

(३) बालुड़ानी=रेत की।

पदांक १४ : प्रेमरस— भीवड़ो=भीम सन्यासी। हारमाला के प्रसंग में नरसीजी का भीम सन्यासी के साथ वाद-विवाद होता है। (२) तिरसी= तरेगा। (३) सुक=शुकदेवजी।

पदांक १५ : अमृत पीधूँ— इस पद में गोपी की कृष्ण के साथ क्रीड़ा-विहार का सांगोपांग उल्लेख है।
(२) भेटिला=पकड़ लिया। (३) मझली रजनी=मध्य रात्रि।

पदांक १६ : कानुड़ा०— पहली कंडिका का पाठ अस्पष्ट है।
(३) ऊँठ=ऊँट। (४) 'भली कहौ कोऊ बुरी कहौ मैं..........।' इस तरह का पाठ होना चाहिये।

पदांक १७ : गिरधरिया०— (१) गमांनी = स्वाभिमानी। दुरजण= दुर्जन। (२) धी=लड़की। (३) माहूवो=कृष्ण। सेवग=सेवक। (४) सगा-सेण=सगा संबंधी।

पदांक १८ : संकेत— (१) सहीयडो = सखियाँ। हेल=पानी भरने के लिये। (२) वैली=आगे से। (३) सोझा=प्रिय, महँगा। साजण= प्रियतम के अर्थ में प्रयुक्त।

पदांक १९ : धूतारो — इस पद में धृष्ट नायक का वर्णन पाया जाता है। नायक झूठा, कपटकला-पटु है, ऐसा नायिका का कथन है। कृष्ण की कपटवाणी की परीक्षा के लिये ताते (उष्ण) तेल में नहाने की बात भी की गई है। दूसरी कंडिका का अर्थ कुछ अस्पष्ट रहता है।
(३) वेसास=विश्वास। जुवा=अलग।

पदांक २० : छांनौ सोंनौ— गुजराती पद में पद की आठ पंक्तियाँ हैं। उत्तरार्ध का भाव और कथन भी भिन्न स्वरूप का है।
(२) नातें=नाद से। (३) अहीरड़ा=गोपाल, ग्वाला।

पदांक २१ : राधा पाणी०— (२) बिड्लौ=जल भरने का पात्र विशेष बिलगणी=दक्ष। (४) पीतौ=प्रीति।

पदांक २५ : मन मानंता०— नायिका मन-भाते (स्वेच्छानुसार) मोती मंगवाती है। द्वारिका का मोती यहां प्रेम का प्रतीक बनता है।

(२) संदौसो=संदेश। (३) धाड़ाना=दिवसों से। (४) झांझणीयौ=झांझर, पायल।

पदांक २७ : कामरण०—(१) सेम=शपथ, कसम। (३) अंष(ख)ड़ी=आँख।

पदांक २८ : हरि बिन०— गुजराती पद के साथ तुलना करने पर चौथी कंडिका की पहली पंक्ति का पाठ इस तरह लेना उचित्त लगता है— "महू वाहूँ तारै दधि मीस नीसरी रे,………………।"

(४) महू=मुरली। वाहूँ = बजाने पर। मिस=निमित्त। आवागमण (आवागमन)=जन्म-मरण का चक्र।

पदांक ३१ : खंडिता०— क्रीडा के अंत में आलस्य भरी सुन्दरी का वर्णन दिया गया है। नरसीजी की रस-शास्त्र की जानकारी इस पद से प्रकट् होती है। परन्तु, यह पद नरसी मेहता का होगा या नहीं, यह कहना कठिन है।

(४) कंचुकी कसन=कंचुकी के बन्धन। (५) खिण=क्षण।

पदांक ३२ : हरखे०—पद त्रुटित मिला है, परन्तु भाव स्पष्ट प्रतीत होते हैं। छठी कंडिका की पहली पंक्ति का उत्तरार्ध का पाठ इस तरह का होना चाहिये—"नटवर भेस बणाजी।" (५) मींदरीए=मंदिर में। बीचाई=बिछाई है।

पदांक ३६-३७ गोविन्दो०— इस पद की पहली पंक्ति मीरां के प्रसिद्ध पद 'गोविन्दो प्राण अम्हारो रे' के साथ समानता रखती है परन्तु, शेष भाग केवल भिन्न स्वरूप का ही है।

(१) कल ना परे=चैन नहीं पड़ता। (३) खुवी रहा=अंकित हो गया।

पदांक ३९ : किम०— (५) 'हिरणीं आयथी' के स्थान पर 'हिरणी आंथमी' ऐसा पाठ चाहिये। पद-टीका में दिया गया यह पाठ गुजरात के लोक-गीतों में भी प्रयुक्त होता है। देखिये-"वीरा, चांदलियो उग्यो ने हरणी आंथमी रे।"

पदांक ४९ : सांवलिया०— सांवलिया से मेहताजी की प्रगाढ़ प्रीति का वर्णन इस पद में मिलता है।

(२) गल=कंठ में। (३) पासी=प्यासी। (५) हरामी=दुर्जन, दोष ही देखने वाले।

पदांक ५१ : माला०— यह एक अनोखा पद है। विहार के समय कृष्ण के पास रह गई माला के प्रसंग में सासू और वहू के बीच रसमय संवाद होता है। दक्ष वहू माला लाने के निमित्त कृष्ण-मिलन का एक और मौका प्राप्त कर लेती है।

(२) मांडुडै = मंडप में। उलगांणी = रस्सी। कांहुड़ली = बाज पक्षी (?)।

पदांक ५२ : ईढ्रणी०— (१) दूसरी पंक्ति में 'कहां' के स्थान पर 'यहां' चाहिये। (२) भरे उछांटे=भरे उ छांटे। (६) दूबरी = दुर्बल, पतली। (७) खांन=खाने के लिये।

पदांक ५३ : मंदिर म्हारे०— इस पद की पहली पंक्ति पदांक ३२ और ३४ से शाब्दिक समानता रखती है परन्तु, यह एक स्वतन्त्र पद है।

(१) हलवैं=धीरे से। (४) छोकड़ली=सौत।

पदांक ५५ : जीवन प्राण०— (१) नीछा=नीचा। (२) सई= हैं।

पदांक ५६ : लीज्यो०— पद के अंतिम भाग का भावार्थ अस्पष्ट रहता है।

(१) लीज्यो महोला=हमारे महल (घर) पधारिये। (२) सुमरन टोप=स्मरण का टोप। (३) सेर धरो=श्रेय धारण करो। सरावनी=खाने का नाश्ता, जलपान।

पदांक ५७ : गुवालिया०—गुवालिया=गोप। इष(ख)ल वंदो तनी रे=तुझे यशोदा माता ने ऊखल के साथ बांधा था।

पदांक ५८ : वालांजी०— (१) वलगो=ग्रहण करो। (२) भामणडे जाऊँ=वारि जाऊँ। (३) ओरा=पास, समीप। छिन=थोड़ा-सा, क्षण। सुनर=सुन्दर।

पदांक ६० : दूधां मेह०— गुजराती पद में आठ पंक्तियां हैं। निम्नांकित दो पंक्तियाँ अधिक हैं—

"मसमसता मोहन घरे आव्या, लड़सड़ते डगले।
छूपी ने छोगाले छे तर्या, ज्यम मीन ने बगले॥"

पदांक ६१ : फुलि०— फुलि=नाक में पहिनने का पुष्पाकार अलंकार। गोपी सांवलिया से प्रेमभक्ति की फूली मांगती है।

(२) छांनी=गुप्त। द्योवस=दिवस। (३) नख=नाक। सइ समाणी=समवयस्क सखियां। महणा दे=हँसी करेंगी।

पदांक ६२ : नंद को लाल०— नंदलाल की 'मधुर मूर्ति' का लालित्यपूर्ण वर्णन दिया है। इस पद में जयदेवकृत 'गीत गोविंद' का लय और माधुर्य पाया जाता है। देखिये—

"धीर समीरे जमुना तीरे, बाजत वेणु रसाल।"

कवि जयदेव का उल्लेख नरसीजी के अनेक पदों में मिलता है। इससे आभास होता है कि नरसीजी 'गीत गोविंद' के प्रशंसक और पाठक रहे होंगे।

(२) अलक झलक मकराकृत कुंडल=अलक को झलक देने वाले मकराकार कुंडल। नागर=कृष्ण। (४) मोही मद गज चाल=मस्त हाथी के समान उसकी चाल देख कर मोह होता है।

भक्ति के पद

पदांक १ : रामजी भावै— "मने मारो रामजी भावे रे, बीजो मारी नजरे न आवे रे।" यह मीराँबाई की टेक की पंक्ति कुछ प्रकारान्तर से इस पद की प्रारंभ वाली पंक्ति बनी है।

(१) माहा को=मेरा। द्रोपता=द्रौपदी। (४) भभीषन=विभीषण।

पदांक ३ : ध्यान धर०— (१) बारनै=द्वार पर। (२) कंठलै=कंठ में। (३) वैंन=बांसुरी। (४) पौहप=पुष्प। वदावै=सत्कार करते हैं।

पदांक ५ : मत जोवो०— यह पद मीराँबाई के निम्मांकित गुजराती पद से काफी समानता बताता है –

"तूं तो तारा विरद सामुं जोई ले शामलिया।
नव जोजे करणी अमारी रे वहाला ॥ (टेक)

गजने काजे वहाला पेदल थाया । हां, हां, हां, हां,
द्रौपदीनां चीर वधार्यां रे वहाला ।। तु ं तो०

× × ×

मीरांवाई के प्रभु गिरधरना गुरण । हां, हां, हां, हां,
चरण कमल वलिहारी रे वहाला ।। तु ं तो०"

(१) विड़द=पद, पद्वी । श्रोगुनै भरिया = दोषों से भरा हुआ । (४) परतंग्या=प्रतिज्ञा, टेक । (५) श्रोथ=सहारा ।

पदांक ६ : ताकु ं तजीयै०— गुजराती में यह पद इस तरह शुरू होता है-

"नारायणनु ं नामज लेतां, वारे तेने तजिये रे ।
मनसा वाचा कर्मणा करी ने, लक्ष्मीवर ने भजिये रे ।।"

इसी भाव को प्रकट् करने वाला एक पद गोस्वामी तुलसीदासजी का भी पाया जाता है—

"जिनको प्रिय न राम वैदेही ।
तजिये ताहि कोटी वैरी सम, जद्यपि परम सनेही ।। १ ।।
तात मात भ्राता सुत पति हित, इन समान कोउ नाहीं ।
रघुपति विमुख जानि लघु तृण इव, तजन सुकृत डराहीं ।। २ ।।
तजेउ पिता प्रह्लाद विभीषन, वंधु भरत महतारी ।
वलि गुरु तजेउ कंत व्रजवनितन, भये जग मंगलकारी ।। ३ ।।"

भक्त कवि दयाराम ने भी ऐसा ही कहा है—

"हरि ने भजतां रे, वारै तेने तरत तजो ।
अति रति आणी रे, श्री राधावर ने भजो ।।

× × ×

जननी भरत, जनक प्रल्हादे, तजियो विभीषण भ्रात ।
उग्रसेन सुत, पति ऋषिपत्नी, वलिए गुरु साक्षात ।।"

(१) सीवरण=स्मरण । (२) सेत=सुत । (३) वलंभ=प्यारा ।

पदांक ७ : म्हांनै पार०— मीरांबाई ने भी कहा है—
"हरि मने पार उतार, नमी नमी विनति करु ं छु ं ।"

इस पद का लय सूरदास का स्मरण कराता है।

(१) अवगुन=दोष। (२) सरन=शरण।

पदांक ६ : आजनी०— (१) रलिआवणी = मंगलकारी। साखिया = स्वस्तिक, साथिया। (४) खम्भ=स्तम्भ। नारेलां=श्रीफल।

पदांक १० : राम-भजन— (१) चोगड़ीयो=मंगल कलश। (२) बायर =वाहर। (३) चोहटड़े=चौमुखे बाजार में। रोड़ां=ईंट-पत्थर का भंडार।

पदांक १२ : हरि पूजा— (१) आवतड़ा पर = आगमन के समय। भावणीया लेवुं = वारि जाऊँ। (२) चवक = चौक। नवछावरे वारूं = निछावर करूं।

पदांक १५ : भक्ति नी०— (१) विणसे=व्यर्थ होंगे। (२) राह= राहु। (३) चत्रविधा मुक्ति=चार प्रकार की मुक्ति :—सायुज्य, सामीप्य, सारुप्य और सालोक्य।

पदांक १८ : भूधरियो—(१) भाहेलो=भ्रात, मित्र। (२) दुहेलो=दुर्लभ। (२) दालिद=दरिद्रता। (३) चारि पदारथ=धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

पदांक २१ : थारे वैकुंठ०— वृन्दावनीय भक्ति-भाव की पराकाष्ठा दिखाने वाले इस पद का भक्त कवि दयाराम ने भी कुछ अनुकरण किया है—

"व्रज वहालुं रे वैकुंठ नहि आवुं, मने न गमे चतुर्भुज थावुं।
त्यांहां श्री नंदकुंवर क्यां हां थी लावुं ? व्रज वहालुं रे० ॥ १ ॥"

—प्राचीन काव्यमंजरी, पृ० ४०७

(७) निगम=वेद, धर्मशास्त्र। नेति=वेदान्त में ब्रह्म के अगम्य स्वरूप को गहन मान कर 'नेति, नेति' 'इतना ही नहीं' कहा गया है।

पदांक २२ : हरि भजन०— (१) वासड़ियां = निवास। ज्यम=यम। (२) सरवन की बांबड़ियां = सुनने के छिद्र। मोहन की = मोह की। (३) कांसड़ियाँ=खासड़ियां, जूता। (५) बोज्यां मारी मावड़ली=माता के गर्भ में निरर्थक भाररूप ही बना रहा। मासड़ियाँ=महीने।

पदांक २३ : थारा नांव०— इस पद के प्रारंभ का कुछ अंश हारमाला के

पदांक १२ के साथ समानता दिखलाता है। परन्तु, दूसरी कंडिका से स्वतंत्र पद वन जाता है।

(१) लुकठी=लुच्चा।

पदांक २५ : राधावर०— भक्ति और वैराग्य से भरा हुआ यह पद नरसी के सच्चे उद्‌गारों का दर्शन कराता है।

(१) दुरजणिया=दुर्जन लोग। (२) नेहड़ो=स्नेह, प्रीति। (३) भुजगरो=सर्प को। गह्यौ=ग्रहण किया।

पदांक २६ : वनरावन०— इस पद में वृन्दावन की प्रेममयी साकार भक्ति का एक सुन्दर चित्रण अंकित हुआ है।

(१) निरत=नृत्य। (३) माधो=माधव, कृष्ण। हिवड़ा=हृदय।

पदांक २७ : मैं संतन०— (१) मन मार लिया=मन को जीत लिया। भरम=भ्रम, मोह। नूर=संयम का प्रकाश, तेज।

पदांक २८ : भगत०— इस पद-पाठ के निर्धारण में दो राजस्थानी पदों से चुनाव किया गया है। भक्तवत्सल भगवान की उक्ति के रूप में यह पद वना है।

(३) गढवालो=गढ़पति। हजाम=नाई। (७) ध्यावना=ध्यान, भक्ति।

बाल लीला के पद

पदांक १ : ओलंभड़ो—ओलंभड़ो=ओलंभा, शिकायत। (१) वलण=दधिमंथन की क्रिया। पसून=पशुओं को। वन नैं=वन में।

पदांक ३ : कुंवर नै०— (१) काला=लाडला बालक, दुलारा। वारौ=निषेध करो। कान्हड़=वाल कृष्ण। (३) दा'डी=दिनो दिन।

दाण लीला के पद

[दाण-दान=राज की ओर से लिया जाने वाला एक कर है। पदार्थों की यातायात पर यह कर लिया जाता है। वालकृष्ण ने दधि वेचने के लिये जाती हुई गोपियों से कर मांगा। कर के निमित्त दधि खाया और गोपियों के साथ वन में मधुर लीला की। इस लीला को 'दाणलीला' कहते हैं।]

पदांक १ : ऊभौ० — (१) गुवालीड़ा = ग्वाल। आण = दुहाई। गिरासीयो=गिरासदार, राजा। (३) अवला=उलटा।

पदांक २ : ठगारा— (१) ठगोरा = ठगने वाला। पाधरी = सीधी। (२) घोटा=पुत्र। (४) वृजभांम=वृज की गोपियां। (५) चांकरनी=दासी।

पदांक ३ : कांकरड़ी०— (१) कांकरड़ी = कंकड़। गागड़ली = गगरी, घड़ा। आकड़ आकड़=अकड़-अकड़ कर। (२) बांखड़ली=दूध न देने वाली। (३) मारे थापलड़ी=थप्पड़ मारेगा। (४) सांकड़ली=शर्करा।

पदांक ६ : गोपीनाथ०— (१) जगात वारा=वस्तु-शुल्क लेने वाले। छाड़ै=छेड़ता है। (५) जिणा=जिसका।

पदांक ७ : गोपी०— (२) अभमांन=गर्व। (३) संगाती=साथ वाले। बापड़ो=बेचारा।

वसंत-होली के पद

पदांक १ : वसंत०— (१) मुधि=मध्य में। (२) फाग=वसंतोत्सव का नृत्य। फगवा=फाग का उपहार। (४) भामरयोरी=भामिनियां।

पदांक २ : होली— (१) रलसाली=रसिक स्त्रियाँ। धावलियालि= रंग लेकर दौड़ती हुई। (२) वांहे=पीछे। वाहै=बजावे।

प्रकीर्ण पद

पदांक २ : सुदामा के चावल— (१) भायलौ=मित्र। छिन=क्षण। निहाल=समृद्ध, धनवान करने के अर्थ में। (२) पोसाल=पाठशाला। (३) उसात =उत्साह। (४) पेंड=पद, कदम। (५) टमरी=पर्णकुटी।

पदांक ३ : धरम की०— (१) पतिवरता=पतिव्रता। सेवाई=सिलाई। (३) हरदय=हृदय ('हरदम' शब्द भी हो सकता है।)

पदांक ४ : ताली लागी०— (१) उरात=उष्ण, दोष। समंद=समुद्र। (३) विणजूं नहीं=व्यापार नहीं करूं। भार=बोझ। दाया न आवै=मन को नहीं भावे। हाली माली जाचां नहीं=मैं छोटे आदमियों से याचना नहीं करूंगा।

पदांक ५ : सुख दुःख०— इस पद का, गुजराती पाठ गुजरात में लोकप्रिय बना है। गुजराती में यह कड़ी भी पाई जाती है—

"शिवजी सरखा सत्ता नहीं, जेनी पार्वती राणी।
भोलवाया भीलड़ी थकी, तपमां खामी गणाणी॥"

पृष्ठ	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
२७	१६	परमान ॥ ४५ ।	परमान ४५ (अ)
२७	२२	४५	४५ (अ)
२८	(पंक्ति १४ के बाद)	मिथुला वाच ।	मिथुला वाचः-
३४	६	बोल-चाल की भाषा राजस्थानी ।	राजस्थानी बोल-चाल की भाषा ।
३५	१३-१४	बखतावर का ।	बखतावर के ।
४३	७	खाई ।	वाई ।
४३	६	मेरे ।	भेजे ।
४३	६	गत ।	गैत ।
४३	१८	करी ।	कर्यो ।
४४	१६	करिया ।	करिवा ।
४६	१३	कटिजोई ।	कटि जोई ।
४८	१५	वासि ।	वसि ।
४८	२१	अब ।	जब ।
४६	४	गुजराती ।	गुजरात ।
४६	१७	कवियों ने ।	कवियों ने-
४६	१८	विश्वनाथ ।	विश्वनाथ जानी ।
५०	अंतिम ।	मायड़ी ।	मावड़ी ।
५२	५	कांपड़ी ।	कां पड़ी ।
५२	११	घामणी ।	धामणी ।
५३	प्रथम ।	आमशं ।	आम शुं ।
५३	२	शेन ।	शे न ।
५३	६	हूवी ।	अेवी ।
५७	१६	छापल ।	छायल ।
५७	१७	घट ।	घर ।
५७	१८	मोखी ।	मोरवी ।
५७	२१	पान नोशो ।	पाननो शो ।
५७	२४	घरे ।	घटे ।
५७	२५	म्हारे ।	म्हाँर ।

पृष्ठ	पंक्ति-संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
५७	अंतिम ।	सखाव्युं ।	लखाव्युं ।
५८	२१	समधान ।	समधन ।
५८	२२	संख्या पीपल ।	संख्या-पीपल ।
६०	२	मोसाल ।	मोसालु ।
६१	२३	रेज्या घर, की ।	रेज्या, घर की ।
६२	१६	वेराग्य ।	वैराग्य ।
६४	६	उमंग-उमग ।	उमंग-उमंग ।
६५	२	जोउ ।	जोऊँ ।
६५	२२	आनंद की रही ।	आनंद की सीमा न रही ।
६६	१४	नारित्व- ।	नारी का ।
६६	१७	लागे छै ।	लागै छै ।
७१	१	अथ ।	अर्थ ।
७१	६	अविषय ।	अतिशय ।
७२	१	महिबर ।	महियर ।
७२	२६	शब्न ।	शब्द ।
७३	७	वर-वधू ।	नव-वधू ।
७३	७	करते ।	करतो ।
७३	११	मायड़:- ।	मायड):–
७३	१६	पं० २५६ ।	पं० २६० ।
७४	प्रथम ।	मावठ ।	मावठा ।
७४	२१	खासवुं ।	खोसवुं ।
७५	३	गु. वेठ ।	गु० वेढ़ ।
७५	७	गु. अवळा): ।	(गु अवला): ।
७५	६	शणीयां. ।	शणीयां, ।
७६	प्रथम ।	पुरवणा ।	पुरवणी ।
७६	१०	वर पक्ष हेतु सत्कार भोजन।	वरपक्ष के सत्कार भोजन ।
७७	२२	(R. M. Munshi)	(K. M. Munshi)
७६	५	क्रिया ।	क्रिपा ।

(४) चोहटै=बाजार में। (६) विगूता=भटकते रहे।

पदांक ६ : उगारो०— (१) नुगरा=दुर्जन। (३) कतरणी राखै=मन में कपट रखना। (४) हामल नव भरिये=साक्षी नहीं देना।

पदांक ७ : बांसुरी— बालकृष्ण की प्रिय वंशी से गोपियाँ ईर्ष्या करती हैं और वंशी को फैंक देने का भी विचार करती हैं।

(१) अनमानीती = अप्रिय। मानीती = प्रिय। (४) सनेवट = स्नेह का सम्बन्ध।

पदांक ८ : हरिभजन०— (१) विरणस जायगा = नष्ट होगा। (२) थाणो=ठिकाना। (३) पयाणो=प्रयाण। (६) वेलू मांहि=मिट्टी में।

पदांक ६ : कीज्यो०— हार-प्रसंग में नरसी को तृषा लगती है। उस समय उनकी विनति सुन कर यदुराय पानी लेकर आते हैं। गुजराती में उक्त विषय का पद भी पाया जाता है।

पूरक पद

पदांक १ : आरती०— इस पद को हिन्दी भाषा के विद्वान् व्रज भाषा का पद मानते हैं। हमारे ख्याल से यह मूलरूपेण गुजराती का रूपान्तर है।

(३) पायल=नूपुर। (७) दीपड़ियो=दीपक।

पदांक ३ : महीड़ो०— इस भाव का मीरां बाई का भी एक मनोहर पद मिलता है—

"कोई श्याम मनोहर ल्यो रे।
सिर धरे मटुकियाँ डोले ।।
दधि को नांव विसर गई ग्वालन।
हरि ल्यो हरि ल्यो बोले ।।"

पदांक ६ : हरि०— (२) कौवच=कौंच की फली जिसके स्पर्श से शरीर में खुजली हो जाती है। (३) इदक=अधिक। (४) हिवड़ां=हृदय।

पदांक ८ : म्हारे०— (१) तोटो=अभाव। मन मेलु=मन में मैल रखने वाला, कपटी। (२) पोट=पोटली। लोटालोट (लोटपोट)=श्रमित।

पदांक ६ : भक्ति०—(१) चौरासी मांही=चौरासी लक्ष योनियां। यह पद गुजराती में मिलता है, उसे भी हिन्दी भाषा के विद्वान् हिन्दी का पद मानते हैं।

पदांक १० : हरि आयो०— (१) लारे=साथ में। (२) दोरी=दौड़ कर। (३) भीरे=संकट के समय।

विशेष टिप्पणी— नरसीजी के अनेक पदों में गुजराती और राजस्थानी के मिश्रित शब्द और प्रयोग मिलते हैं। गुजरात और राजस्थान के मध्यकालीन साहित्यिक आदान-प्रदान पर इससे बड़ा प्रकाश पड़ता है।

शुद्धि - पत्र

[पंक्तियों की संख्या, दोहा, सोरठा, पद आदि शीर्षकों की पंक्तियाँ छोड़ कर दी गई है]

पृष्ठ	पंक्ति-संख्या	अशुद्ध ।	शुद्ध
१	१५	समसि ।	समझि ।
२	४	पेरो ।	बेरो ।
२	१७	कही ।	कहो ।
५	१०	न कहासी ।	नक हासी ।
६	१७	खासो ।	खासा ।
७	१५	वप्र ।	बिप्र ।
१२	तीसरी पंक्ति के बाद : (बीच में 'दोहा' शब्द समझें)		
१३	१२	क्योंन ।	क्यों न ।
१३	२०	व्यानां ।	व्यनां ।
१३	२१	(ज)	(ग)
१७	७	देवत ।	देखत ।
१८	१	मोड ।	मोडै ।
१८	२०-२१	हमारी" टेर ।	हमारी टेर" ।
२१	१४	भक्त ।	भल ।
२१	१६	रसि ।	रखि ।
२४	१	आंट ।	आंटै ।
२४	७	सारो ।	सारी ।
२४	१९	भक्ति ।	भलि ।
२४	२३	आंट ।	आंटै ।
२४	२४	अंबुज ।	अंबुज में ।
२५	१७	भीडै ।	भीडै ४३ ।
२५	१९	पलकाई ।	खलकाई ।
२५	२३	ख मेटो ।	दु:ख मेटो ।
२७	३	कछु २ ।	कछुर ।
२७	११	[आप]	आप ।

पृष्ठ	पंक्तिसंख्या	अशुद्ध	शुद्ध
७९	८	मोकळै ।	मोकलै ।
७९	१२	नागरो ।	नागरी ।
७९	१४	काठै ।	काढ़ै ।
८०	४	मोकळै ।	मोकलै ।
८०	८	आयो ।	आपो ।
८०	१२	कह्माड़ ।	कम्हाड़ ।
८८	१५ (पाद टीका)	कोभुखो,	को भुखो,
१०१	९	नदजी ।	नंदजी ।
१०४	१७	मेरूं ।	भैरूं ।
११४	२६	वल्हा ।	वाल्हा ।
११८	१५	तीकौ ।	नीकौ ।
११८	२२	छ रै ।	छै रै ।
१२६	१०	ठाटी ।	ठाडी ।
१३०	२	माहते ।	मोहते ।
१३७	३	जापियो ।	आपियो ।
१३९	७	दिये टीयौ ।	दिवेटीयौ ।
१४१	२	वळण रै ।	वलण करै ।
१४१	१२	धने ।	धेन ।
१४१	१९	ठोलै ।	ढौलै ।
१४२	६	काहे को गोरस ।	काहे का गोरस ।
१४२	७	धनै ।	धैन ।
१४३	३	आण ।	आंण ।
१४३	८	गरव ।	गरब ।
१४४	१२	सांवरियो ।	सांवरियो ।
१४४	१४	जायेवा ।	जोयवा ।
१४५	५	मीरूं ।	भीरूं ।
१४५	७	मऊजी ।	माऊजी ।
१४५	१३	मधरा न ।	मध रान ।

पृष्ठ	पंक्ति-संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
१४५	१६	धने।	धेन।
१४६	७	सांबला।	सांवला।
१४७	७	टोरो।	टोरीं।
१४७	१०	घोरी।	योरी।
१४७	१८	जीत्या।	जीत्यां।
१४८	५	काठैं।	काढैं।
१५०	८	बूंटी।	बूटी।
१५०	१५	धारो।	थारो।
१५१	८	दाया।	दाय।
१५१	२२	नारी।	रानी।
१५४	५	नंदजी।	नंद।
१५४	१३	पाप।	पाय।
१५४	१४	गुगरा नि।	गुगरनि।
१५४	१५	सांवरिया।	सांवरियो।
१५४	१५	षु (खूब)।	षू (खूब)।
१५६	६	नदलाला।	नंदलाला।
१५६	१६	मटको।	मटकी।
१५७	३	हेलो।	हेली,
१५८	१६	नरसोनो।	नरसीलो।
१६०	४	हार	हरि।
१६०	७	भाख्यौ, मुनै नरसोलो स्वामी भाख्यौ।	भाव्यौ, मुनै नरसीलो स्वामी भाव्यौ।
१६३	४	मिलना है।	मिलता है।
१६५	१६-१७	कसन वाला = कंचुकी की डोरी बांधने वाला।	कसन कंचुकी की डोरी।
१७०	२६	आप्या।	आव्या।
१७२	१	थांया।	धाया।

पृष्ठ	पंक्ति-संख्या	अशुद्ध ।	शुद्ध
१७३	५	मंगल कलश ।	मंगल समय ।
१७५	२	घोटा ।	छोरा ।
१७५	२२	दाया ।	दाय ।
१७६	१६	दीपडियो ।	दीवडियो ।
भूमिका पृ. १७	५	सकेत ।	संकेत ।
,, १९	१२	देदन ।	वेदन ।
,, २०	११	मीराँबाई येरे ।	मीराँबाई येर ।
,, २१	९	प्रेमाभक्ति ।	प्रेमभक्ति ।
,, ३१	पाद-टीका	Selection from	Selections from
,, ३२	२	वर्धमान ।	वृद्धमान्य ।
,, ३२	३	वर्धमान ।	वृद्धमान्य ।
,, ३३	१	भक्ति भी नाम ।	भक्ति नाम भा ।
,, ३३	२	वोपदेव ।	बोपदेव ।
,, ३३	७	भक्ति,	भक्ति और ।
,, ३३	११	वर्धमान ।	वृद्धमान्य ।
,, ३३	१७	वर्धमान ।	वृद्धमान्य ।
,, ३६	२७	करेशो ।	कहेशो ।
,, ३७	२	हलखा ।	हलका ।
,, ३७	२	वहांला ।	वहाला ।
,, ३७	३	केरा ढाला रे ।।	फेरा ठाला रे ।।
,, ३८	१	हठ ।	द्दढ ।
,, ३८	३	पण ।	वण
,, ३९	२०	अपनेयुग ।	अपने युग ।
,, ४४	९	अक्दूवर ।	अक्टूबर ।
,, ४७	२	प्रतियों को ।	प्रतियों की ।
,, ४७	१६	दिया गया ।	दिये गये ।

—०—